प्रकाशक
जैन मित्र मंडल
धर्मपुरा, दिल्ली

मुद्रक
श्री देशभूषण प्रेस,
४११, एस्पलेनेड रोड, दिल्ली - ६

विषयानुक्रम



प्रकाशकीय वक्तव्य

आज से ४३ वर्ष पूर्व समाज के कुछ नवयुवको के हृदय मे जैन धर्म के सिद्धान्तो के प्रचार की भावना जागृत हुई। उन्होने ३० मार्च १९१५ को इस सस्था की नींव 'जैन मित्र मण्डल' के नाम से देहली मे डाली । जैन मित्र मण्डल ने अब तक केवल एक ही उद्देश्य रखा है और वह है 'जैन धर्म का साहित्य द्वारा प्रचार'। मण्डल का सारा कार्य, मण्डल की सारी लगन और उसकी—सारी चिन्ताए इसी दिशा मे लगी रही हैं।

२ मण्डल ने अपने शैशव काल के ६ वर्षो मे ही जैन धर्म तथा साहित्य-प्रचार मे इतना अधिक कार्य किया कि सन १९२१ की सरकारी जनगणना census मे इसको भारत की 'Chief jain literary Society 'प्रमुख साहित्यिक संस्था' घोषित किया गया।

३. जैन मित्र मण्डल जिस समय दो वर्षो का ही था इसने भारत—प्रसिद्ध देहली शास्त्रार्थ 'ईश्वर-कर्तृत्व और तीर्थ कर सर्वज्ञ हो सकते हैं या नही" इस विषय पर 'आर्यकुमारसभा' से देहली में किया।

४. अभी मण्डल इस कार्य से निबटा ही था कि डाक्टर गौडने 'हिन्दू कोड" 'Hindu Code' नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमे जैन धर्म तथा जैनों के विषय मे बहुत सी गलत बातें लिख डाली। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा मान्यता दी जाने को ही थी कि मण्डल ने इस विषय मे आन्दोलन चलाया और एक पृथक 'जैन कोड' बनाने का विचार किया। डाक्टर गौड के आक्षेपो का करारा उत्तर दिया। दो पुस्तकें 'Jainism and Hindu Code' और 'Jains of India and Dr. H S Gour' प्रकाशित की। इस सबके फलस्वरूप डा० गौड ने अपनी पुस्तक की दूसरी आवृत्ति मे अपनी गलतियो को ठीक किया।

५ मण्डल ने, अपनी स्थापना के १० वर्ष पश्चात् यह कटु अनुभव किया

कि जहाँ देश मे अन्य सर्व धर्मों के प्रवंतको के-भगवान कृष्ण, राम, मोहम्मद, ईसा, गुरु नानक के–जन्म उत्सव बडी धूमधाम से मनाये जाते हैं वहाँ जैन धर्म के किसी भी तीर्थ कर का जन्म उत्सव नही मनाया जाता, इसी भावना से ओत प्रोत होकर जैन मित्र मण्डल ने सर्व प्रथम सन् १९२५ में 'महावीर जयन्ती महोत्सव' देहली मे मनाया जिसमे मौलाना मोहम्मद अली, महात्मा भगवानदीन, प० अर्जु नलाल सेठी जैसे विद्वानो के भाषण हुए। समाज में इस प्रकार के उत्सव मनाने पर विरोध भी हुआ, मडल के कर्मठ सैनिकों को आक्षेप भी सहने पडे, परन्तु उत्सव की उपयोगिता तथा उसकी सफलता ने उनके उत्साह को वढाया और उसके वाद ३३ वर्षो मे मडल ने महावीर जयन्ती को एक वहुत ही प्रभावशाली, सुन्दर आकर्षक तथा सार्वजनिक रूप दे [illegible]।

आज मण्डल को इस बात का गौरव है कि समस्त भारत मे महावीर–जयन्ती मनाने तथा मनवाने का श्रेय इसी संस्था को है।

महावीर जयन्ती को अधिक से अधिक उपयोगी वनाने के हेतु मडल कविसम्मेलन, सगीतसम्मेलन, उर्दु मुशायरा तथा व्याख्यानो का बडा ही सुन्दर तथा रोचक प्रोगाम रखता है। इस अवसर पर मडल भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मत्री, विदेशो के राजदूत, भारतसघ के मन्त्रीगण, भारत राज्य के राज्यपालो तथा अन्य सभी जाति तथा धर्म के नेताओ को आमन्त्रित करता है और उनसे इस आयोजन के विषय मे तथा भगवान महावीर के सिद्धान्तों व आज के युग मे उनकी आवश्यकता पर सुन्दर तथा प्रभावशाली लेख तथा सन्देश मगाता है और उन्हे सहस्रो की सख्या मे प्रकाशित कर देश तथा विदेशों मे वितरण करता है।

६ जैन मित्र मडल देहली जैन समाज मे पुस्तक प्रकाशन में एक अद्वितीय स्थान रखता है। मडल ने अपना उद्देश्य जैन धर्म के शास्त्रों के प्रकाशन का नही रखा वल्कि इसने अंग्रेजी नागरी तथा उर्दू मे नये प्रकार के साहित्य का निर्माण कराया। आज के युग मे जनता के पास इतना भी समय

नही है कि वह अपने धर्म के मोटे मोटे शास्त्रों को पढ सके, आज का युग चाहता है छोटी छोटी पुस्तकें जो कि वह अवकाश के समय सुगमता से पढ सकें। मडल ने अपनी कार्य पद्धति इसी ओर रखी। उसने समाज के प्रकाण्ड विद्वानों से, जैन ही नही किन्तु अजैनो से भी जैनधर्म तथा इसके सिद्धान्तो पर छोटे छोटे ट्रैक्ट लिखवाए, जिनको हजारो की सख्या मे प्रकाशित कर विना मूल्य देश-विदेशो तथा जैन व अजैन जनता में वितरण किया। ससार का कोई भी देश ऐसा नहीं होगा जहाँ जैन मित्र मडल के ट्रैक्ट न पहुचे हो। इस प्रकार की १४२ पुस्तकें मडल प्रकाशित कर चुका है। शायद कोई ही दूसरी ऐसी जैव सस्था होगी कि जो इतने 'पुष्प' अवतक प्रकाशित कर सकी हो।

७ पिछले वर्ष साहित्य प्रचार मे जैन मित्र मडल ने एक बहुत ही वडा कदम उठाया। ससार को चकित कर देने वाला राष्ट्रपति द्वारा कहा गया 'ससार का आठवाँ आश्चर्य' ७१८ भाषामयी ग्रन्थराज 'भूवलय' के प्रकाशन का कार्य इस सस्था ने उठाया। और गत वर्ष 'इसका मगल प्राभृत' 'इसके कतिपय सारगर्भित श्लोक' तथा इसमे अन्तर्गत 'भगवद्गीता' नाम की तीन पुस्तकें प्रकाशित की जिनका उदघाटन कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष श्री ढेवर भाई ने आचार्य श्री १०८ देशभूषण जी महाराज की उपस्थिति मे किया।

८. मण्डल के पास सदैव 'जैनसाहित्य' के विषय मे परिप्रश्नात्मक पत्र आते रहते हैं और जैन धर्म जानने तथा जैन साहित्य के पढने के इच्छुक सदैव जैन साहित्य की माँग जैन मित्र मडल से करते रहते हैं। अब तक 'दिगम्बर जैन समाज' में इस प्रकार की कोई पुस्तक या सूची नहीं थी कि जिसमे प्रकाशित जैन साहित्य का पता चल सकता हो। इसी कमी को दृष्टि म रखते हुए जैन समाज के सर्व अधिक 'मूक' तथा ठोस सेवक ला० पन्नालाल जी अग्रवाल देहली द्वारा सयोजित तथा प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक डा० ज्योति-प्रसाद जी लखनऊ द्वारा सम्पादित 'प्रकाशित जैन साहित्य' की सन् १६४५ तक की यह सूची प्रकाशित करते हुए हमे वडा हर्ष हो रहा है। हम इन दोनो ही के बहुत कृतज्ञ हैं कि उन्होंने इसमे अपना अमूल्य समय देकर यह पुस्तक

सम्पादित की है। साथ ही हम आचार्य श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार अधिष्टता वीरसेवामन्दिर, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प्रोफेसर बनारस विश्व-विद्यालय तथा डा० हीरालाल जी अध्यक्ष प्राकृत विद्यापीठ मुजफ्फरपुर (बिहार) के भी बहुत आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रास्ताविक, प्राक्कथन, प्राथमिक लिखकर इस पुस्तक की उपयोगिता को बहुत बढा दिया है। श्री प० परमानन्द जी तथा श्री मुनीन्द्रकुमार जी ने इस पुस्तक के कुछ प्रूफ देखे हैं, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं

हम श्री रामचद्र जैन भारत सरकार **valuation officer**, पुनर्निवास मत्रालय तथा श्री अखिल भा० दिगम्बर जैनकेन्द्रीय महासमिति देहली के आभारी हैं जिन्होने इस पुस्तक के प्रकाशन मे १३१ क्रमश तथा ५१) दान देकर इस पुस्तक की उपयोगिता को अपनाया है।

हमे आशा है कि पुस्तक की उपयोगिता से जनता प्रभावित होकर इस पुस्तक को अपनायेगी।

अजितप्रसाद जैन ठेकेदार सभापति
महतावसिह जैन महामन्त्री

आदीश्वरप्रसाद जैन मत्री
पन्नालाल जैन मत्री
जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा, देहली

प्राथमिक

जैन संस्कृति की धारा बहुत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण है। किन्तु दुर्भाग्यतः जैन धर्मानुयायी अपनी वस्तु को स्थिर रूप देने व उसे संसार के सम्मुख उपस्थित करने में बहुत शिथिल और दीर्घसूत्री रहे हैं। उदाहरणार्थ, जबकि वैदिक परम्परा के ग्रंथ कम से कम चार हजार वर्ष पुराने पाये जाते हैं, तब महावीर भगवान से पूर्व का कोई जैन साहित्य सुरक्षित नहीं है। भगवान महावीर की वाणी को उनके शिष्यो ने उन्ही के जीवन-काल मे द्वादशांग रूप रच लिया था, ऐसी जैन श्रुत-परम्परा है। किन्तु इसे कोई एक हजार वर्ष तक लिखित रूप नही दिया जा सका। दिगम्बर परम्परानुसार तो वह समस्त द्वादशांग श्रुत कोई छह सातसो वर्षो मे ही क्रमश विस्मृत और विलुप्त हो गया, और जो रहा उसके आधार पर नये सिरे से षट्खण्डादि ग्रंथो की रचना की गई। श्वेताम्बर परम्परा मे महावीर निर्वाण से लगभग एक हजार वर्ष पश्चात् उसके बचे खुचे अंशो का संकलन कर उन्हें पुस्तको का रूप देने का प्रयत्न किया गया।

चीन देश मे ग्रंथों के मुद्रण का कार्य नौवी शती मे प्रारम्भ हो गया था। यूरोप में मुद्रण कार्य पन्द्रहवी शती मे तथा भारत मे सोलहवी शती में प्रारम्भ हुआ। किन्तु जैन ग्रंथो का प्रकाशन सन १८५० से पूर्व का कोई नही पाया जाता। अभी अभी तक धार्मिक ग्रंथो के मुद्रण का समाज में विरोध भी होता रहा है। आज सभ्य संसार का उपलब्ध प्राचीन साहित्य प्रायः समस्त ही प्रकाशित हो चुका है और उसके प्रमुख भाग अन्य भाषाओ मे भी अनुदित हो गये हैं। किन्तु एक जैन साहित्य ही ऐसा है जिसका अति प्रचुर भाग, नष्ट होते होते जो कुछ बचा है, वह अभी भी शास्त्र भंडारो की अंधेरी कोठरियो में बन्द पड़ा है। यह दशा आज सभ्यता के विकास की दृष्टि से नितान्त शोचनीय है। हमारी साहित्यिक निधि का लेखा-जोखा लगाने मे और

दशा सुधारने मे प्रस्तुत पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी, इसमे सन्देह नही।

श्रीयुत पन्नालाल जैन अग्रवाल जैन साहित्य की बहुत कुछ सेवा कर चुके हैं और उन्हें जैन साहित्य प्रकाशन का खासा परिचय है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने जैन साहित्य की प्रकाशित हिन्दी, सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषा की रचनाओं की अकारादि क्रम से सक्षिप्त सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इसके आधार से साहित्यक विद्वान जैन प्रकाशन की गति-विधि का पता लगा सकेंगे। जिन्हें ग्रथ-सग्रह करना है वे इसके द्वारा अपने पुस्तकालय को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। और जिन्हें यह समझना है कि अभी भी कितना साहित्य प्रकाशित होना शेष है, वे इस सूची मे उल्लिखित आधुनिक रचनाओ के अतिरिक्त प्राचीन सस्कृत की केवल १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रंश की १८ और प्राचीन हिन्दी की २७५ पुस्तको को डा० वेलणकर कृत 'जैन रत्न कोश' तथा विविध जैन भंडारो की नई सूचियो आदि से मिलान कर देखें, तो उन्हें पता चलेगा कि अभी भी सैंकडो नही सहस्रो प्राचीन जैन रचनायें अंधेरे मे पडी हुई हैं। इस सूची की भूमिका रूप जो "जैनियो की साहित्य सेवा और प्रकाशित जैन साहित्य" शीर्षक निबन्ध सम्पादक द्वारा प्रस्तुत है वह अपने विषयगत बहुत महत्वपूर्ण सामग्री को लिए हुए है।

मैं इस ग्रथ का हृदय से स्वागत करता हू और उसके सयोजक, सम्पादक तथा प्रकाशक और साथ ही वीर सेवा मन्दिर को, जिसके तत्त्वावधान मे सम्पादन का सब कार्य सम्पन्न हुआ है, विशेष धन्यवाद देता हुआ यह आशा करता हू कि इसके द्वारा भविष्य मे जैन साहित्य के प्रकाशन और प्रसार का मार्ग अधिक प्रशस्त बनेगा।

१४-२-१९५८ — हीरालाल जैन

मुजफ्फरपुर — डायरेक्टर 'प्राकृत जैन विद्यापीठ'

प्राक्कथन

श्री पन्नालाल जैन की इस छोटी किन्तु उपयोगी पुस्तक का मैं स्वागत करता हूँ। इसमें जैन वाङ्मय के क्षेत्र मे अब तक के साहित्यिक कार्य का अच्छा परिचय दिया गया है। उस वर्णन मे पर्याप्त जानकारी का सग्रह है। श्री पन्नालालजी ने अध्यवसाय पूर्वक अपने आप को उस विभाग से अद्यावधिक अवगत रक्खा है। जहाँ तक भारतीय सस्कृति और वाङ्मय का सम्बन्ध है हम उसके अखड स्वरूप की आराधना करते हैं। ब्राह्मण और श्रमण दोनों धाराओ से उसका स्वरूप सम्पादित हुआ है। श्रमण सस्कृति के अतर्गत जैन संस्कृति साहित्य, धर्म, दर्शन, कला इन चार क्षेत्रों में अति समृद्ध सामग्री प्रस्तुत करती है। नई दृष्टि से उसका अध्ययन और प्रकाशन आवश्यक है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि जैन विद्वान् निष्ठा के साथ इस कार्य में लगे हैं। उनके प्रयत्न उत्तरोत्तर फलवान् हो रहे हैं। प्राकृत और अपभ्र श भाषाओं की सामग्री मे तो अब प्राय देश के सभी विद्वानो की अभिरुचि बढ रही है।

वह समय परिपक्क है जब इन ग्र थो को नए ढग से सशोधित रूप में सम्पादित करके प्रकाशित किया जाय। जो कार्य अब तक हुआ है उसका एक लेखा-जोखा जान लेने पर नवीन कार्य की प्रेरणा प्राप्त हुआ करती है। इस दृष्टि से यह वृत्तान्त उपयोगी है। इसके अन्त मे जैन भडारों और पुस्तकालयों की एक सूची जोड दी जाय तो और अच्छा रहेगा। हमे यह देखकर आनन्द होता है कि सरस्वती भडारो के स्वामी और प्रबन्धक अब प्राय उदार दृष्टिकोण अपनाने लगे हैं। सम्पादन और प्रकाशन के लोकहितकारी कार्यों मे उन से मिलने वाले सहयोग की मात्रा बढ़ रही है। इस महत्ती शताब्दी के उत्तरार्ध मे जैन साहित्य के समुचित प्रकाशन की धारा और अधिक वेगवती बन सकेगी, ऐसी आशा होती है। अनेक केन्द्रों से वितत कार्य के सूत्रो का सम्मिलित पट और सुन्दर बनेगा, ऐसे शुभ लक्षण प्रकट हो रहे हैं। इस समय जो विद्वान

और जो सस्थाए इस पुनीत कार्य मे सलग्न हैं उनकी नामावली ग्रथ के प्रारम्भिक भाग मे आ गई है उन–उन विशिष्ट मित्रो के यशस्वितम परिश्रम को दृष्टि पथ मे लाते हुए मन आश्वस्त होता है कि इस वाङ्मय रूपी कल्प वृक्ष का अगले पचास वर्षों मे शतश सहस्रश. विस्तार सम्भव हो सकेगा।

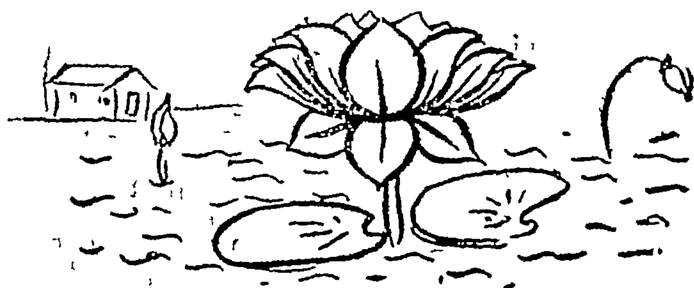
यद्यपि प्राचीन आगम साहित्य प्रकाशित हो चुका है, किन्तु उसको निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका आदि के साथ अभिनव रूप मे भूमिका, टिप्पणी, शब्दानुक्रमणी आदि के साथ पुन प्रकाशित करने के कार्य शेष ही है। जब वे इस रूप मे उपलब्ध होंगे तभी उनसे सास्कृतिक सामग्री के दोहन का कार्य पूरा किया जा सकेगा। इस युग का महनीय उद्देश्य तो भारतीय राष्ट्र का सर्वांग पूर्ण सांस्कृतिक इतिहास है। यह कितना विशाल कार्य और कैसा उदात्त लक्ष्य है इसकी कल्पना सहसा मन मे नही आती। किन्तु अभी तो कार्य का आरम्भ मात्र है। सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण की कला अभी विकसित होने लगी है। यह महान् कार्य अनेक सकल्पवान् साधको की अपेक्षा रखता है। एक एक शब्द का मूल्य मणिमुक्ता की भाँति चतुराई से परखना होगा, उसके सूत्रो को बौद्ध साहित्य, सस्कृत साहित्य एव प्रादेशिक भाषाओ के साहित्य मे ढूढना होगा। तब सब की सम्मिलित आभा से ऐतिहासिक के मन मे अर्थों का पूरा आलोक प्रकट हो सकेगा। इसकी कल्पना से ही रोमाञ्च होता है। भारत के भावी इतिहासकारो के लिए सास्कृतिक सामग्री के सुमेरु स्तब्ध खड़े हैं, जिनकी परिक्रमा लगानी होगी। हम जिस दृष्टि कोण की कल्पना कर रहे हैं उसमे इतिहास, साहित्य, सस्कृति, कला, धर्म, दर्शन और जीवन-परम्परा–इन सात सूत्रो को एक साथ मिलाकर भारती महाप्रजा के राष्ट्रीय पुरावृत्त का दिव्य इन्द्रायुधाम्बर सम्पन्न करना होगा। यहाँ अभेद, समन्वय, सप्रीति का दृष्टिकोण मुख्य है। काल के प्रवाह में जो कुछ बचा रह गया है वह मात्रा मे कितना विस्तृत है इसकी टकसाली साक्षी जैन शास्त्र भडारो मे उपलब्ध ग्रथ राशि से प्राप्त हुई है। श्री वेलणकर द्वारा सगृहीत 'जिनरत्नकोश' इस क्षेत्र का भव्य प्रयत्न है। यह

जानकर प्रसन्नता होती है कि वीर सेवा मंदिर दिल्ली की ओर से लगभग ६००० अप्रकाशित ग्रन्थो की एक सूची तैयार कराई गई है। राजस्थान के भंडारो की छान बीन श्री कस्तूरचन्द्र कासलीवाल और श्री अगरचन्द नाहटा बराबर आगे बढा रहे हैं। आशा है अगले बीस वर्षो में भंडारो के पर्यवेक्षण का कार्य पूरा कर लिया जायगा। और तदनुसार प्रकाशन की शक्तिशाली योजनाए भी राष्ट्र में बन जाए गी।

इस पुस्तक मे प्रकाशित जैन साहित्य की एक अकारादि क्रम से नाम सूची सग्रहीत की गई है। इसमे लगभग २७०० पुस्तकों का सक्षिप्त परिचय दिया है। तैयार यादी की भाति यह सूची पाठकों के लिये उपयोगी रहेगी। जो ग्र थ इस सूची मे छूट गए हों उनके नाम भी अपनी जानकारी के अनुसार जोड लिए जा सकते हैं। श्री पन्नालाल जी का यह उत्साहमय प्रयत्न बहुत अच्छा है।

काशी विश्वविद्यालय — वासुदेवशरण अग्रवाल

फाल्गुन शुक्ल १२, स० २०१४



संकेत-सूची

अ०नु=अनुवाद-अनुवादक
अप०=अपभ्रंश
अ=अंग्रेजी
आ०=आवृत्ति, आचार्य
ई०=ईस्वी
का० ती०=काव्यतीर्थ
गु०=गुजराती
जि०=जिला
टी०=टीका-टीकाकार
डा०=डाक्टर
दा० वी०=दानवीर
दि०=दिगम्बर
न०=नम्बर
न्या०आ०=न्यायाचार्य
न्या० ती०=न्यायतीर्थ
न्या० ल०=न्यायालंकार
प०=पंडित
पृ०=पृष्ठ
प्र०=प्रकाशक-प्रकाशित
प्रा०=प्राकृत
प्रो०=प्रोफेसर
बा०=बाबू
ब्र०=ब्रह्मचारी
भा०=भाषा
म० र०=महिलारत्न
मा०=मास्टर
मि०=मिस्टर
मु०=मुन्शी
मू०=मूल्य
ले०=लेखक-लेखिका
व०=वर्ष
वा०=वार्षिक
वि० र०=विद्यारत्न
स० भ०=सत्यभक्त
स०=संस्कृत, संपादक
संक०=संकलनकर्ता
संग्र०=संग्रहकर्ता
संपा०=संपादक-संपादिका
संशो०=संशोधक
सा० आ०=साहित्याचार्य
सा० र०=साहित्यरत्न
सि०=सिद्धांत
सि० च०=सिद्धांत चक्रवर्ती
सि० शा०=सिद्धांत शास्त्री
से०=सेठ
स्व०=स्वर्गीय
हि०=हिन्दी
Ed = Editor, Edited
Trad = Translated
Pub = Publisher
Tr = Translator
Dj = Digambar jain
C R = Champat Rai
J.L = jagmander lal
G R.= Ghasi Ram

प्रास्ताविक

इस पुस्तकके सयोजक बा० पन्नालालजी जैन अग्रवाल अपने चिर-परिचित मित्र हैं। आप बडे ही सेवाभावी और साहित्य-प्रेमी सज्जन हैं—साहित्य-सेवियों को अपनी सेवाएं प्रदान करनेमे सदा ही उदार एव परिश्रम-शील रहा करते हैं। कई वर्ष तक आप वीर-सेवा-मन्दिरके मत्री रह चुके हैं। इस पुस्तक का आयोजन भी आपके उक्त मत्रित्व-कालमे ही हुआ है। पुस्तक के आयोजनादि-सम्बन्धकी कुछ रोचक-कथा इस प्रकार है, जिसे उन पत्रोंसे जाना जाता है जिन्हे सयोजकजीने अपने पास सुरक्षित रख छोडा है—

डा० माताप्रसादजी गुप्त एम० ए० प्रयाग सन् १९४३ मे 'हिन्दी पुस्तक-साहित्य' नामकी एक ग्रन्थसूची लिख रहे थे, जिसमे हिन्दीकी चुनी हुई पुस्तकोका परिचय उन्हें देना था और वह भी सन् १८६७ से १९४३ तक १०० वर्ष के भीतर प्रकाशित पुस्तकोका—लिखितका नही। नवम्बर १९४३ मे डा० साहब के तीन पत्र बा० पन्नालालजी (सयोजकजी) को प्राप्त हुए, जिनमे यह इच्छा व्यक्त की गई कि यदि हिन्दीके जैन ग्रन्थोकी कोई अभीष्ट सूची उनके पास तय्यार हो या वे तय्यार कराके दे सकें तो उसका उपयोग उक्त सूची में किया जा सकता है। इन पत्रो पर से सयोजक-जीको हिन्दी जैन ग्रन्थोकी एक ऐसी सूची तय्यार करनेकी प्रेरणा मिली जिसमे वे ग्रन्थ भी शामिल थे जो मूलत भले ही सस्कृत-प्राकृतादि भाषाओं मैं हो परन्तु उनके अनुवादादिक हिन्दी भाषामे लिखे गये हो। तदनुसार उन्होने हिन्दी जैन ग्रन्थो की एक सूची तय्यार की और उसे देखने-जांचने के लिये मेरे पास सरसावा वीर-सेवा-मन्दिर मे भेज दिया। यह सूची अपने को जनवरी १९४४ के अंतमें प्राप्त हुई और उसे सस्था के विद्वान प० परमा-नन्दजीको जांच आदि के लिये सुपुर्द कर दिया गया। प० परमानद जीने

जांचने, सुधारने और कितने ही नये ग्रथो की उसमे वृद्धि करने के वा
उसे फर्वरी के अन्त मे वापिस कर दिया और वह दूसरी मार्चको डा० सा
के पास प्रयाग भी पहुच गई, जिसकी पहुच देते हुए डा० मा० ने सूची क
बडे ही परिश्रमसे तैयार हुई बतलाया और अपनी सूची के प्रेस चले जा
की सूचना करते हुए यह परामर्श दिया कि यदि विषयो के अनुसार वर्गीकर
होकर वह अनेकान्त (मासिक) मे प्रकाशित हो जावे तो बडा अच्छा हो
साथ ही उसी पत्र तथा २० मार्च के पत्र मे यह आश्वासन भी दिया कि वे
यथा सभव उस सूची का उपयोग करके उसे वापिस लौटा देंगे। १६ अप्रेल
१९४५ से पहले तक यह सूची वापिस नही लौटी, ७२ जुलाई तथा २ नवम्बर
के पत्र में सूची के उपयोग-सम्बध मे इतनी ही सूचना की गई—'सूची पर
देर से प्राप्त हुई थी इस कारण उसमे पूरा लाभ नही उठा सका। आपकी
सूची क प्राचीन ग्रथो स नितान्त अपरिचित होने के कारण कुछ को चुनना
और शेष को छोडना ठीक नही लगा। आधुनिक ग्रथो मे से जो महत्व पूर्ण हैं
उनमे से अधिकाश मेरी सूची मे पहले से थे। जैनधर्मका परिचय कराने वाले
आधुनिक ग्रथ एकाध आपकी सूची से भी मिलगए हैं।'

डा० माताप्रसादजी की उक्त सूची 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नाम से अप्रेल
१९४५ मे प्रकाशित हो गई, उसे देख कर हमारे सयोजक जी को प्रकाशित
जैन ग्रथो की एक बडी सूची तय्यार करने की विशेष प्रेरणा मिली। फलत
उन्होने हिन्दी के अतिरिक्त सस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रश भाषा के ग्रथो की
भी एक सूची सकलित की और उसे आरा के जैन सिद्धान्तभास्कर (त्रैमासिक)
में छपाना चाहा, परन्तु वहाँ क्रमश प्रकाशित करने की बात उठी, जो उचित
नही जँची। तदनतर भारतीय ज्ञान पीठ के प्रधान विद्वान न्यायाचार्य प०
महेन्द्र कुमार जी से इसके विषय मे पत्र व्यवहार हुआ और वह मार्च १९४६
मे उनके पास बनारस भेज दी गई। न्यायाचार्य जीने उसे देखकर ८ अप्रेल
के पत्र मे लिखा कि "इस (सूची) में बहुत परिश्रम करनेकी आवश्यकता
है तब कही यह छपने योग्य होगी। अभी हमारे यहा छपाई का सिलसिला भी
ठीक नही हो सका है"। इस बीच मे सयोजकजीने बा० ज्योतिप्रसादजी

एम० ए० लखनऊसे भी पत्रव्यवहार किया, जिन्हे हाल मे पी एच० डी० की उपाधि भी प्राप्त हो गई है, और उन्हे सूचीके सम्पादन की प्रेरणा का, जिसके उत्तर मे उन्होंने अपने ४ अप्रेल १९४६ के पत्र मे लिखा कि "हिन्दी सूची भी मैं सम्पादन करदूंगा आप मगालें।" इस स्वीकृति के अनुसार वह सूची उन्हे बनारस से भिजवादी गई और उन्हें ११ अप्रेल को मिल गई, जिसकी पहुच के पत्र तथा बाद के भी कुछ पत्रो मे उन्होने सूची के सम्पादन की कुछ कठिनाइयो तथा अपने इकले की असमर्थतादि का उल्लेख करते हुए मुझ स परामर्श करने तथा वीरसेवामन्दिर की मार्फत इस कार्य के सम्पन्न होने आदि का सुझाव रक्खा। फलत इस ग्र थसूची पर उस वक्त तक कोई खास काम नही हो सका जब तक कि श्री ज्योतिप्रसादजी की नियुक्ति १ ली अक्तूवर १९४६ को वीरसेवामन्दिर मे नही हो गई।

मुझे उक्त सूची की स्थिति आदि का पहले से कोई विशेष परिचय नही था, और इस लिये यह समझ लिया गया था कि बा० ज्योतिप्रसाद जी, जिन्होंने सूचीका सम्पादन स्वीकार किया है, अपने अवकाशके समयो मे उस काम को भी करते रहगे, तदनुसार ही उन्हें उसकी याददिहानी करा दी गई; परन्तु वैसा कुछ नही हो सका। साथ ही, यह मालूम पडा कि सूची मे कितना ही संशोधन, परिवर्तन और परिबर्द्धन किया जाने को है। अत आफिस वर्क के रूप में इस कार्य सम्पादन के लिए बाबू ज्योतिप्रसाद जी की खास तौर से योजना की गई और कार्य की रूप-रेखा भी प्राय निर्धारित कर दी गई। उस वक्त तक वह सूची कोष्ठको के रूप मे थी, अकारादि क्रम से ग्रथ उसमें जरूर दिये थे परन्तु वह क्रम बहुधा कोश-क्रम के अनुसार ठीक नही था—कितने ही ग्रन्थ आगे पीछे लिखे हुए थे, कुछ दोवारा तिबारा प्रविष्ट हो गये थे, बहुत से ग्रन्थ लिखने से छूट गये थे और कुछ ग्रथो का परिचय भी कही कही त्रुटित तथा गलत हो रहा था। इन सब दोषोको दूर करते हुए प्रत्येक ग्रन्थके परिचयको जिनरत्नकोशादि की तरह धाराप्रवाह (running) रूप में एक साथ देने की व्यवस्था की गई और

यह भी निश्चय किया गया कि जैनियोंकी साहित्य-सेवाको प्रदर्शित करनेवाली एक अच्छी प्रभावक भूमिका भी साथ में रहे, जिससे इस पुस्तक की उपयोगिता बढ जाय। तदनुसार ही वीरसेवामन्दिर में उक्त सूची पर नये-कार्डीकरणादि द्वारा सम्पादन-कार्य हुआ, जिसके फल स्वरूप उसे वर्त्तमान रूप प्राप्त हुआ है और उसमें सामयिक पत्रो तथा भाषणों के अतिरिक्त लगभग साढे छह सौ ग्रन्थो का नई वृद्धि हुई है—उर्दू, मराठी, गुजराती, बगला और अग्रेजी की तो सभी पुस्तकें नई प्रविष्ट की गई हैं।

बा० ज्योतिप्रसाद जी का कार्य-काल वीरसेवामन्दिर में ३१ जुलाई १९४७ तक रहा। अपने इन दस महीने के कार्यकाल में उनका अधिकांश समय प्रस्तुत सूची के सम्पादन मे ही व्यतीत हुआ, जिसे ६-७ महीने का पूरा समय कहा जा सकता है। जुलाई के अन्त मे जैसे-तैसे भूमिका का कार्य पूरा होकर सूची का सम्पादन-कार्य समाप्त हुआ। अपने इस सम्पादन कार्य मे, जिसमे वीरसेवामन्दिर के दूसरे विद्वानो प० परमानन्द जी शास्त्री तथा न्यायाचार्य प० दरबारी लालजी का भी कुछ सहयोग प्राप्त होता रहा है, सम्पादक जी कहाँ तक सफल रहे उसे विज्ञपाठक स्वय समझ सकते हैं।

सूची का सम्पादन समाप्त होनेसे पहले ही सयोजक जी को उसके शीघ्र छपाने की चिन्ता थी, जिसके लिये उन्होने अनेक पुस्तक प्रकाशको से पत्र व्यवहार किया—बडोदा के ओरियटल इनिस्टट्यूट, इलाहाबाद लाजर्नल कम्पनी, डा० माताप्रसादजी गुप्त और इलाहाबाद के रायसाहब रामदयाल जी अग्रवाल तक को पुस्तक-प्रकाशन के लिये प्रेरणा की गई, परन्तु कही से भी सफलता प्राप्त नही हुई—सभी ने अपनी अपनी परिस्थितियो के वश छपाने में असमर्थता व्यक्त की। उस समय कागज का भी बडा अकाल था, सारे देश मे उसका सकट व्याप्त था और कागज के सरकारी कोटे की भारी झझट थी, इसी से प० नाथूराम जी प्रेमी ने उन्हे बम्बई से लिखा था कि "प्रकाशित करने के लिए मे किसे बनाऊँ ! इस समय तो शायद ही कोई छापने को तय्यार हो।" वीरसेवामन्दिर को कागज का कोटा बहुत ही कम प्राप्त

था और कोटे से अधिक कागज दूसरे मार्ग से भी खरीद कर नही लगाया जा सकता था, यह बडी दिक्कत दरपेश थी और इसलिये मैंने संयोजकजी-को लिख दिया था कि 'ऐसी हालत में यदि आप किसी दूसरे प्रकाशक से इसे प्रकाशित करना चाहें तो उसमे अपने को कोई खास आपत्ति नहीं हो सकती।'

इस तरह प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन जो उस समय रुका तो वह अनेक परिस्थितियो के वश अर्से तक रूका ही पडा रहा। वीरशासनसघ कलकत्ता के मत्री बा० छोटे लाल जी के पास भी यह दो एक वर्ष प्रकाशन की वाट जोहता हुआ पडा रहा। कलकत्ता से ग्रन्थ की प्रेस कापी वापिस आने पर सयोजक जी जैनमित्रमडल दिल्ली के मत्रियो बा० महतावसिंहजी वी० ए० और बा० आदीश्वरप्रसाद जी एम० ए० से इस ग्रथ को मडल से छपाने की अनुमति प्राप्त करने मे ही नही किन्तु उसे प्रेस को दे देने मे भी सफल हो गये, और इस तरह इस ग्रथ के दुर्भाग्य का उदय समाप्त हुआ, यह वडी खुशी की वात है और इसके लिये जैन मित्र मडल और उसके उक्त दोनो मत्री विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। वा० पन्नालालजी का सम्बन्ध जैन मित्र मडल से वहुत पुराना है, आप कई वर्ष तक उसके सहायक मत्री रहे हैं और आप के उस मत्रित्व-काल मे जैनमित्रमडल चमक उठा था। ऐसी स्थिति मे आपकी एक उपयोगी कृति चिरकाल तक यो ही पडी रहे यह उसे कहाँ तक सहन हो सकता था। आखिर काल-लब्धि आई और उसे ही उस पुस्तक को छपाने के लिये विवश होना पडा, जिसके छपाने मे वह भी पहले उपेक्षा-भाव दर्शा चुका था।

यह है इस पुस्तकके आयोजनादि-सम्बन्धी की कुछ रोचक कथा।

मुझे इस पुस्तक के प्रेस मे जाने का हाल उस समय मालूम पडा जब कि ५-७ फार्म ही छपने को वाकी रह गये थे। यदि प्रेसमे जानेसे पहले मुझसे इस विषय मे परामर्श कर लिया गया होता तो उसमे कितना ही सुधार हो जाता—कम से कम मुद्रणकला की जो खटकने वाली त्रुटिया पाई जाती हैं

व तो न रहने पाती, और छपाने मे भी इतनी अशुद्धियाँ न रहती। अस्तु; जैसी कुछ भी है यह पुस्तक अब पाठको के सामने उपस्थित है और अपने उस उद्देश्य को पूरा करने मे बहुत कुछ समर्थ है जिसे लेकर यह प्रस्तुत की गई है। जिस पुस्तक के पीछे वीरसेवामन्दिर की भारी शक्ति लगी हो और कितना ही अर्थ-व्यय हुआ हो उसे इतने वर्षों के बाद पाठकों के हाथोमे जाता हुआ देखकर मेरी प्रसन्नताका होना स्वा- भाविक है।

अन्त मे यह जान कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई कि डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और डा० हीरालालजी जैसे प्रमुख विद्वानोंने अपने अपने वक्तव्यो (प्राथमिक, प्राक्कथन) मे इस पुस्तक का अभिनन्दन किया है, और इसके लिए मैं दोनो ही विद्वानो का हृदय से आभारी हूँ।

आशा है समाज की सभी सस्थाएँ और साहित्य-प्रेमी सज्जन इससे इधर-उधर बिखरे हुए अपने अज्ञात साहित्यका एकत्र परिचय प्राप्त कर उससे यथेष्ट लाभ उठाने मे समर्थ हो सकेंगे।

वीर सेवा मन्दिर
२१ दरियागज, दिल्ली

जुगलकिशोर मुख्तार

ज्येष्ठ वदि ३, स० २०१५



भूमिका

जैनियों की साहित्य सेवा
और
प्रकाशित जैन साहित्य

किसी भी देश अथवा जाति के सास्कृतिक विकास का मापदण्ड उसका साहित्य होता है। जातीय साहित्य की विपुलता, विविधता और उत्कृष्टता ही जातीय सस्कृति की उन्नतावस्था की द्योतक होती हैं। भारतीय सस्कृति की श्रमणधारा की प्रधान एव सर्व प्राचीन प्रतिनिधि जैन सस्कृति विशुद्ध भारतीय होने के साथ ही साथ प्राय. सर्व देशव्यापी भी रही है। जैनधर्म का सम्बन्ध कभी भी देश के किसी एक ही भाग विशेप अथवा जाति या वर्ग विशेप से नही रहा वरन सदैव से ही न्यूनाधिक अ श मे यह धर्म सम्पूर्ण देशव्यापी रहता चला आया है और प्राय प्रत्येक जाति तथा वर्ग के व्यक्ति इसके अनुयायी रहे हैं। एक प्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ के कथनानुसार तो सम्पूर्ण भारतवप मे शायद एक भी ऐसा स्थान नही मिल सकता जिसे केन्द्र बना कर यदि बारह मील व्यास का एक काल्पनिक वृत्त खीचा जाय तो उसके भीतर एक या अधिक जैन मन्दिर, तीर्थ, वस्ती या पुराना अवशेप न मिले।

वर्तमान में जैन धर्मानुयायियो की सख्या यद्यपि अत्यल्प-लगभग २५-३० लाख रह गई है, तथापि आज भी वे देश मे सर्वत्र फैले हुए हैं और विभिन्न प्रान्तो, जातियो, वर्गों और श्रेणियो के व्यक्ति उनमे सम्मिलित हैं। साथ ही वर्तमान जैन समाज प्रधानतया वर्तमान भारतीय समाज के समुन्नत, सुशिक्षित एवं समृद्ध भाग का ही एक महत्त्वपूर्ण अ श है। वह प्रगतिमान है और अपने लोकोपयोगी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। उसके अनगिनत तीर्थ, देवालय,

शास्त्र भडार तथा अन्य साहित्यिक एव लोकोपकारी सस्थाए सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से सचालित है। धर्म वैशिष्टय और सस्कृति वैशिष्टय के रहते हुए भी जैन समाज ने सदैव से अपने आपको अखिल भारतीय समाज एव भारतीय राष्ट्र का अविभाज्य अ ग समझा है और आज भी समझती है। जैन हिन्दू हैं या नही इस सम्बन्ध मे जो मतभेद है उनका कारण धर्म वैभिन्य ही है। धार्मिक एव तत्सबधित सास्कृतिक परम्परा की दृष्टि से जैन अवश्य ही हिन्दू नही है किन्तु राष्ट्रीयता एवं भारतीयता की दृष्टि से वे हिन्दू ही हैं इसमे कोई सदेह नही। उनका धर्म, सस्कृति और वे स्वय प्राचीन काल से भारत के ही मूलत. शुद्ध अधिवासी रहे हैं। वे यही जन्मे और फले फूले हैं। वे भारत के ही है और भारत उनका है।

जैन साहित्य—एक अत्यन्त प्राचीन काल से चली आई देश व्यापी सस्कृति के रूप मे जैन सस्कृति ने अखिल भारतीय सस्कृति की धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान, राजनीति, समाज-व्यवस्था, रीति रिवाज एव आचार-विचार इत्यादि विविध शाखाओ को अनगिनत, अमूल्य एव स्थायी महत्त्व की देनें प्रदान की है। ज्ञान सवर्द्धन एव साहित्य निर्माण के क्षेत्र मे ही जैनो ने प्राचीन व अर्वाचीन विभिन्न भारतीय भाषाओ मे विविध विषयक विपुल साहित्य का सृजन करके, भारती के भंडार को सुसमृद्ध एव समलकृत किया है। सस्कृत साहित्य को जैन विद्वानों की देनें साधारण नही है, किन्तु उन्होंने प्राचीन काल से प्राकृत एव तत्पश्चात् अपभ्र श जैसी अपने-अपने समय की लोक भाषाओ को विशेषकर इसी कारण अपनाया और साहित्य का माध्यम बनाया जिससे कि सर्व साधारण उक्त रचनाओ का लाभ उठा सके। इसी उद्देश्य को लक्ष्य बनाते हुए उन्होने विभिन्न प्रान्तीय, देसी भाषाओ मे ग्र थ रचनाए करके उक्त भाषाओ के विकास मे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योग दान दिया। तामिल भाषा के प्राचीन 'सगम' साहित्य का पर्याप्त एव श्रेष्ठतर भाग जैन विद्वानो की ही कृति है, और कनाडी-भाषा का तो-तीन चौथाई से अधिक साहित्य जैनो द्वारा ही निर्मित हुआ है। गुजराती एव राजस्थानी-भाषाओ के साहित्य की जैनो द्वारा

महती अभिवृद्धि हुई और तैलगु, मलयालम्, मराठी, उडिया, बगाली, विहारी गुरुमुखी आदि प्राय प्रत्येक प्रान्तीय भाषा मे अल्पाधिक जन साहित्य उपलब्ध है। आधुनिक देसी भाषाओ की जननी अपभ्र श पर तो जैनो का प्राय स्वाधिकार सा रहा ही था, हिन्दी की भी प्राचीनतम ज्ञात एव उपलब्ध रचनाए जैनो की ही प्रतीत होती हैं। पुरातन हिन्दी के गद्य-पद्य साहित्य का एक बडा अ श जैन प्रणीत है, और वह कोई साधारण अथवा उपेक्षणीय कोटि का भी नही है। व्यापार की प्रधान सकेत लिपि 'मु डिया' मे एकमात्र साहित्यिक रचना अभी जैनों की ही उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त उर्दू, फारसी, अ गरेजी, जर्मन, फ्रेन्च, इटालियन आदि भाषाओ मे भी जैन साहित्य विद्यमान है।

जहा तक लेखन शैली का प्रश्न है, जैन साहित्यकारो ने विभिन्न भाषाओ की गद्य पद्यमयी अनेक नवीन शैलियो का आविष्कार किया और प्राय सर्व ही प्रचलित शैलियो को अपनाया एव विकसित किया। मुक्तक एव स्फुट काव्य, खण्ड काव्य, महा काव्य, नाटक, चम्पू, आख्यान उपाख्यान, चारित्र पुराण, ऐतिहासिक, कल्पित, घटनात्मक, नीत्यात्मक, वर्णनात्मक अथवा भावात्मक, सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, निर्यु क्ति, चूर्णि, टीका टिप्पणि, भाष्य व्याख्या, वैज्ञानिक विवेचन, से युक्त निवध प्रवध, रासा विलास, ढमाल चौपई, स्तुति स्तोत्र, पद भजन प्राय सर्व ही प्राचीन अर्वाचीन शैलियो मे रचनाए की तथा विभिन्न प्रचलित एव नवीन छन्दो, रस अलकार आदि का सफल प्रयोग किया। आधुनिक जैन साहित्यकार भी वर्तमान मे प्रचलित सभी शैलियो का सफल प्रयोग कर रहे हैं। यद्यपि जैन साहित्य की सृष्टि मे प्रधानतया धार्मिक प्रकृति ही कार्य करती रही है तथापि उसके सृजको ने उसे लोकरजक एव लोकोपयोगी बनाने का भी यथाशक्य प्रयत्न किया और वे इसमे सफल भी हुए। भाषा एव शैली के सुचारू एव उपयुक्त चुनाव के द्वारा उन्होंने अत्यन्त शुष्क एव नीरस विषयो और प्रसगो को भी रुचिकर, पठनीय, सुबोध एव सर्व ग्राह्य बनाने का प्रयत्न किया।

जैन श्रमण सस्कृति निवृत्ति प्रधान है, अतएव स्वभावत उसके साधको एव उपासको द्वारा निर्मित साहित्य सामान्यत वैराग्यमयी, चारित्र प्रवण और

शान्त रस प्रधान रहा, तथापि प्राय प्रत्येक लोकोपयोगी एव समयापयुक्त विपय पर इन विद्वानो ने अपनी प्रमाणीक लेखनी का चमत्कार दिखलाया। धर्म-शास्त्र, तत्व ज्ञान, आचार शास्त्र, पुराण चारित्र, पूजा प्रतिष्ठा पाठ, स्तुति स्तोत्र आदि विविध धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त काव्य, नाटक, चम्पू, कथा साहित्य, जीवन चरित्र, आत्म चरित्र, इतिहास, राजनीति, नीत्योपदेश, समाज शास्त्र, दर्शन, अध्यात्म, न्याय, तर्क, छन्द, व्याकरण, अलकार, काव्य शास्त्र, कोप, भाषाविज्ञान, मन्त्र शास्त्र, ज्योतिप, सामुद्रिक, वैद्यक, पशु चिकित्सा, स्थापत्य मूर्तकला एव वास्तु विज्ञान, गणित, सामान्य विज्ञान, रसायन, भौतिक, जन्तु विज्ञान, भूगोल, खगोल, रत्न परीक्षा, भ्रमण वृत्तान्त, स्थान परिचय, इत्यादि प्राय सब ही विषयो पर ग्रन्थ रचना की। इन बातो का विस्तृत परिचयात्मक विवेचन साहित्यिक इतिहास का विषय है। तथापि जैन साहित्य की विपुलता, विविधता और महत्व का बहुत कुछ अनुमान केन्द्रिय, प्रान्तीय तथा रियासती सरकारो द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज सम्बधी विभिन्न विवरण पत्रिकाओ, म्यूजियम रिपोर्टों, पुरातन पुस्तक भडारो तथा सार्वजनिक एव व्यक्तिगत सग्रहालयो के सूची पत्रो, विभिन्न स्थानीय दिगम्बर श्वेताम्बर जैन ग्र थ भण्डारो की उपलब्ध सूचियो तथा जैन पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित तत्सम्बधी फुटकर लेखादिको से हो जाता है। इस प्रकार ऐसे बीसियो सहस्त्र जैन ग्रन्थो का पता चलता है जो उपलब्ध हैं। जिसपर अनेक प्राचीन जैन ग्रन्थ भडार, विशेषकर दिगम्बर सम्प्रदाय के, अभी तक बन्द ही पडे हुए हैं। उनमे कितने, कैसे और क्या-क्या साहित्य रत्न छिपे पडे है यह कहा भी नही जा सकता। जो भडार खुल गये हैं उनमे से भी कितनो की ही कोई व्यवस्थित सूची निर्मित एव प्रकाशित नही हो पाई हैं। वैसे तो प्राय प्रत्येक नगर, कस्बे और ग्राम मे जहा जैनियो की थोडी बहुत भी आबादी है तथा देश भर मे यत्र तत्र फैले हुए बहुसख्यक जैन तीर्थों मे से प्रत्येक पर एक वा अधिक जिन मन्दिर प्राय अवश्य ही विद्यमान है और प्राय प्रत्येक जिनालय अथवा उपाश्रय आदि मे छोटा बडा एक शास्त्र भडार भी अवश्य ही होता है जिसमे कि ताडपत्रीय, भोजपत्रीय अथवा कागज आदि अल्पाधिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का ही सग्रह प्राय:

रहता है । कितने ही जैन कुटुम्ब भी ऐसे हैं जिनके पूर्वजो मे साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले विद्वान होते रहे हैं और उक्त विद्वानो द्वारा सग्रहीत लिखित अथवा रचित कितने ही ग्रथ वपौती के रूप मे चले आये उनके वशजो के पास आज भी सुरक्षित हैं, और जिनका सदुपयोग वे लोग चाहे भले ही न कर सके, किन्तु किसी अन्य को देना क्या कभी भी दिखाने मे भी सकोच करते हैं। इस प्रकार के असख्य फुटकर जैन शास्त्र भडारो का कोई व्यवस्थित या अव्यवस्थित भी अन्वेषण अभी तक हुआ ही नही और उनमे एक अकस्मात् दर्शक को वहुधा कितनी ही महत्वपूर्ण एव अलभ्य साहित्यिक सामग्री का दर्शन हो जाता है। अभी हाल मे ही काशी नागरी प्रचारणी सभा के अन्वेषक श्री दौलतराम जुआल के प्रसग से लखनऊ के केवल एक ही दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भडार के कुछ मात्र हिन्दी हस्तलिखित ग्रथो का निरीक्षण करने का सुयोग मिला था। परिणाम स्वरूप कई एक अधुना अज्ञात हिन्दी के प्राचीन जैन साहित्यकारो और उनकी कृतियो का पता चला तथा कई एक अन्य ज्ञात प्राचीन साहित्यिको के ऐतिह्य पर महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाश पडा ।

ग्रन्थ सूची—जैन ग्रथो की 'वृहट्टिप्पणिका' नामक एक प्राचीन ग्रथसूची पहिले से ही विद्यमान थी और आधुनिक युग मे भी कई स्वतन्त्र ग्रथसूचियें प्रकाशित हो चुकी है। जैन श्वेताम्वर कान्फ्रेन्स ने 'जैन ग्रथ नामावली' नामक एक सूची प्रकाशित की थी और पाटन, जैसल्मेर, सूरत, अहमदावाद, लीवडी आदि स्थानो के श्वेताम्वर ग्रथ भडारो की व्यवस्थित सूचियें प्रकाशित हो चुकी हैं। दिगम्वर सूचियो मे सर्व प्रथम ग्रथ सूची जयपुर निवासी वावा दुलीचन्द श्रावक के अपने मन्दिर मे स्थित शास्त्र भडार की थी। जिसे उन्होंने 'जैन शास्त्र माला' के नाम से सन् १८९५ ई० मे प्रकाशित किया था। सन् १९०१ मे लाहौर निवासी वा० ज्ञान चन्द्र जैनी ने 'दिगम्वर जैन भाषा ग्रथ नामावली' नाम से एक अन्य सूची प्रकाशित की। सन् १९०५ मे फ्रान्सीसी विद्वान डाक्टर ए० गिरनोट ने अपनी 'जैना विवलियोग्रेफिका' (फ्रान्सीसी भाषा मे लिखित) मे ज्ञात वहुसख्यक जैन ग्रथो की सूची दी । ऐलक

पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, वम्बई, की सन् १९२३ से १९३२ तक प्रकाशित ६ वार्षिक रिपोर्टो मे उक्त भडार मे सगृहीत हस्तलिखित ग्रथो की परिचयात्मक सूचियें प्रकाशित हुई। इसी भवन की झालरापाटन स्थित शाखा की ग्रथ सूची भी 'ग्रथ नामावली' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। वीर सेवा मन्दिर, सरसावा से प्रकाशित मासिक अनेकान्त की विभिन्न किरणो मे दिल्ली के कई वडे वडे ग्रथ भडारो की सूचिये तथा सोनीपत, इन्दौर, नागौर आदि के भी कुछ भडारो की सूचियें मे प्रकाशित हो चुकी हैं। उपरोक्त वीर सेवा मन्दिर मे कई एक दिगम्बर ग्रथ भडारो के लगभग ६००० अप्रकाशित तथा अन्य सूचीयो मे न दिये हुए हस्तलिखित ग्रथो की प्रमाणिक परिचयात्मक सूची के प्रकाशन की योजना चल रही है। अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र कमेटी, जयपुर ने आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध प्राचीन भडार की तथा स्वय महावीर जी क्षेत्र (चाँदन गाँव, जयपुर) के भडार की सयुक्त ग्रथ सूची पुस्तकाकार प्रकाशित की है। इतना ही नही किन्तु महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से श्री प० कस्तूर चद काशलीवाल एम० ए० ने जयपुर के शास्त्रभडारो से दो ग्रन्थ सूचिये तैयार की और एक जैन ग्रन्थ प्रशास्ति संग्रह तैयार किया जो उस क्षेत्र कमेटी के द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं। आगे और भी ग्रथ भडारो की सूचियो के निर्माण का कार्य चालू हो रहा है। इसके सिवा धर्मपुरा, दिल्ली, नये मन्दिर के सचालको की ओर से प परमानन्द शास्त्री उक्त मन्दिर के शास्त्र भडार की सूची वना रहे हैं जो प्राय तय्यारी के लगभग है, उसका प्रकाशन भी जल्दी ही होगा। दक्षिण कर्णाटकस्थ मूडवद्री आदि के वृहत् जैन भडारो मे सग्रहीत कन्नडी ग्रथो की श्री प० के० भुजवलि शास्त्री द्वारा सुसम्पादित एक वृहत्सूची भारतीय ज्ञान पीठ, काशी से प्रकाशित हुई है। यत्र तत्र अन्य भडारो की सूचियें प्रकाशित करने की ओर भी लोगो का ध्यान आकर्पित हो रहा है। किन्तु इस दिशा मे अब तक का सर्वाधिक महत्व-पूर्ण एव प्रमाणीक प्रयत्न विल्सन कालिज, वम्बई के विद्वान प्रोफेसर डा० हरि दामोदर वेलङ्कर द्वारा सम्पादित "जिनरत्न कोष" है। इस ग्रथ का प्रका-

शन सन् १६४४ ई० मे भडारकर ओरियटल रिसर्च इस्टीट्यूट, पूना द्वारा 'गवर्नमेंट ओरियटल सीरीज, क्लास 'सी' न० ४ के रूप मे हुआ है। इस ग्रंथ मे जो कि लीपजिग (जर्मनी) से प्रकाशित टी० आफेक्ट के सुप्रसिद्ध ग्रथ 'कैटेलोगस कैटेलोगोरम' की शैली पर निर्मित हुआ है, विद्वान सम्पादक ने १२१ विभिन्न रिपोर्टो, ग्रथ सूचियो, सूचीपत्रो आदि के आधार पर लगभग दस हजार जैन ग्रथो का तथा उनकी विभिन्न ज्ञात प्रतियो का सक्षिप्त परिचय अकारादि क्रम से दिया है। इस कोष मे दिगम्बर, श्वेताम्बर व उभय सम्प्रदायो के ग्रंथो को समान रूप से समाविष्ट किया गया है। किन्तु जैसा कि विद्वान सम्पादक ने ग्रथ के प्राक्कथन मे स्वय स्वीकार किया है, वे दिगम्बर साधन सामग्री का अत्यल्प उपयोग ही कर पाये। इसी कारण से उक्त कोष मे समाविष्ट दिगम्बर ग्रथ सख्या मे भी कम हैं, उनकी विवेचित प्रतियें भी न्यूनतर है और उनका परिचय अपेक्षाकृत अधिक न्यूनतर होने के साथ ही साथ कही कही त्रुटित एव दोषपूर्ण भी है।

प्रशस्ति आदि—उपरोक्त ग्रन्थ सूचियो के अतिरिक्त, जैन ग्रन्थो के आदि अथवा अन्त मे पाई जानेवाली उनके रचियताओ, टीकाकारो, प्रतिलेखको, दातारो आदि की प्रशस्तियो के भी कई सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, यथा मुनि श्री जिनविजय द्वारा सम्पादित 'जैन पुस्तक प्रशस्ति सग्रह,' जैन सिद्धान्त भवन आरा से प्रकाशित 'प्रशस्ति सग्रह,' तथा वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली द्वारा निर्मित दो जैन ग्रन्थ प्रशस्ति सग्रह जिनमे से एक मे सस्कृत प्राकृत ग्रन्थो की प्रशस्तियें सकलित हैं और दूसरे मे अपभ्रश ग्रन्थो की। श्री महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी (जयपुर) भी आमेर भडार के ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियो का एक सग्रह प्रकाशित करा रही है। किन्तु अभी तक हिन्दी जैन ग्रन्थो की प्रशस्तियो का सकलन करने की ओर किसी का ध्यान नही गया है। मेरे स्वय के अवलोकन मे अबतक लगभग ५०-६० ऐसी प्रशस्तियें आ चुकी हैं जिनके प्रकाशन से न केवल हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास पर ही वरन मध्य कालीन भारत के राजनैतिक एव सास्कृतिक इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश पडने की

पर्याप्त सभावना है । अपने ऐतिहासिक महत्त्व के अतिरिक्त ये ग्रन्थ प्रशस्तिये तत्तद ग्रन्थो, उनके कर्त्ताओ, उक्त ग्रन्थो की प्रतियो आदि से सम्बन्धित जानकारी के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है ।

साहित्यिक इतिहास—जैन साहित्य की अतीत कालीन प्रगति और इतिहास पर अभी तक कोई भी एक पूर्ण एव प्रमाणिक ग्रन्थ निर्मित नही हुआ है । भारतीय साहित्य के सामान्य इतिहास में, हिन्दी सस्कृत आदि भाषाओ के साहित्य से सम्बधित अथवा दर्शन, कला, विज्ञान आदि विविध विषयक साहित्य के इतिहास ग्रन्थो मे, किसी भी कारण से क्यो न हो, प्राय जैन साहित्य की उपेक्षा ही की जाती रही है। प्रथम तो इन पुस्तको मे जैन साहित्य का कोई उल्लेख ही नही रहता, और यदि किसी किसी मे रहता भी है तो अत्यल्प, सक्षिप्त, गौण और बहुधा त्रुटिपूर्ण भी । उसे कोई महत्त्व भी नही दिया जाता और न साहित्यक विकास मे उसके उपयुक्त स्थान पर कोई प्रकाश डाला जाता है । किन्तु विभिन्न भाषाओ मे रचित जैन साहित्य के इतिहास पर जो कुछ थोडा बहुत साहित्य अब तक प्रकाशित हो चुका है वही पढकर उसके वास्तविक महत्त्व तथा भारतीय साहित्य मे उसके सम्माननीय स्थान का बहुत कुछ अनुमान हो जाता है । जैन साहित्य के इतिहास विषय पर निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं—प० नाथूराम प्रेमीकृत 'दिगम्बर जैन ग्रन्थ कर्त्ता और उनके ग्रन्थ,' 'हिन्दी जैन साहित्य का सक्षिप्त इतिहास,' 'कर्णाटक जैन कवि,' 'जैन साहित्य और इतिहास'। श्रीयुत आर-नरसिंहाचार्य कृत 'कर्नाटक कवि चरितें' श्री मोहनलाल देसाई कृत 'गुर्जर कवि'-२ भाग, प्रो० ए० सी० चक्रवर्ती कृत 'जैन लिटरेचर इन तामिल' । श्री मूलचन्द वत्सल कृत जैन कवियो का इतिहास,' बाबू कामताप्रसाद कृत 'हिन्दी जैन साहित्य का सक्षिप्त इतिहास ।' राजस्थानी भाषा के जैन साहित्य पर श्री अगरचन्द नाहटा ने अच्छा कार्य किया है। हिन्दी के पुरातन जैन गद्य साहित्य पर हम स्वय एक पुस्तक लिख रहे हैं । इन पुस्तको के अतिरिक्त सुयोग विद्वानो द्वारा सम्पादित प्राचीन ग्रन्थो के आधुनिक सस्करणो की विद्वत्ता पूर्ण

विस्तृत प्रस्तावनाओ मे, गत वर्षो मे प्रकाशित विभिन्न जैन अभिनन्दन ग्रन्थो मे, जैन हितैषी, जैन साहित्य सशोधक, जैन विद्या आदि भूत कालीन सामायिक पत्रो की फाइलो मे तथा जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त, जैन सत्यप्रकाश, वीरवाणी आदि वर्तमान पत्र पत्रिकाओ मे फुटकर लेखो के रूप मे जैन साहित्य और उसके इतिहास से सम्वन्धित विपुल सामग्री विखरी पडी है। अग्रेजी प्रभृति विदेशी भाषाओ मे जैन सम्वधी साहित्य के स्वरूप एव प्रगति का ज्ञान डा० ए० गिरनोट (Dr A Guirnot) कृत 'जैना विवलियोग्रेफिका,' रा० वावू पारसदास द्वारा सम्पादित 'जैन विवलियोग्रेफी,' न० १ तथा वावू छोटेलाल जी कृत 'जैन विवलियोग्रेफी' से हो सकता है। किन्तु इन पुस्तको में सन् १९२५ के उपरान्त का विवरण नही है। जैन कथा साहित्य पर डा० जे० हर्टल का कार्य श्लाघनीय है।

साहित्य के इतिहास और प्राचीन ग्रन्थो तथा ग्रन्थ प्रतियो के परिचय से जहाँ वर्तमान युग की वहुज्ञता वढती है तथा विद्वानो एव अन्वेषको को अपने कार्य मे भारी सहायता मिलती है वहाँ उनके कारण वर्तमान प्रकाशन प्रगति को भी भारी प्रोत्साहन मिलता है। साहित्यक क्षेत्र को समुन्नत एव प्रगतिशील वनाने के लिए युगानुसारी मौलिक ग्रन्थ रचना और उनका प्रकाशन तो आवश्यक है ही, प्राचीन अप्रकाशित ग्रन्थ रत्नो के आवश्यक अनुवादादि सहित सुसम्पादित सस्करणो का प्रकाशन भी अतीव आवश्यक एव वाञ्छनीय है। जो साहित्य शताव्दियो और सहस्त्राव्दियो से कराल काल को चुनौती देता हुआ अपने लोक हितकारी अथवा लोकरजक रूप और स्थायी महत्त्व के कारण अक्षण्ण रहता चला आया है, अपनी इस अत्यन्त मूल्यवान वपौती का सरक्षण, प्रचार, प्रसार एव सदुपयोग करना वर्तमान सन्तति का प्रधान कर्तव्य है। इस प्रकार न केवल तत्तद् सस्कृति की धारा अनवरोध रूप से प्रवाहित होती चली जायगी वरन उसके पुनीत जल मे निमज्जन करते रहने से मानव समाज सदैव अपना कल्याण करता रहेगा, उसे नव स्फूर्ति प्राप्त होती रहेगी और उसे अपना जीवन पथ-प्रशस्त रखने मे सहायता मिलेगी।

मुद्रण कला का प्रभाव—अस्तु छापेखाने के प्रचार के पश्चात् भारतवर्ष मे जब से साहित्य का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है, विशेषकर जैन समाज मे तब ही से प्राचीन ग्रन्थो के प्रकाशन का ही बाहुल्य रहा है। उत्तरोत्तर उत्कृष्टत्तर यान्त्रिक अविष्कारो को प्रसूत करने वाले इस यन्त्र प्रधान युग मे साहित्य का मुद्रण एव प्रकाशन भी अधिकाधिक शीघ्रता एव विपुलता के साथ वृद्धि को प्राप्त होता रहा है। विविध प्रकार के बहुसख्यक शिक्षालयो की स्थापना के साथ साथ मुद्रित ग्रथो के अल्प मूल्य मे सहज सुलभ होने के कारण साक्षरता, शिक्षा, बहुविज्ञता एव पठनाभिरुचि अधिकाधिक व्यापक होती जा रही है। विभिन्न प्रकार के असख्य पुस्तकालयो तथा अनगिनत सामयिक पत्र पत्रिकाओ के द्वारा उन्हे भारी प्रोत्साहन मिल रहा है। आज यह समस्या नही है कि 'पुस्तके तो है ही नही, पढे क्या और कैसे ? आज तो वास्तविक कठिनाई यह है कि पुस्तकें तो प्रत्येक स्थान मे सहज सुलभ हैं,' और बहुसख्या मे, उन सब ही को पढ लेना असभव सा है, और आवश्यक अथवा उपयोगी भी नही है। तब अपने लिए उनका किस प्रकार चुनाव करे, उनमे से कौन-कौन सी को पढें और किस-किस को न पढें ? मनुष्यों के बढते हुए ज्ञान, शिक्षा एव साहित्यिक सस्थाओ की सख्या वृद्धि शिक्षा प्रणाली के द्रुत विकास तथा मानव जीवन की अत्यन्त वेग के साथ वृद्धि, को प्राप्त होती हुई आवश्यकताओ और विषमताओ के कारण साहित्यगत विषय भी सख्यातीत होते जा रहे हैं। अपनी-अपनी रुचि, आवश्यकता एव साधनो के अनुसार पृथक-पृथक विषय मे विशेषज्ञता प्राप्त करना आवश्यक होता चला जा रहा है।

पुस्तक सूची की आवश्यकता—इन सब कारणो से आज मुद्रित प्रकाशित पुस्तको की परिचयात्मक सूचियो की आवश्यकता एव उपयोगिता बहुत अधिक हो गई है। प्रगतिशील पाश्चात्य भाषाओ के साहित्य के सबध मे ऐसी अनेक सूचियें विद्यमान हैं और निर्मित होती रहती हैं। दूसरे उनके प्रकाशको के सूची पत्र भी इतने सारपूर्ण और प्रमाणीक होते हैं—विषय विशेष सम्बन्धी

साहित्य के प्रकाशक भी बहुधा प्रथक-प्रथक हैं—कि उक्त व्यवसायिक सूचीपत्रो से ही तत्सम्बन्धी आवश्यकता की अधिकाश पूर्ति हो जाती है। किन्तु भारतवर्ष के और विशेपकर हिन्दी के प्रकाशको की अवस्था इससे नितान्त भिन्न है। यहाँ विशेपज्ञता को कोई महत्त्व नही दिया जाता, प्रकाशक अनगिनत हैं किन्तु उनमे सुव्यवस्था और सगठन का सर्वथा अभाव है। उनके सूचीपत्र मात्र व्यवसायिक दृष्टि से प्रेरित सस्ती विज्ञापन बाजी के नमूने भर होते हैं अत पर्याप्त दोप पूर्ण भी होते हैं। उनसे पुस्तक विशेष का वास्तविक, ठीक-ठीक तथा पूर्ण परिचय प्राप्त नही होता। ऐसे सब ही प्रकाशित सूचीपत्रो का प्राप्त करना भी दुष्कर है, हिन्दी की सभी प्रकाशित पुस्तको की यथार्थ जानकारी भी उनसे नही हो सकती। अतएव हिन्दी की पुस्तको की एक ऐसी सार्वजनिक सूची की आवश्यकता थी जिससे हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन के स्वरूप, प्रगति, इतिहास, त्रुटियो और आवश्यकताओ का ज्ञान हो सके। इस अभाव की पूर्ति अनेक अशो मे प्रयाग विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० माता प्रसाद जी गुप्त द्वारा सम्पादित तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग द्वारा हाल मे ही प्रकाशित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक ग्रन्थ से हो जाती है। इस पुस्तक मे विद्वान सम्पादक ने एक विस्तृत महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना के अतिरिक्त लगभग ५,५०० मुद्रित प्रकाशित हिन्दी पुस्तको की सक्षिप्त परिचयात्मक अनुक्रमणिका दी है, जिसमे प्राचीन अर्वाचीन, मौलिक,एव टीका अनुवादादि, धार्मिक, सम्प्रदायिक (अधिकांशत वैदिक परम्परा के ही हिन्दू समाजगत विभिन्न सम्प्रदायो से सम्वन्धित), लौकिक विविध विषयक, छोटी-बडी, महत्त्वपूर्ण तथा अति सामान्य कोटि की साधारण-प्राय सर्व ही हिन्दी सस्कृत पुस्तकें सम्मिलित हैं। स्कूली पाठ्यक्रम की साधारण पुस्तकें, पारसी थ्येटर कम्पनियो मे खेले जाने वाले सस्ते नाटक, सिनेमा के गायन आदि की पुस्तकें, पुराने ढग के साग, ख्याल, नौटकी, आल्हा, आदि की पुस्तकें तथा फुटकर वा अज्ञात ट्रैक्ट आदि छोड दिये गये हैं। साथ मे युग-विभाजनगत विपयानुसार पुस्तकानुक्रमणिका तथा लेखकानुक्रमणिका से पुस्तक की उपयोगिता और अधिक बढ गई है।

सामान्य भारतीय तथा हिन्दी पुस्तक प्रकाशन के प्राय सर्व दोष तो इसमे बढे चढे रूप मे पाये ही जाते, उनके अतिरिक्त कई एक अन्य त्रुटियाँ भी है। जैन पुस्तक प्रकाशन अभी तक एक लाभदायक व्यवसाय नही वन पाया है। उसके यथोचित सुविकसित एव सुव्यवस्थित होने मे अनेक वाधक कारण रहे हैं। जैन सस्कृति जैसी सर्वागीण है, उसके दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान जैसे सुविकसित, उत्कृष्ट और व्यापक हैं, उनके विशेपाध्ययन, शोध खोज एव अनुसधान के लिए एक केन्द्रीय-जैन विश्व विद्यालय का होना अत्यन्त आवश्यक था। ऐसे एक विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए कई वार कुछ आन्दोलन भी चले, लगभग २५—३० वर्प पूर्व वर्णीत्रय-पूज्य प० गणेश प्रसाद जी वर्णी, स्व० वावा भागीरथ जी वर्णी तथा स्व० प० दीपचद्र जी वर्णी ने जैन विश्वविद्यालय की स्थापना का बीडा उठाया था, किन्तु समाज से उपयुक्त सहायता सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे। भारतवप के विद्यमान विश्व-विद्यालयो मे भी जैनाध्ययन की कोई साधन सुविधाए नही हैं। वनारस के जैन कलचरल रिसर्च इन्स्टीटयूट द्वारा श्वेताम्वर वन्धु गत दो तीन वर्पो से इनमे से कुछ विश्व विद्यालयो मे जैन रिसर्च फेलोशिप स्थापित करने की ओर प्रयत्न शील है, किन्तु इस कार्य मे उन्हे दिगम्वर समाज का प्राय कोई सहयोग प्राप्त नही है। ज्ञानोदय मासिक मे एकाध वार इस योजना का समर्थन तो किया गया, किन्तु सेठ शान्ति प्रसाद जी द्वारा साहित्यिक-कार्यो के लिए स्थापित ट्रस्ट के प्रवधको ने भी कोई सक्रिय उपक्रम इस दशा मे अभी तक नही किया, यद्यपि यह उनके लिए सहज था। कोई ऐसा उत्कृप्ट जैन कालिज भी विद्यमान नही है जिसमे जैनालॉजी का एक पृथक विभाग हो और जैनाध्ययन की समुचित साधन सुविधाए हो। जैन कालिजो और स्कूलो की सख्या भी कुछ कम नही है, किन्तु वे नाम मात्र के लिए ही जैन हैं, अर्थात् वे केवल इसी कारण जैन नामाकित है क्योकि वे जैनो द्वारा उन्ही के धन से स्थापित और उन्ही के उद्योग से सचालित हैं। किन्तु उनके पाठ्यक्रम मे जैन साहित्य और सस्कृति का किसी प्रकार का कोई स्थान नही है। इसके अध्ययन अध्यापन के लिए उनमे कोई साधन सुविधाए नही हैं। उनके पुस्तकालयों मे बिना मूल्य, भेंट,

या दानादि द्वारा जैन पुस्तकें और पत्र पत्रिकाए भले ही आ जाय किन्तु उनके ऊपर कुछ व्यय करने की अथवा उनका सग्रह करने की कोई प्रवृत्ति नही है और न कोई आवश्यकता ही समझी जाती है। उनमे अध्ययन करने वाले विद्यार्थियो की जैन साहित्यादि के अध्ययन मे अभिरुचि और आकर्षण तो तब हो जबकि उनके अध्यापको मे से भी कुछ की हो। यही दशा जैन छात्रावासो—जैन वोर्डिंग हाउसो और होस्टलो की है।]

यह ठीक है कि वर्तमान युग धर्म स्वातन्त्र्य और असाम्प्रदायिकता का है अतएव सार्वजनिक लौकिक शिक्षा में किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय विशेष की धार्मिक शिक्षा का सम्मिलित किया जाना उचित नही समझा जाता, वरन् न्याय विधान द्वारा उत्तरोत्तर वर्जित किया जा रहा है। किन्तु किसी सस्कृति और तत्सम्वधित लोकोपयोगी साहित्य एव विचार धारा का अध्ययन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक कदापि नही कहला सकता। जब वेदो, उपनिषदो, हिन्दू धर्म शास्त्रो और पुराणो का, वैदिक परम्परा के न्याय, मीमासा, साख्य वैशेषिक आदि षट् दर्शनो का, निर्गुण सगुण सम्प्रदायो और मध्यकाल के विभिन्न सन्त-मतो का तथा धर्म सुधार आन्दोलनों का, वौद्ध दर्शन और सस्कृति का, इस्लाम के इतिहास और परम्परा का, क्रिश्चियन थियोलाजी का अध्ययन अध्यापन जो कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे स्वीकृत है, साम्प्रदायिक धार्मिक नही समझा जाता तो फिर जैनोलाजी का, जैन सस्कृति-दर्शन, साहित्य और इतिहास का अध्ययन अध्यापन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक क्यो समझा जाय और भारत के सास्कृतिक अध्ययन मे उसी की उपेक्षा क्यो की जाय। अवश्य ही उसे अनिवार्य विषय न वनाकर ऐच्छिक या वैकल्पिक विषय वनाया जा सकता है।

उपरोक्त जैन कालिजो, स्कूलो, छात्रालयो आदि के लिए जिन स्थानो मे ये सस्थाए स्थित होती है, उनकी स्थानीय जैन समाज से तो भरसक द्रव्य एकत्रित किया ही जाता है, देश के अन्य विभिन्न प्रान्तो और स्थानो की जैन समाज से भी पर्याप्त द्रव्य सग्रह किया जाता है। इस द्रव्य प्राप्ति के लिए समाज से जो लिखित अथवा मौखिक अपीले की जाती है उनमे सर्वाधिक वल इसी वात

पर दिया जाता है कि विकसित जैन सस्था जैनत्व की प्रभावना के लिए ही विद्यमान है, जैन धर्म, सस्कृति और साहित्य की अथक सेवा करना ही उनका व्रत है अत जैनो का कर्तव्य है कि उसके लिए यथा शक्य द्रव्य दान देकर विद्या दान का पुण्य लूटें। किन्तु यह सब वाग्जाल और धोका है, इन सस्थाओ मे से प्राय किसी ने भी अब तक कम से कम अपनी ओर से जैन साहित्य और सस्कृति की कुछ भी सेवा नही की है। उनसे जैन साहित्य के लौकिक अ श के भी पठन पाठन और प्रकाशन को कोई प्रोत्साहन नही मिला है।

जो जैन सस्कृत विद्यालय हैं उनसे भी जैन साहित्य के सवर्धन मे विशेप सहायता नही मिल रही है, उनके कुछ फुटकर स्नातक व्यक्तिगत रूप से जैन साहित्य की अवश्य ही प्रशसनीय सेवा कर रहे हैं, पर वह अति सीमित और एकाँगी ही है। जैन समाज मे कई एक परीक्षा बोर्ड हैं, किन्तु उनके पठन-क्रम बहुत सीमित और रूढ हैं, उनके वैकल्पिक विषय अत्यल्प सख्यक हैं, इतिहास पुरातत्त्व और सस्कृति जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय भी उनमे सम्मिलित नही हैं, तुलनात्मक अध्ययन की कोई व्यवस्था नही है। इसके अति-रिक्त उनके अधिकारीगण जो जैसी पुस्तकें उपलब्ध हैं उन्ही को अपने पठनक्रम मे रखकर सतोप कर लेते हैं। पठनक्रम के उपयुक्त नवीन पुस्तको के निर्माण कराने मे वे प्रवृत्त ही नही होते।

जैन साहित्य का बाह्य जैनेतर समाज मे सम्यक् प्रचार करने की जैनो की दिली प्रवृत्ति ही प्रतीत नही होती अतएव उसके लिए उपयुक्त साधन भी नही जुटाये जाते। कितना ही सुन्दर, लोकोपयोगी या लोकरजक तथा प्रमाणीक प्रकाशन हो, सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओ मे उसके विज्ञापन, समालोच-नाए आदि निकलवाने की ओर कोई ध्यान नही दिया जाता। अजैन उसे एक साम्प्रदायिक रचना मान कर उपेक्षणीय समझते हैं और जैन उसे दूसरो को दिखाने की आवश्यकता नही समझते।

देश मे यत्र तत्र अनेक सार्वजनिक जैन पुस्तकालय एव वाचनालय भी खुलते जा रहे हैं, किन्तु उनमे भी जैन कालिजो और स्कूलो आदि की भाति

जैन पुस्तको और पत्र पत्रिकाओ को क्रय करके सग्रह करने की आवश्यकता नही समझी जाती, बल्कि सस्ते, जासूसी, ऐयारी, घटना प्रधान अथवा रोमाचक उपन्यास कहानियो के ही सग्रह को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

जैन साहित्य के स्वरूप का सम्यक् प्रचार न होने से नवयुवक विद्यार्थी वर्ग तथा पठनाभिरुचि रखने वाले वयस्क व्यक्ति भी पहले से ही यह मान बैठे हैं कि पठन क्रमान्तर्गत विषयो की दृष्टि से, लौकिक ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से, जीवन सम्बधी दैनिक आवश्यकताओ की दृष्टि से अथवा मनोरजन की दृष्टि से जैन साहित्य एक निरर्थक-बेकार की वस्तु है, उसका यदि कोई मूल्य है तो केवल धार्मिक है सो भी श्रद्धालुओ के लिये ही। और एक औसत व्यक्ति वास्तव मे इस दृष्टि को कोई विशेष महत्त्व नही देता, जो कुछ महत्त्व देता है वह रिवाजन या लिहाजन अथवा नाम और पुण्य दोनो एक साथ कमाने की ही नियत से देता है। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि जैन साहित्य में किसी भी अन्य साम्प्रदायिक साहित्य की अपेक्षा-और पुरातन भारतीय साहित्य का अधिकाश किसी न किसी सम्प्रदाय से ही सम्बन्धित है—उपरोक्त लोकतत्त्वो का बाहुल्य ही पाया जाता है। उसकी सहायता से पठनक्रमान्तर्गत अधिकाश विषयो को भी सवर्द्धित किया जा सकता है। यहा तक कि उसके गूढ सैद्धान्तिक एव दार्शनिक मन्तव्यो की भी कैसी, समयानुसारी, लौकिक एव व्यावहार्य व्याख्या की जा सकती है यह बात भारतीय ज्ञानपीठ, काशी से हाल मे ही प्रकाशित तथा काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर महेन्द्रकुमार जी द्वारा लिखित तत्त्वार्थवृत्ति की प्रस्तावना मे 'सम्यग्दर्शन' के विवेचन से सहज अनुमानित की जा सकती है। किन्तु जैन साहित्य के लोकरूप का अभी प्रचार ही नही हुआ, यद्यपि वर्तमान जैन पत्र-पत्रिकाओ तथा नव प्रकाशित जैन साहित्य मे पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, पर उसे खरीद कर पढनेवालो का अभाव है। जैन समाज में अनेको श्रीमान ऐसे हैं जिनके यहां बहुभाग जैन पत्र-पत्रिकाए पहुचती रहती हैं प्रकाशित जैन पुस्तकें भी पर्याप्त मात्रा मे आ जाती हैं, उन

सबका मूल्य प्राय धर्मादे की रकम मे से दे दिया जाता है। किंतु इन पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओ मे से अल्पांश का भी कोई उपयोग वे श्रीमान अथवा उनके परिवार का कोई व्यक्ति शायद ही करता हो। ये चीजें प्राय फालतूमद और रद्दी की टोकरी के उपयुक्त समझ ली जाती हैं—उन्हें बिना देखे और पढे ही, हजार हजार, और दो दो हजार की जैन जनसख्या वाले स्थानो मे भी दो चार से अधिक ऐसे व्यक्ति न मिलेंगे जो मूल्य देकर जैन पत्र पत्रिकाए और जैन साहित्य मगाते हो। कितनी भी उच्च कोटि की पुस्तक हो अधिक से अधिक एक हजार छपती हैं और वही सस्करण वर्षो के लिये पर्याप्त होता है; दूसरे सस्करण की नौबत ही नही आती। अत्यन्त उच्चकोटि की पत्रिकाए निकल रही हैं किंतु पांच छ सौ सें अधिक किसी की भी ग्राहक सख्या शायद नही है। साप्ताहिक पत्रो मे से दो एक की एक हजार से कुछ ऊपर भले ही हो। इसमे दोष प्रकाशकों और पत्र सम्पादको आदि का भी है। वे स्वय अपने साहित्य और पत्रो के व्यापक प्रचार के लिये प्राय कुछ भी सुव्यवस्थित उद्योग नही करते।

इन्ही सब कारणो से जैन पुस्तक प्रकाशन, जैन पुस्तक विक्रय तथा जैन सामयिक पत्रो का व्यवसाय बहुत ही कम सफल और लाभदायक हो पाता है। अतएव व्यावसायिक जैन प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और पत्रकार अत्यल्प सख्यक हैं।

जैन लेखको की दशा—जैन लेखकों की दशा और भी बुरी है। जैन समाज मे विद्वानो, और अच्छे उच्चकोटि के लेखको की भी कोई कमी नहीं है, किंतु उपरोक्त परिस्थितियो मे कोई भी जैन विद्वान या लेखक निराकुलता पूर्वक साहित्य साधना नही कर सकता और न उसके द्वारा अपना और अपने परिवार का निर्वाह ही कर सकता है। अधिकतर लेखक तो अपनी कृतियो के लिए किसी प्रकार के पारिश्रमिक को प्राप्त करने का विचार ही नही करते, और यदि कोई कोई वैसा विचार भी रखते हैं और उसकी आवश्यकता अनुभव करते हैं तो वे उन्हें प्रकट करने का अथवा पारिश्रमिक की मांग

करने का साहस ही नही रखते, वैसा करने में बहुधा लज्जा और सकोच अनुभव करते हैं, परिणाम स्वरूप भले ही वह अपनी साहित्य साधना को त्याग दें, गौण अथवा शिथिल कर दें । बहुभाग जैन लेखक अपनी साहित्यिक अभिरुचि, साहित्य अथवा समाज सेवा की लगन या धार्मिक श्रद्धा के वश होकर अथवा केवल स्वान्त सुखाय ही लिखते हैं । उनकी साहित्य साधना मे कोई आर्थिक प्रयोजन प्राय रहता ही नही, विशेषकर इसी कारण से क्योकि वह दुष्कर है, लोकमत उसके अनुकूल नहीं है और क्योकि वैसा करने मे अपनी मान हानि के सिवाय और कोई लाभ नही दीखता । इन जैन लेखको का कोई सगठन नहीं हैं, कोई आवाज नहीं है। वे जो कुछ लिखते हैं उसके लिये वदले मे कुछ इच्छा या आकांक्षा न रखते हुए भी उसका प्रकाशन कराने मे भी वडी कठिनाई का सामना करना पडता है । एक व्यक्ति अपने जीवकोपार्जन के प्रयत्न को बाधा पहुचा कर अथवा उसके समय मे से ही जो कुछ अवकाश मिले उसमें तथा अपने स्वास्थ्य की परवाह न करके और आराम को तिलांजली देकर, स्वय ही सर्व साधन सामग्री जुटाये और परिश्रम तथा आवश्यक द्रव्यादि व्यय करके कोई पुस्तक लेखादि तैयार करे और फिर सामर्थ्य हो तो स्वय ही उसे प्रकाशित भी कराये तथा हो सके तो अमूल्य ही वितरण भी करदे, वर्न अपनी पाडुलिपि को देख देख कर खुश हुआ करे । अथवा वह किसी व्यवसायिक प्रकाशक या साहित्यिक सस्था, किसी धार्मिक या सामाजिक सभा सोसाइटी, अथवा किसी धनी मित्र अथवा रिश्तेदार की खुशामद करे । सम्भव है कि इस प्रकार उसकी रचना प्रकाशित हो जाय और यह भी सम्भव है कि सर्व प्रयत्नो के बावजूद भी वह प्रकाशित न हो । प्रकाशित होने पर उसे पुरस्कार या पारिश्रमिक मिलने की वात तो दूर है, यदि प्रोत्साहन और प्रशसा के दो शब्द तथा सूखा धन्यवाद मिल जाय तो बहुत है । जैन पत्रकार किसी भी लेखक के लेख का मूल्य, चाहे वह लेख किसी कोटि का क्यो न हो, अधिक से अधिक अपने पत्र के उस अ क की जिसमे कि उक्त लेख प्रकाशित हुआ है, एक प्रति समझते है और उसे भेजकर भी बेचारे लेखक के ऊपर एक प्रकार

का एहसान ही करते है। चाहे कितना ही महत्त्व पूर्ण लेख हो उसकी अति-रिक्त प्रतियाँ लेखक को प्रदान करने की तो प्रथा ही नही है, लेख की पहुच या स्वीकृति की सूचना देने अथवा अस्वीकृत होने पर उसे लौटा देने की तो आव-श्यकता ही नही समझी जाती। आर्थिक प्रतिदान की आशा न होने से लेखक व्यय साध्य सामग्री के सकलन एव उपयोग द्वारा अपनी रचनाओ को यथोचित प्रमाणीक, उपयोगी एव आकर्षक भी नही बना पाता। जैन समाज मे साहित्य की शोध, खोज एव निर्माण करने कराने वाली कई एक अच्छी सस्थाए भी विद्यमान है जो प्राय सार्वजनिक अथवा सामाजिक द्रव्य की सहायता से सचालित हो रही हैं और जिनके सचालन मे कोई आर्थिक अथवा व्यवसायिक प्रयोजन नही है। किन्तु क्योकि वे स्वय इस दृष्टि से- शून्य सी हैं अत. जिन - विद्वानो से वे साहित्य सृजन कराती है उन्हें भी स्वत इस दृष्टि से शून्य ही मान लेती है। ऐसी अवस्था मे सुलेखको का पर्याप्त सख्या मे सद्भाव होना और उच्च कोटि के साहित्य की सृष्टि करना दुष्कर व दुस्साध्य है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

तथापि जब प्रकाशित हो चुके तथा हो रहे जैन साहित्य पर दृष्टि जाती है तो वह किसी भी अन्य भारतीय सम्प्रदाय अथवा समाज के साहित्य की अपेक्षा मात्रा मे भी कम नही है और किसी अ श मे भी निम्नतर कोटि का नही है तथा लोकतत्त्व की प्रचुरता भी उसमे अपेक्षाकृत पर्याप्त मात्रा मे है। इसका कारण यह है कि जैन समाज मे साक्षरो और शिक्षितो की सख्या एक पारसी समाज को छोड कर सर्वाधिक है, और उसकी सामान्य दशा भी इतनी समृद्ध अवश्य है कि नितान्त भूखे और दरिद्री इसमे बहुत थोडे हैं। धार्मिक साहित्य सृजन अधिकतर धार्मिक भावना के वश ही किया और कराया जाता है। व्यव-सायिक प्रकाशको और पुस्तक विक्रेताओ के अतिरिक्त अनेक अव्यवसायिक साहित्यिक सस्थाए, ग्रन्थ मालाए, ट्रस्ट आदि तथा स्थानीय पचायतें, धार्मिक सामाजिक सभा समितियें और अनेक स्त्री पुरुष जो ज्ञानदान वा शास्त्रदान को एक आवश्यक धार्मिक कृत्य समझते हैं, व्यक्तिगत रूप से भी पुस्तकें प्रका-

शित करते कराते रहते हैं। कुछ उच्च कोटि की सस्थाओ मे तो सवैतनिक विद्वान भी साहित्यिक शोध खोज एव निर्माण कार्य करने लगे हैं। कभी-कभी पुरस्कार अथवा पारिश्रमिक देकर ठेके पर भी ये कार्य कराये जाने लगे हैं— यद्यपि ऐसे दोनो प्रकार के उदाहरण अभी अत्यल्प सख्यक ही हैं। कितने ही लेखक श्रेष्ठ विद्वान होने के साथ-साथ सुसमृद्ध भी हैं और वे निस्वार्थ भाव से उच्च कोटि के साहित्य सृजन मे पर्याप्त योगदान देते रहे हैं। ऐसे भी कितने ही उदाहरण हैं जबकि उक्त विद्वानो ने स्वय लिखा, अच्छा लिखा और बहुत लिखा और फिर अपनी सर्व या अधिकांश कृतियो को स्वद्रव्य से स्वय ही प्रकाशित करवाया अथवा अपने प्रभाव से एक वा अधिक धनी व्यक्तियो द्वारा प्रकाशित करवाया। त्यागी साधु महात्माओ के स्वप्रयत्न अथवा प्रभाव और प्रेरणा से भी बहुत सा साहित्य निर्मित और प्रकाशित होता रहता है।

वास्तव मे जैन समाज प्रधानतया दिगम्बर और श्वेताम्बर नामक दो सम्प्रदायो मे विभक्त है। लेखको और प्रकाशकों आदि की जिस दशा का वर्णन ऊपर किया गया है वह यद्यपि सामान्यत समस्त जैनसमाज पर लागू होती है तथापि ये दोष दिगम्बर समाज मे विशेष रूप से बढ़े चढे मिलते हैं। श्वेताम्बर जैनसमाज मे ग्रन्थ प्रकाशन व्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित एव सुसगठित है। उनके विद्वानो और लेखको की दशा भी पारिश्रमिक, पुरस्कारादिक की दृष्टि से बहुत अच्छी है। स्व साहित्य का बाह्य समाज मे प्रचार करने की श्रेयस्कर प्रवृत्ति भी उनमे रही है। उनका साधु समाज साहित्यिक कार्य मे यथाशक्य योग दान देता है किन्तु उनके साथ जो कमी है वह यह है कि इन बातो की ओर से श्वेताम्बर गृहस्थ, दिगम्बर गृहस्थ की अपेक्षा कही अधिक उदासीन एव अयोग्य हैं। उनमे सुविज्ञ विद्वान् एव सुलेखक सख्या मे अत्यल्प हैं, अतएव साहित्यिक सस्थाओ, निर्मित साहित्य की उत्कृष्टता एव विपुलता तथा सामयिक पत्र पत्रिकाओ की दृष्टि से दिगम्बर समाज श्वेताम्बर समाज की अपेक्षा कुछ आगे ही है।

अस्तु, यदि जैन समाज को समय की गति के साथ-साथ सजीव रूप मे

उन्नति पथ पर अग्रसर होना है, सभ्य ससार की दृष्टि मे उसे अपने आप को ऊ चा उठाना है और स्वय उस ऊ चाई के उपयुक्त वनना है तो उसे अपने साहित्य को प्रगतिशील एव समुन्नत बनाना ही होगा, अपने प्राचीन साहित्य रत्नो को ढग से ससार के सामने प्रस्तुत करके उनका तथा उनकी जननी जैन सस्कृति का महत्त्व प्रदर्शित करना और मूल्य अ कवाना होगा, लोक हितार्थ एव ज्ञान वर्द्धन के लिए उसका उपयुक्त सदुपयोग कराना होगा, उसका अधिकाधिक प्रचार एव प्रसार करना होगा, समाज के स्त्री पुरुष आबालवृद्ध मे सर्व व्यापी पठनाभिरुचि—पुस्तक आदि क्रय करके पढने और अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागृत करनी होगी, जो व्यक्ति तनिक भी प्रतिभा सम्पन्न एव साहित्यिक अभिरुचि वाला हो उसे सर्व प्रकार प्रोत्साहन, जिसमे समुचित पुरस्कार पारिश्रमिक अत्यावश्यक है, प्रदान करके उस व्यक्ति मे जो सर्वोत्तम तथ्य है उसे साहित्य के रूप मे ससार को प्रतिदान कराने की सुचारु योजना करनी होगी और साहित्यिक अनुसधान, निर्माण एव प्रकाशन कर्त्री सस्थाओ, परीक्षा वोर्डो, विद्या केन्द्रो, सामयिक पत्र पत्रिकाओ तथा व्यक्तिगत विद्वानो और लेखकों का केन्द्रीकरण नही तो कम से कम एक सूत्रीकरण करके उन्हे सुव्यवस्थित रूप से सुसगठित करना होगा, साहित्यगत अथवा सस्कृतिजन्य विविध विषयो का सुचारु विभाजन करके विषय विशेषो मे विशेषज्ञता प्राप्ति के प्रयत्नो को प्रोत्साहन देना भी वाञ्छनीय होगा। यह सब किये विना इस द्रुत वेग से प्रगतिशील सघर्ष प्रधान युग मे जबकि न किसी व्यक्ति को अनावश्यक अवकाश है, न व्यर्थ के शौक पूरा करने की रुचि और साधन है और न धार्मिक श्रद्धा जीवन का कोई वास्तविक महत्वपूर्ण अ ग रहती जाती है, प्रत्युत परिगुणित होती हुई मानवी इच्छाए, वासनाए और आवश्यकताए तथा जीविकोपार्जन की जटिल समस्या एव स्वार्थ परता प्रत्येक व्यक्ति का गला बेतरह दवाये हुए हैं, किसी समाज और उस समाज की सस्कृति के लिए, चाहे वह कितनी भी महत्व पूर्ण क्यो न हो, उन्नति पथ पर अग्रसर होते रहना तो दूर की वात है, जीवित रहना भी अत्यन्त कठिन है।

ऐसी परिस्थितियो मे, प्रकाशित साहित्य का एक प्रकार का लेखा-जोखा और विवरण इसलिये परम आवश्यक हो जाता है कि इसके द्वारा जहा एक ओर लोक की तत्सम्बधी अनभिज्ञता दूर होकर उसे समाज विशेष अथवा वर्ग विशेष द्वारा किये गये योगदान का परिचय प्राप्त हो जाता है, राष्ट्र अथवा विश्व के भी साहित्य मे उसका उचित स्थान एव प्रगति निश्चित करने मे सुभीता हो जाता है, तथा उसके समुचित सदुपयोग द्वारा मानव की ज्ञानवृद्धि होती है उसकी ज्ञान साधना को नवीन साधन सहायता आदि मिलती है, वहा दूसरी ओर तत्तद समाज को भी यह ज्ञात हो जाता है कि उसके साहित्य की क्या स्थिति है, उसकी प्रगति की क्या अवस्था है, तथा उनमे कहाँ क्या त्रुटियें और दोष हैं, उसकी क्या आवश्यकताये हैं, जिनसे कि उक्त दोषो का निवारण और आवश्यकताओ की पूर्ती का प्रयत्न किया जा सके । विद्वानो अन्वेषको, पाठको, शिक्षको और सग्रह कर्ताओ, लेखको और प्रकाशको सभी को इस प्रकार के विवरण से अपने अपने कार्य मे पर्याप्त सुविधा हो जाती है। दूसरे, जैन साहित्य प्रकाशन की जिस दुरवस्था का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, उसकी अवस्थिति मे सभी प्रकाशित जैन पुस्तको का परिचय किसी भी व्यक्ति को सरलता से प्राप्त होना अत्यन्त कठिन है। अत प्रकाशित जैन पुस्तको के एक यथासभव पूर्ण तथा सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण की आवश्यता एव उपयोगिता स्पष्ट ही है। श्वेताम्बर जैन साहित्य के सम्बध मे ऐसी दो-एक सूचियें पहिले ही प्रकाशित हो चुकी है, यथा अध्यात्म ज्ञान भडार प्रसारक मडल, पादरा (गुजरात) द्वारा प्रकाशित 'मुद्रित जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ नामावली', तथा श्री आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर द्वारा प्रकाशित 'श्री जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ गाइड' जिनमे कि उक्त समाज की मुद्रित प्रकाशित पुस्तको का विषयानुसार परिचय दिया गया है। इन दोनो सूचियो मे प्रथम सूची अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, प्रसिद्ध श्वेताम्बर पुस्तक विक्रेता—सरस्वती पुस्तक भडार, हाथीखाना, रतन पोल, अहमदावाद के सूची पत्र मे प्राय सब ही प्रकाशित श्वेताम्बर जैन पुस्तकें दी हुई है। इन सूचियो की अवस्थिति मे तथा

शोधन एव समय के अभाव के कारण प्रस्तुत पुस्तक मे श्वेताम्बर साहित्य को सम्मिलित नही किया गया और प्रधानतया दिगम्बर समाज की ही मुद्रित प्रकाशित पुस्तको का विवरण दिया गया है।

मुद्रण कला का इतिहास—प्राचीन साहित्य की खोज करने वाले प्रसिद्ध विद्वान काका कालेलकर जी के शब्दो मे "यह बात बिल्कुल सही है कि जैसे लेखन कला के प्रचार से ज्ञान प्राप्ति का मार्ग सुलभ हुआ है वैसे ही छापने की कला के प्रचार से यह मार्ग सहस्त्र गुना अधिक सुलभ और विस्तृत हो गया है।" X जहा तक लेखन कला के प्रारभ का प्रश्न है वह सर्व प्रथम भारतवर्ष मे ही हुआ प्रतीत होता है। जैन अनुश्रुति के अनुसार कर्मयुग के आदि मे आदि पुरुष महा मानव ऋषभदेव ने अपनी प्रिय पुत्री ब्राह्मी के उपलक्ष से सर्व प्रथम मानवी लिपि का आविष्कार किया था। सिन्धु पुरातत्त्व मे उपलब्ध मुद्रालेख भी पाच छ हजार वर्ष प्राचीन हैं और उनसे अधिक प्राचीन लेख ससार के किसी अन्य भाग मे अभी तक प्राप्त नही हुए हैं। लेखन-कला के सर्व प्राचीन उदाहरण पाषाण आदि पर ही अकित मिलते हैं। तत्पश्चात् ताम्रपत्र आदि धात्वी साधनो का भी उपयोग होने लगा। फिर ताडपत्र, भुर्जपत्र आदि वानस्पतिक पत्रो पर लिखाई आरभ हुई। अन्तत सन् ईस्वी प्रथम सहस्त्राब्द के मध्य के लगभग कागज का प्रयोग आरभ हुआ।

छापे खाने का सर्व प्रथम आविष्कार चीन देश मे हुआ, और सर्व प्रथम ज्ञात मुद्रित चीनी पुस्तक की मुद्रण तिथि ११ मई सन् ८६८ ई० है। इस पुस्तक की छपाई ब्लाक प्रिन्टिग मे हुई थी, किन्तु अलग अलग बने टाइपो से छापने की कला का आविष्कार चीन देश मे ही पो० शेग नामक व्यक्ति के द्वारा सनु १०४१–४९ के मध्य हुआ। यूरोप मे मुद्रण का प्रारभ जर्मनी देश के निवासी जॉन गटेनवर्ग नामक व्यक्ति ने १५ वी शताब्दी ई० के मध्य मे किया था।

X प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० १९७,

भारतवर्ष मे छापेखाने का प्रथम प्रवेश पुर्तगाली उपनिवेश गोआ के सेंट पॉल कालिज मे, जेसुइट पादरियो की अध्यक्षता मे जुआन बुस्टामान्टे नामक मुद्रक द्वारा सन् १५५६ ई० मे हुआ। और भारत मे मुद्रित सर्व प्रथम पुस्तक लातीनी भाषा की 'कनक्लूसोस फिलोसोफिकास' नामक दार्शनिक पुस्तक थी जो उसी वर्ष उक्त छापेखाने मे छपी थी। यह पुस्तक तथा इसके बाद छपने वाली दूसरी पुस्तक भी अब उपलब्ध नही हैं। भारतवर्ष मे मुद्रित सर्व प्रथम उपलब्ध पुस्तक उसी मुद्रणालय मे सन् १५६० मे छपी 'कोम्पेंदिपु स्पिरितु आलद व्हिद क्रिस्तां' है जो न्यूयार्क (अमेरिका) के राष्ट्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय मे विद्यमान है।

इसके कुछ काल पश्चात् गोआ प्रदेश के अन्तर्गत ही रायतूर नामक स्थान के सेंट इग्नेशस कालिज मे एक अन्य मुद्रणालय चालू हुआ जिसमे भारतीय भाषाओ मे भी पुस्तकें छपने लगी। इस छापेखाने मे मुद्रित भारतीय भाषा की सर्व प्रथम ज्ञात पुस्तक फादर थॉमस स्टीफेन्स कृत 'क्राइस्ट पुराण' थी। यह पुस्तक मराठी भाषा मे ओवी नामक छन्द विशेष मे लिखी गई थी किन्तु रोमन लिपि मे थी, और यह सन् १६१६ ई० मे मुद्रित हुई थी। चालीस वर्ष के बीच मे इसके क्रमश तीन सस्करण प्रकाशित हुए थे, किन्तु उनकी एक भी प्रति आज उपलब्ध नही है, यद्यपि उसकी रोमन, कन्नडी, देवनागरी लिपियो मे निबद्ध अनेक हस्तलिखित प्रतिया विद्यमान हैं उसी छापेखाने से सन् १६२२ मे मुद्रित 'खिस्ती धर्म सिद्धान्त' नामक मराठी भाषा और रोमन लिपि की पुस्तक आज भी उपलब्ध है। इसके उपरान्त डेनिश मिशनरियो और फिर अग्रेज पादरियो ने इस दिशा मे प्रयत्नशील होकर छापेखाने के प्रचार मे योग दिया।

देवनागरी अक्षरो मे ब्लाक प्रिंटिंग से छपा सर्व प्रथम लेख सन् १६७८ ई० का है। सन् १७९६ ई० मे लिथोग्रफी का आविष्कार हुआ। उनमे टाइप बनाने की कठिनाई न होने के कारण शीघ्र ही उसका अत्यधिक प्रचार हो गया और १९ वी शताब्दी मे तो देशी भाषाओ के अनेक प्राचीन ग्रथ लिथो से छपे। १८ वी शताब्दी के अन्त के लगभग ही बम्बई और बगाल मे सर्व

प्रथम एक-एक मुद्रणालय स्थापित हुआ। भारतीय मुद्रणकला के इतिहास मे सीरामपुर (वगाल) के मुद्रणालय, मुद्रणकला विशारद सर चार्लस विल्किन्स, उनके सहयोगी शिष्य पचानन और ग्रहस्थ मिशनरी डा० विलियम करी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उक्त सीरामपुर छापेखाने से १६ वी शताब्दी के पूर्वार्ध मे विभिन्न प्रान्तीय भाषाओ मे वाइविल के अनुवाद धडावड प्रकाशित हुए। धीरे-धीरे भारतीय पुस्तके भी देशी भाषाओ मे छपने लगी। नागरी लिपि की सर्व प्रथम मुद्रित पुस्तकें कुरियर प्रेस, वम्वई द्वारा प्रकाशित 'विदुर नीति (१८२३ ई०) और 'सिंहासन वत्तीसी' (१८२४ ई०) हैं, किन्तु इन दोनो की भाषा मराठी है। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक इग्लैंड मे छपी थी और १६ वी शताब्दी के मध्य से वे भारतवर्ष मे भी छपने लगी।

जैन प्रकाशन का इतिहास—जैन साहित्य मे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक प्रसिद्ध दिगम्बर विद्वान प० बनारसीदास (१७ वीं शताब्दी) कृत 'साधु वन्दना' थी जो सन् १८५० मे आगरा नगर मे छपी थी। अतएव जैन पुस्तक साहित्य का अथवा उसके मुद्रण व प्रकाशन का प्रारम्भ सन् १८५० ई० से ही मानना उचित है।

वैसे तो, जहाँ तक पाश्चात्य जगत का प्रश्न है, यूरोपीय विद्वानो और प्राच्यविदो ने तो १६ शताब्दी के प्रारभ से जैन धर्म और सस्कृति मे दिलचस्पी लेनी प्रारभ करदी थी। सन् १७६६ ई० मे लेफ्टिनेन्ट विल्फर्ड का 'त्रिलोक दर्पण' नामक जैन ग्रन्थ की एक प्रति हाथ लग गई। उनके स्वय के कथनानुसार ब्राह्मण पडितो ने साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण उस पर कुछ भी प्रकाश डालने से साफ इन्कार कर दिया। × अतएव विल्फर्ड साहब स्वय ही उस ग्रन्थ पर से जैनो के सम्बन्ध मे जो कुछ जान सके वह उन्होंने 'एशियाटिक रिसर्चेज' भाग तीन पृष्ठ १६२ पर प्रकाशित कर दिया। विदेशी श्रमणार्थियो

× विलफ्रेड आन दी एन्टीपेथी आफ दी ब्रह्मिन्स टू दी जेन्स—एशियाटिक रिसर्चेज भा० ३ पृ० ५१.

के द्वारा किये उल्लेखो को छोडकर पाश्चात्य-विद्वानो द्वारा लिखित सर्व प्रथम जैन सम्बन्धी रचना यही है। सन् १८०९ मे कर्नल मेकेन्जी का निबन्ध 'ऐन एकाउन्ट आफ दी जेन्स' और एच० टी० कोलब्रुक का निवन्ध 'आबजरवेशन्स आन दी जेन्स' कलकत्ते के 'एशियाटिक रिसर्चेज (जिल्द ९, पृ० २४३-२८६) मे प्रकाशित हुए। सन् १८२५ मे पादरी जे० ए० डुवाइ के सस्मरण पेरिस (फ्रान्स) से प्रकाशित हुए जिनमे जैन धर्म और जैन जाति के विषय मे बहुत कुछ लिखा है उसी वर्ष ए० स्टर्लिंग ने 'उडीसा की जैन गुफाओ' पर अपना लेख प्रकाशित किया। सन् १८२७ मे फ्रेन्कलिन, हैमिल्टन, डेलमेन आदि विद्वानो ने जैन विषयक लेख लिखे। तदुपरान्त उक्त शताब्दी के मध्य पर्यन्त एच० एच० विल्सन, जेम्स टाड, जे० स्टीवेन्सन, जे० प्रिन्सेप, जे० फर्गुसन आदि विद्वानो ने अपने लेखो द्वारा जैन सम्बधी लोक ज्ञान की अभिवृद्धि की। किन्तु जैनधर्म सस्कृति साहित्य पुरातत्त्व और इतिहास पर व्यवस्थित शोध खोज और साहित्य सृजन सन् १८५० के पश्चात् ही प्रारभ हुए और इस दिशा मे पिशेल, होर्नले, फर्लांग, पुल्ले, ब्हूलर, जैकोबी, वेबर, लेसन, फलीट, राइस द्वय, टामस, लूडर्स, वर्गेस, कीलहार्न, गिरनाट, स्मिथ, हुल्टज्श, क्लैट, ओल्डन वर्ग, किटेल, कनिंगहम हर्टले, मोनियर, विलियम्स, विन्टर निट्ज, पीटरसन, ल्यूमेन आदि विभिन्न जातीय प्रसिद्ध यूरोपिय प्राच्यविदो तथा भगवान लाल इन्द्र जी आर० जी० भडारकर, भाऊदजी, के० बी० पाठक, ध्रुव, तैलग, राजेन्द्र लाल मित्र, सतीश चन्द्र विद्याभूषण, टी० के० लड्डू, के० पी० जायसवाल आदि प्रख्यात भारतीय विद्वानो ने प्रशसनीय कार्य किया। किन्तु इस शताब्दी के प्रारभ से ही इस कार्य मे कुछ शिथिलता आने लगी। प्रथम विश्व युद्ध के समय से तो उपरोक्त प्रकार के स्वतत्र प्रकाड यूरोपीय विद्वानो का इस क्षेत्र मे प्राय अभाव ही हो गया। केवल पुरातत्त्वादि विभागो से सम्बधित कतिपय राजकाय अधिकारी ही प्रसगवश कुछ कार्य करते रहे। किन्तु साथ ही साथ यह सतोष है कि अनेक जैनाजैन भारतीय विद्वान इन कार्यों के सम्पादन मे लगे हुए हैं।

यद्यपि प्रथम जैन पुस्तक दिगम्बर सम्प्रदाय द्वारा ही सन् १८५० मे मुद्रित कुराई गई थी, किन्तु प्रारभ मे रूढिग्रस्थ अन्धश्रद्धालु जैन समाज ने छापे का अत्यन्त विरोध किया। एक जैन समाज ने ही क्या, प्रारभ मे हिन्दू समाज ने भी उनका तीव्र विरोध किया। सन् १८६३ मे प्रकाशित श्री गोविन्द नारायण माडगावकर कृत 'मुम्बई वर्णन' नामक पुस्तक के पृ० २४८ पर लिखा है कि—"हमारे कुछ भोले व नैष्ठिक ब्राह्मण छपे कागज का स्पर्श करते डरते थे और आज भी डरते हैं। बम्बई में और बम्बई के बाहर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो छपी हुई पुस्तक को पढना तो दूर रहा, छपे कागज को स्पर्श तक नही करते हैं।"

यही दशा, बलिक इससे भी कुछ बुरी दशा जैन समाज की थी। जैनी लोग अपने मन्दिरो के शास्त्र भडारों मे सग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थो को देव प्रतिमा तुल्य पवित्र और पूज्यनीय मानते थे और उनका विधिवत् दर्शन पूजन करना ही अलम् समझते थे। यदि किसी साधु या विद्वान् पडित आदि का समागम हुआ तो पुन स्नानादि द्वारा शरीर शुद्धि करके मन्दिर मे रखे शुद्ध वस्त्रो को पहन कर दरी आदि के फर्श पर भी चटाई बिछाकर और शास्त्र जी को चौकी पर विराजमान करके बडी विनय पूर्वक उनका वाचन कर श्रद्धालु जनता को सुनाया जाता जाता था। शास्त्र सभा का डिसप्लिन बडा भक्ति और विनय पूर्ण होता था, और प्राय अब तक यही प्रथा है। जिन गृहस्थो को शास्त्र स्वाध्याय का नियम होता वे भी शरीर शुद्ध कर पूजादि के उपयुक्त शुद्ध वस्त्र धोती दुपट्टा आदि पहन मन्दिर के स्वाध्याय भवन मे ही बैठकर विनय पूर्वक उक्त ग्रन्थो का स्वाध्याय कर सकते थे। सामान्य दैनिक वस्त्र चाहे वे कितने भी शुद्ध क्यो न हो उन्हें पहने हुए शास्त्र जी को स्पर्श भी नही किया जा सकता था। शूद्रो का तो मन्दिर मे या शास्त्र भडार में प्रवेश भी नहीं हो सकता था और स्त्रियां भी शास्त्रो को नही छू सकती थी। अन्य धर्मावलम्बी सवर्ण व्यक्तियो को भी ये शास्त्र इसलिए नही दिखाये जाते थे कि वे लोग मिथ्याश्रद्धानी होने कारण हमारी देव गुरु के समकक्ष पूज्य जिनवाणी की

विनय, निन्दादि करेंगे। तब फिर उनके छपाने में वो जिसमें कि किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति कैसी भी अपवित्र अवस्था मे, चमडे के जूते आदि पहने हुए ही उन्हें छूएगा, कही भी पटक या डाल देगा, छापे की स्याही मे चर्बी आदि महा अपवित्र पदार्थों के होने की सभावना और छापे के विकास के साथ साथ अविष्कृत मशीन से बने महा अशुद्ध कागज पर उनका छपना, छपने के पश्चात् भी उनकी पूर्ववत विनय बनाये रखना असभव होना आदि सर्व प्रकार उन परम पूज्य शास्त्रो की अविनय और विडम्बना ही होगी जो कि एक महापाप होगा। यह सब उस समय की रूढ़िभक्त और आधुनिक प्रकाश की दृष्टि से अविकसित श्रद्धालू समाज जिसके लिए उक्त शास्त्रो का महत्व केवल धार्मिक ही था, कैसे सहन कर सकती थी। उसकी दृष्टि मे तो यत्न पूर्वक वेष्ठनो मे लिपटे हुए और देव मन्दिरो के सरस्वती भडारो मे विराजमान वे सब ग्रन्थ बिला लिहाज भाषा, भाव, विषय, कर्ता, प्राचीनता, प्रमाणीकता आदि के समान रूप से पूजनीय एव माननीय थे। उनका अन्य कोई महत्त्व या मूल्य उसकी दृष्टि मे था ही नही।

छापे के इस प्रबल विरोध का बहुत कुछ आभास दिगम्बर जैन महासभा के मुख पत्र हिन्दी जैन गजट वर्ष २ अक १४ (८ मार्च सन् १८९७ ई०) के पृष्ट १३ पर प्रकाशित निम्नलिखित समाचार से हो जाता है—"**जैन शास्त्रों का छपना**—ता० २४ जनवरी सन् १८९७ को जैनोन्नति कारक सभा प्रयाग का १७ वा समागम हुआ। यह समागम इस विषय पर विचार करने के लिये किया था कि '**जैन शास्त्र छपने चाहियें या नहीं।**' सभा के नियतानुसार स्थानिक जैनियो को इस विषय की सूचना दी गई थी। लाला बच्चूलाल ने जो इस विषय के व्याख्यान दाता नियत किये गये थे बडे जोर शोर से एक घटे तक जैन शास्त्रो के छपने के निषेध मे बहुत कुछ कहा। उनके पश्चात् बहुत से भाइयो ने उनकी बात को पुष्ट किया किन्तु उनके विपक्ष में किसी ने कुछ भी नही कहा। और उपस्थित महाशयो मे से सबने एक मत होकर इस बात को स्वीकार किया कि हम छपे हुए ग्रथ न लेंगे न पढेंगे न पढावेंगे और इसके प्रचार को यथा शक्ति रोकेंगे।

जो कि आजकल इस विषय का बहुत कोलाहल है इस वास्ते इस सभा ने प्रयागस्थ जैनियों की अनुमति सर्व साधारण पर प्रकाशित करने के अभिप्राय से इस लेख को मुद्रित कराना आवश्यक समझा।—सभा की आज्ञानुसार सुमतिचन्द्र मन्त्री जैनोन्नति कारक सभा, प्रयाग।

लाला बच्चू लाल जी तथा इनके सहयोगियो के छापा विरोधी कितने ही लेख भी जैन गजट आदि पत्रो मे प्रकाशित हुए थे और अन्य कितने ही स्थानो की जैन पचायतो ने भी उपरोक्त जैसे प्रस्ताव पास किये थे। ता० १७ जनवरी सन् १८९८ के जैन गजट मे प्रकाशित अपने एक लेख मे इन्ही बच्चू लाल ने स्पष्ट लिखा था कि "जैन शास्त्रो का छपाना महान अविनय है अत भयङ्कर पाप बंध का कारण है, और जो जैन शास्त्र अजैनो के हाथ मे पहुचे भी हैं वे श्वेताम्बर आम्नाय के ही पहुचे। दिगम्बरो को ऐसी मूर्खता नही करनी चाहिए, उन्हे अपने शास्त्र कदापि नही छपाने चाहियें और न दूसरो के हाथ मे देने की भूल करनी चाहिये।"

इसमे सन्देह नही कि उनके धर्म भीरु और अदूरदर्शी सार्धमियो ने इन सदुपदेशो पर आचरण करने का अथक प्रयत्न किया। अभी १०-१२ वर्ष पूर्व ही जब धवलादि दिगम्बर आगम ग्रन्थो का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हो रहा था तो कई एक अनेक पदवियो एव उपाधियो से अलकृत दिग्गज जैन पण्डितों ने आगम ग्रथो के छपाये जाने और गृहस्थो द्वारा उनका पठन पाठन किये जाने का भारी विरोध किया था। आज सन् १९५० मे भी यत्र तत्र ऐसे धर्म भीरु श्रीमान मिल ही जाते हैं। जो छपे शास्त्रो का पढना तो दूर रहा उन्हे छूने मे भी पाप समझते हैं और परम पूज्य जिन वाणी की इस दुर्दशा पर आसू बहाया करते हैं।

किन्तु, समाज मे अब ऐसे विवेकशील व्यक्ति भी उत्पन्न होने लगे जिन्होंने नवीन प्रणाली के अनुसार शिक्षा प्राप्त की थी और जिन्हे पाश्चात्य विचार धाराओ के सम्पर्क मे आने का सुयोग मिला था। शनै शनै उनकी संख्या बढ़ने लगी। ये नव युवक समय के साथ-साथ चलना चाहते थे, प्रगति शील

युग की प्रगति से पिछड जाने के लिए तैयार नही थे; वे नवीन सभ्यता के नित्य प्रकाश मे आने वाले आविष्कारो को अपनाना अन्य समाजो के उन्नतिशील वर्गों की भाति ही अपनी समाज के लिए भी परम आवश्यक समझते थे। उनका विश्वास था कि अब अन्धकार को भेद कर वाहर प्रकाश मे आने का युग है, अतएव उन्होंने इरादा कर लिया कि अपने अमूल्य साहित्यिक रत्नो को मुद्रण कला की सहायता से वहुलता के साथ प्रकाश मे लाकर स्वय उनसे अधिकाधिक लाभ उठावें ही, साथ ही दूसरे जिज्ञासुओ को भी अपने धर्म, साहित्य और सस्कृति के अध्ययन करने का तथा महत्व समझने का सुयोग प्रदान करें।

फलस्वरूप १९वी शताब्दी के मध्य के लगभग छापे के पक्ष मे आन्दोलन आरम्भ हुआ। प्रथम पच्चीस वर्षो मे वह कुछ प्रगति न कर पाया किन्तु सन् १८५७ के पश्चात् इस आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया। उधर इस आन्दोलन के वढते हुए बल के साथ-साथ स्थिति पालको का विरोध भी अधिकाधिक जोर पकडने लगा। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ तक यह द्वन्द वडे सघर्ष के साथ चला। आन्दोलन कर्त्ताओ को धमकियें दी गई, पीटा गया, जाति से वहिष्कृत किया गया, उनका मन्दिर मे आना वन्द किया गया, स्थान स्थान मे इस प्रश्न को लेकर दल वन्दियें हो गई। हमारे नगर मेरठ का ही एक दिलचस्प उदाहरण है। एक महाशय एम० ए० एल० एल० बी० वकील थे और वे उस युग के एम० ए० थे जव प्रान्त भर मे दर्जन दो दर्जन से अधिक एम० ए० नही थे। किन्तु वे इतने कट्टर स्थिति पालक थे और धर्म ग्रन्थो की छपाई के तथा छपी पुस्तको को मन्दिर मे लाने के इतने भारी विरोधी थे कि एक बार जव कुछ नवयुवक आन्दोलन कर्त्ताओ ने देव पूजन की उपयुक्त शुद्ध वस्त्रादि पहन और सामग्री लेकर एक छपी पुस्तक की सहायता से पूजन करने का इरादा किया तो जिस वेदी में देव प्रतिमाएँ विराजमान थीं, वे महाशय उक्त वेदी के सामने दोनो हाथो से दुपट्टे का पर्दा तानकर और वेदी को ढक कर खडे हो गये और यह कहा कि किसी प्रकार भी छपी पुस्तक से पूजन

नही करने देंगे । जबतक वे पूजोद्यत नवयुवक वेदी गृह मे रहे ये महाशय अपने स्थान से तनिक भी टस से मस न हुए। इसी प्रकार की छापा विरोधी विविध घटनाएँ स्थान स्थान मे हुई । तथापि अन्ततः २०वी शताब्दी के प्रथम दसक मे आन्दोलन सफल हो गया और विरोध शिथिल प्राय हो गया।

इसमे भी सन्देह नही कि उक्त आन्दोलन मे श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने कुछ शीघ्र ही सफलता प्राप्त करली थी। श्वेताम्बर समाज मे धार्मिक विषयो मे उनके बहु सख्यक साधु वर्ग का ही प्रभुत्व रहता आया है, उनके निर्णयो और आदेशो को गृहस्थ जन 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' मानते हैं और इस प्रसग में उनकी यह प्रवृत्ति सुफलदायी ही हुई। इन साधुओ मे से कुछ दूरदर्शी महात्माओ को यह सुबुद्धि शीघ्र ही उत्पन्न हो गई कि जब छापा देश मे आ ही चुका है और देर सवेर इसे अपनाना ही होगा तो क्यो न धर्म ग्रन्थो की छपाई पर से शीघ्र ही प्रतिबन्ध हटा दिया जाय। फल यह हुआ कि दिगम्बर साहित्य की अपेक्षा श्वेताम्बर साहित्य बहुत पहिले छपने लगा और सन् १८७० से १८९० के बीच सैकडो श्वेताम्बर ग्रन्थ प्रकाश मे आ गये। सौभाग्य से यह समय ऐसा था जब दर्जनो उच्च कोटि के पाश्चात्य विद्वान् और प्राच्यविद भारतीय धर्मों, दर्शनो, सस्कृति, पुरातन साहित्य एव कला, पुरातत्त्व, जातियो के इतिहास आदि विविध विषयो के अध्ययन मे गहरी दिलचस्पी ले रहे थे। छापे के समर्थक उक्त श्वेताम्बर साधुओ और गृहस्थो ने इन विद्वानो के लिए अपना साहित्य सुलभ कर दिया और उनके द्वारा उसके उपयोग मे किसी प्रकार की रुकावट डालने के स्थान मे उलटा उन्हे भरसक प्रोत्साहन, सहयोग और सुविधा प्रदान की।

परिणामस्वरूप, जबकि १९ वी शताब्दी के मध्य तक बाह्य जगत के विषयो मे साधारण जीर्ण रुचि रखने वाले विद्वानो को जैन विषयक जो कुछ टूटी फूटी अल्प जानकारी जैनेतर भारतीय साहित्य से जैन समाज के किसी अग विशेष बाह्य सम्पर्क के कारण, अथवा शीघ्र ही ध्यान को आकर्षित कर लेने वाले किसी जैन पुरातत्त्व से हुई थी तथा उसी से सतोष कर इन विद्वानो

ने इस धर्म और समाज के विषय मे अपनी अपनी धारणायें बनाली और प्रकट करदी थी, अब उसी शताब्दी के अ तिम चतुष्पाद मे इस दिशा मे कार्य करने वाले प्रतिभाशाली विशेषज्ञो को स्वय जैन साहित्य और जैनो का ही सहयोग प्राप्त हो गया। उन्हें यह भी वताया गया कि वास्तविक, मौलिक, सर्वप्राचीन और अधिकांश जैन साहित्य यही (श्वेताम्बर आगमादि) हैं। ऐसा बताये जाने पर उसे वैसा ही न मानने का उनके लिए कोई कारण भी न था। अतएव उक्त विशेषज्ञो और उनके अनुकर्त्ता भारतीय विद्वानो का जैनाध्ययन तथा उनके तत्सबधी अधिकाश निर्णय उसी साहित्य के आधार पर आधारित हुए, और इस कारण वे कुछ सदोष रहे तथा अ शत ही सत्य हो सके। किन्तु इसके लिए न वे जैनेतर विद्वान ही दोषी हैं और न दूर दर्शी श्वेताम्बर साधु और उनके ग्रहस्थ अनुयायी ही। यदि कोई दोषी है तो वे दिगम्बर जैन पडित और श्रीमान है जो अपनी समाज मे वहु सख्यक शिक्षितो और अनेक श्रेष्ठ विद्वानो के होते हुए भी परस्पर की तनातनी और आन्दोलन के पक्ष विपक्ष में पडकर इतनी दूर तक देख ही नही सके और सभवतया आज भी इस दिशा मे उपयुक्त दृष्टि प्राप्त करने मे सफल नही हो सके।

अस्तु, जैन पुस्तक साहित्य के इतिहास का प्रारभ सन् १८५० अथवा विक्रम सवत् १९०० के लगभग से होता है। आधुनिक शैली मे व्यवस्थित जैनाध्ययन का प्रारभ और हिन्दी जैन साहित्य के आधुनिक युग का प्रारभ भी इसी समय से होता है। स्वय अखिल भारतीय दृष्टि से भी राष्ट्रीयता का उदय, सास्कृति अध्ययन का प्रारभ और हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग भी सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के उपरान्त ही सन् १८६० से अथवा वि० स० १९२० के लगभग से ही माना जाता है।

युग विभाजन—की दृष्टि से, विशेषकर दिगम्बर जैन साहित्य के मुद्रण प्रकाशन के इतिहास को तीन युगो मे विभाजित किया जा सकता है-(१)आन्दोलन युग सन् १८५०–१९०० ई०, (२) प्रगति युग सन् १९००–१९२५, और (३) वर्तमान युग–१९२५ के उपरात।

(१) आन्दोलन युग (१८५०-१९००)—जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग मे धार्मिक साहित्य के मुद्रण प्रकाशन का आन्दोलन आरम्भ हुआ। प्रथम पच्चीस वर्षों (१८५०-७५) मे इस आन्दोलन ने प्राय कोई प्रगति नही की और इस बीच मे दो चार पुस्तकें छपी हो तो छपी हो, किन्तु उनके विषयमे कुछ ज्ञात नही। सन् १८७५ और १९०० के बीच आन्दोलन ने वास्तविक जोर पकड़ा और प्रबल विरोध के होते हुए भी पुस्तकें छपने लगी। यह समय भी आन्दोलन के अत्यन्त अनुकूल पडा। देश की तत्कालीन जैन समाज की बाह्य परिस्थितियें भी चाहे परोक्ष रूप से ही सही, उसकी प्रगति और सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। सन् १८५७ के स्वातत्र्य समर के उपरान्त दस पाँच वर्ष तो उक्त असफल महान राजनैतिक क्रान्ति से उत्पन्न व्यापक आतक के शान्त होने में लगे, किन्तु धीरे धीरे महारानी विक्टोरिया की, कम से कम बाह्यत उदार नीति के कारण तथा युद्ध, विद्रोह, दगे आदि के अभाव मे १९ वी शताब्दी का शेष उत्तरार्ध भारतीय प्रजा के लिए विदेशी शासन के अ तर्गत सर्वाधिक शान्ति पूर्ण रहा। समय की आवश्यकता और राज्य के प्रोत्साहन से शिक्षा का भी प्रचार बढा, विश्व विद्यालय स्थापित होने लगे, स्थान स्थान मे स्कूल कालिज खुलने लगे। अ गरेजी मे ही नही भारतीय भाषाओ मे भी समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। यूरोप आदि समुद्र पार विदेशो मे भी कितने ही उत्साही एव निर्भीक भारतीय गमनागमन करने लगे। रेल पथ की स्थपना और डाक तार आदि की द्रुत व्यवस्था, जन साधारण को कूप मडूकता से बाहर निकालने लगी। अ गरेजी शासन मे भारत वर्ष की सनातन एकता प्रत्यक्ष होने लगी, सम्पूर्ण देश और समाज की राष्ट्रीय तथा सामाजिक उन्नति के इच्छुक और उनके लिये प्रयत्न शील नेता भी उत्पन्न होने लगे। सन् १८८६ मे राष्ट्रीय महासभा काग्रेस की स्थापना हुई जिससे एक प्रकार के राष्ट्रीय राजनैतिक आन्दोलन का भी श्रीगणेश हो गया। पाश्चात्य विचार धाराओ की निरन्तर लगने वाली टक्करो और बढती हुई बहुज्ञता के फल-स्वरूप भारतीयो के सामाजिक एव धार्मिक दृष्टिकोणो मे भी विवेक, उदारता

और विशालता लाने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। धार्मिक, अन्धविश्वास अशिक्षा अथवा कुशिक्षा जन्य् नाना प्रकार के वहम, जातिपाति, छुआछूत, रूढि पालकता, स्त्री जाति के प्रति अन्याय, वाल विवाह, वृद्ध विवाह, वहु विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज आदि विनाशकारी कुरीतियाँ एव कुप्रथाए देश और समाज के भक्तो को वुरी तरह व्याकुल करने लगी। फलस्वरूप राजा राममोहनराय तथा महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि सुधारको ने वग प्रदेश मे उत्कट सुधारवादी ब्राह्म समाज की स्थापना की, किन्तु यह सस्था वगाली समाज मे ही सीमित रही। ब्राह्म समाज से कही अधिक व्यापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज आन्दोलन रहा। आर्य समाज ने जहाँ भोले हिन्दू समाज के ईसाई मिशनरियो और मुसलमान गु डो के प्रयत्नो के कारण दिन प्रति दिन क्षीणतर होते जाने मे सफल रोक लगाई, जहा उसने सनातन हिन्दू धर्म में आ घुसे अनेक वहमो, अन्धविश्वासो, पोपडम आदि के प्रति उसे सजग किया, और उसकी अनेक कुरीतिया छुडाईं, वहाँ मिथ्या धार्मिक दम्भावेश मे और जान वूझ कर अनभिज्ञ रहते हुए वैदिक एवं हिन्दू धर्म के चिर कालीन सगी सम्वधी जैनादि धर्मों का कुत्सित परिहास और खडन भी किया तथा उनके विषय मे मिथ्या एव भ्रान्ति पूर्ण धारणाए फैलाई।

तथापि आर्य समाज और उसके नेताओ की इस प्रवृत्ति का परिणाम जैन समाज के हक मे अच्छा ही हुआ। वह भी सचेत हो गया और उसके सुधार-वादी नेताओ को अपने पक्ष मे एक और प्रवल युक्ति मिल गई। अव जैन धर्म और समाज की रक्षार्थ आर्य समाज के आक्षेपो का सयुक्तिक परिहार करना आवश्यक था, उन्हें समुचित प्रत्युत्तर देने थे, और अपने साहित्य को प्रकाश मे लाकर उनके तथा उनके द्वारा फैलाये गये भ्रमो एव मिथ्या कथनो का निराकरण करना था। अतएव आर्य-समाज द्वारा किये गये आक्षेपो को लेकर जैनो द्वारा भी उस युग की शैली मे अनेक खडन मडनात्मक पुस्तकें लिखी गईं और प्रकाशित की गईं। प्रारभ मे फर्रुखनगर निवासी ज्योतिषी वैद्य प०

जीयालाल जैनी ने इस आर्य जैन द्वन्द का नेतृत्व किया, उन्होंने स्वय आर्य समाज के मन्तव्यो के विरोध मे कई पुस्तकें लिखी, आर्य समाजी विद्वानो से अनेक शास्त्रार्थ किये, जैन ज्योतिष का भी प्रचार किया तथा जैन पञ्चाग का प्रकाशन आरंभ किया, और सन् १८८४ मे 'जैन प्रकाश' नामक एक समाचार पत्र निकाला जोकि जैन समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र था। देवबद निवासी स्व० वा० सूरजभान जी वकील ने, जोकि जैन छापा आन्दोलन के प्राण थे, इस परिस्थिति से पूरा पूरा लाभ उठाया। सामाजिक अत्याचार, बहिष्कार, अपमान, लाञ्छना आदि अनेक विघ्न-बाधाओ और अडचनो की अवहेलना करते हुए वे सफलता प्राप्त करते ही चले गये। आर्य समाज के प्रति खडन मडन मे भी उन्होंने पर्याप्त भाग लिया। शनै-शनै उनके सहयोगियो की सख्या पर्याप्त हो गई, जिनमे कि प० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटाया, प० जुगलकिशोर मुख्तार सरसावा, प० मगलसेन जैन वेद विशारद, मा० बिहारीलाल चतन्य बुलन्दशहरी, ला० शिब्बा मल, अम्बाला छावनी, ला०ज्योति प्रशाद प्रेमी, देववन्द विशेष उल्लेखनीय हैं। इस खडन मडन के लिए अपने आर्ष ग्रन्थो मे निबद्ध जैन सिद्धात के वास्तविक रहस्य को जानने और समझने की भी आवश्वकता थी और इस त्रुटि की पूर्त्ती स्व० गुरुवर्य प० गोपाल दास जी बरैया ने की, जोकि अपने समय के सर्व श्रेष्ठ जैन सिद्धात पारगामी एव दार्शनिक तो थे ही साथ ही साथ उदार विचारक एव सुधारवादी विद्वान भी थे। उन्होंने स्वय भी आर्य समाजी विद्वानो के साथ कई शास्त्रार्थों मे भाग लिया। उनके सहयोग से आर्य समाज विरोधी और छापा प्रचार सम्बधी दोनो ही आन्दोलनो को भारी बल मिला। धीरे धीरे जैन आर्य द्वन्द शिथिल होने लगा, अब थोडे से ही विद्वान उनके लिए पर्याप्त थे, जिनके प्रयत्नो के फलस्वरूप और विशेष कर ला० शिब्बामल के उत्साह पूर्ण सहयोग से आगे चलकर अम्बाला दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ सघ की स्थापना हुई। कई दशक पर्यन्त इस सघ के विशेषज्ञ विद्वानो और वादियों ने आर्य समाज से खूब लोहा लिया। कुछ समय के उपरात इसकी भी आवश्यकता नही रह गई। फलस्वरूप उक्त सघ ने अब

अपने नाम, उद्देश्य, स्थान और कार्म क्षेत्र सभी मे परिवर्तन कर डाला है।

गदर के वाद नवीन शासन व्यवस्था की स्थापना के साथ ही साथ ब्राह्मण जैन विद्वेष एक अन्य दिशा मे भी चरित्तार्थ हुआ। विदेशी शासको की अनभिज्ञता का अनुचित लाभ उठाकर सनातनी हिन्दुओ ने स्थान स्थान मे जैन रथोत्सव और मन्दिर निर्माण का भी विरोध किया और ,जैनी दण्डिनम्' जैसी अत्यन्त आक्षेपपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की। उभय पक्ष मे मुकदमे वाजियाँ भी हुई, और तत्सम्वघी खडन मडनात्मक साहित्य भी प्रकाशित हुआ। किन्तु तत्कालीन सरकार ने सर्व धर्म स्वातन्त्र्य तथा किसी के धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप न करने की अपनी नीति स्पष्ट घोषित करदी थी जिसके फलस्वरूप जैनी इस आक्रमण से भी अपने धार्मिक सत्त्वो की रक्षा करने में सफल हुए।

वा० सूरज भान जी वकील को जैन समाज का दादा भाई नौरोजी ठीक ही कहा जाता है। उनकी समाज सेवा का काल इस युग मे सर्वाधिक दीर्घ होने के साथ ही सर्वतोमुखी भी रहा है। उन्होंने अपने उत्साही सहयोगियों के साथ समाज मे शिक्षा प्रचार करने का, विशेषकर स्त्रियो और वालिकाओ की शिक्षा का, जिसका कि विरोध स्थिति पालक दल छापे की भाति ही दृढता के साथ कर रहा था, वीडा उठाया। स्थान-स्थान मे जाकर प्रचार करना, व्याख्यान देना, शास्त्र का पठन और स्वाध्याय प्रेम वढ़ाना, वाल एव कन्या पाठशालायें खुलवाना, छोटे २ सरल ट्रैक्टो तथा व्याख्यान मालाओ द्वारा सामाजिक कुरीतियो को दूर करने का प्रयत्न करना आदि अनेक समयोपयोगी प्रोग्राम इन्होने अपनाये। वा० सूरजभान जी ने स्वय अपने सम्पादकत्व मे 'जैन ज्ञान प्रकाश' (हिन्दी) 'जैन हित उपदेशक' (उर्दू) जैसे समाचार पत्र निकाले। सन् १८८९ में प० चुन्नीलाल, मुन्शी मुकन्दलाल व प० प्यारे लाल आदि के सहयोग से मथुरा मे दिगम्वर जैन महा सभा की स्थापना हुई और सन् १८९४ से उक्त सभा ने अपना पत्र 'जैन गजट' (हिन्दी) निकालना आरम्भ

किया । कालान्तर मे सभा की नीति से मतभेद होने के कारण कुछ अधिक सुधारवादी सज्जनो ने जैन यग मेन्स एसोसियेशन (भारत जैन महा मडल) की स्थापना की, जिसने जैन गजट नाम से ही अ ग्रेजी भाषा मे अपना एक मासिक पत्र निकालना प्रारभ किया । हिन्दी जैन गजट अभी तक महा सभा की ओर से ही निकल रहा है। सन् १८९७ के अ त मे महा सभा ने अपने एक अधिवेशनमे बालिका-शिक्षाके पक्षमे भी प्रस्ताव पास कर दिया था। महासभा के प्रचारक ग्राम २ मे पहुचे । उदाहरणार्थ लेखक के मातामह स्व० ला० शिताबराय जी ने, जो जिला मेरठ की तहसील बागपत, परगना बडौत के सुदूरस्थ ग्राम ख्वाजा नगला के निवासी थे और महासभा के एक उत्साही सदस्य और कार्यकर्त्ता थे, आस पास के कितने ही ग्रामो के जैनियो मे शिक्षा प्रचार का स्तुत्य प्रयत्न किया था और कई एक जाट, बढई आदि अजैनो को जैनी बनाया, जो कि आजन्म इस धर्म के भक्त रहे ।

इसी युग मे शोलापुर के प्रसिद्ध समाज सेवी सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने समय की आवश्यकता का अनुभव करते हुए, सितम्बर सन् १८८४ ई० मे 'जैन बोधक' नामक मराठी-हिन्दी-गुजराती पत्र की स्थापना की थी। सन् १८९३ मे दि० जैन महासभा के मथुरा मे होने वाले चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन मे जब छापे के प्रश्न को लेकर घोर वादविवाद हुआ तो उक्त राव जी ने छापे का जोरदार समर्थन किया था और उसी समय से उन्होंने अपने जैन बोधक मे शास्त्रीय प्रमाणो और युक्तियो के द्वारा छापा आन्दोलन को अत्यधिक प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया । महासभा के इसी अधिवेशन मे प्रबल विरोध के रहते हुए भी छापे के पक्ष मे प्रस्ताव पास हो गया तथा महासभा के मुख पत्र जैन गजट के निकाले जाने की योजना हुई।

इसी समय प्राचीन आर्ष सैद्धान्तिक ग्रन्थो के अध्ययन की प्रवृत्ति भी चल पडी जिसमे प० गोपालदास जी बरैया विशेष सहायक हुए । अभी तक दिगम्बर आम्नाय मे आगम के रूप मे ग्रन्थराज गोमट्टसार की ही प्रसिद्धि और प्रचलन था, किन्तु अब यह बात सुस्पष्ट रूप से प्रकाश मे आई कि गोमट्ट-

सारादि के भी आधार भूत अति प्राचीन एव विशालकाय ग्रन्थ धवलादि हैं, जिनकी एक मात्र ताडपत्रीय प्रति मैसूर राज्य के अन्तर्गत मूडबद्री के प्राचीन शास्त्र भण्डार मे सुरक्षित है। अतएव उक्त राव जी ने उन महान आगम ग्रन्थों के उद्धार का प्रयत्न चालू कर दिया। इस कार्य मे उन्हें उन्ही जैसे धर्म प्राण समाज सेवी धनिक आरा निवासी स्व० बा० देवकुमार जी तथा बम्बई के दानवीर सेठ माणिकचन्द्र जी जौहरी जे० पी० आदि सज्जनो का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। इन महानुभावो के २५-३० वर्ष पर्यन्त सतत् उद्योग करते रहने के फलस्वरूप धवलादि ग्रन्थो की प्रतिलिपिया मूडबद्री के भण्डार की सीमा के बाहर निकल आई। बा० देवकुमार जी ने आरा मे जैन सिद्धान्त भवन (दी सैन्ट्रल जैना ओरियटल लाईब्रेरी) नामक महत्त्वपूर्ण जैन पुस्तकालय एव सग्रहालय की स्थापना करके साहित्यिक शोध खोज एव ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य को और भी प्रगति दी। दान वीर सेठ माणिकचन्द के उद्योग से अखिल-भारतीय जैनो के विवरण से युक्त एक जैन डायरेक्टरी प्रकाशित हुई। माणिकचन्द्र दि० जैन० ग्रन्थ माला तथा माणिकचन्द्र दि० जैन परीक्षा बोर्ड वम्बई की स्थापना का श्रेय भी इन्हें ही है, और दि० जैन महासभा की वम्बई प्रान्तीय शाखा के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी यही थे।

साहित्य प्रचार और छापे के भारी समर्थक बाल ब्रह्मचारी प० पन्नालाल जी बाकलीवाल ने काशी मे दिगम्बर जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था की स्थापना की और उसके अपने ही प्रेस मे जयपुर आदि मे हाथ से बने शुद्ध स्वदेशी कागज पर शास्त्राकार खुले पन्नो मे, अपने यहां ही तैयार की गई स्याही से सवर्ण कर्मचारियो की सहायता द्वारा धार्मिक ग्रन्थो का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस योजना द्वारा उन्होने स्थिति पालक दल के विरोध की तीव्रता को अत्यन्त शिथिल कर दिया। काशी मे थोडे ही काल रहने के उपरान्त यह सस्था कलकत्ते को स्थानान्तरित करदी गई। सस्था को वहा चालू करके बाकलीवाल जी बम्बई चले गये जहाँ उन्होंने 'देश-हितैषी पुस्तकालय' नामक एक सार्वजनिक हिन्दी प्रकाशन सस्था

को जन्म दिया और 'देश हितैषी' नामक पत्र भी निकालना प्रारम्भ किया। थोडे समय के उपरान्त उन्होंने इन दोनो को जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय और जैन हितैषी (मासिक) के रूप मे परिवर्तित कर दिया। आगे चलकर उपरोक्त सस्था की ही एक शाखा 'हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई के नाम से प्रसिद्ध हुई। वाकलीवाल जी ने ही सर्व प्रथम वगाली समाज मे जैन धर्म का प्रचार करने का विचार किया और उसके हेतु वगला भाषा मे 'जैन धर्मेर किंचित परिचय' तथा 'जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन' नामक पुस्तकें सन् १९१० मे निर्माण की। वगला पत्र 'जिनवाणी' के जन्मदाता भी यही थे।

इस प्रकार इस युग के अन्त तक छापा आन्दोलन प्राय सफल हो गया था। विरोध उसके पश्चात् भी दसियो वर्ष चलता रहा किन्तु वह पर्याप्त शिथिल हो गया था। इस युग के प्रकाशनो मे निम्नोक्त तीन प्रकार की पुस्तको का ही वाहुल्य था—(१) धार्मिक खण्डन मण्डनात्मक, विशेषकर आर्य समाज के आक्षेपो को लक्ष्य मे रखकर, (२) मोटी मोटी सामाजिक कुरीतियो के निवारणार्थ लिखे गये छोटे छोटे ट्रैक्ट आदि, (३) पूजा पाठ, भजन विनती, व्रत कथाए, कतिपय पुराण चारित्र आदि ग्रन्थ।

इस युग मे पुस्तक प्रकाशन का कार्य विभिन्न व्यक्तियो द्वारा स्वतन्त्र रूप मे प्राय निस्वार्थ एव धर्मार्थ भाव से ही अधिक चला। लाहौर के हकीम ज्ञानचन्द्र जैनी तथा देवबन्द-सहारनपुर के ला० जैनीलाल ने विशेषकर तीसरे प्रकार की छोटी छोटी पस्तकें वहु सख्या मे प्रकाशित की। खण्डन-मडनात्मक साहित्य विशेषकर फर्रुखनगर, इटावे, अलीगढ और सहारनपुर से प्रकाशित हुआ।

इन सबके अतिरिक्त, इसी युग मे हिन्दी भाषा और साहित्य के आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ। लोक भाषा और लोक साहित्य के रूप में उसकी स्वतन्त्र सत्ता को प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न चालू हुए। आधुनिक खडी बोली की नवीन गद्य पद्य शैलियो का सूत्रपात हुआ। हिन्दी के पुस्तक प्रकाशन और सामयिक

त्र सचालन का प्रारम्भ हुआ, और इस सार्व-हिन्दी आन्दोलन का प्रवर्तन एव प्रधान नेतृत्व किया राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द सी०आई०ई० ने। राजा शिवप्रसाद जी जैन सज्जन थे और राजकीय शिक्षा विभाग के एक उच्च पदाधिकारी थे। ये हिन्दी के भारी समर्थक, प्रचारक और पक्षपाती थे। उर्दू और अंग्रेजी के पक्षपातियो के तीव्र विरोध को चुनौती देकर उन्होंने हिन्दी की अकाल मरण से रक्षा की और शिक्षा विभाग मे उसकी सत्ता को अक्षुण्ण बना दिया। उन्होने हिन्दी मे शिक्षा सम्बन्धी एव लोकोपयोगी कितनी ही पुस्तकें स्वय लिखी तथा दूसरो से लिखाई। *उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'इतिहास तिमिर नाशक' की कोई दिन बडी ख्याति रही। एक प्रकार से आधुनिक खड़ी बोली के आप जन्मदाता ही समझे जाते हैं। स्वय भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र इन्हें अपना गुरु मानते थे, और उन्होंने अपना 'मुद्राराक्षस नाटक इन्हें ही समर्पित किया था।

इलाहबाद निवासी, खण्डेलवाल जैन बा० रतनचन्द्र वकील भी हिन्दी के इस युग के अच्छे लेखक थे। उनका 'नूतन चरित्र' इडियन प्रेस, प्रयाग ने प्रकाशित किया था। न्याय सभा नाटक, भ्रमजाल नाटक, चातुर्यार्णव, वीरनारायण, इन्दिरा, हिन्दी उर्दू नाटक आदि उनकी कई अन्य रचनायें भी, जिनमे से कुछ मौलिक कुछ अंग्रेजी आदि से अनूदित तथा कुछ आधार लेकर लिखी गई थी, मुद्रित प्रकाशित हुई।

आरा के जमीदार अग्रवाल जैनी बा० जैनेन्द्र किशोर, आरा की नागरी प्रचारिणी सभा तथा प्राणेतृ समालोचक सभा के उत्साही कार्यकर्त्ता थे। ये हिन्दी के सुलेखक और सुकवि थे। उनके द्वारा रचित खगोल विज्ञान, कमलावती, मनोरमा उपन्यास आदि कई पुस्तकें तथा जैन कथाओ के आधार से लिखे हुए सोमासती प्रभृति कई नाटक प्रहसनादि छपे थे। इन्होंने हिन्दी जैन गजट का भी कई वर्ष सम्पादन किया और आरे की नागरी हितैषिणी पत्रिका मे इनका जीवन चरित्र भी प्रकाशित हुआ।

श्री जवाहरलाल उपनाम मि० जैन वैद्य जयपुर के निवासी थे। ये रायल

एशियाटिक सोसाइटी तथा थियोसीफिकल सोसाइटी के भी सदस्य थे। कई देशीय भाषाओ पर इनका अधिकार था किन्तु हिन्दी के ये बडे प्रेमी थे और नागरी के प्रचार मे सदैव प्रयत्नशील रहते थे। आपने हिन्दी के कई समाचार-पत्र निकाले जिनमे सर्वप्रसिद्ध 'समालोचक' था जिसे आपने बडे परिश्रम और अर्थ व्यय से चार वर्ष तक निकाला। इस पत्र मे बडे मार्के के लेख निकलते थे। इसके कारण हिन्दी ससार मे आपकी बडी ख्याति हुई। नागरी प्रचारिणी सभा के बडे सहायक थे और जयपुर मे एक 'नागरी भवन' नामक श्रेष्ठ पुस्तकालय स्थापित किया। कमल मोहिनी भँवरसिह नाटक, व्याख्यान प्रबोधक और ज्ञान वर्णमाला, ये तीन पुस्तक उन्होंने स्वय लिखी थी तथा 'सस्कृत कवि पचक' आदि हिन्दी के कई अच्छे ग्रथ इन्होंने अपने ही खर्चे से प्रकाशन कराये थे।

इस प्रकार, जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग मे भी जैन समाज ने सर्वतोमुखी योग दान किया।

२ प्रगति युग (सन् १९००--१९२५ ई०)--

पच्चीस वर्ष का यह काल जैन प्रकाशन का प्रगति युग कहा जा सकता है। इस युग मे अन्य मतो के खडन मडन का कार्य, जैसा कि ऊपर सकेत किया जा चुका है, सीमित, सकुचित एव शिथिल होता चला गया। तथापि, उसी के कारण जो कितने ही जैन अनेक सनातनी हिन्दुओ की भाँति, स्वधर्म की वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण धर्म त्याग करते चले जा रहे थे उस मे भारी रोक थाम हो गई। प्रत्युत कुँवर दिग्विजयसिह, बाबा भागीरथ जी वर्णी, प० गणेश प्रसाद जी, मु० कृष्ण लाल वर्मा, महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन, प्रो० धर्मचन्द्र, स्वामी कर्मानन्द जी आदि अनेक कट्टर जैन विरोधी जैनेतर विद्वान भी जैन धर्म के परम भक्त और उत्कट प्रचारक हो गये।

अब समाजगत मोटी मोटी कुरीतियो की ओर संकेत मात्र करना पर्याप्त नही रह गया। सामाजिक सगठन को दृढ करने और विवाह सस्था सम्बन्धी विभिन्न धार्मिक सामाजिक प्रश्नो की विशद मीमासा करने की आवश्यकता

हुई। बाल विवाह वृद्ध विवाह बहु विवाह आदि का विरोध अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह का समर्थन, विवाह आदि मे फिजूल खर्ची पर प्रतिबन्ध, वेश्या नृत्य, भडवे, नक्काली आदि का नाच गाना और कन्या विक्रय की बन्दी, दहेज मे कमी, जैनविधि से सस्कारो का किया जाना, आदि सुधारों का प्रचार किया जाने लगा। स्त्री शिक्षा, दस्सा पूजाधिकार तथा शुद्धि आन्दोलन उठाये गये देवबन्द के एक जैनी वकील जो मुसलमान हो गये थे उन्हें बा० सूरजभान जी और उनके साथियो ने तीव्र विरोध की उपेक्षा करके फिर से जैनी बनाया और समाज मे शामिल किया। दस्सो के पूजाधिकार को लेकर मेरठ मे एक युगान्तरकारी मुकद्मे बाजी भी हुई जिसमें पं० गोपाल दास जी बरैया ने भी दस्सा पूजाधिकार का ही समर्थन किया। श्राविकाश्रम, विधवाश्रम, अनाथालय, गुरुकुल, छात्रालय आदि खोले गये। और अखिल भारतीय जैन समाज के विभिन्न उपसम्प्रदायो के बीच सद्भाव एव सामञ्जस्य स्थापित करने के प्रयत्न चालू हुए। किन्तु साथ ही तीर्थों को लेकर उभय सम्प्रदायो के मध्य मुकद्मेबाजी भी खूब चल निकली। इन कार्यों मे भी प्राय बा० सूरज भान जी ही अग्रणी थे, उनके कई एक साथियो ने अपनी शुद्ध साहित्यिक अभिरुचि के कारण प्रचार कार्य मे धीरे धीरे उनका साथ छोड दिया, किन्तु उनके स्थान मे उन्हें कितने ही अन्य उत्साही साथी प्राप्त होते गये, और उपरोक्त विषयो एव समस्याओ पर भी पर्याप्त साहित्य प्रकाशित हुआ।

समाज सुधार के अतिरिक्त इस युग की दूसरी प्रवृत्ति धर्म प्रचार थी। आर्य समाज के बढ़ते हुए प्रचार से प्रभावित होकर जैन नेताओ ने भी बाह्य जनता मे स्वधर्म प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस कार्य का श्रीगणेश वस्तुत: पंजाबी स्थानकवासी (बाद को श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी) साधु स्वामी आत्माराम जी ने किया था। उन्होंने अन्य जैन नेताओ के साथ साथ आर्य समाज के विरोध का दृढ़ता से मुकाबला किया, जैनियो का स्थितिकरण किया और कई एक अंग्रेजो को भी जैन बनाया। उन्होंने स्वय कई पुस्तकें लिखी तथा उनकी स्मृति मे स्थापित आत्माराम जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला से अनेक उपयोगी

ट्रैक्ट प्रचारार्थ प्रकाशित हुए। जिस प्रकार स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रतिभा शाली शिष्य स्वामी विवेकानन्द अमेरिका आदि देशो मे हिन्दू धर्म का प्रचार करने के लिये गये थे, उसी प्रकार और लगभग उसी समय स्वामी आत्माराम के सुयोग्य शिष्य स्व० वीरचन्द राघव जी गाधी भी स्वगुरु की प्रेरणा से यूरोप अमेरिका आदि मे जैन धर्म के प्रचारार्थ गये और उन्होने शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में भी महत्त्व पूर्ण भाग लिया। उनके पश्चात् स्व० बैरिस्टर, जग-मन्दर लाल जैनी, चीफ जज इन्दौर ने तो यूरोप मे जैन धर्म प्रचार को अपने जीवन का व्रत ही बना लिया था। उन्होंने कई बार विदेश यात्रा की और इग्लैंड मे तो वे पर्याप्त समय तक रहे भी। कितने ही अगरेजो को उन्होंने जैनी बनाया जिनमे श्री हर्बर्ट वारेन, जे० गोर्डन उनकी पत्नी आदि उल्लेखनीय हैं। इन जे० एल० जैनी ने ही लन्दन मे 'ऋषभ जैन फ्री लैन्डिंग लायब्रेरी' नामक पुस्तकालय तथा जैन केन्द्र की स्थापना की, जैन धर्म पर अग्रेजी मे स्वय कई स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी तथा तत्त्वार्थ सूत्रादि प्राचीन ग्रन्थो के अनुवादादि तैयार करके प्रकाशित कराये, वर्षों पर्यन्त अगरेजी जैन गज़ट का योग्यता के साथ सुसम्पादन किया, और मृत्यु के समय अपनी समस्त सम्पत्ति का इन्ही उद्देश्यो में उपयोग किये जाने के लिये एक ट्रस्ट कर गये। उन्ही की भाँति स्व० बैरिस्टर चम्पतराय जी ने भी विदेशो मे जैन धर्म प्रचार को ही अपना लक्ष्य बनाया, इसी उद्देश्य से अनेक बार यूरोप और अमेरिका की यात्रा की और कितने ही यूरपियन स्त्री पुरुषो को जैन धर्म मे दीक्षित किया। जैन धर्म पर अगरेजी मे जो स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी गई उनमे बैरिस्टर साहब की कृतियें ही सर्वाधिक हैं। इन्होंने अपने पिता की स्मृति मे देहली मे 'सोहन लाल बाँकेराय जैन एकेडेमी' की स्थापना की और अपनी समस्त सम्पत्ति को विदेशो मे जैन धर्म का प्रचार करने के लिये दान कर दिया। बाडीलाल मोतीलाल शाह, ऋषभदास वकील, पारसदास खजानची, रा० ब० लठ्ठे, पूर्ण-चन्द्र नाहर, मुन्शी लाल एम० ए०, डा० बनारसी दास, बा० अजित प्रसाद ब्र० शीतल प्रसाद आदि सज्जनो ने भी अगरेजी पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित

नेबन्धो तथा स्वतन्त्र पुस्तको के रूप मे अ गरेजी जैन साहित्य का निर्माण केया।

जे० एल० जैनी, प० अर्जुनलाल सेठी, महात्मा भगवान दीन, मा० चेतनदास, बा० अजित प्रसाद आदि महानुभावो की जो भारत जैन महामडल को लेकर एक सुदृढ़ टीम बन गई थी उसके वास्तविक प्राण थे। आरा निवासी कुमार देवेन्द्र प्रसाद, ये महा उद्यमी, निस्वार्थ एव सच्चे 'स्वय सेवक' थे और हिन्दी के भी सुलेखक थे। स्याद्वाद विद्यालय काशी के सन् १९१४ के वार्षिकोत्सव जैसे कई महत्त्व पूर्ण आयोजन इन्होने किये जिनमे उच्च कोटि के ससार प्रसिद्ध देशी विदेशी अजैन विद्वानो यथा डा० हर्मन जेकोबी डा० वान ग्लेजनेप, प्रो० जे हर्टल, डा० एनी बेसेन्ट, म० म० डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण, डा० टी० के लड्डू, म० म० प्रो० राममिश्र, महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन इत्यादि को निमन्त्रित करके जैन धर्म पर उनके महत्त्व पूर्ण ऐतिहासिक भाषण कराये और जैन साहित्य एव कला की प्रदर्शनियें की। इन आयोजनों के परिणाम स्वरूप जैनधर्म के विषय मे कम से कम जैनेतर विद्वत्समाज की अभिज्ञता तो बहुत बढ गई, उनके अनेक भ्रम दूर हो गये और यह धर्म तथा इसकी सस्कृति सम्मान पूर्ण अध्ययन की वस्तु समझे जाने लगे। कुमार देवेन्द्र प्रसाद जी के ही प्रयत्नो से 'सेन्ट्रल जैन पब्लिशिग हाउस, की स्थापना हुई और उससे 'सेक्रेड बुक्स आफ दी जेन्स' सीरीज का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसमे कि पचास्तिकाय, समय सार, तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य सग्रह, गोमट्टसार, परमात्म प्रकाश, नियमसार आदि कितने ही प्राचीन दिगम्बर जैन आर्ष ग्रन्थो के अ गरेजी अनुवादादि सहित उच्चकोटि के जैनाजैन विद्वानो द्वारा सुसम्पादित सस्करण प्रकाश मे आये। मडल का मुख पत्र अ गरेजी जैन गजट भी बडे उपयोगी एव आकर्षक रूप मे निकलता रहा। मद्रासी, दक्षिणी, बगाली, -पजाबी-विभिन्न प्रान्तीय अनेक जैनाजैन विद्वानो ने इन कार्यों मे महत्त्व पूर्ण योग दान दिया।

इसी युग मे जैन धर्म के सच्चे मिशनरी और त्यागी सेवक स्वर्गीय ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी थे। वे धर्म प्रचार और समाजोन्नति के लिये तड़पते हुए हृदय को लिये हुए देश के कोने कोने मे—बर्मा, स्याम और लङ्का तक गये और स्थान स्थान मे सार्वजनिक सभाएं कराकर जैन धर्म की ओर सर्वसाधा-

रण को आकृष्ट किया। जैन मित्र आदि कई पत्रो का योग्यता पूर्वक सम्पादन किया तथा अनेक व्यक्तियो को प्रोत्साहन दे देकर अच्छा खासा लेखक बना दिया। स्वय अकेले उन्होने सर्व प्रकार की, मौलिक, टीका अनुवादादि, सकलन सग्रह, फुट कर लेख निवन्ध, धार्मिक, ऐतिहासिक, शिक्षा एव समाज सुधार विपयक छोटी वडी रचनाए सख्या एव मात्रा मे निर्माण की और छपा कर प्रकाशित करदी उतनी शायद छापे के आरम्भ से आज पर्यन्त कोई दूसरा व्यक्ति नही कर पाया। ब्रह्मचारी जी के जीवन का प्रत्येक क्षण जैन धर्म और साहित्य के प्रकाशन प्रचार मे ही व्यीतत हुआ। रेल मे यात्रा करते हुए तथा रोग की दशा मे भी वे लिखते रहते थे। विधवा विवाह के प्रचार के लिये उन्होंने 'सनातन जैन समाज' तथा 'सनातन जैन' पत्र की स्थापना की। मध्य काल के एक जैन सत तारण स्वामी द्वारा प्रस्थापित तारण समाज और उसके पुरातन साहित्य को प्रकाश मे लाने का श्रेय भी ब्रह्मचारी जी को ही है। साथ ही वे उत्कट देश भक्त भी थे और काग्रेस के प्राय सब ही अधिवेशनो मे सम्मिलित हुए। जैन समाज मे वे निरन्तर देशभक्ति की भावना को फूकते रहते थे।

तत्कालीन नेताओ ने शिक्षा प्रचार की ओर भी विशेष ध्यान दिया। बाल और कन्या पाठशालाए तो स्थान स्थान मे खुलनी प्रारभ हो गई थी अब बडे-बडे जैन सस्कृत विद्यालय भी खुलने लगे। बनारस, इन्दौर, सहारनपुर, कारजा, सागर, मुरैना, मथुरा आदि स्थानो मे ये विद्यालय स्थापित किये गये। प० गोपाल दास जी बरैया की कृपा से जैन सिद्धात एव दर्शन के परिज्ञाता सस्कृतज्ञ युवक विद्वानो का एक अच्छा दल तैयार हो गया था। अतएव उन विद्यालयो के लिये योग्य अध्यापको की कमी न रही। समाज के श्रीमानो और सेठो ने द्रव्य से सहायता की। इन विद्यालवो मे जैन दर्शन, न्याय, सिद्धात, साहित्य आदि के अतिरिक्त कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा क्वीन्स सस्कृत कालिज बनारस की परिक्षाओ के लिए भी विद्यार्थी तैयार किये जाने लगे। दि० जैन महासभा ने जैनशास्त्री आदि परिक्षाओ के निमित्त अपना एक परीक्षा

बोर्ड स्थापित किया और उत्कट शिक्षा प्रेमी सेठ माणिक चद्र बम्बई वालो ने भी एक 'माणिक चद्र' दि० जैन परीक्षा बोर्ड स्थापित किया। उक्त विद्यालयो मे अध्ययन करके सैकडो विद्यार्थी प्रतिवर्ष इन परीक्षा बोर्डों की परिक्षायें पास करने लगे। परीक्षा बोर्डो द्वारा निर्धारित पाठ्य क्रमो के लिए उपयुक्त पाठ्य पुस्तको की आवश्यकता हुई जिसकी पूर्त्ति के प्रयत्न से भी जैन पुस्तक प्रकाशन को अच्छी प्रगति मिली। जैन बाल पाठशालाओ मे धार्मिक शिक्षा देने की ओर विशेष ध्यान रक्खा गया और उसके लिये बाल बोध जैन धर्म जैसी अनेक छोटी २ बालकोपयोगी पुस्तको का निर्माण हुआ।

किन्तु नित्य प्रति वृद्धि को प्राप्त होता हुआ आधुनिक अंग्रेजी प्रणाली से शिक्षित समुदाय इन बाल पाठशालाओ और सस्कृत विद्यालयो से ही सन्तुष्ट न रह सका, उसकी दृष्टि मे जैन बोर्डिंग हाउस, स्कूलो और कालिजो का उपयुक्त केन्द्रो मे स्थापित किया जाना समय की परम आवश्यकता थी। सेठ माणिक चन्द्र ने तो स्थान स्थान मे जाकर जैन छात्रालय स्थापित कराने का बीडा ही उठा लिया था। अनेक स्थानो मे जैन हाई स्कूल खुले और दो-एक जैन कालिज भी स्थापित हुए। कुछ एक महाप्राण जैन नेताओ की यह भी उत्कट अभिलाषा थी कि एक जैन विश्व विद्यालय स्थापित हो जाय। इसके लिए प० गणेश प्रसाद जी, प० दीप चन्द्र जी और बाबा भागीरथ जी—ये वर्णीमय प्रयत्न शील भी हुए, किन्तु समाज के श्रीमानो की ओर से कोई सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे और आजतक भी जैन विश्व विद्यालय की स्थापना न हो पाई। इसी समय कुछ नेताओ का यह विचार हुआ कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाणी किन्ही अंशो मे उपयोगी होते हुए भी सांस्कृतिक नैतिक एव राष्ट्रीय दृष्टि से अति दोष पूर्ण एव हानिकर है, अतएव ऐसे गुरुकुल स्थापित किये जाय जिनमे भारतीय एव पश्चिमी शिक्षा प्रणालियो का समन्वय करते हुए नवीन सन्तति को धार्मिक, चारित्रवान, देश भक्त एव सुशिक्षित बनाया जा सके। फल स्वरूप सन् १९११ मे बा० सूरजभान जी के प्रबन्ध और देश भक्त महात्मा भगवान दीन जी के अधिष्ठातृत्व मे हस्तिनागपुर

का स्थायी फंड श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के उद्योग से केवल जैनो द्वारा प्रदत्त था और इससे हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थ केवल लागत मूल्य मे बेचे जाने की योजना थी। इन्दौर की मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति को भी जैनो से कई हजार रुपया प्राप्त हुआ था। खण्डवे की हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मण्डली के उत्साही सचालक एक बा. माणिकचन्द्र जैनी वकील थे और आरा की नागरी प्रचारिणी सभा के प्राण बा जैनेन्द्र किशोर थे, इत्यादि। हिन्दी जैन साहित्य के प्रकाशन मे बम्बई के जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय तथा रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला ने प्रमुख भाग लिया। धार्मिक से अतिरिक्त विषयो पर लिखने वाले लगभग दो दर्जन जैन सुलेखक विद्यमान थे और उनकी सख्या मे निरन्तर वृद्धि हो रही थी।

इस प्रकार इस युग मे निम्नोक्त विविध प्रकार का साहित्य प्रकाश मे आया—

(१) प्राचीन सस्कृत प्राकृत ग्रन्थो के सम्पादित सस्करण—मूल मात्र अथवा टीका अनुवादादि सहित। उल्लेखनीय सम्पादक अनुवादक टीकाकार आदि—बा० सूरजभान, प० पन्नालाल बाकलीवाल, प० पन्नालाल सोनी, उदयलाल काशलीवाल, प० वशीधर शास्त्री, प० खूबचन्द शास्त्री, प० लालाराम शास्त्री, प० मनोहर लाल, प० गजाधर लाल, जे एल जैनी, बा०, ऋषभदास वकील, ला मुन्शी लाल, मुनि माणिक जी, प्रो ए सी चक्रवर्ती, ब्र शीतल प्रसाद, शरच्चन्द्र घोषाल, प० नाथूराम प्रेमी इत्यादि। पुरातन हिंदी जैन साहित्य को प्रकाश मे लाने का अधिकतर श्रेय बाकली वाल जी और प्रेमी जी को है। प्रेमी जी ने तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जबलपुर मे होने वाले सप्तम अधिवेशन मे 'हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास' शीर्षक एक विस्तृत निबन्ध भी पढा था जो जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से सन् १९१७ मे पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।

(२) प्राचीन ग्रन्थो की समीक्षा परीक्षा—साहित्यक, सैद्धान्तिक एव ऐतिहासिक विश्लेषण सम्बन्धी साहित्य। उल्लेखनीय लेखक—प० जुगल-किशोर मुख्तार, बा० सूरजभान वकील, प० नाथूराम प्रेमी।

(३) जैन इतिहास सम्बन्धी स्वतन्त्र पुस्तके तथा ऐतिहासिक सामग्री के सकलन ग्रन्थ यथा विज्ञप्ति सग्रह, प्रशस्ति सग्रह, शिला-लेख सग्रह आदि—उल्लेखनीय लेखक—डा ए गिरनाट, रा ब पारसदास, पूर्णचन्द्र नाहर, मुनि जिन विजय जी, उमराव सिंह टक, पद्मराज रानीवाले, प नाथूराम प्रेमी, ब्र शीतलप्रसाद, डा बनारसीदास, बिहारीलाल चैतन्य, प्रभुदयाल तहसीलदार, बा. सूरजमल, प्रो आयगर, प्रो शेशागिरि राव, रा ब नरसिंहमाचर आदि।

(४) जैन धर्म और उसके अहिंसा आदि सिद्धान्तो तथा उपदेश को आधुनिक भाषा और शैली मे स्वतन्त्र रूप से प्रस्तुत करने वाली पुस्तके—उल्लेखनीय लेखक—प गोपालदास बरैया (मुरैना विद्यालय तथा जैन मित्र पत्र के सस्थापक और प्रथम सम्पादक) बा ऋषभदास वकील (मेरठ), जे एल जैनी, श्री लट्ठे, पूर्णचन्द नाहर, ब्र शीतल प्रसाद, चम्पतराय बैरि-स्टर, बा. सूरजभान वकील, प पन्नालाल बाकलीवाल, ला. मुन्शीलाल, बा माणिक चन्द, प दरयाव सिंह सोधिया, मुनि शान्ति विजय, प जुगल-किशोर मुख्तार आदि।

(५) समाज सुधार एव शिक्षा प्रचार सम्बन्धी पुस्तके—उल्लेखनीय लेखक बा सूरजभान, प जुगल किशोर, ज्योतिप्रसाद प्रेमी, दयाचन्द गोयलीय, प पन्नालाल बाकलीवाल, आदि।

(६) पाठ्य पुस्तके—उल्लेखनीय लेखक—प पन्नालाल बाकलीवाल, बा दयाचन्द गोयलीय, ब्र शीतल प्रसाद, प गोपालदास बरैया, लाला मुन्शी-लाल आदि।

(७) उपन्यास नाटक कहानी आदि—उल्लेखनीय लेखक—प गोपाल दास बरैया (सुशीला उपन्यास), बा सूरजभान, प अर्जुनलाल सेठी, ला मुन्शी-लाल, बा माणिक चन्द, बा कन्हैयालाल, ला न्यामतसिंह हिसार (इनके नाटको और भजनो की बडी धूम रही), बा कृष्णलाल वर्मा, प. नाथूराम प्रेमी आदि।

(८) हिन्दी के सार्वजनिक पत्रो मे फुटकर लेख तथा स्वतत्र अनूदित सामयिक लेख निवन्ध चरित्र आदि—उल्लेखनीय लेखक–मि० जैन वैद्य, ला० मुन्शीलाल, वा० दयाचन्द्र गोयलीय, वाडीलाल मोतीलाल शाह, वा० सुपार्श्वदास गुप्त (इनका पार्लमेंट नामक ग्रन्थ ४०० पृष्ठ का था), वा० मोतीलाल, डा० वेणीप्रसाद, वा० मणिकचन्द्र, खूबचन्द सोधिया, डा० निहालकरण सेठी, वालचन्द्राचार्य, सुखसम्पत्ति राय भडारी, प० नाथूराम प्रेमी, आदि ।

(९) इस युग की स्फुट तथा फुटकर रचनाओं मे जुगलकिशोर मुख्तार, नाथूराम प्रेमी, ज्योति प्रसाद प्रेमी आदि की हिन्दी कविताए, मु० द्वारका प्रसाद के तीर्थ यात्रा विवरण, ब्र० शीतल प्रसाद व वैरिस्टर चम्पतराय के अन्य धर्मों के साथ जैन धर्म के तुलनात्मक अध्ययन, इत्यादि ।

(१०) दरखशा, माईल, पैकाँ, ऋषभदास, सूरजभान, ज्योतिप्रसाद मामचन्दराय, सुमेरचन्द्र, ओसवाल, शिवव्रतलाल, नत्थूराम, चन्दूलाल अख्तर, आदि की उर्दू जैन रचनाए उल्लेखनीय हैं । अग्रेजी आदि विदेशी भाषाओ में जैन साहित्य अथवा जैन सम्बन्धी साहित्योल्लेखों का विवरण रा० व० पारसदास व वा० छोटेलाल की विवलियोग्रेफियो और जैन गजट (अग्रेजी) की फाईलो से प्राप्त हो सकता हैं ।

इस युग के जैन साहित्य प्रकाशन मे विशेष योग देनेवाली सस्थाएं, प्रकाशक तथा व्यक्ति निम्नलिखित हैं—वम्बई की माणिकचन्द्र दि० जै० ग्रन्थमाला, मुनि अनन्तकीर्ति दि० जैन ग्रन्थमाला, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय, जैन मित्र कार्यालय, कलकत्ते की सनातन जैन ग्रन्थमाला, जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था, जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, और सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस आरा (अव लखनऊ), जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, जैनेन्द्र प्रेस कोल्हापुर, दि० जैन पुस्तकालय सूरत, जैन मित्र मडल देहली, हीरालाल पन्नालाल जैन वुक सेलर्स देहली, दि० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्वाला, आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्वाला,

जैनीलाल जैनी देवबन्द, ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, न्यामत सिंह जैनी हिसार, ला० जौहरीमल सर्राफ देहली (विशेष रूप से उत्कट समाज सुधार विषय के साहित्य के लिये), सेठ हीराचन्द व सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर, सेठ गाधी नाथारग आकलूज, गोपाल अम्बादास चवरे कारजा—इन तीनो श्रीमानो ने प्राचीन ग्रन्थो के प्रकाशन मे भारी हिस्सा लिया । इनके अतिरिक्त जयपुर निवासी बा० दुलीचन्द श्रावक, मु० अमनसिंह, मु० सुमेरचन्द, बैरि० चम्पतराय, कुमार देवेन्द्रप्रसाद, ला० देवीसहाय (फीरोजपुर) उम्मेदसिंह मुसद्दीलाल (अमृतसर) बुद्धिलाल श्रावक, मु० नाथूराम लमेचू आदि उल्लेखनीय है । मद्रास मे सी० मल्लिनाथ, प्रो० चक्रवर्ती आदि सज्जनो ने जैन साहित्य प्रकाशन का कार्य किया ।

३ वर्तमान युग :—सन् १९२५ के उपरान्त जैन साहित्य प्रकाशन के वर्तमान युग का प्रारम्भ होता है ।

अब विभिन्न मतो के द्वारा धार्मिक दृष्टि से किये जानेवाले विद्वेषपूर्ण खडन मडनो का समय नही रह गया था । आर्य जैन द्वन्द प्राय समाप्त हो गया था । किसी भी धर्म के मन्तव्यो एव मान्यताओ का मखौल उडाने, उसे तुच्छ, नीचा, नास्तिक या मिथ्या सिद्ध करने के प्रयत्न निन्दनीय समझे जाने लगे और सर्वधर्म समभाव स्थापित करने की चेष्टाए की जाने लगी । किंतु साथ ही एक नवीन प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होने लगी । अनेक जैनेतर विद्वान अपनी साहित्यिक, दार्शनिक एव ऐतिहासिक रचनाओ में जैन धर्म दर्शन, सस्कृति, आदि की प्राचीनता, इतिहास और मूल्यवान देनो की अज्ञान अथवा प्रमाद के वश होकर उपेक्षा तथा उनके सम्बन्ध मे भ्रमपूर्ण एव मिथ्या कथन भी करने लगे । फलस्वरूप उन विद्याओ के साथ तो अन्याय होता ही है साथ ही जैन धर्मावलम्बियो के स्वाभिमान को भी ठेस पहुचती है और उन्हें क्षोभ होता है । स्वातन्त्र्य प्राप्ति और सर्वतन्त्र जनतन्त्र की स्थापना के उपरान्त बहुसख्यक हिन्दू धर्मानुयायियो के द्वारा जिनका कि राजनैतिक आदि क्षेत्रो मे बाहुल्य है, यह प्रवृत्ति और अधिक चरितार्थ

होने लगी। राष्ट्रीयता के नाम पर जैन धर्म और सस्कृति की स्वतन्त्र सत्ता का निषेध किया जाने लगा है और हिन्दू धर्म तथा सस्कृति द्वारा केवल अल्प सख्यक होने के कारण ही जैन धर्म और सस्कृति को हडप लिये जाने की नवीन चेष्टाए प्रारम्भ हो रही हैं। किंतु जिन अर्थों मे एक सामान्य हिन्दू विशुद्ध भारतीय है उन्ही अर्थों मे एक जैनी भी वैसा ही विशुद्ध भारतीय है। हिन्दू धर्म के नाम से अभिप्रेत वैदिक परम्परा के जिन अनेक सम्प्रदायो और मत मतान्तरो का समुदाय जितना प्राचीन और भारत का अपना है उससे शायद कही अधिक प्राचीन और भारत की अपनी ही श्रमण परम्परा का प्रतिनिधि जैन धर्म और उसकी सस्कृति है। ये धार्मिक अथवा सास्कृतिक भेद किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता, नागरिकता अथवा भारतीयता में बाधक नही हो सकते। फिर ऐसे विवादास्पद शब्द (अर्थात् हिन्दू) का इतना मोह क्यो जबकि वह एक परम्परा विशेष के अनुयायियो के लिये ही प्रयुक्त होते चले आने के कारण समग्र राष्ट्र का सूचक होने के लिए उपयुक्त नही है और जिसके उक्त रूप मे प्रयोग करने से सदैव भारी भ्रान्ति उत्पन्न होते रहने की सभावना है। जब जैन धर्म और सस्कृति की पृथक एव स्वतन्त्र सत्ता है, उसकी परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, उसका अपना अति स्वर्णिम इतिहास है और वह शुद्ध स्वदेशीय है तब उसके अपने आपको हिन्दू न कहने से या हिन्दूधर्म और सस्कृति का अ ग न मानने से तो कोई वे विदेशी, अभारतीय, राष्ट्र के प्रतिविद्रोही या उसके लिए अजनबी हो नही जाते। वे भारत के हैं और भारत उसका है यह तथ्य निर्विवाद है। जहां तक जैनाध्ययन के जिसमे कि जैन सस्कृति की सभी विविध शाखाओ के अध्ययन का समावेश है, महत्त्व और प्रगति का बहुत कुछ अनुमान इसी पुस्तक के अन्त मे प्रकाशित स्वतन्त्र लेख से हो सकता है। जैन ही नही अनेक उद्‌भट अजैन विद्वान भी अब सहृदय एव शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से जैनाध्ययन में दिलचस्पी ले रहे हैं और भारत के सांस्कृतिक विकास का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न विश्वविद्यालयो मे जैनाध्ययन को एक विशेष

अध्ययनीय विषय बनाकर उसके सम्बध मे सुव्यवस्थित शोध खोज अनुसधानादि चालू किये कराये जाय ।

अजैन लेखको की उपरोक्त प्रकार की भ्रान्त धारणाओ और मिथ्या या अन्यथा कथनो के परिहार एवं निराकरण के उद्देश्य से भी बहुत कुछ साहित्य प्रकाशित होने लगा है, किन्तु इस आवश्यकता की पूर्त्ति जैसे सुचारु सुव्यवस्थित ढग पर होनी चाहिये थी वैसी अभी नही हो पारही है ।

जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायो के बीच समन्वय तया ऐक्य के जो प्रयत्न पिछले युग मे प्रारभ हुए थे वे इस युग मे शिथिल प्राय होते गये । और जिस प्रकार भारतीय राजनैतिक क्षेत्र मे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के प्रयत्नो का परिणाम अतिकटु एव विनाशकारी सिद्ध हुआ उसी प्रकार दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदायो मे सद्भाव एव एक-सूत्रीकरण के प्रयत्न भी उभय सम्प्रदायो के बीच की खाई को और अधिक विस्तृत एव गहरी करते दीख पड रहे हैं । विभिन्न तीर्थों के प्रश्न को लेकर होने वाली चिरकालीन मुकदमेबाजी के अतिरिक्त नवीन साहित्यिक शोध खोज का लाभ उठा कर दोनो ओर के कितने ही विद्वान प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उभय सम्प्रदायो के साहित्यिक सैद्धान्तिक ऐतिहासिक आदि मतभेदो को और अधिक सूक्ष्मता के साथ पुष्ट करने लगे हैं । जो इने गिने नेता इतने पर भी समन्वय के प्रयत्न मे लगे हुए हैं वे भी कुछ ऐसा भ्रमपूर्ण ढग अख्त्यार किये हुए हैं कि जिससे वे सद्भाव उत्पन्न करने के बजाय शका और द्वेष की पुष्टि करने मे ही सफल हो रहे हैं । तथापि ऐसे उदाराशय विद्वानो का भी अब अभाव नही है जो कि अपनी दृष्टि की विशालता के कारण अनेकान्त मूलक सहिष्णुता के साथ सभी मतभेदो को गौण करते हैं तथा एक उपरिम समस्तर से ही विचार करते हैं । इस दिशा मे ऐसे ही महानुभावो से कुछ आशा है ।

सामाजिक सगठन की दृष्टि से भी जैन समाज कुछ आगे नही बढा । पिछले युग के नेता सख्या मे तो थोडे थे किन्तु प्राय सर्व ही सामाजिक क्षेत्रो पर उनका अधिकार था, उनमे परस्पर सहयोग और एक सूत्रता थी, वे अपना

वहुमूल्य समय देकर अनेक कष्ट लाञ्छना अपमानादि सहन कर, अपनी जेव मे ही आवश्यक द्रव्य भी व्यय करके पूरी लगन और तत्परता के साथ समाजोन्नति के विविध कार्यक्रमो मे जुटे रहते थे। सस्थाए भी थोडी थी पर वे ऐसे कर्मठ, निस्वार्थ एव कर्त्तव्य शील नेताओ की अध्यक्षता मे वहुत कुछ ठोस कार्य कर रही थी। किन्तु अव आये दिन नई-नई सस्थाओ का जन्म होने लगा, उन्हे व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति का साधन वनाया जाने लगा, छोटी-छोटी व्यापारिक कम्पनियो जैसी उनकी स्थिति हो गई। उनके नेताओ और कार्यकर्ताओ मे या तो पद और मान के लोलुपी अदीमुल फुर्सत वडे-वडे श्रीमान होने लगे या फिर वैतनिक अथवा नाम मात्र के लिए अवैतनिक ऐसे व्यक्ति होने लगे जो प्राय करके न स्वल्प सतोषी ही होते हैं और न जीवन निर्वाह सम्वधी द्रव्योपार्जन की चिन्ता से मुक्त ही। लोभ एव अधिकार मोह के कारण वरसाती मेढको की भाँति नित्य प्रति वढती जाने वाली इन सस्थाओ मे परस्पर सहयोग, सद्भाव और एक सूत्रीकरण नही हो पाता। फलस्वरूप समाज की शक्ति और द्रव्य का तो पर्याप्त व्यय होता है किन्तु किसी दशा मे भी वाञ्छनीय इष्ट सिद्धि नही हो पा रही है। इन सस्थाओ के अधिवेशन अवश्य ही वडी धूम धाम और शान के साथ होते हैं, उनके प्रचारक भी स्थान-स्थान मे घूमते हैं, कई एक संस्थाओ के अपने मुखपत्र भी है, पुस्तकादि के रूप मे भी साहित्य प्रकाशित होता है, किन्तु उपरोक्त दोषो के कारण तथा निस्वार्थ कर्त्तव्यशीलता के अभाव मे न इन सस्थाओ का और न इनसे सवधित व्यक्तियो का समाज पर कोई प्रभाव पडता है। वार्षिक कार्य विवरण आकर्षक रिपोर्टो के रूप मे प्रकाशित होते है किन्तु ठोसकार्य कुछ भी होता नही दीखता। समस्याए वढती चली जाती है पर किसी समाज की समस्या का भी सन्तोषजनक समाधान नही होता। समाज सुधार शिक्षा, राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक किसी भी क्षेत्र मे जो जो आवश्यकताएं हैं वे इन्ही की पूर्ती के लिए स्थापित इतनी सारी सस्थाओ सैंकडो नेताओ, सैंकडो ही विद्वानो और सौ के ही लगभग सामयिक पत्रोके होते हुए भी प्राय कुछ भी पूरी नही हो पा रही हैं। गत बीस वर्षो मे कई एक उच्च

कोटि की साहित्यिक शोध खोज निर्माण प्रकाशन आदि सम्बधी सस्थाओ का जन्म हो चुका है। किन्तु उनमे भी प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से अन्य सामान्य जैन सस्थाओ के ही अनेक दोष हैं। पृथक-पृथक उन सबकी शक्ति सीमित और अल्प है और व्यक्तिगत स्वार्थो अथवा ईर्ष्या द्वेपादि के कारण उनमे परस्पर सहयोग और एकसूत्रता नही हो पाती। फलस्वरूप साहित्य निर्माण और प्रकाशन प्रगति मे भी जितना योगदान वे कर सकती थी उसका अल्पाश मात्र ही हो रहा है।

फिर भी इस युग मे साहित्यिक, ऐतिहासिक, सास्कृतिक एव दार्शनिक खोज शोध का कार्य तथा ग्रन्थो का सम्पादन प्रकाशन बहुत कुछ व्यवस्थित एव प्रमाणीक ढग पर होने लगा है। विभिन्न उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियो का मिलान करके, विविक्षित विषय सम्बन्धी पूर्वापर साहित्य के साथ तुलना पूर्वक सावधानी के साथ पाठ सशोधन, अनुवाद, व्याख्या, आवश्यक टिप्पणादि और विद्वत्तापूर्ण विस्तृत विवेचनात्मक प्रस्तावनाओ सहित महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थों के सुसम्पादित सस्करण प्रकाशित होने लगे हैं। दिगम्बरो के प्राचीनतम् आगम साहित्य-धवलादि टीकाओ सहित षटखण्डागम, कषाय पाहुड, महाबन्ध आदि ग्रन्थराजो के भी उपरोक्त प्रकार सुसम्पादित सस्करण प्रकाश मे आ रहे है। प्राचीन जैन अपभ्रश साहित्य का भी उद्धार हो रहा है। कितने ही अपभ्रश ग्रन्थ प्रकाश मे आ गये है, जिससे कि हिन्दी भाषा के विकास और इतिहास सम्बन्धी विचारो मे भारी क्रान्ति उत्पन्न हो गई है। हिन्दी के पुरातन जैन कवियो और लेखको का साहित्य भी प्रकाश मे आ रहा है। जैन धर्म, जैन दर्शन, जैन सघ, जैन साहित्य, राजनीति मे जैन नेतृत्व आदि विषयों पर विविध भाषाओ मे स्वतन्त्र ऐतिहासिक ग्रन्थ, शिला लेख सग्रह, प्रशस्ति सग्रह विज्ञप्ति पत्रसग्रह, ग्रन्थसूचियें, ग्रन्थ कोष, उद्धरण कोष आदि तथा मूर्त्ति विज्ञान, स्थापत्य, चित्रकला आदि विविध कलाओ और गणित ज्योतिष चिकित्सा विज्ञान आदि विविध विज्ञानो तथा सामान्यतया जैन सास्कृतिक देनो

सस्थापक थे और यह दो वर्ष तक चला । इसके पश्चात इन्डिया गजट, कलकत्ता गजट, आदि अ ग्रेजी पत्र निकले । सन् १७९९ मे भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने अखबारो पर कडा प्रतिवन्ध लगा दिया जो सन् १८१८ मे लार्ड हेंस्टिग्ज द्वारा हटाया गया, और उसके स्थान मे कुछ नियम वना दिये गये । अत इस वीच मे पुराने पत्रो का प्रकाशन और नवीन पत्रो की स्थापना प्राय वन्द ही रही । सन् १८१८ के उपरान्त फिर से नवीन पत्र निकलने लगे । वगला भाषा का सर्व प्रथम पत्र 'दिग्दर्शन' श्रीरामपुर मिशन द्वारा अप्रेल सन् १८१८ मे निकाला गया । मई सन् १८१८ मे वगला का 'समाचार दर्पण' और तत्पश्चात् 'बगला गजट' निकले । उर्दू का सर्व प्रथम पत्र 'जाम इ जहान् नूमा' २८ मार्च सनु १८२२ को और फारसी का 'मीरातुल अखवार १२ अप्रेल सन् १८२२ को निकले । ७अक्तूबर सन् १८२२ को समाचार पत्रो पर फिर से कडे प्रतिबन्ध लगा दिये गये अप्रेल सन् १८२३ मे प्रथम भारतीय प्रेस कानून वना जिसके अनुसार पत्रो के प्रकाशन के लिये सरकार की अनुमति लेना अनिवार्य थी । ४ दिसम्वर सन् १८२७ से यह कानून अ शत रद्द हो गया और सन् १८३५ मे विलकुल हटा दिया गया, किन्तु सन् १८५७ से वह फिर से लागू कर दिया गया ।

उन्ही वनर्जी महोदय के एक दूसरे लेख 'हिन्दी का सर्व प्रथम समाचार-पत्र' (विशाल भारत, फर्वरी सन् १९३१) से विदित होता है कि हिन्दी का सर्व प्रथम पत्र, जैसा कि प्राय समझा जाता था, सन् १८४५ मे स्थापित 'वनारस अखवार' नही था, वरन् ३० मई सनु १८२६ को कानपुर निवासी प० जुगलकिशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ते से निकाला जाने वाला साप्ताहिक 'उदन्त मार्त्तण्ड' था, जिसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था, और जो प्रत्येक मगलवार को ३७, आमडा तल्ला गली कोलू टोला, कलकत्ता से प्रकाशित होता था । इसके पश्चात् ९ मई सन् १८२९ को राजा राममोहन राय द्वारा दूसरा हिन्दी पत्र 'वगदूत' प्रकाशित हुआ और अन्त मे सनु १८४५ मे बनारस से 'बनारस अखबार' निकला । मराठी के 'कल्प-

तरु आणि आनदवृत' सन् १८६७ मे और 'केसरी' सन् १८८० मे निकले ।

जैन सामयिक पत्रो मे सर्व प्रथम सम्भवतया गुजराती मासिक 'जन दिवाकर' था जो 'जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ गाइड' तथा 'जैन साहित्यनो-सक्षिप्त इनिहास' के अनुसार अहमदावाद से श्री छगनलाल उमेदचन्द द्वारा वि० स० १९३२ (सन् १८७५ ई०) मे प्रकाशित किया गया था और लगभग दश वर्ष चला सन् १८७६ में केशवलाल शिवराम द्वारा गुजराती 'जैन सुधारस' निकला जो एक वर्ष चलकर ही बन्द हो गया।

दिगम्बर समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र सन् १८८४ के प्रारम्भ मे प० जीयालाल जैन ज्योतिषी द्वारा फर्रुखनगर (उ० प्र०) से प्रकाशित साप्ताहिक 'जैन' था। इसका वार्षिक मूल्य ढाई रुपये था, और यह हिन्दी भाषा का भी सर्व प्रथम जैन पत्र था, दश बारह वर्ष पर्यन्त चला भी । इन्ही प० जीयालाल ने उसके कुछ ही समय पश्चात् उर्दू मे 'जीयालाल प्रकाश' भी निकालना आरम्भ किया जो कि उर्दू का सर्वप्रथम जैनपत्र था। सितम्बर सन् १८८४ मे शोलापुर से स्वर्गीय सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने मराठी-गुजराती-हिन्दी का मासिक 'जैन बोधक' निकालना शुरू किया। यह पत्र मराठी का तो सर्व प्रथम जैन पत्र था ही, अब तक जीवित रहने के कारण वर्तमान जैन पत्रो मे भी सर्व प्राचीन है और इने गिने सर्वाधिकजीवी भारतीय पत्रो मे से एक है। इसके पश्चात् सन् १८८४ मे ही जैनधर्म प्रवर्तक सभा अहमदाबाद से डाह्या भाई घोलशा जी के निरीक्षण में गुजराती 'स्याद्वाद सुधा' अप्रेल सन् १८८५ मे जैन हितेच्छुसभा भावनगर द्वारा 'जन हितेच्छु' और इसी वर्ष अहमदाबाद से गुजराती मे श्वेताम्बर 'जैन धर्म प्रकाश' निकले, जिसमे से अन्तिम पत्र अभी तक चालू रहने के कारण वर्तमान श्वेताम्बर पत्रो मे सर्व प्राचीन है ।

इसके पश्चात् तो जैन सामयिक पत्र हिन्दी, गुजराती, मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, कन्नडी आदि भाषाओ मे दनादन निकलने लगे । केवल दिगम्बर

समाज के द्वारा ही निम्नोक्त अनेक पत्र कुछ ही वर्षो के भीतर प्रकाश मे आये—सन् १८९२ मे मराठी मासिक 'जैन विद्यादानोपदेश प्रकाश, सन् १८९३ मे बगलौर से सेठ पद्मराज द्वारा हिन्दी 'काव्याम्बुधि', सन् १८९३-९४ मे वम्बई से प० पन्नालाल वाकलीवाल द्वारा 'जैन हितैषी' मासिक जिसका सम्पादन प्रकाशन सन् १९०४ से प० नाथूराम प्रेमी ने किया, प० जुगल किशोर मुख्तार भी कुछ समय तक इसके सपादक रहे । यह पत्र अपने समय का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी जैन मासिक रहा है । सन् १८९४ में ही दि० जैन महासभा का हिन्दी साप्ताहिक 'जैनगजट' चालू हुआ और बाबू सूरजभान वकील ने उर्दू का जैनहितउपदेशक' नामक पत्र भी निकाला । सन् १८९५ मे हिन्दी मासिक 'जैन प्रभाकर' निकला, १८९६ मे हिन्दी साप्ताहिक 'जैनमार्त्तण्ड' और १८९७ मे बाबू सूरजभान द्वारा ज्ञान प्रकाशक' नामक मासिक पत्रिका, बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर द्वारा 'जैन पत्रिका' तथा पडित पन्नालाल वाकलीवाल द्वारा वर्धा से 'जैन भास्कर' निकले । सन् १८९८ मे वम्बई प्रान्तिक दि० जैन सभा की ओर से पडित गोपालदास जी वरैया ने हिन्दी साप्ताहिक 'जैन मित्र' का [illegible] ही सम्पादन मे स्थापना की । ब्र० शीतल प्रसाद जी ने वहुत काल तक इसका सम्पादन किया । यह पत्र अभी तक चालू है और सूरत से प्रकाशित होता है । सनु १८९९ मे हिन्दी मासिक 'जैनी' और १९०० मे हिन्दी त्रैमासिक 'जैनेतिहास सार' निकले । सन् १९०२ मे मराठी कन्नडी मिश्रित 'प्रगति आणि जिनविजय' निकला और सन् १९०४ मे अग्रेजी 'जैन गजट' का प्रारम्भ हुआ । यह पत्र वर्तमान मे अजिताश्रम लखनऊ से बाबू अजितप्रसाद जी के सम्पादन काल मे निकलता है । इसके कु[illegible] समय पश्चात कन्नडी का 'विवेकाभ्युदय' निकला और सन् १९०७ मे सूरत से हिन्दी गुजराती मिश्रित मासिक 'दिगम्बर जैन' । सन् १९२१ से ब्र० पडिता चन्दा बाई आरा द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक 'जैन महिलादर्श' निकल रहा है, और सन् १९२३ मे पडित वाकलीवाल द्वारा एक बगला पत्र

'जिनवाणी' निकला जो कुछ समय तक चलकर वन्द हो गया । मुनि जिन विजय जी द्वारा सम्पादित हिन्दी गुजराती अग्रेजी का श्वेताम्बर 'जैन साहित्य सशोधक' त्रैमासिक भी अत्यधिक महत्वपूर्ण पत्र था, जो कुछ वर्ष चलकर वन्द हो गया । पडित दरबारीलाल सत्यभक्त के सम्पादन मे वम्बई का 'जैन जगत' भी कई वर्ष बहुत अच्छा निकला था । उपरोक्त पत्रो के अतिरिक्त और भी अनेक पत्र पत्रिकाए, विशेष रूप से सन् १९२० के पश्चात चालू हुई, जिनमे से अधिकतर अल्पाधिक काल तक चलकर वन्द हो गई । इस प्रकार छापे के प्रारम्भ से अब तक लगभग ढाई सौ जैन सामायिक पत्र पत्रिकाए निकल चुकी हैं जिनमे से लगभग डेढसौ तो अस्तगत हो चुकी और एक सौ के लगभग अभी भी चालू है । प्रारम्भ से अब तक लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओ का सञ्चालन अथवा सम्पादन भी जैनो द्वारा हुआ है ।

विवरण सूची का संक्षिप्त सार

इन 'प्रकाशित जैन साहित्य' नामक ग्रन्थ में अनेक भाषाओं में मुद्रित-प्रकाशित जैन ग्रन्थो-पुस्तको, सामयिक पत्रो, भाषणो, साहित्यिक सस्थाओं, प्रकाशकों और लेखको आदि की जो सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण सूची दी गई है उसमें सकलित तथ्यों से जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे निम्न प्रकार हैं.—

[illegible] सूची मे २६८० पुस्तकों का उल्लेख है जिन्हें भाषा की अपेक्षा [illegible] गो मे विभाजित किया गया है ।

(१) प्रथम विभाग हिन्दी का है जिसमे सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रश भी सम्मिलित हैं । इसमे कुल २०५२ पुस्तकें जिनमे से--सस्कृत की १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रश १८, हिन्दी प्राचीन (सन् १८५० अथवा स० १९२० के पूर्व निर्मित)---२७५,—प्राचीन ग्रन्थो के अर्वाचीन टीका अनुवादादि-३७७.

आधुनिक हिन्दी मौलिक—१११३, और जैन धर्म के सम्बध मे प्रकाशित महत्त्
पूर्ण हिन्दी भाषण व्याख्यानादि—४५.

(२) मराठी की ४८ जिनमे से मौलिक १३ और अनुवाद ३५ हैं।

(३) गुजराती की ७० जिनमे मौलिक ४७ और अनुवाद २३ हैं।

(४) बगला की ५२ जिनमे मौलिक ४२ और अनुवाद १० हैं।

(५) उर्दू की १६८ जिनमे मौलिक १५१ और अनुवाद १७ हैं।

(६) अ गरेजी आदि यूरोपिय भाषाओ मे २९० जिनमे से मौलिक २३
और अनुवादादि ६० हैं। इनमे पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित लेख निबन्ध आ
सम्मिलित नही है।

पुस्तक निर्माता—उपरोक्त साहित्य के निर्माताओ की दृष्टि से जिन
पूर्णयोग १३०३ है—सस्कृत ग्रन्थो के मूल लेखक १०७, टीकाकार ३८, यो
१४५, प्राकृत ग्रन्थो के मूल लेखक १८, टीकाकार २, योग २० अपभ्र
ग्रन्थो के लेखक ७

हिन्दी प्राचीन पद्य लेखक ४०, गद्य लेखक १३, योग ५३ (बाद की शो
खोज से हमे हिन्दी पुरातन गद्य के ५० से अधिक लेखको और उनकी सवा
के लगभग गद्य कृतियो का पता चला है) आधुनिक हिन्दी के मौलिक लेख
(गद्य पद्य दोनो के)—२९५, टीकाकार ४८, अनुवादक ९१, सम्पादक आ
११८, सग्रह या सकलन कर्त्ता २४, और १९५ ग्रथ ऐसे है जिनके लेखक आ
अज्ञात हैं। मराठी के मौलिक लेखक ७, और अनुवादक १४, अज्ञात ६ गु
राती के मौलिक लेखक २३, और अनुवादक १५, अज्ञात ७ बगला के मौलि
लेखक १५, अनुवादक ५, और अज्ञात १ उर्दू के मौलिक लेखक ५३ अ
अनुवादक १२ अ गरेजी आदि के मौलिक लेखक १०३, अनुवादक ३५, अ
अज्ञात ८

प्रकाशक—इन पुस्तको के निर्माण कराने और प्रकाशित करने मे ि
जिन सस्थाओ तथा व्यक्तियों ने भाग लिया है उनकी सख्या निम्न प्रकार है

(१) साहित्यिक शोध, खोज, निर्माण, प्रकाशन, प्रचार आदि उद्देश्यो को लेकर सामाजिक द्रव्य से अथवा व्यक्तिगत ट्रस्ट आदि के द्वारा स्थापित एव सञ्चालित जैन साहित्यिक सस्थाए और ग्रन्थ-माला समितिये –३६

(२) अन्य विविध धार्मिक सामाजिक जैन सस्थाएं –-९१

(३) जैन व्यवसायी प्रकाशन और पुस्तक विक्रेता—३१

(४) जैन स्त्री पुरुष, व्यक्तिगत रूप से–२६०

(५) अजैन सज्जन, सस्थाए और प्रकाशक–२६

पूर्णयोग ४४७

विषय विभाजन—की दृष्टि से उक्त पुस्तको की संख्या निम्न प्रकार है—

(१) धर्म २७५, (२) सिद्धात एव तत्त्व ज्ञान १२२,

(३) अध्यात्मिक ग्रन्थ १५६, (४) दर्शन एव न्याय शास्त्र ६४

(५) आचार शास्त्र १५२, (६) पुराण चारित्र ११६, (७) प्राचीन कथा साहित्य ७८, स्तोत्र स्तुति पद-भजनादि सग्रह—२११,

(९) पूजा प्रतिष्ठापाठ और तीर्थमहात्म्यादि १३६, (१०) मन्त्र तन्त्रादि ७. (११) नीति सुभाषितादि १६, (१२) तुलनात्मक अध्ययन, नमीक्षा परीक्षा, खंडन मडनादि १६५, (१३) साहित्य व्याकरण छन्द अलकार कोषादि ५७, (१४) विज्ञान गणित ज्योतिष निमित्त शास्त्र, वैद्यक, रत्न परीक्षा, वास्तुसार आदि १८,

(१५) इतिहास पुरातत्त्व राजनीति, जीवन चरित्र आदि १९५,

(१६) भूगोल खगोल, यात्रा विवरण, स्थान परिचयादि ५५,

(१७) काव्य नाटक उपन्यास कहानी आदि २२८,

(१८) समाज सुधार व शिक्षा (१९) स्त्री व बालकोपयोगी ७५,

(२०) महत्त्वपूर्ण भाषण व्याख्यानादि ५०, (२१) शेष विविध १०१.
इस विषय विभाजन मे अगरेजी पुस्तकें सम्मिलित नही की गई हैं।

सामयिक पत्र पत्रिकाएं—अब तक लगभग अढाई सौ जैन साम-

यिक पत्र पत्रिकाए विभिन्न भाषाओ तथा साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रिमासिक, षाठमासिक आदि विविध रूपो मे निकल चुकी हैं। इनमे से जिनके विषय मे कुछ ज्ञात हो चुका है ऐसी १६६ पत्र पत्रिकाएं (६० दिगम्बर और ६६ श्वेताम्बर आदि) तो अल्पाधिक समय तक चल कर बन्द हो चुकी हैं।

वर्तमान मे ज्ञात चालू जैन पत्रो की सख्या ८४ है जिनमे से लगभग ५० दिगम्बर, २६ श्वेताम्बर और ८ स्थानक वासी हैं। इनमे से हिन्दी के ५० मराठी ३, गुजराती १६, कन्नडी २, उर्दू १, अगरेजी २, हिन्दी गुजराती मिश्रित ७, हिन्दी मराठी १, हिन्दी उर्दू १, हिन्दी अगरेजी १ हैं। इन पत्रो मे षाठमासिक २, त्रैमासिक ५, मासिक ४५, पाक्षिक १६ और साप्ताहिक १६ हैं। दैनिक कोई नही है।

सम्पादन प्रकाशन की उत्तमता तथा साहित्यिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से निम्नलिखित वर्तमान जैन पत्र पत्रिकाएँ पर्याप्त महत्त्व पूर्ण हैं—अनेकान्त (देहली), जैन सिद्धान्तभास्कर (आरा), दी जैना एटीक्वेरी (आरा), ज्ञानोदय (बनारस), श्री जैन सत्य प्रकाश (अहमदाबाद), जैन भारती (कलकत्ता), जैन गजट अगरेजी (लखनऊ), आत्मधर्म (सोनागढ), जैन महिलादर्श (सूरत) जैन मित्र (सूरत), दिगम्बर जैन (सूरत), जैन सन्देश (आगरा), वीर वाणा (जयपुर), जैन जगत (वर्धा), सगम (वर्धा), वीर (देहली), श्रमण (बनारस), जैन बोधक (शोलापुर), प्रगति आणि जिन विजय (वेल गाँव), तारण सदेश (दमोह), जैन प्रचारक (देहली) जैन प्रकाश (बम्बई), प्रबुद्ध जैन (बम्बई), जिनवाणी (भोपालगढ़), तरुण जैन (कलकत्ता), वीर लोंकाशाह (जोधपुर) श्वेताम्बर जैन (आगरा), जैन (भाव नगर) इत्यादि।

जैन सामयिक पत्रो के सम्बन्ध में जैन मित्र (कार्तिक सुदी ८, वी० स० २४६४, पृ० ११-१२) मे 'दिगम्बर जैन समाज के भूत और वर्तमान कालीन पत्र' शीर्षक से श्री शान्ति कुमार जैन ठवली, नागपुर ने ४८ भूतकालीन और २६ चालू पत्रो की सूची प्रकाशित की थी। उसके पश्चात श्रीयुत अगर चन्द्र नाहटा ने ओस वाल नवयुवक वर्ष ८ सख्या १, मई सन् १९३७ के अङ्क मे

पृष्ठ ४२ पर 'जैन समाज के वर्तमान सामयिक पत्र' लेख मे उस समय चालू ५६ पत्रो की सक्षिप्त परिचयात्मक सूची दी थी तथा जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ५ किरण १, पृ० ३६ पर प्रकाशित अपने लेख 'भूतकालीन जैन सामयिक पत्र' मे समाचार पत्रो के इतिहास पर सक्षित प्रकाश डालते हुए १०५ भूतकालीन तथा ६६ चालू पत्रो की नाम सूची दी थी। और जैन मित्र वर्ष ५१, अङ्क ७ (ता० २२ दिसम्बर सन् १६४६) मे जैन समाज के समाचार पत्र शीर्षक के अन्तर्गत ५७ चालू पत्रो को जिनमे ३३ दिगम्वर और २४ श्वेताम्वर हैं तथा ६२ भूतकालीन पत्रो की जिनमे ६८ दिगम्वर और २४ श्वेताम्वर हैं एक सूची दी है।

उपरोक्त विभिन्न सूचियो मे से किसी मे भी वे लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र सम्मिलित नही हैं जिनका सम्पादन, प्रकाशन अथवा सचालन जैनो द्वारा किया गया है और जिनमे से कई पत्र पर्याप्त लोक प्रिय भी रहे हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामयिक पत्रो और पत्र कला की दृष्टि से भी अल्प सख्यक जैन समाज ने पर्याप्त उन्नति की है और वह किसी से पीछे नही है। यदि इसमें कोई दोष है तो यही कि जिन पत्रो की सख्या आवश्यकता से अधिक है, उनका पठन प्राय जैन समाज के भीतर ही सीमित होने से एक भी पत्र की ग्राहक सख्या उसे स्वनिर्भर करने के लिये पर्याप्त नही है। फल स्वरूप लेखको और पत्रकारो की भी अत्यधिक दुर्दशा है।

जहाँ तक पुस्तक साहित्य का सम्वन्ध है, उपरोक्त विवरण सूची मे जो २६८० पुस्तकें उल्लिखित हुई हैं उनके अतिरिक्त भी कम से कम दो ढाई सौ ऐसी पुस्तकें अवश्य निकल आयेंगी जिनका कि साधनाभाव अथवा ज्ञात न हो सकने के कारण कोई उल्लेख नही किया जा सका। गत तीन वर्षो मे भी (अर्थात् उक्त सूची के निर्माण करने के वाद से) लगभग एक सौ पुस्तके और प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमे से अधिकाश हिन्दी की हैं और जिनमे से एक दर्जन से अधिक पर्याप्त उच्च कोटि के विशालकाय ग्रन्थ हैं। साथ ही उपरोक्त लगभग ३००० पुस्तकें प्राय करके केवल दिगम्वर समाज द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

ही हैं और उनमे भी कन्नडी, तामिल, तेलगू, मलयालम आदि भाषाओ में प्रकाशित जैन पुस्तको का समावेश नही है। दो ढाई हजार के लगभग पुस्तकें श्वेताम्बर तथा स्थानकवासी आदि अन्य जैन सम्प्रदायों द्वारा भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

अस्तु डा० माता प्रसाद गुप्त की पूर्वोल्लिखित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में दी हुई लगभग ५५०० पुस्तको और लगभग ४५०० लेखको के प्राय वरावर ही समग्र मुद्रित प्रकाशित जैन पुस्तक साहित्य और उसके निर्माता आदि हैं। यदि केवल हिन्दी जैन पुस्तको को ही लिया जाय तो वे भी समग्र हिन्दी पुस्तकों के दो तिहाई से अधिक अवश्य हैं, और भाषा, शैली, विषय महत्त्व और लोकोपयोगिता की दृष्टि से भी सामान्यत उनकी अपेक्षा निम्नकोटि की नही हैं।

साराश यह है कि स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्र, भारत के सास्कृतिक विकास और साहित्यिक प्रगति के लिये यह परम आवश्यक है कि देश के साहित्यिक और विद्वान जैन साहित्य को भी समग्र भारतीय साहित्य का अभिन्न अविभाज्य अङ्ग मानकर निष्पक्ष एव सहृदय दृष्टि से ज्ञान की विविध शाखाओ मे उसका अध्ययन मनन और उपयोग करें। उनकी दृष्टि मे वह उपनिषद जैन आगम और वौद्ध त्रिपिटक, पाणिनी और पूज्यपाद, पातञ्जलि अश्वघोष व्यास और कुन्द कुन्द व समन्तभद्र, चरक सुश्रुत उग्रादित्य और नागार्जुन, शकर धर्मकीर्ति और अकलक, कालिदास और जिनसेन, योगीन्दु सरहपा कबीर और दादू, तुलसीदास और वनारसीदास इत्यादि महापुरुषो और उनके विचारो एव रचनाओ का समान महत्त्व होना चाहिये। विना किसी भेद भाव के इन सभी महान पूर्व पुरुषो का सम्मान, एव अध्ययन ज्ञान के सर्वतोमुखी विकास, राष्ट्र की एक सूत्रता तथा देश और समाज के कल्याण का अमोघ साधन है, इसमें कुछ भी सन्देह नही।

जैनाध्ययन का महत्त्व और प्रगति

श्रमण सस्कृति की प्रधान धारा जैन सस्कृति सुदूर अतीत से चली आई

प्राय सर्व प्राचीन विशुद्ध भारतीय सस्कृति है। अत भारतीय सस्कृति का समुचित मूल्यांकन करने के लिए और आधुनिक भारत के ही नही वरन विश्व के भी सांस्कृतिक विकास मे उससे पूरा पूरा लाभ उठाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जैन श्रमण सस्कृति के विविध अगो का विशद एव गभीर अध्ययन किया जाय। वैसे तो १८ वी शताब्दी ई० की अतिम पाद में सर विलियम जोन्स से प्रारभ करके अनेक पाश्चात्य विद्वानो द्वारा भारतीय साहित्य, कला, पुरातत्त्व तथा अन्य सांस्कृतिक विषयो का अध्ययन प्रारभ हो गया था। १९ वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे अनेक उद्भट भारतीय विद्वान भी उक्त कार्य में सक्रिय सहयोग देने लगे थे, और सौ वर्ष के उपरात तो इस क्षेत्र में भारतीय विद्वानो का ही प्राय एकाधिकार हो गया है। इन पाश्चात्य एव पूर्वीय विद्वानो ने अपने उपरोक्त अध्ययन के दौरान मे प्रसगवश जब तब जैनधर्म, सस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला, पुरातत्त्व, प्रच्यतत्त्व आदि का भी अल्पाधिक अध्ययन एव खोज शोध की और अपने महत्त्वपूर्ण गवेषणात्मक विवेचनो के द्वारा जैनाध्ययन को प्रगति प्रदान की। तथापि भारतीय अथवा विदेशी प्राच्यविदो का ध्यान अनेक कारणो से अभी तक भी उसकी ओर इतना आकृष्ट नही हो पाया जितना कि होना चाहिये था।

सास्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से जैन धर्म, सिद्धान्त, तत्त्वज्ञान, दर्शन और सामाजिक आचार विचार एव पर्व आदि के अतिरिक्त वर्तमान भारत को प्रदत्त जैन सस्कृति की स्थूल पुरातन भेंटें निम्नप्रकार हैं—विविध भाषामय तथा विविध विषयक विपुल जैन साहित्य, जैन ग्रन्थो की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ, जैन चित्र कला, जैन मूर्त्त कला, जैनस्थापत्य और शिलाखडो, प्रतिमाओ, ताम्रपत्रो आदि पर अकित जैन पुराभिलेख, इत्यादि।

जैन ग्रहस्थ के देवपूजा, गुरु-उपासना, स्वाध्याय, सयम, तप एव दान रूप दैनिक छह आवश्यक कार्यों में दान देना उनका एक महत्त्वपूर्ण एव आवश्यक कर्त्तव्य है। शास्त्र, अभय, आहार एव औषधिरूप चतुर्विध दान प्रणाली में शास्त्रदान का स्थान बहुत ऊंचा है। अत शास्त्र दान सबधी इस धार्मिक

धान, जैन साधु वर्ग की सदैव से चली आई ज्ञान पिपासा अध्ययन शीलता और साहित्यिक अभिरुचि तथा धनी श्रावक, की उदारता पूर्ण सहायता सहयोग एव श्रुतभक्ति के कारण आज भी भारतवर्ष के विभिन्न भागो मे ऐसे अनेक जैन ग्रन्थ भडार विद्यमान है जो अपने प्राचीन प्रमाणीक महत्त्वपूर्ण अंश समझे जाने योग्य हैं।

प्राकृत—प्राचीन भारतीय सस्कृति की अनेक विधि धाराओ का महत्त्व भली भाति समझने के लिए सस्कृत और प्राकृत, दोनो ही साहित्यो का साथ साथ अध्ययन करने की आवश्यकता है। अभिलेखीय आधार स्पष्टतया सूचित करते हैं कि सर्व साधारण मे भावव्यजना के लिये प्राकृत भाषायें अत्यधिक लोकप्रिय थी। उत्तर तथा दक्षिण दोनो ही प्रदेशो में प्राचीनतम काल से राजकीय आदेश तथा व्यक्तिगत लेखादि प्राकृत मे ही लिखे मिलते हैं। सस्कृत नाटको मे स्त्री आदि पात्रो के द्वारा प्राकृत का बहुत प्रयोग इस बात को प्रमाणित करता है कि एक समय था जबकि प्राकृत भाषाएँ ही लोक प्रिय तथा साधारण बोल चाल की भाषाएँ थी। वस्तुत कई एक महिला कवित्रियो ने प्राकृत मे ही काव्य रचना की है। * इसमे भी सन्देह नही है कि जैन धार्मिक एव लौकिक गद्य पद्यात्मक प्राकृत साहित्य का सिलसिला अति प्राचीन काल से मध्य युग पर्यन्त अविच्छिन्न रूप से चला आया है, और यदि इस प्राकृत जैन साहित्य को सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य मे से निकाल दिया जाय तो अवशेष नगण्य रह जाय।

किन्तु यद्यपि प्राय समस्त श्वेताम्बर जैन अर्धमागधी आगमग्रन्थ अ शत. अथवा पूर्णत एकाधिक सस्करणो मे प्रकाशित हो चुके हैं, तथापि मूल पाठो के समालोचनात्मक दृष्टि से सुसम्पादित सस्करण बहुत ही थोडे हैं। निर्युक्तियो एव चूर्णियो सहित इस समस्त अर्धमागधी साहित्य के ऐसे एक रस

---

*प्रो० जे० बी० चौधरी कृत 'सस्कृत कवित्रियों' भा० २। कपूर मंजरी नाटक का प्रथम अभिनय भी विदुषीरत्न अवन्ति सुन्दरी की प्रेरणा पर ही हुआ था।

प्रकाशनों की आवश्यकता है । पाटन के 'हेम चन्द्राचार्य ज्ञान मदिर' ने हस्त-लिखित प्रतियो के स्थानीय सग्रहो को सुरक्षित एव व्यवस्थित करने का जो स्तुत्य कार्य किया वह अन्य स्थानो के लिये भी अनुकरणीय है और वह उपरोक्त प्रकार के संस्करणो प्रकाशन के लिये आवश्यक अन्वेषण कार्य के लिये उपयोगी सिद्ध होगा । समग्र आगम ग्रन्थो के ऐसे प्रमाणिक सम्पादन से अर्धमागधी कोष,' 'पाइयमद्द महाण्णव' आदि वर्तमान कोष ग्रथो की कमी पूर्त्ति हो जायगी। ऐसे जैन पारिभाषिक शब्दो या पदो का जिन के कि अर्थों का तारतम्य जैन साहित्य के विभिन्न स्तरो मे अध्ययन किया जा सके, कोई भी प्रमाणीक सकलन अभी तक नही वन पाया है । सुआली और जैकोवी ने ऐसे एक प्राकृत कोष के निर्माण करने के प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया था, किन्तु उसका कोई विशेष परिणाम नही निकला । इधर वीर सेवा मदिर देहली मे भी एक ऐसे ही पारिभाषिक जैन शब्द कोष 'जैन लक्षणा वलि' का निर्माण कई वर्षो से हो रहा है ।

हरिभद्र सूरि की 'समराइच्च कहा प्राकृत अथवा जन महाराष्ट्री कथा साहित्य का सुन्दर व श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती है, किन्तु उसकी पूर्ववती 'कुवलय माला कहा' तथा उत्तरवर्ती 'वलासवई कहा' अभी तक सभवतया अप्रकाशित ही है ।

प्राकृत साहित्य का वह थमिक स्तर जो दिगम्वर जैनो द्वारा मान्य एव अत्यन्त पवित्र समझा जाता है, शिवार्य की भगवती आराधना, कुन्द कुन्द के पाहुड ग्रन्थ, वट्टेकर [1] कृत मूलाचार आदि विक्रम की प्रथम शताव्दी के ग्रन्थो मे उपलब्ध होता है । ऐसा विश्वास था और जो सत्य ही सिद्ध हुआ, [2] कि इनसे भी अधिक प्राचीनतर पाठ पट्खडागमादि दिगम्वर जैन सिद्धान्त ग्रन्थो की धवल जयधवल आदि विशाल टीकाओ मे जडे पडे हैं । इन महान ग्रथो के

(१) ऐसा विश्वास करने के भी कारण है कि यह कुन्द कुन्द का ही अपलास था, देखिये जेना सेटीक्वोरी; भा० कि०

(२) जै० ए०, भा० ६ पृ० ७५-८१, डा० हीरालाल का लेख ।

सम्पादित अनुवादित सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे गूढ जैन पारिभाषिक तत्त्व ज्ञान विषयक महान ग्रथो के, जो कि यत्र तत्र सस्कृत गद्यांशो से अलकृत नैयायिक शैली की प्रौढ़ प्राकृत मे है, प्रकाश मे आने से भारतीय साहित्य की एक महत्त्व पूर्ण नवीन शाखा अध्ययनार्थ प्रस्तुत हो गई है। उपरोक्त सस्करणो की विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावनाओ मे अनेक ऐतिहासिक तथ्यो पर भी नवीन प्रकाश पडा है तथा और नवीन ऐतिहासिक शोध खोज को प्रोत्साहन मिला है।[1] उपरोक्त सभी ग्रन्थो मे बहुत सी सामग्री ऐसी है जो दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदाय भेद स भी प्राचीनतर हैं। यदि उसकी तुलना निर्युक्तियो आदि के साथ की जाय तो अनेक दिलचस्प तथ्यो के प्रकाश मे आने की सभावना है।

दिगम्बरो एव श्वेताम्बरो का प्राकृत एव सस्कृत भाषाओ मे निबद्ध विशालकाय टीका साहित्य अभी तक मूल पाठो के अर्थों को समझने के लिये ही अध्ययन किया जाता रहा है। जो टीका ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं उनमे से इने गिनो का ही आलोचनात्मक अध्ययन हुआ है। निर्युक्तियो, चूर्णियें तथा अन्य सस्कृत प्राकृत टीकाएं भी ज्ञातव्य सूचनाओ के ऐसे गहन भडार हैं जिनमे पूर्व पक्ष के प्रतिपादन के अतिरिक्त अनेक जैन अजैन ग्रथो के उद्धरण, अनुश्रुतियें नीति वचन, उपदेशात्मक आख्यान उपाख्यान, तथा अनेक तत्कालीन सांस्कतिक सूचनाएं भी उपलब्ध होती हैं। किन्तु इन सब विषयो की व्यवस्थित छाट, गवेषणा' सकलन तथा यथोचित मूल्याकन अभी तक प्राय' नही हो पाया। इनमे से अनेक ग्रन्थो की तिथियें ज्ञात हैं, अत उनमे वर्णित विषय कालानुक्रम की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। अस्तु प्रो० विधु शेखर भट्टाचार्य ने दिखलाया कि गुणरत्न धर्म कीर्ति के प्रमाण वार्तिक से भली भाँति परिचित था और उसने उक्त ग्रन्थ से अनेक उद्धरण भी दिये हैं।[2] श्री पी० के० गोडे ने अपने आकर्षक निबन्ध "शकराचार्य के पूर्ववर्ती जैन आधारो मे भगवत गीता" मे ऐसे उद्ध-

---

(१) अनेकान्त तथा जैना एंटेक्वेरी मे प्रकाशित धवला का समय तथा स्वामी वीर सेन संबन्धी हमारे विभिन्न लेख।

(२) इ० हि० क्वा, १६, पृ० १४३.

रणो की पाठगत विशेषताओ पर प्रकाश डाला है। [1] डा० उपाध्याय ने सिद्ध किया कि गोमट्टसार की सस्कृत 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' टीका के कर्त्तव्य का श्रेय जो केशववर्णी को दिया जाता रहा है वह भ्रम पूर्ण है, और उसके वास्तविक कर्त्ता १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ मे दक्षिण कनारा के राजा सालुव मल्लिराय के समकालीन कोई नेमिचन्द्र थे। [2] इन उद्धरणो की जाँच वहुधा उक्त टीकाओ की समयावधि निर्धारित करने मे भी सहायक होती है जैसा कि डा० उपाध्याय ने मूलाचार की वसुनन्दिवृत्ति पर से [3] तथा श्री गोडे ने मलयगिरि की तिथि के सम्बन्ध मे [4] दिखाने का प्रयत्न किया है। गतदर्शक मे प्रकाशित कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रस्तावनाओ से प० महेन्द्र कुमार, प० कैलाश चन्द्र, प० जुगलकिशोर मुख्तार, प० दरबारी लाल कोठिया आदि ने तथा अपने फुटकर लेखो के रूप में कई अन्य विद्वानो ने भी इस प्रकार की सामग्री का विश्लेषण एव उपयोग किया है।

अपभ्र श—भाषा और साहित्य का अध्ययन प्राच्य विद्या का एक नवीन क्षेत्र है। जैकोवी, दलाल, गुणे, शहीदुल्ला, गाधी, वैद्य, उपाध्ये, हीरालाल एल्सफोर्ड आदि विद्वानो ने अनेक मूल्यवान अपभ्र श ग्रथो का सम्पादन किया है तथा इस भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध मे महत्त्व पूर्ण विवेचन किये हैं। डा० पी० एल० वैद्य ने पुष्पदत्त के महापुराण का विद्वत्तापूर्ण सम्पादन किया। महापण्डित राहुल साकृत्यायन ने महाकवि स्वयभू की रामायण पर अभूत पूर्व प्रकाश डाला। प्रेमी जी ने भी इन प्रारम्भिक जैन अपभ्र श कवियों के सम्बन्ध मे ज्ञातव्य सूचनाएं दी। डा० उपाध्ये ने जोइन्दु के परमात्म प्रकाश का और प्रो० हीरालाल ने भी कई अपभ्र श ग्रथो का सम्पादन किया है। प० परमा-

(१) एनल्स भा० ओ० रि० इ०, २०, पृ० १८८ फुटनोट

(२) इपि० कर्णा, ७, १,

(३) वूल्नर कमेमोरेशन वाल्यूम, लाहौर १६४० पृ० २५७ फु० नो०

(४) जै० ए०, भा० ५, पृ० १३३ फु० नो

नन्द शास्त्री ने कतिपय मध्य कालीन जैन अपभ्रंश कवियो का परिचय दिया है।[1]

अपभ्रंश भाषा और साहित्य के सम्बन्ध मे जो कुछ अधुना ज्ञात है वह उसकी तुलना मे नगण्य सा है जो कि अभी भी राजपुताना, गुजरात आदि के ग्रंथ भडारो मे दबा पडा है। राजस्थान, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, सभवतया उत्तर प्रदेश मे भी, सर्वत्र, ६ ठी शताब्दी पर्यन्त लगभग एक सहस्त्र वर्ष तक अपभ्रंश भाषा का अभ्यास और प्रचलन बहुलता के साथ रहा प्रतीत होता है, सो भी विशेष कर जैनो द्वारा। अपभ्रंश कविता अपनी भाषा सम्बन्धी विशेषताओ के अतिरिक्त, छन्द शास्त्र, आलकारिक प्रयोग, नीति तथा तत्कालीन जगत के निकटतम अनुवीक्षण से ओत प्रोत हैं। उद्योतन सूरि के शब्दो मे उसका शब्द प्रवाह पार्वतीय स्रोत की नाईं द्रुतवेग से प्रवाहित होता है। उसके युद्ध वर्णन अत्यन्त रोमाञ्चक और प्रेम भक्ति करुणा आदि कोमल भावो के चित्रण आश्चर्यजनक रूप से सजीव होते हैं। यद्यपि अपभ्रंश साहित्य का सम्बध प्राय करके उच्चवर्गों से है तथापि वह सार्वजनिक जीवन के विविध अंगो को भली भाति प्रतिविम्बित करता है। साहित्य के इस क्षेत्र में न केवल एक शुष्क भाषाविज्ञ को ही प्रचुर उपयोगी सामग्री उपलब्ध होती है वरन एक भावुक कलाकार अथवा काव्य रसिक को भी अति रुचिकर काव्यानन्द का आस्वादन प्राप्त होता है। भारतीय साहित्य मे कही अन्यत्र शब्द और भाव का, वाह्य सगीत और अन्तरग गेयतत्त्व का ऐसा सुन्दर सामजस्य उपलब्ध नही होता। साथ ही, लेखीय प्रमाण के रूप मे अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती कवियो की कृतियो का महत्त्व उनके पश्चाद्वर्ती महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि लेखको की रचनाओ से कही अधिक है।

---

(१) हमारे द्वारा सम्पादित जो इन्दु के मागसार आत्मदर्शन की भूमिका तथा अनेकान्त १६४५; में प्रकाशित हमारा लेख 'नागभाषा और नाग सभ्यता' भी पठनीय हैं।

अपभ्रंश साहित्य का गभीर अध्ययन एक अन्य दृष्टि से भी आवश्यक है। वह गुजराती व राजस्थानी भाषाओ के विकास के इतिहास के लिए निश्चयत. अत्युपयोगी है। यही नही, वल्कि विद्वानो ने तो यह बात भी प्राय निर्विवाद स्वीकार करली है कि कतिपय गौण स्थानीय भेदो को लिए हुए अपभ्र श भाषा ही जोकि प्राय सम्पूर्ण उत्तरी एव मध्य भारत मे बहुलता के साथ प्रचलित थी, आधुनिक भारतीय आर्य लोक भाषाओ का मूलाधार, उद्गम स्रोत एव प्रकृत रूप है। अतएव इसमें सन्देह नही कि उसका अध्ययन उक्त प्रान्तीय भाषाओ के शब्द कोष तथा व्याकरण सम्बंधी नियमो को समृद्ध करने मे अत्युपयोगी सिद्ध होगा और अन्तर प्रान्तीय व्यवहार सवर्द्धन के हित हमारी राष्ट्रीय भाषा के शब्द भडार के समुचित निर्माण की वर्तमान समस्या को सुलझाने में भी सहायक होगा। जैनो के मूल आर्ष ग्रन्थो तथा उनकी टीकाओ मे प्रयुक्त प्रयोगो के सम्बन्ध से यदि प्राकृत भाषाओ का लिपि विज्ञान, वर्ण विज्ञान एव व्याकरण विषयक व्यवस्थित अध्ययन चालू किया जाय तो वह निश्चय ही मध्य कालीन भारतीय आर्य साहित्यिक ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

वास्तव मे, स्वय आचार्य हेमचद्र ने अपभ्र श भाषा की व्यवहार्य रूपरेखा प्रदान करदी थी और अब जैकोवी, हीरालाल, वैद्य, उपाध्याय, एल्सफोर्ड प्रभृति विद्वानो ने उसके आदर्श सम्पादित सस्करण भी प्रस्तुत कर दिये है। सामान्यत काम चलाने से लिए 'पाइयसद्दमहाण्णव' उसका एक अच्छा कोष भी है। अपभ्रंश साहित्य की यह भी विशेषता है कि उसमे भाषा के लिए उपयुक्त छन्दो का ही प्रयोग हुआ है। प्राकृत एव अपभ्र श भाषा के छन्दोऽनुशासन के सम्वध मे प्रो० एच० डी० वेलकर द्वारा प्रस्तुत मूल्यवान सामग्री और विवेचन उक्त साहित्य के विद्यार्थियो के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पूर्वी अपभ्र श के सम्वध मे श्री हरप्रसाद शास्त्री, शहीदुल्ला, बागची, चौधरी आदि विद्वानो ने अच्छे ज्ञातव्य प्रदान किये है। अस्तु प्राकृत भाषाओ की अथवा मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओ की, जिनमे कि भगवान महावीर ने अपने

जीव दया मूलक सिद्धान्तो का उपदेश दिया, 'जिनमे सम्राट प्रियदर्शिन अपने स्मरणीय अभिलेख खुदवाये, जिनमे सैकडो कवियो ने जिनमें से कि हालक्र सतसई और स्वयभू के निर्देशो द्वारा हमे केवल कुछ एक के ही नाम प्राप्त हु हैं—लोक जीवनके विविध अगोके सम्वधमें आल्हाद पूर्णगान किया, जिनमें कालि दासके स्त्री पात्रोंने अपने पत्र लिखे, वाक्पति, प्रवरसेन, उद्योतन, हरिभद्र, राज शेखर, स्वयभू, पुप्पदत गुणचन्द्र,रामपाणिवाद तथा अन्य विभूतियोंने अपनी मनो हारी गद्य-पद्य रचनाए की, जोइन्दु तथा कान्ह जैसे सन्तो ने अपने रहस्यवा विचारो की अभिव्यजना की, जिनमे कि राजपूत चरणो के वीरतापूर्ण गी आर्यावर्त के चारो कोनो में गू ज उठे, और जिनकी कि गोद मे वे आधुनि भारतीय लोक भाषाए' जन्मी और पनपी कि जिन्हें समृद्ध करने के लिए ह आज प्रयत्नशील हैं तथा जिनपर हमे इतना गर्व है--भारतीय सस्कृति तथ सभ्यता को समझाने के लिए उनकी उपेक्षा नही की जा सकती। ये प्राकृत औ अपभ्र श भाषाए सहस्त्रो वर्ष पर्यन्त सार्वदेशिक और और सार्वजनीन रहीं प्राय सर्व ही प्रान्तीय भाषाओ को, यहा तक कि द्रविड वर्ग की कन्नडी आि भाषाओ को भी इन्होने पर्याप्त रूप मे प्रभावित किया। और सर्वाधिक आश्च की वात तो यह है कि विभिन्न देशीय प्राकृत और अपभ्र श भाषा मे आधुनि प्रान्तीय भाषाओ की भाति कोई भेद पक अन्तर ही न था। उत्तर दक्षि पूर्व पश्चिम सर्वत्र उनका प्राय एकसा प्रयोग होता था, साहित्य मे भी औ वोलचाल मे भी। उनके पैशाची, शौरसेनी, गौडी, महाराष्ट्री आदि भे वास्तव' मे क्षेत्रपरक नही थे। जैसा कि डा० उपाध्याय ने स्पष्ट कहा है, य कथन करना कि महाराष्ट्री प्राकृत के ग्रन्थ महाराष्ट्र मे ही लिखे गये अथव जैन महाराष्ट्री का प्रयोग महाराष्ट्र के जैनो ने किया और शौरसेनी का शूरसे देश के जैनो ने, नितान्त भ्रमपूर्ण है। यही बात तथा कथित विभिन्न अपभ्र श के विषय मे है। इन भाषाओ का प्रदेश विशेष के साथ कोई सम्बध ही न था वे तो चिरकाल पर्यन्त भारत वर्ष के सर्व साधारण की भाषाए रही थी अन्तर्प्रान्तीय थी और सच्चे अर्थों मे अपने-अपने समय में इस देश की राष्ट्रीय लोक भाषाए थी।

अन्य भाषायें—मध्ययुगीय भारतीय आर्य भाषाओ के क्षेत्र के अतिरिक्त, जैन लेखको ने भारतीय ज्ञान की विविध शाखाओ मे न केवल संस्कृत प्राकृत आदि मे ही वरन् कई द्रविड भाषाओं में भी पर्याप्त योगदान किया है। अनेक प्राच्यविदो द्वारा अपने-अपने क्षेत्रो में यथा शब्द शास्त्र, छन्द शास्त्र, काव्य शास्त्र, व्याकरण, राजनीति, न्याय, चिकित्साशास्त्र, गणित, ज्योतिष आदि मे तद्विषयक जैन ग्रन्थों का अध्ययन भी किया जाने लगा है, किन्तु ये अध्ययन प्राय करके संस्कृत साहित्य तक ही सीमित है।

इस सम्बंध में विचार करने के लिए जैन साहित्य को ही अध्ययन की इकाई मानकर चलना अधिक सुविधा जनक होगा, यद्यपि जैन ग्रन्थो से यह स्पष्ट है कि जैन विद्वानो की विविध विषयक साहित्यिक साधना भारतीय साहित्य की अन्य धाराओ से सर्वथा पृथक कभी नही रहीं। पूज्यपाद पातञ्जलि के महाभाष्य मे पूर्णतया निष्णात थे, अकलक ने अपने पूर्ववर्ती बौद्ध नैयायिकों की कृतियो का गभीर अध्ययन किया और उनका सयुक्तिक खडन एवं आलोचना की। हरिभद्र ने तो दिङ्नाग के न्याय प्रवेश पर टीका भी लिखी। रविकीर्त्ति एंव जिन सेन जैसे कवि पुगव कालिदास और भारवि की कृतियो से भली प्रकार परिचित थे और उनमें आदर भाव रखते थे। सिद्धचन्द्र और चारित्रवर्धन जैसे ग्रन्थकारो ने बाण तथ। माघ के ग्रन्थो की टीकाए लिखी। डा० हर्टल के कथनानुसार पचतंत्र जैसे सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ के जितने सस्करण यूरोप आदि विभिन्न भारतेतर देशों में पहुचे वे सब ही जैन विद्वानो-द्वारा किये गये मूल ग्रन्थ के सवर्द्धित, परिवर्द्धित अथवा परिवर्तित रूप थे, तथा जैन 'शुक सप्तति' ही एक मात्र ऐसी भारतीय रचना है जो अपने मूल रूप मे ही सम्पूर्ण जैसी की तैसी भारत के बाहर सुदूर देशो मे पहुंची और प्रचार को प्राप्त हुई। अतएवर्प भारतव के सम्पूर्ण साहित्यिक जाल के रूप एव विकास को पूर्णतया समझने के लिए जैन साहित्य का अध्ययन परमावश्यक है।

जैन विद्वानो ने अपनी साहित्य साधना प्राय साथ ही साथ प्राकृत, सस्कृत, अपभ्र श, तामिल तथा कन्नडी भाषाओ मे की। कितने ही जैन ग्रन्थ-

कार तो अपने आपको 'उभय भाषा कवि चक्रवर्ती' आदि विशेषणो से सूचित करने मे गौरव मानते थे। उक्त विभिन्न भाषाओ मे उपलब्ध जैन रचनाए इतनी परस्पर सम्बद्ध हैं कि एक ही नाम तथा एक ही प्रतिपाद्य विषय के ग्रन्थ विभिन्न कालो मे विभिन भाषाओ मे उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ जयराम ने प्राकृत में धर्म परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना की। उसी के आधार पर सन् ९८८ ई० में हरिषेण ने चित्तौड मे अपभ्रंश मे धर्म परीक्षा लिखी। सन् १०१४ में उज्जैन निवासी अमितगति ने संस्कृत मे उसी ग्रन्थ की रचना की और १२ वी शताब्दी मध्य के लगभग कर्णाटक निवासी वृत्तिविलास ने कन्नड़ी भाषा में की। इस प्रकार विभिन्न ग्रथो में अन्तर्भूत अन्तर्भाषियिक एव अन्तर्प्रान्तीय प्रभावो को लक्ष्य करने से भारतीय साहित्य का जो ढाचा हमारे समक्ष है उसमे अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यो की अवश्य ही वृद्धि होगी। ऐसा तुलनात्मक अध्ययन पूर्वापर तथा रचना तिथि आदि बातो के निर्णय मे भी महत्त्व पूर्ण सिद्ध होगा।

संस्कृत एव प्राकृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओ मे रचे गये जैन साहित्य का बहुत कुछ आभास आर० नरसिंहाचार्य कृत 'कर्णाटक कवि चरिते' या उसके प्रेमी जी कृत अनुवाद 'कर्णाटक के कवि, श्रीयुत देसाई कृत 'गुर्जर कवियो-२ भाग, प्रोफेसर चक्रवर्ती का तामिल जैन साहित्य, प्रेमी जा व बा० कामता प्रसाद के हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास, हमारा 'हिन्दी का पुरातन गद्य साहित्य' और राजस्थानी जैन साहित्य के सम्बन्ध मे श्री अगरचन्द नाहटा के लेखो से हो सकता है।

बहु विषयक—बहुभाषयिक होने के साथ ही जैन साहित्य बहु-विषयिक भी है और नैयायिक अ ग तो अत्यन्त समृद्ध एव महत्त्वपूर्ण है। किन्तु भारतीय साहित्य की न्याय विषयक शाखा ने प्राच्य विज्ञो का ध्यान अपनी ओर अभी कम ही आकर्षित कर पाया है। जैन नैयायिक साहित्य तो प्राय स्पर्श ही नही किया गया, यद्यपि लगातार अनेक शताब्दियो से प्रकाड जैन नैयायिक जैन धर्म के सिद्धान्तो का अन्य भारतीय विचारधाराओ

के अत्यन्त विशद तुलनात्मक विवेचन करते चले आये हैं। प्रारम्भ मे डा० के० वी० पाठक और डा० सतीशचन्द्र वि० भू० उक्त ग्रथो के काल-क्रम के विषय मे वहुत कुछ लिखा था, किन्तु उसके पश्चात् अव इधर इतनी अधिक नवीन सामग्री प्रकाश मे आ रही है कि विद्वानो को अपनी पूर्व निश्चित धारणाओ मे परिवर्तन करना पड रहा है। प्रो० एच० आर० कापडिया ने गायकवाड ओरियटल सीरीज (भाग १, वडोदा १९४०) के अन्तर्गत स्वोपज्ञ वृत्ति एव मुनिचन्द्र कृत टीका सहित 'अनेकात जय पताका' का सम्पादन किया। प० महेन्द्र कुमार ने अपने द्वारा सुसम्पादित 'अकलक ग्रन्थत्रय' × की भूमिका मे अकलक के समय, शैली तथा अन्य अनेक तथ्यो पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डाला है। उन्ही के द्वारा सम्पादित न्याय कुमुदचन्द्र दो भागो की स्वय उनके तथा प० कैलाश चन्द्र द्वारा लिखित भूमिकाओ में नवीन दृष्टि कोण एव प्रचुर सामग्री होने के साथ ही साथ अकलक के समय सम्वधी भ्रान्ति का भी प्राय निरसन हो गया है। प० महेन्द्रकुमार द्वारा सम्पादित प्रमेय कमल मार्तण्ड तथा न्याय विनिश्चय विवरण के सस्करण भी महत्त्वपूर्ण हैं। सकल भारतीय न्याय शास्त्र में निष्णात प्रज्ञाचक्षु प० सुखलाल सँघवी अपनी गहरी पहुच, ताजा दृष्टि कोण तथा खोज पूर्ण विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें तथा उनके साथियो को 'जैन तर्क भाषा' एव 'प्रमाण मीमासा' के उत्तम सस्करण सम्पादित करने का श्रेय है। उन्होंने सिद्धसेन दिवाकर के 'सन्मतितर्क' का भी गुजराती अनुवाद और विद्वत्तापूर्ण सपादन किया है, जिसका कि अ गरेजी अनुवाद प्रो० अथवले तथा गोपानी ने किया है। प० दरवारी-लाल कोठिया ने धर्म भूषण की न्यायदीपिका तथा विद्यानन्द की आप्त-परीक्षा के उत्तम सम्पादन किये हैं। प० जुगलकिशोर मुख्तार, समन्तभद्र के युक्तयानुशासन का अनुवाद और सम्पादन कर रहे हैं, सन्मतितर्क और सिद्धसेन दिवाकर सम्वंधी उनका लेख भी वहुत महत्वपूर्ण है। स्याद्वाद मजरी और माणिक्यनदि कृत परीक्षा मुख सूत्र के सम्पादित सस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं।

× सिंघी जैन ग्रन्थमाला न० १२, अहमदावाद, १९३९.

कलकत्ता विश्वविद्यालय के डा० सातकौडी मुखर्जी ने जैन दर्शन पर एक स्वतंत्र ग्रन्थ-दी फिलासफी आफ नान एवसोल्यूटिज्म, लिखा है। समन्तभद्र, पूज्यपाद अकलक, विद्यानंद आदि आचार्यों के समय एवं इतिहास के सम्बध में हमारे भी कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इस समग्र नव प्रकाशित साहित्य से जो सामग्री प्रकाश में आ रही है वह मध्यकालीन भारतीय न्याय दर्शन के सम्बध मे पूर्व-निर्धारित धारणाओ मे भारी क्रान्ति करने वाली हैं। पूर्वपक्ष के प्रतिपादन में ये जैन ग्रन्थ उल्लेखनीय निष्पक्षता प्रदर्शित करते हैं और विन्टरनिट्ज के कथनानुसार, उनके दार्शनिक विवेचन अन्य भारतीय दर्शनो का अध्ययन करने में अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध होते हैं।

तत्त्वज्ञान, न्याय, धर्म शास्त्र आदि के अतिरिक्त जैनो का काव्य, नाटक, चम्पू, कथा साहित्य, अलकार, छद, शब्द शास्त्र, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र, राजनीति, इतिहास आदि विभिन्न भाषामय विविध विषयक साहित्य भी पर्याप्त विशाल काय एवं महत्वपूर्ण है । तत्तद विषयो से सम्बधित अखिल भारतीय साहित्य के विकास एव इतिहास का ज्ञान विना उन विषयो के जैन साहित्य के समुचित अध्ययन एव उपयोग के अधूरा ही रहेगा। किन्तु खेद है कि इस विशाल जैन साहित्य के न्यूनांश का भी अभी प्रकाशन अथवा सदुपयोग नही हो पाया है।

हस्त लिखित प्रतिया—भारतवर्ष के अनगिनत जैन शास्त्र भडारो मे सगृहीत पुरातन ग्रन्थो की हस्तलिलित प्रतियां देश की अमूल्य निधि हैं। ये ऐसी वस्तु हैं जिनकी कि एक बार पूर्णतया नष्ट हो जाने पर पूर्ति कर लेना असभव है। परवर्ती साहित्यगत उद्धरणो, उल्लेखो अथवा निर्देशों पर से ऐसे अनेक ग्रन्थो का पता चलता है जिनकी एक भी प्रति कही भी उपलब्ध नही है। साहित्यिक इतिहासकारो के लिए हस्तलिखित प्रतियां अनुमानातीत महत्त्व रखती हैं। उत्तर तथा दक्षिण दोनो ही प्रदेशों के जैन ग्रन्थकारो ने अपनी रचनाओ को केवल धार्मिक विषयो तक ही सीमित नही रक्खा, वरन् अपनी कृतियो से भारतीय ज्ञान की सभी विविध भाषाओ को सुसमृद्ध किया।

अतएव जैन ग्रन्थ भडार ऐसे सुसम्पन्न रत्नागार हैं जिनका धैर्यपूर्ण अनुशीलन प्राच्य विद्याविदो के लिए आवश्यक एव वाञ्छनीय है। एक समय था जब साम्प्रदायिक सकीर्णता इन कोषागारो को विद्वत्समाज के लिए भी उन्मुक्त करने मे बाधक होती थी, किन्तु अब परिस्थिति बदल रही है। व्हूलर, कीलहार्न कथवटे, भडारकर, पीटर्सन, वेबर, ल्यूमेन, मित्रा, कीथ, दलाल, गाँधी, वेलकर, हीरालाल,कापडिया तथा अन्य विद्वानो के सतत् प्रयत्नो के फ़लस्वरूप ऐसी अनेक परिचयात्मक ग्रन्थ सूचियों का निर्माण हो चुका है जो पुरातन जैन साहित्य की भी विविध शाखाओ का विवरण प्रदान करती है और अनुसधान कार्य के लिये अत्युपयोगी हैं।

वृहट्टिप्पनिका, जैन ग्रन्थ नामावली, जैन शास्त्र नाममाला आदि ग्रन्थ कोषो द्वारा उनके निर्माताओं ने उनमे, ज्ञात अथवा उपलब्ध, जैन ग्रथो का विवरण एक ही स्थान मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जिससे सामान्य प्राथमिक पर्यवेक्षण सुगम हो जाता है। किंतु प्रो० हरिदामोदर वेलङ्कर द्वारा सपादित तथा भडारकर प्राच्य विद्यामदिर, पूना, द्वारा प्रकाशित 'जिनरत्नकोष' नामक, जैन हस्त लिखित ग्रथ सूची, इस दिशा में एक अत्यधिक सफल एव महत्वपूर्ण प्रयत्न है। प्रो० वेलङ्कर ने यह कार्य, जिसे हाथ में लेने से एक सर्व साधन सम्पन्न सस्था भी शायद हिचकिचाती, एकाकी ही अतीव सुन्दरता के साथ सम्पादन किया है। इसके प्रकाशन से जैन साहित्य विषयक अध्ययन को एक नवीन दृष्टि प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। वीर सेवा मदिर, देहली मे भी कई दिगम्बर जैन ग्रथ भडारो के अप्रकाशित तथा दूसरी सूचियो मे सम्मिलित न किये गये, ऐसे लगभग ६००० ग्रथो की एक विवरण सूची प्राय तैयार हो चुकी है, जो कि 'जिनरत्नकोष' गत त्रुटियो की पूर्ति करने के साथ ही साथ अन्य प्रकार भी उपयोगी सिद्ध होगी। दक्षिण देश के मूडबद्री आदि स्थानो के भडारो के कन्नड लिपि में निबद्ध ताडपत्रीय ग्रथो की एक विवरण सूची प० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सम्पादित होकर भारतीय ज्ञान पीठ काशी से प्रकाशित हुई है। आमेर भडार की सूची भी जयपुर से प्रकाशित हो गई है। आफ-

क्रेस्ट के प्रसिद्ध 'कैटेलोगस केटेलोगोरम' के सशोधन, सवर्द्धन का कार्य मद्रास विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया था और यह योजना थी, कि उक्त सूची में ऐसे सर्व जैन ग्रथो को भी सम्मिलित कर लिया जायगा जोकि प्राचीन भारत के सास्कृतिक विकास सबधी ज्ञान के लिए उपयोगी हैं, और यह कि इसमें आलोचनात्मक एव तुलनात्मक विवेचन के उद्धरण भी रहेंगे। योजना निस्सन्देह वडी सुन्दर है! इसकी सहायता से विशाल भारतीय साहित्य के अन्तर्गत जैन साहित्य का अब तक की अपेक्षा कही अधिक पूर्णता एव यथार्थता के साथ अध्ययन किया जा सकेगा।

यद्यपि इस प्रकार यह क्षेत्र सीमावद्ध किया जा रहा है, तथापि अभी तक ईडर नागौर, जयपुर, दिल्ली, वीकानेर आदि अनेक स्थानो के महत्त्वपूर्ण शास्त्र भडारो का व्यवस्थित रूप से निरीक्षण ही नही हो पाया है। दक्षिण मे मूडवद्री, हुम्मच, वारगल, कारकल आदि स्थानो के भडारो के भी, जहाँ कि ढेरो ताडपत्रीय प्रतियाँ सुरक्षित हैं, प्रमाणीक विवरण तैयार नही हुए हैं। अपनी प्राचीनता एव प्रमाणिकता के कारण ये सग्रह अध्ययन की विविध शाखाओ के लिए वहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करेंगे, ऐसी पूर्ण सम्भावना है।

आमेर, पाटन, पूना, कारजा आदि के भडारो मे सुरक्षित प्राचीन देवनागरी लिपि वद्ध कुछ ग्रन्थ प्रतियाँ १२ वी शताव्दी(ई०)तक की हैं। निश्चित तिथि तथा लेखन स्थान से युक्त ऐसी प्रतियो की एक क्रमवद्ध श्रखला छाँट लेने से नागरी अक्षरो मे, समय के साथ साथ होने वाले क्रमिक विकास का एक कोष्ठक तैयार किया जा सकता है और उसके द्वारा स्व० प० गौरीशकर हीराचन्दा ओझा तथा व्हूलर साहव ने, शिलालेखीय आधारो पर जो तालिकायें निर्माण की हैं, उनकी पूर्ति हो सकती है। कुछ विद्वानो का ध्यान ऐसी प्रतियों की ओर आकर्षित हो भी चुका है। मुनि पुण्य विजय जी द्वारा लिखित 'जैन चित्र कल्पद्रुम' (अहमदावाद १९३५) की भूमिका, अक्षर विज्ञान एव लेखन कला पर एक ठोस देन है, और कम से कम जहाँ तक गुजरात के भडारो मे सग्रहीत प्रतियो का सम्वन्ध है, उक्त विषयो पर अच्छा प्रकाश डालती है।

प्रो० एच० आर० कापडिया ने भी अपने निबन्धो मे उक्त विषय के कुछ अंगो का विवेचन किया है ।*

चित्र कला—इन हस्तलिखित प्रतियो पर से लघु चित्रकला (मिनियेचर पेन्टिग) मम्बन्धी सामग्री का आशिक उपयोग मि० ब्राउन, नवाव तथा अन्य विद्वानो ने किया है । अभी हाल मे हमने नागौर के वर्तमान भट्टारक जी के पास, यशोधर चरित्र की १७ वी शताब्दी की एक अति सुन्दर चित्र प्रति देखी थी, जो कि शिकागो विश्व प्रदर्शिनी मे भी प्रशसा प्राप्त कर चुकी है। जैन गुहा-चित्रो के सबन्ध मे पुद्दुकोटा राज्य के श्री एल गणेश शर्मा ने, अपनी पस्तक 'सित्तनवासल जैन गुहा चित्रावली एव चित्रकला' मे उक्त विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है । डा० हीरानद शास्त्री ने भी जैन चित्रकला पर लिखा है । सिगनपुर (रायगढ) आदि की प्रागऐतिहासिक चित्र कला मे भी जैन प्रभाव लक्षित होता है ।× अनेक प्राचीन अर्वाचीन जैन मन्दिरो मे वहुलता से पाये जाने वाले भित्ति चित्र तथा जैन पौराणिक रूपक एव सकेत चित्र भी पर्याप्त संख्या मे उपलब्ध हैं । किन्तु इस समस्त सामग्री के न्यूनाश का भी उपयोग नही हो पाया है ।

प्रशस्त्यादि—अधिकतर हस्तलिखित प्रतियो मे उनकी लेखन तिथि दी हुई होती है और उनमे ऐसी काल निर्णायक सामग्री पर्याप्त मात्रा मे होती है जो कि जैन सघ के मध्यकालीन इतिहास के लिये तो अत्यन्त उपयोगी है ही, साथ ही भारत के राजनैतिक इतिहास सवन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओ के तिथि निर्णय मे तथा ज्ञान तिथियो की पुष्टि करने मे बहुधा उपयोगी सिद्ध हुई है और हो सकती है ।

जैन ग्रन्थ प्रतियो मे पाई जाने वाली ये प्रशस्तियें, पुष्पिकाएं आदि वहुवा तीन प्रकार की होती हैं—(१) ग्रन्थकार द्वारा निवद्ध—जिनमें वह अपने सम्वन्ध

---

*See Outlines of, Paleography and the Jaina Mss J U B, VI 2, VII 2,

×See Prehistoric Jaina Paintings—J. A, X 2, XI,

की अनेक सूचना, अपनी गुरु परम्परा, कब, किसके लिये, किसके राज्य या आश्रय मे अथवा प्रेरणा पर ग्रन्थ की रचना हुई, इत्यादि बातो का सूचना देता है। (२) प्रति लेखक अथवा लिपि कर्त्ता की प्रशस्ति, लिपिकार का परिचय, लेखन तिथि तथा जिसके लिये वह प्रति लिखी गई अथवा जिसके द्वारा लिखवाई गई, आदि सूचनाएँ दी होती हैं। (३) दानी की प्रशस्ति मे उक्तदानी का तथा उसके परिवार, वश आदि का परिचय तथा किस साधु या मदिर को वह प्रति दान की गई, आदि बातो का उल्लेख रहता है। इस प्रकार की सूचनाएँ कर्णाटक एव तामिल देश की प्रतियो की अपेक्षा गुजरात, मध्य भारत आदि की प्रतियो मे ,अधिक बहुलता के साथ पाई जाती हैं। अहमदाबाद से एक विशाल, लेखक प्रशस्ति सग्रह, प्रकाशित हो चुका है, स्व० पूर्णचन्द नाहर ने भी, एक प्रशस्ति सग्रह, प्रकाशित किया था जैन सिद्धान्त भवन आरा से, ५४ दिगम्बर जैन ग्रन्थो की प्रशस्तियो का सग्रह प्रकाशित हुआ है। वीर सेवा मदिर, देहली से सस्कृत तथा अपभ्र श प्रशस्तियो के दो पृथक पृथक सग्रह प्रकाशित होने की योजना है, आमेर भडार का प्रशस्ति सग्रह भी प्रकाशित होने वाला है। ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन बम्बई व झालरापटन की वार्षिक रिपोर्टो मे भी कुछ प्रशस्तियें प्रकाशित हुई हैं। यदि प्रयत्न किया जाय तो ऐसे कितने ही अन्य सग्रह सुगमता से प्रकाशित किये जा सकते हैं। प्रो० एस० श्री कठ शास्त्री द्वारा सकलित 'कर्णाटक इतिहास के साधन—भा० १' (मैसूर १९४०) से स्पष्ट है कि ऐतिहासिक रचनाओ को अ शत अथवा पूर्णत सकलित करने के लिए, तथा उनका परस्पर सबध बैठाने के लिए जैन ग्रन्थ प्रशस्तिया एक अत्यन्त मूल्यवान साधन हैं। हमने स्वय कई प्राचीन एव मध्यकालीन लेखको के इतिवृत्त का निर्माण करने मे विभिन्न प्रशस्तियो का उपयोग किया है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी जैन ग्रन्थ प्रशस्तियो एव पुष्पिकाओ के महत्त्व पर प्रकाश डाला हैं। यदि इन प्रशस्त्यादि का सुचारू सकलन कर लिया जाय तो उन अनगिनत प्रतिमाभिलेखो के साथ, जो जैन मूर्तियो पर खुदे मिलते हैं और जिनमे से कुछ प्रकाशित भी हो चुके हैं, तथा अन्य जैन

पुराभिलेखो के साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन करने से, न केवल नवीन तथ्य प्रकाश मे आयेंगे वरन सुपरिचित घटनाओ तथा अन्य ऐतिहासिक तथ्यो का परस्पर सम्बध भी स्थापित किया जा सकेगा और कालानुक्रमिक अध्ययन मे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होंगे। इस प्रकार के पृथक २ विभिन्न सूचनांशो का परस्पर सवध वैठाने से ही, ग्रन्थराज श्रीधवल की एक मात्र उपलव्ध मूल-प्रति के लेखन काल का निर्णय किया जा सका और मल्लिभूपाल को चीन्हा जा सका। आज यह विषय एक भाग्यानुसारी क्रीडा हो रही है, किन्तु इसमे से यह सयोगतत्व, गिरनाट की 'रिपर्टरी डी एपिग्रैफी जैना' नामक ग्रन्थ के आदर्श पर, इन सर्व साधनो से सवधित नामादि अनुक्रमणिकायें निर्माण करके निकाल दिया जा सकता है। प्रशस्तियो और अभिलेखो से जो समय सवधी सामग्री प्राप्त होती है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी तो ये तिथियें इतनी सुनिश्चित पाई जाती हैं, कि व्हिटने का वहुधा उद्धृत कथन, कि "भारतीय साहित्य के इतिहास की तिथियाँ ऐसे पूर्वापर असम्वद्ध तथा पृथक २ स्थापित सकेत चिन्ह हैं जो पुन विचारनीय एव चिन्तनीय हैं"—सन् १८७९ मे भले ही सत्य रहा हो, किन्तु अव वह अनेक अपवादो के साथ ही ग्रहण किया जा सकता है।

पुराभिलेख—राइस, नरसिंहाचार्य, गिरनाट, आयगर, शेशागिरि राव, सालतोर तथा अन्य विद्वानो ने उन जैन पुराभिलेखो का उपयोग सफलतापूर्वक किया है जो जैन धर्म के इतिहास के विविध अगो पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं और वहुवा तत्कालीन नरेशो, राजपुरुपो तथा अन्य राजनैतिक वातो का भी उल्लेख करते हैं। जैन मूर्तियो तथा मदिरादिको पर अंकित अभिलेख जिनमे से कितने ही वुद्धिसागर, जिन विजय जी, नाहर, कामता प्रसाद, कान्तिसागर, गोविन्द प्रसाद आदि विद्वानो द्वारा प्रकाश मे लाये जा चुके हैं, साहित्यिक एव ऐतिहासिक कालानुक्रम का निर्णय करने मे वहुत उपयोगी हैं, क्योकि उनमे प्रमुख आचार्यो का जोकि वहुधा ग्रन्थकार भी होते थे, प्राय उल्लेख रहता है। 'एपिग्राफिका कर्नाटिका' में सकलित जैन अभिलेख, कर्णाटक प्रात के इतिहास मे

... धर्म का जो भाग रहा है, उसके व्यवस्थित ज्ञान के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध हुए हैं। यह बात श्री बी० ए० सालतोर कृत मैडिवल जैनिज्म (बम्बई १९३८) तथा प्रो एस आर शर्मा कृत 'जैनिज्म एड कर्णाटक कल्चर' (धारवाड १९४०) से भली प्रकार प्रमाणित हो जाती हैं। निजाम राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रकाशित, कोप्पल से प्राप्त कन्नडी शिलालेखो पर लिखे गये निबध मे राज्य के अन्य स्थानो से भी प्राप्त, जैन अभिलेखो के महत्त्वपूर्ण उदाहरण दिये गये हैं। यह विभाग प्रसिद्ध पुराविद, गुलाम यजदानी की अध्यक्षता मे कार्य कर रहा था और आशा थी कि उसके द्वारा अन्य अनेक जैन शिलालेख शीघ्र ही प्रकाश मे आयेंगे। देवगढ आदि स्थानो मे प्राप्त, तथा 'एपिग्रेफिका इ डिका' मे प्रकाशित शिलालेखो को देखने से पता चलता है कि अनेक जैन शिलालेख सरकार के पुरातत्त्व एव प्राच्यतत्त्व विभागो के भडार गृहो मे केवल इसीलिये व्यर्थ पडे हुए है कि राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से वे प्रत्यक्ष उपयोगी नही जान पडते। इन समस्त अभिलेखो को तुरन्त प्रकाशित कर देना इन विभागो के लिए अवश्य ही कठिन कार्य था, विशेषत जबकि बृटिश सरकार का व्यवहार ऐसे सास्कृतिक विभागो की ओर विमाता सरीखा रहा है। अब स्वतत्र भारत मे, अपनी राष्ट्रीय सरकार से इस दिशा मे बहुत कुछ आशा है। यदि सरकार इस कार्य को स्वय हाथ मे न भी लेना चाहे तो भी प्राच्याध्यन के हित मे यह अच्छा होगा कि वे लेख उन विद्वानो के सिपुर्द कर दिये जाँय, जो जैन पुराभिलेखो मे दिलचस्पी रखते हैं तथा जो भडारकर प्राच्यविद्या-मदिर पूना, भारतीय विद्याभवन, बम्बई प्रभृति सस्थाओ मे कार्य कर रहे हैं। इनमे से अनेक अभिलेख देश के राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से भले ही महत्वपूर्ण न हो, किन्तु जैन साहित्यगत लेखको तथा स्थानो को चीन्हने और विभिन्न प्रदेशो से सबधित जन सघ का इतिहास निर्माण करने मे, अवश्य ही उपयोगी कुजियें प्रदान कर सकते हैं।

जिस प्रकार भडारकर ने कीलहार्न द्वारा सकलित शिलालेख सूची का सशोधन सवर्द्धन करके, उसे आधुनिक काल तक पूर्ण कर दिया, उसी प्रकार

यह नितान्त आवश्यक है कि कोई विद्वान, जो ऐसे केन्द्र मे कार्य कर रहा हो, जहाँ पुरातत्त्व व अभिलेखादि सम्बन्धी समग्र प्रकाशन एव अन्य सामग्री उपलब्ध अथवा सुलभ हो, गिरनाट के उपर्युलिखित महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सशोधन सवर्द्धन करके, उसे वर्तमान काल तक पूर्ण करने का प्रयत्न करे। डा० छोटेलाल ने अपनी 'जैन बिबलियोग्रेफी' में सन् १९०६ से १९२५ तक के प्रकाशित अ ग्रेजी जैन साहित्य, उद्धरण एव अभिलेख सूचनाओ को सकलित करने का प्रयत्न किया है। किन्तु शिलालेखो के सम्बन्ध मे यह ग्रथ उतना सतोषजनक एव प्रमाणीक नही है। देश के विभिन्न भागो से प्राप्त अनेक जैन शिलालेख प्रकाश मे आ चुके हैं। किन्तु एक पूर्ण 'जैना एपिग्रेफी' के अभाव मे उनमें निहित तथ्यो का यथोचित लाभ उठाया जाना कठिन है। समस्त प्रकाशित जैन शिला-लेखो के एक आधुनिकतम विवरण से जैनाध्ययन को निश्चयत भारी प्रगति मिलेगी।

मूर्त्तिकला—जैन मूर्त्तिकला भारतीय मूर्त्तिकला का महत्वपूर्ण अ ग है। भारतवर्ष के अनगिनत मदिरो में विद्यमान असख्य जैन मूर्त्तियो तथा जन ग्रन्थो मे उपलब्ध तत्सबधी प्रचुर साहित्य के होते हुए भी, जैन मूर्त्तिकला एव विज्ञान का अध्ययन अभी तक अपनी शैशवावस्था मे ही है। इस दिशा मे जो महत्त्व-पूर्ण कार्य हुआ है, उसमे जे० बरगेस तथा जे० एल० जैनी की, 'दिगम्बर जैन' 'आइकोनोग्रेफिये' बी० सी० भट्टाचार्य की 'दी जैना आइकोनोग्रेफी' (लाहौर १९३९) इत्यादि हैं किन्तु इनमे संशोधन सवर्द्धन की पर्याप्त आवश्यकता है। इस विषय की और अधिक उल्लेखनीय कृतियाँ, डा० एच डी साँकलिया कृत 'जैना आइकोनोग्रेफी' (एन्न आई ए, २८) 'जैन यक्ष यक्षणियां', 'बडौदा राज्य की तथा कथित बौद्ध मूर्त्तियाँ' (बुलेटिन आफ दी डेकन कालिज, आर आई I, २-४), 'नेमिनाथ के ससार त्याग कल्याणक का प्रस्तरांकन' (आई० एच० क्यू XVII, भा० २) 'एक जैन देवी की अद्भुत आकृति,' 'पीतल का जैन गणेश' (जे ए.–IV पृ० ८४, V पृष्ठ ४६) इत्यादि हैं। डा० विनयदेव भट्टाचार्य (प्राच्य विद्याभवन, बडौदा) के निर्देशत्व में, बडौदा के श्री यू पी शाह ने जैन

मूर्तिविज्ञान, पर कार्य किया है और तद्विषयक मूल आधारो से पर्याप्त सामग्री एकत्रित की है। उनके कुछ महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित भी हो चुके हैं, यथा जैन देवी अम्बिका, जैन सरस्वती आदि (जे यू बी, १९४०-४१) डा० अग्रवाल ने जैन शिलालेखो पर से जैन मूर्त्तिविज्ञान सम्बन्धी कतिपय शब्दो की व्याख्या की है (जे ए V पृ० ४३)। उन्होने तथा श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० एम० नागर आदि ने, विशेषरूप से मथुरा की प्राचीन जैन मूर्त्तकला पर कई उपयोगी लेख लिखे हैं। मथुरा की जैन सरस्वती पर हमारा भी एक लेख प्रकाशित हुआ है। डा० मोतीचन्द्र के तद्विषयक लेख भी महत्वपूर्ण है। श्री के के गांगुली के लेख 'बगाल की जैन मूर्त्तियाँ' (जे सी -VI,२ पृ० १३७) से प्रकट हैं, कि देश के इस भाग की खोज और अधिक जाचपूर्वक किये जाने की आवश्यकता है। एक स्फूर्त्तिदायक लेख 'जैन धर्म और भट्टकल पुरातत्व' (बम्बई प्रान्तीय कन्नड अनुसधान की वार्षिक रिपोर्ट, १९३९-४०, धारवाड, १९४१, पृ० ८१) में, उक्त अनुसधान निर्देशक श्री आर एस पचमुखी ने, जैन मूर्त्ति विज्ञान के कतिपय अ गो पर सरसरी दृष्टि से विचार किया है। उनके कुछ सामान्य कथन अप्रमाणिक होते हुए भी, उसमे उन्होने दक्षिणात्य जैन धर्म का शृ खला-बद्ध विवरण दिया है और भट्टकल तथा उन अन्य स्थानो की जो किसी समय जैन सस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्र थे, कतिपय नवीन मूर्तियो को प्रकाश मे लाये हैं। मुनि कान्ति सागर, अशोक कुमार भट्टाचार्य आदि कुछ अन्य विद्वानो ने भी इस विषय पर लेखादि लिखे हैं। जैन मूर्त्तिविज्ञान और जैन देववाद तथा जैनधर्म मे मूर्त्तिपूजा का विकास, एव इतिहास—इन्हें पृथक २ विषय मानकर ऐतिहासिक पूर्वपीठिका के साथ उक्त अध्ययन का प्रारभ करना अधिक उपयुक्त होगा। ये दोनो विषय आगे चलकर एक में ही गर्भित हो जाते हैं अत प्रारभ मे ही उनके बीच भ्रान्ति न होने देना ठीक होगा। ये अध्ययन अभी अपनी प्रारभिक अवस्थाओ मे हैं। हिन्दू, बौद्ध और जैन मूर्त्तिविज्ञान की परस्पर समानताओ पर लक्ष्य देना आवश्यक है, किन्तु बिना ठोस प्रमाण के सहसा ऐसे कथन कर देना कि अमुक बात, अमुक ने, अमुक से ग्रहण की है, उचित नही है।

स्थापत्य—जैन स्थापत्य का अध्ययन तो और भी कम हो गया है। विन्सेन्ट स्मिथ कृत 'मथुरा का जैन स्तूप तथा अन्य पुरातत्त्व' नामक ग्रन्थ बहुत महत्व पूर्ण है। आबू के जैन मन्दिरो पर पर्याप्त लिखा जा चुका है। फर्गुसन आदि ने भी प्रसगत जैन स्थापत्य पर किंचित प्रकाश डाला है किन्तु इस विषय का भी यथोचित अध्ययन अभी तक नहीं हो पाया है। स्तूप, निपद्या, मन्दिर, बसति, गुहा आदि विभिन्न रूपो तथा देश कालानुसार विविध शैलियो मे उपलब्ध जैन स्थापत्य की अपनी निजी सास्कृतिक विशेषताएँ भी है।

इस प्रकार जैनाध्ययन की कतिपय स्थूल शाखाओ का यह सक्षिप्त निर्देश है। अनेक जैन व अजैन विद्वान इन विषयो मे अपनी-अपनी रुचि एव साधन सुविधाओ के अनुसार कार्य कर रहे है। कई एक साहित्यक अनुसधान सस्थाए और उत्तम कोटि की पत्र-पत्रिकाए भी चालू हैं। प्राच्याध्ययन के अन्तर्गत जैनाध्ययन का प्रारम्भ और बहुत काल तक नेतृत्व भी पाश्चात्य विद्वानो ने किया था। अत तत्सम्बन्धी साहित्य भी अगरेजी आदि विदेशी भाषाओ मे ही लिखा जाता रहा है। किन्तु अब समय आगया है कि जैनाध्ययन सम्बन्धी सर्व प्रकार के निर्देशात्मक ग्रथ, कोष, सूचियें, विवरण, विवेचन, लेख, निबन्धादि राष्ट्रीय व लोकभाषा हिन्दी मे ही लिखे जाँय। इससे जैनाध्ययन को विशेष प्राप्ति मिलेगी, जो कि भारतीय सस्कृति के समुचित ज्ञान, मूल्याँकन एवं विकास के लिये परमावश्यक है।

ज्योतिप्रशाद जैन, एम० ए०

विज्ञप्ति

जैन धर्म, सस्कृति, इतिहास पुरातत्व, प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य आदि से सम्बन्धित, सर्व प्रकार की जिज्ञासा के समाधान के लिये निम्नाकित सस्थाओ, प्रकाशको तथा व्यक्तियो को पत्र लिखने से यथोचित उत्तर प्राप्त हो सकता है —

१ अधिष्ठाता, वीर सेवा मन्दिर, ७/२१ दरियागज, देहली।

२ जैन सिद्धान्त भवन, आरा विहार।
३ भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस।
४ जैन कल्चरल इन्स्टीट्यूट, ७/३ हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।
५ दिगम्बर जैन सघ, चौरासी मथुरा।
६ दि० जैन परिषद कार्यालय, दरियागज, देहली।
७ जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग पो०, गिरगाँव, बम्बई।
८ दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चान्दवाडी, सूरत।
९ लाला पन्नालाल जैन अग्रवाल, ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।
१० ज्योतिप्रसाद जैन, एम० ए०, एल० एल० बी०, ७४-७५, ठठेरवाडा, मेरठ शहर। अथवा—यूनियन मैडिकल स्टोर्स, कैसर बाग, लखनऊ।
११ जैन सूचना व्युरो, ५८७, सदर बाजार, दिल्ली।
१२ जैन मित्रमण्डल धर्मपुरा, देहली



प्रकाशित जैन साहित्य
विवरण सूची
हिन्दी विभाग
हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की पुस्तकें

अकबर और जैन धर्म—ले० रामास्वामी आयगर, अनु० कृष्णलाल र्मा, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हि०, पृ० १४, ं० १९८८।

अकल सीखने की पुस्तक—ले० श्रावक दुलीचन्द, प्र० लेखक स्वय यपुर, पृ० ३१, भा० हि०, आ० प्रथम।

अकलंक ग्रंथ त्रयम्—ले० श्रीमद्भट्टाकलकदेव संपा० प० महेन्द्रकुमार या० आ०, प्र० सिंघी जैन ग्रथ माला अहमदाबाद-कलकत्ता, भा० स०, पृ० ६४, व० १९३९ ई०, आ० प्रथम, (लघीस्त्रयम्, न्याय विनिश्चय, प्रमाण ग्रह)।

अकलक चरित्र और अकलक स्तोत्र—सपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, ० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० स० हि०, पृ० १८।

अकलक देव की कथा—ले० वख्तावर रतनलाल, भा० हि०, पृ० १६, ० १९१२ ई०, प्र० जैन ग्रथ प्रचारक कार्यालय देववद, आ० प्रथम।

अकलक नाटक—ले० सिद्धसेन जैन गोयलीय, प्र० जैन पाठशाला रेवाडी, भा० हि०, पृ० १०३, व० १९२८ ई०, आ० प्रथम।

अग्रवाल इतिहास—ले० अज्ञात, अनु० बी० एल जैन, प्र० लेखक स्वय बाराबकी, भा० हि०, पृ० २४।

अंगपण्णत्ति—ले० शुभचन्द्र, भा० प्रा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह में प्रकाशित)।

अच्छी आदतें डालने की शिक्षा—ले० दयाचद्र जैन, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१५।

अजिताश्रम पाठावली—सपा० सक०-प० अजितप्रसाद एडवोकेट, प्र० ए० पी० जिंदल, अजिताश्रम, लखनऊ, भा० स० हि०, पृ० ७२, व० १९३५ ई०, आ० प्रथम।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय में सम्मतियाँ—(प्रथम भाग) सक० मा० बिहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय मे सम्मतियाँ द्वितीय भाग—सक० मा० विहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि०, पृ० ३१, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अठाई रासा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०, व० १८९८।

अठारह नाते (पद्य)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१० ई०, आ० द्वितीय।

अठारह नाते की कथा—ले० अज्ञात, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा०, हि०, पृ० ६।

अढ़ाई द्वीप पूजन विधान—ले० प० कमलनयन, प्र० मूलचद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३४९, व० १९४४ ई०, आ० प्रथम।

अतीत जिन चतुर्विंशतिका—ले० जयतिलक सूरि, भा० प्रा० स०।

अद्भुत रामचरित्र (प्रथम तुंग-बनवास)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० २३,, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अद्भुत रामचरित्र (दूसरा तुंग-युद्ध-काड)—ले० निरजनदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९१६ ई०, आ० प्रथम।

अद्भुत रामचरित (तीसरा तुंग-अयोध्या कांड)—ले० निरन्जनदास,

प्र० ला० होशियार सिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१५ ई०, भा० हि०, आ० प्रथम ।

अद्भुत रामचरित (चौथा तुंग-वैराग्य काड)—ले० निरंजनदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० १८, व० १९१६, भा० हि० ।

अध्यात्म सग्रह—(२८ रचनाओ का सग्रह)-भा० हि० स०, पृ० ३८८ ।

अध्यात्म तरगिणी—ले० सोमदेव, भा० स०, पृ० १० ।

अध्यात्म पंचासिका—ले० अज्ञात, भा० हि० ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—ले० कवि राजमल्ल, सपा० प्रो० जगदीश चन्द्र, प्र० माणिकचन्द दि० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—ले० कवि राजमल्ल, अनु० सपा० दरबारी लाल कोठिया और प० परमानन्द शास्त्री, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ११०, व० १९४४, आ० प्रथम ।

अध्यात्म विचार—ब्र० मोतीलाल, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९३० ।

अध्यात्म ज्ञान—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३१ ई० आ० प्रथम ।

अध्यात्माष्टवाम्—ले० वादिराज सूरि, भा० स० ।

अध्यात्मिक निवेदन—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० आत्मधर्म सम्मेलन सूरत, भा० हि०, पृ१६, व० १९२५ ई० आ० प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—ले० प० आशाधर जी, सपा० प० वशीधर व प० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द दि० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ६९२ व० १९१९ ई० आ० प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—(टीका) ले० प० आशाधर जी, अनु० टी०-प० खूबचन्द शास्त्री, प्र० सेठ खुशालचन्द मानाचन्द गाँधी शोलापुर, भा० स० हि०, पृ० ९३६, व० १९२७ ई०, आ० प्रथम ।

अनमोल बूटी—ले० मा० बिहारीलाल, भा० हि०, पृ० ५१, व० १९१४ ।

अनमोल रत्न अर्थात् आत्म कल्याण का उपाय—ले० शालिग्राम लमेचु, प्र० कुन्थूलाल इलाहाबाद, भा० हि०, पृ० १७, व०, १९१३ ई० ।

✓अन्य धर्मों से जैन धर्म में विशेषताएँ—ले० अजितकुमार शास्त्री, भा० हि०, पृ० ३१, व० १९२७ ।

अनन्तमती—ले० कृष्णलाल वर्मा, भा० हि० ।

अनाथरुदन—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ८, व० १९२४ ई०, आ० चतुर्थ ।

✓अनादि गणित -ले० नत्थनलाल जैन, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम।

अनावश्यक दि० जैन मूर्ति पूजा—ले० प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९४० ।

अनित्य भावना—(पद्मानुवाद)—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२४, आ० प्रथम।

✓अनित्य भावना—ले० पद्मनन्द्याचार्य, अनु० सपा०-प जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ४८, व० १९४६ ई०, आ० तृतीय, मूल्य ।

✓ अनुभव प्रकाश—ले० दीपचन्द, प्र० लखमीचन्द वेणीचन्द कुडुंयाडी, भा० हि०, पृ० ११८ ।

अनुभव माला—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० (पद्य), पृ० १५, व० १९३२ ।

✓अनुभवानन्द—स० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १२८, व० १९१२, आ० प्रथम ।

अबलाओं के आँसू—ले० अयोध्या प्रसाद जैन गोयलीय, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९२९, आ० प्रथम।

अभिषेक पाठ संग्रह—सपा० पन्नालाल सोनी, भा० स०, पृ० ३९१, व० १९३५।

अभिषेक पाठ समीक्षा—ले० प० राजकुमार शास्त्री, प्र० सेठानी गुलाब वाई प्यार कु वर वाई जी इन्दौर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४१।

अभिषेक पूजा पाठ सग्रह—प्र० माणिकचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४८, व० १९४२।

अनेकार्थ रत्न मंजूषा—सपा० प्रो० हीरालाल, भा० स० पृ० १५६, व० १९३२।

अभिषेक पाठ—ले० पूज्यपादाचार्य, अनु० प० जिनदास, भा० स० हि०, पृ० ४८।

अमर जीवन और सुख का सदेश—ले० चम्पतराय जैन बैरिस्टर, अनु० बा० कामता प्रसाद जैन, भा० हि०, पृष्ठ १५।

✓अमितगति श्रावकाचार—ले० आचार्य अमितगति. अनु० टी० प० भागचन्द्रजी, प्र० मुनि श्री अनन्तकीर्ति, दि० जैन ग्रन्थशाला बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ४४०, व० १९४२, आ० प्रथम।

अमृताशीति—ले० योगीन्द्रदेव, भा० स०, पृ०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह में पृ०।

अर्थ का अनर्थ—(वृहद विमल पुराण की समालोचना)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८७, व० १९२४; आ० प्रथम।

✓अर्थ प्रकाशिका—ले० प० सदासुखदास जी, प्र० कलप्पा भरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० हि०; पृ० ७४३, व० १९०२, आ० प्रथम।

✓अर्थ प्रकाशिका (तत्त्वार्थसूत्र टीका)—मूल ले० आचार्य उमास्वामि, अनु० टी०-पं० सदासुखदास जी, प्र०-भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५४३, व० १९१६; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका—ले० आचार्य उमास्वामी, टी० पं सदासुखदास जी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ४६८, व० १६४० ।

अर्घावली—प्र० सुमतिलाल, भा० हि०, पृ० १७ ।

अर्जुनलाल सेठी का जीवन चरित्र—प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य, भा० हि०, पृ० १५ ।

अर्जुनमाली—ले० डी० टी० शाह, भा० हि० ।

अर्थसंदृष्टि अधिकार—ले० प० टोडरमल जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३०८, आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० प० बनारसीदास जी, संपा० डा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० हिन्दी परिषद प्रयाग, भा० हि०- पृ० ७३, व० १६४१, आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० प० बनारसीदास जी, सपा० डा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद प्रयाग, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६४३ ।

अर्द्ध कथानक—ले० प० बनारसीदास जी, सं० प० नाथूराम जी प्रेमी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १०२; व० १६४३, आ० प्रथम ।

अर्हत्प्रवचनम्—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे) प्र० ।

अर्हंत पासा केवली—(अर्हन्त पासा केवलि)—ले० कविवर वृन्दावन जी, संपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० पृ० २४, व० १६११, आ० द्वितीय ।

अलंकार चिन्तामणि—ले० अजितसेनाचार्य, प्र० सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर, भा० स०, पृ० १६२, व० १८२६ शक ।

अवध परिचय—(अवध प्रान्त की जैन डाइरेक्टरी)—सपा० प० रामलाल पचरत्न, प्र० जिनेन्द्रचन्द्र मन्त्री अवध प्रान्तीय दि० जैन परिषद लखनऊ, भा० हि०, व० १६४५, आ० प्रथम ।

अशान्ति का प्रतिकार—प्र०-दिगम्बर जन आम्नाय सरक्षिणी सभा खुर्जा, भा० हि०, पृ० २६ ।

अष्ट पाहड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० प० जयचन्द्र, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रथमाला बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६, व० १९२४, आ० प्रथम।

अष्ट पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० प० पारसदास जैन न्याय तीर्थ, प्र० भारतवर्षीय जैन अनाथरक्षक सोसाइटी देहली, भा० प्रा० हि०, पृ० १४७, व० १९४३, आ० प्रथम ।

अष्ट शती—ले० भट्टाकलकदेव, (आप्तमीमासा तथा अष्ठ सहस्त्री के साथ प्रकाशित) ।

अष्ट सहस्त्री—ले० विद्यानन्द स्वामी, सपा० प० वशीधर, प्र० सेठ गांधीनाथारगजी आकलूज, भा० स०, पृ० २९५, व० १९१५, आ० प्रथम ।

अष्ट सहस्त्री तात्पर्य विवरणम्—ले० यशोविजय गणी, प्र० श्री जैन ग्रथ प्रकाश सभा अहमदावाद, भा० स०, पृ० ४२८, व० १९३७ ।

अष्टांग हृदय—ले० श्रीमद्वाग्भट्ट, प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी आफिस बम्बई ।

अष्टान्हिका पूजन व महात्म्य—ले० हेमराज जी,सग्रह० सिघई बसीलाल, पन्नालाल, प्र० स्वयं अमरावती, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३१।

असहमत संगम—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० लेखक स्वय हरदोई, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १९२२, आ० प्रथम ।

अहार—ले० यशपाल जैन, प्र० मधुकर कार्यालय टीकमगढ, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९४३, आ० प्रथम ।

अहिछेत्र पार्श्वनाथ पूजा—ले० कल्याण कुमार शशि, प्र०, सीताराम वजाज, भा० हि०, पृ० ३६, व १९४० ।

अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व १९२३, आ० द्वितीय ।

अहिंसा—ले० पं० कैलाश चन्द शास्त्री, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्वाला छावनी, भा० हि० पृ० ४८, व० १९३०, आ० प्रथम।

अहिंसा अर्थात् आनन्द की कुंजी—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० प्रेम मडल हरदा सी० पी०, भा० हि०, पृ० ११।

अहिंसा और कायरता—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, हिन्दी विद्या-मंदिर देहली, भा० हि० पृ० २६, व० १९३८, आ० तृतीय।

अहिंसा धर्म प्रकाश [पूर्वार्ध]—ले० फुलजारीलाल जैन, प्र० स्वयं जैन स्कूल पानीपत, भा० हि०, प्र० ८३, व १९२४, आ० प्रथम।

अहिंसा प्रदीप—ले० धीरेन्द्र कुमार शास्त्री, प्र० अहिंसा प्रचारक सघ काशी, भा० हि०, प्र० ३३, आ० प्रथम।

अहिंसा सिद्धांत—ले० मुनि अमर चन्द, भा० हि०, प्र० ४८, व० १९३२।

अहिंसा धर्म और धार्मिक निर्दयता—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि०।

अहिंसा धर्म और प्रेम—प्र० जीव दया सभा आगरा, भा० हि०, प्र० १०।

अजना—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

अंजना पवञ्जय (काव्य)—ले० भवर लाल सेठी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यलिय वम्बई, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९१५, आ० प्रथम।

अंजना पवञ्जय (नाटक)—ले० परमानन्द, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३९।

अंजना सुन्दरी नाटक—ले० कन्हैयालाल, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास वम्बई, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९०९, आ० प्रथम।

अजना सुन्दरी—ले० रामचरित उपाध्याय, भा० हि०।

आगम प्रमाणता सम्बन्ध मे शास्त्रार्थ—ले० कई विद्वान, प्र० हीराचन्द नेमचन्द दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३९, व० १९२४।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनदि, सपा० प० इन्द्रलाल शास्त्री प० वं

मनोहरलाल शास्त्री, प्र० माणिक चन्द दि० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०; पृ० ६८, व० १६१८, आ० प्रथम।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनदि, टी० प० लालाराम शास्त्री, प्र० सेठ शाह जोतीचन्द भाई चद सर्राफ बारामती, भा० स० हि०, पृ० २६६, व० १६३६, आ० प्रथम।

आचार्य शान्तिसागर पूजन स्तवन—ले० प० लालाराम व प० मक्खनलाल प्र० श्रीलाल जैन जव्हेरी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २८, व० १६३४।

आचार्य शान्तिसागर महाराज का चरित्र—प्र० राव जी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२८, आ० प्रथम।

आत्मकथा—ले० प० दरबारी लाल सत्य भक्त, प्र० सत्याश्रम वर्धा सी० पी०, भा० हि०, पृ० २६१, व० १६४०, आ० प्रथम।

आत्म तेज—ले० भगवत जैन, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ३०, व० १६३६।

आत्म दर्शन (सचित्र)—ले० मास्टर मेवाराम, प्र० पृथ्वीपाल जैन बडोदा, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६४४, आ० प्रथम।

आत्म चिन्तन—ले० केशरी मल जैन, भा० स० हि०, पृ० ६०।

आत्म दर्शन—ले० योगीन्द्र देव, भा० स०।

आत्म धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत; भा० हि०, पृ० १५६, व० १६१६, आ० प्रथम।

आत्मध्यान का उपाय—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० सवाई सेठ खुशाल चद चौरई छिन्दवाडा, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६२८, आ० प्रथम।

आत्म निवेदन—ले० के० भुजबलि शास्त्री, अनु० धरणीधर, भा० स० हि०, पृ० ३२, व० १६४०।

आत्म प्रबोध—ले० कुमार कवि, अनु० प० गजाधर लाल, सपा० प० श्रीलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १६४, आ० प्रथम।

आत्म प्रमोद—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० ३८।

आत्म प्रमोद (प्रथम द्वितीय भाग)—ले० ब्र० नन्दलाल, सपा० विहारी लाल कठनेरा, प्र० लेखक स्वय कारजा, भा० हि०; पृ० ७१, व० १९२८, आ० प्रथम।

आत्म भावना—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० १६, व० १९३५।

आत्म वन्दन (पद्य)—ले० ब्र० नन्दलाल, प्र० दुलीचन्द जैन कलकत्ता; भा० हि० पृ० २७, व० १९३६, आ० प्रथम।

आत्मवाद और एकान्त परिहार—ले० प्र० ब्र० नन्दलाल, भा० हि०, पृ० २०।

आत्म शुद्धि—ले० मुन्शीलाल एम० ए०, प्र० स्वय, भा० हि०- पृ० ५६। व० १९१४, आ० द्वितीय।

आत्मसार छत्तीसी—ले० द्यानत राय कवि, भा० हि०।

आत्म सिद्धि—ले० श्री मद्राज चन्द्र, सपा० प० उदय लाल काशलीवाल, प्र० मनसुख लाल रावजीभाई बम्बई, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९१८. आ० प्रथम।

आत्म सिद्धि—ले० प दरबारी लाल सा० र०, प्र० आत्म जागृति कार्यालय व्यावर, भा० हि०, पृ० १७, व० १९३२।

आत्म सिद्धि और सम्यक्त्व—ले० प० दरबारी लाल सा० र०, प्र० आत्म जागृति कार्यालय व्यावर, भा० हि०, पृ० १२, व० १९३२।

आत्मानन्द का सोपान—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२३, आ० प्रथम।

आत्मानद जैन शताब्दी स्मारक ग्रंथ—प्र० आत्मानद जैन सोसाइटी; भा० हि० अ० गु०, पृ० ११, व० १९३६।

आत्मानुशासन—ले० गुणभद्राचार्य, टी० प० टोडरमल जी, अनु० हकीम ज्ञान चन्द, प्र० ज्ञान चद जैनी लाहोर, भा० स० हि०, पृ० ३४४, व० १८९७।

आत्मानुशासन—ले० गुणभद्राचार्य, टी० प० वंशीधर शास्त्री, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ३४२ व० १९२९, आ० द्वितीय।

आत्मिक मनोविज्ञान—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, प्र० साहित्य मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १०५, व० १९३२, आ० प्रथम।

आत्मोन्नति—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३६, आ० प्रथम।

आदर्श कहानियाँ—ले० पंडिता चन्दा बाई, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि० पृ० २०४, व० १९३४ आ० प्रथम,

आदर्श जैन चर्या—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४४, आ० प्रथम, ।

आदर्श जैनी बनो —ले० ब्र० प्रेमसागर, प्र० बरातीलाल जैन लखनऊ; भा० हि०, पृ० १६, व० १९२६।

आदर्श नाटक—आ० प्रथम, भा० हि०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, व० १९३३,

आदर्श निबंध—ले० पंडिता चन्दाबाई, प्र० जैन बालाविश्राम आरा; भा० हि०, पृ० १४९।

आदर्श भावना—ले० ब्र० सुन्दरलाल, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३५।

आदर्श महिला पंडिता चन्दाबाई—ले० प० परमानन्द जैन शास्त्री; प्र० बृजबाला देवी बालाविश्राम आरा, भा० हि०, पृ० २८३, व० १९४३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तुति (भाषा भक्तामर)—ले० प० हेमराज, सपा०, मुंशी अमनसिंह, प्र० मु० अमनसिंह देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १८९३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० प० लक्ष्मण जी अमर जी

भट्ट, प्र० सेठ हजारीलाल हरसुख राय सुसारी इन्दौर, भा० स० हि०, पृ० २५, व० १९३९, आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र व महावीराष्टक—ले० मानतु गाचार्य अनु० प० भागच॰ प्र० हीरालाल पन्नालाल जैन दिल्ली, भा० स०, पृ० १६, व १९३९।

✓आदिनाथ स्तोत्र (विपापहार सहित)—ले० मानतु गाचार्य, अनु० टी० प० नाथूराम प्रेमी०, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० स० हि०, पृ० ६०, व १९२३, आ० पष्टम्।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, टी० प० दौलतराम जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ९६२, व० १९२०, आ० प्रथम।

आदिपराण—ले० जिनसेनाचार्य टी० अनु० प० लालाराम शास्त्री, प्र० जैन ग्रंथ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भा० स० हि०, पृ० १७६८, व० १९१५, आ० प्रथम।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० दुलीचंद परवार देवरीसागर, भा० हि०, पृ० ४६०।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स०, पृ० २५८, आ प्रथम।

आदिपुराण—(सचित्र)—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०२, व० १९३५, आ० द्वितीय।

आदिपुराण (सक्षिप्त हिन्दी गद्यात्मक)—ले० मा० विहारीलाल, प्र० शान्ति चन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९२६, आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (प्रथम भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा, भा० हि०; पृ० ५४, व० १९१८; आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (द्वितीय भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० चन्द्रसेन जैन वद्य इटावा भा० हि० पृ० ७० ; व० ९१८ ; आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा की परीक्षा—ले० प० लालाराम शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र बैनाडा बम्बई, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक चौबीस ठाणा—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ मन्नूलाल जैन आगासोद, भा० हि०, पृ० १२४, व० १९३९, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक निवेदन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ०, १६, व० १९१७, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (प्रथम भाग)—ले० प० गणेश प्रसाद जी वर्णी, प्र० जिज्ञासु मडल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०, व० १९४०, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (द्वितीय भाग)—ले० गणेश प्रसाद जी वर्णी, सपा० बा० छोटेलाल , प्र० सर सेठ हुकम चन्द इन्दौर, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४१ आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (तृतीय भाग)—ले० पडित गणेश प्रसाद जी वर्णी प्र० जिज्ञासु मडल कलकत्ता भा० हि०, पृ० १८३ व० १९४१, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक सोपान—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२५, व० १९३१, आ० प्रथम ।

आधुनिक जैन कवि—सपा० रमारानी, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी। भा० हि०, पृ० २१४, व १९४४ ।

आनुपूर्वी—प्र० उम्मेद सिंह मुसद्दीलाल, भा० हि० पृ० २७, व १९८८

आप्त परीक्षा—(मूल) ले० विद्यानन्द स्वामी, सपा० प लालाराम, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स०, पृ० १४, व० १९०४ , आ० प्रथम ।

आप्त परीक्षा (सटीक)-ले० विद्यानन्द स्वामी, टी० अनु० प० उमराव सिंह प्र० स्याद्वाद विद्यालय काशी, भा० स० हि०, पृ० ७२ व० १९१५ , आ० प्रथम ।

आप्त परीक्षा (पत्र परीक्षा सहित)—ले० विद्यानन्द स्वामी , सपा० प० गजाधरलाल, प्र० पन्नालाल जैन बनारस, भा० स० , पृ० ७८, व० १९१३, आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा—ले० समन्तभद्राचार्य, सपा० प० लालाराम, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स०, प्र० १४, व० १९०४, आ० प्रथम ।

✓आप्तमीमांसा वचनिका—ले० समन्तभद्र आचार्य, टी० प० जयचन्द्र जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ११८, आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा प्रमाण परीक्षा—ले० समन्तभद्राचार्य, विद्यानन्द स्वामी सपा० प० गजाधरलाल, प्र० पन्ना लाल जैन काशी, भा० स०, पृ० ८०, व० १९१४, आ० प्रथम ।

✓आप्त स्वरूप—ले० अज्ञात, टी० प० उग्र सेन जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० २७२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

आप्त स्वरूप—ले० अज्ञात, टी० प उग्रसेन जैन एम० ए०, प्र० महावीर प्रसाद एण्ड सन्स देहली, भा० हि०, पृ० १८७, व० १९४१, आ० प्रथम ।

आरती व तीर्थ भजनावली—सग्र० प० मगल सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९४०, आ० तृतीय ।

आरती सग्रह—सग्र० पुरुषोत्तम दास जैन, प्र० स्वय सहारनपुर, भा० हि० पृ० १६, व० १९२६, आ० प्रथम ।

आराधनासार—ले० देवसेनाचार्य, स० टी० पडिताचार्य रत्नकीर्ति देव, सपा प० मनोहर लाल शास्त्री, प्र० माणिकचद दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई भा० स०, प्रा० पृ० १३१, व० १९१६, आ० प्रथम ।

✓आराधना (टीका)—ले० देव सेनाचार्य, टी० ,, , अनु० प० गजाधर लाल शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८८८, आ० प्रथम,

आराधनासार कथाकोष (प्रथम भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त, अनु० उदयलाल काशली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा स० हि० ।

आराधनासार कथाकोष (दूसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त, अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई भा० स० हिन्दी पृ० २८२; व० १९१५, आ० प्रथम।

आराधना सार कथाकोष (तीसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त अनु० उदय लाल काशली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी पृष्ठ४६३, व० १९१६, आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (सचित्र-प्रथम भाग)—ले० परमानन्द विशारद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १९४, व० १९२७, आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (द्वितीय, तृतीय भाग)—ले०परमानन्द विशारद प्र० जिनवाणी कार्यालय कलकत्ता, पृ० १४९, आ० प्रथम।

आराधनासार कथा कोष (हिन्दी पद्य)—ले बख्तावर रतनलाल, प्र० मोतीलाल जैन कुटेसर, मुजफ्फर नगर, भा० हि० पृ० ५४५, व० १९०९ आ० प्रथम।

आराधनास्वरूप—सग्र० धर्मचन्द हरजीवनदास ; भा० हि० , पृ० ४८ ; व० १९१६।

आर्यभ्रम निराकरण—ले० मक्खनलाल जैन , प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा , भा० हि० , पृ० ३८ , व० १९१३ , आ० प्रथम।

आर्यभ्रमोच्छेदन—ले० उमरावसिंह जैन , प्र० चन्द्रसैन जैन वैद्य इटावा , भा० हि० , पृ० १२ , व० १९१३ , आ० प्रथम।

✓आर्यमत लीला—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार , प्र० चन्द्रसैन वैद्य इटावा , भा० हि० , पृ० १८४ , व० १९११ , आ० प्रथम।

✓आर्य समाज की डबल गप्पाष्टक—ले० प० अजित कुमार शास्त्री , प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन संघ अम्बाला छावनी , भा० हि० , पृ० २७ , व० १९३९ , आ० द्वितीय।

✓आर्य समाज के एकसौ प्रश्नों का उत्तर—ले० प० अजित कुमार ;

प्र० चम्पावती पुस्तकमाला अम्बाला छावनी , भा० हि० , पृ० ८६ , व०-१९३१ , आ० प्रथम (दो अन्य पुस्तकें इसी प्रकार की प्रकाशित हुई हैं) ।

आर्य समाज भ्रमोन्मूलन—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २१, व १९३३ आ० प्रथम।

आर्य संशयोन्मूलन—लेखक पंडित देवकीनन्दन, प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १८ व १९१३, आ० प्रथम ।

आर्यों का तत्त्वज्ञान—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व १९१२, आ० चतुर्थ।

आर्यों की प्रलय—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन, तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी पृष्ठ ४०, व १९१३, आ० द्वितीय ।

✓आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य, अनु० पंडित दीपचन्द जी वर्णी, प्रकाशक सेठ सवाभाई लखमल शाह आरोण, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ १३२, व० १९३३ आ० प्रथम ।

✓आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य, अनु० पंडित हजारी लाल, संपा० पंडित फूलचन्द सि० शास्त्री, प्रकाशन दिगम्बर जैन पंचान नातेपुते, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ १३६, व १९३४ ।

आलोचना पाठ—प्रकाशन बा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी व० १८९८ ।

आलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचन्द भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४, व० १९०६ ।

✓आशाधर पूजा पाठ—लेखक पंडित आशाधर, संपादक नेमिशा उपाध्याय, भा स०, पृष्ठ १८३२, व १९२० ।

आश्रम भजनावली (प्रथम भाग)—सम्प्र० प्रकाशक सुपरिंटडेंट प्रचार भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२, आ० द्वितीय ।

आस्त्राव त्रिभगी—लेखक श्रुतमुनि, भाषा सस्कृत, व १९२०; (भाव सग्राहादि मे प्र०)।

आहारदान विधि—लेखक पडित वंशीधर, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६, व १९२८।

इन्द्रिय पराजय शतक—लेखक अज्ञात, भाषा० स ,

इष्ट छत्तीसी—लेखक कविवर बुधजान जी, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४, वर्ष १९०८ आ० तृतीय।

इष्टोपदेश—लेखक पूज्यपादाचार्य, भाषा० स , पृष्ठ ७२, व १९२०।

इष्टोपदेश टीका—लेखक आचार्य पूज्यपाद देवनन्दी, टीका ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ २५६-व १९२३, आ० प्रथम।

ईश्वरास्तित्व—लेखक पडित पुत्तूलाल, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १५, व १९१४, आ० प्रथम ।

उजले पोश वदमाश—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन सगठन सभा देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, व १९२८, आ० प्रथम।

उज्ज्वल जीवन के सात सोपान—लेखक मणिलाल नाथू भाई, अनु० मुनि तिलक विजय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, व १९२०।

उत्तर पुराण—लेखक गुणभद्राचार्य, अनु० टीका पडित लालाराम शास्त्री प्र० जैन ग्रन्थ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भाषा सस्कृत हिन्दी, पृष्ठ ७६०, व १९१८, आ० प्रथम ।

उद्गार (पद्य)—लेखक दलीपसिंह कागजी, प्रकाशक मोतीलाल जैन देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६, व १९४२, आ० प्रथम।

उन्नति शिक्षक—लेखक प्रकाशक छोटे लाल अजमेरा जयपुर, भाषा हिन्दी (१८ विविध विषयक निबधो का सग्रह) ।

उपदेश और पुकार पच्चीसी—लेखक भैया देवीदास, प्र० जैन ग्रथ

प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भाषा हिन्दी पृष्ठ १०, व० १९१० ।

उपदेश छाया आत्मसिद्धि—लेखक श्रीमद्राज चन्द्र, अनु० पंडित जगदीश चन्द्र शास्त्री एम ए, प्र० परम श्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ९४, व० १९३७, आ० प्रथम ।

उपदेश माला—लेखक त्यागी आनन्दी लाल, प्र० शाह केशव लाल त्रिभुवन दास वडोदा, भाषा हिन्दी पृष्ठ १३, व० १९१४, आ० प्रथम ।

उपदेश रत्नकोष—भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशन कार्यालय व्यावर ।

✓उपदेश रत्नमाला—लेखक पडिता चन्दा वाई, प्र० जन वालाविश्राम आरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३६, व० १९२५ आ० चतुर्थ ।

उपदेश रत्नमाला (पद्य)—लेखक अज्ञात, अनु० दौलत राम जैन, सपा० मूल चद वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय विजनौर, भाषा हिन्दी पृष्ठ १५, व० १९२९, आ० प्रथम ।

उपदेश रत्नावली—लेखक व प्र० पन्नालाल जैन मास्टर, लश्कर; भाषा हिन्दी ।

✓उपदेश शुद्धसार—लेखक तारण तरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतल प्रसाद प्र० सेठ मन्नूलाल आगासौद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२६, व० १९२६, आ० प्रथम; ।

✓ उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला—लेखक नेमिचद भडारी, टीका पडित पन्ना लाल बाकलीवाल, प्र० जैंचन्द सीताराम सैंतवाल वर्धा, भाषा हिन्दी पृष्ठ ८० व० १८८९, आ० प्रथम ।

उपमिति भव प्रपंच कथा (प्रथम भाग)—लेखक सिद्धर्षि, अनु० पडित नाथू राम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०४, व १९११ आ० प्रथम ।

उपमिति भव प्रपच कथा (द्वितीय भाग)—लेखक सिद्धर्षि, अनु पडित

नाथूराम प्रेमी प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकरक कार्यालय बम्बई भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६७, व० १६१२ आ० प्रथम ।

उपासना तत्त्व—लेखक पडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३२, व० १६२१ आ० प्रथम ।

उमास्वामी श्रावकाचार परीक्षा—लेखक पडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक वीर सेवा मदिर सरसावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६, व १६४४, आ० प्रथम ।

ऋग्वेद के बनाने वाले ऋषि—लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्रकाशक ज्योति प्रसाद जी देवबन्द भाषा हिन्दी पृष्ठ ११२, व० १६१४ आ० प्रथम ।

ऋषभ दास जी जैन के पवित्र जीवन की कुछ झलक—लेखक ज्योति प्रसाद प्रेमी, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०, वर्ष १८३६ ।

ऋषभ देव की उत्पत्ति असमव नहीं है—लेखक कामता प्रसाद जैन, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्बाला छावनी, भाषा हिन्दी पृष्ठ ७६, व० १६३०, आ० प्रथम ।

ऋषभ देव जी हत्या कांड का संक्षिप्त वृत्तान्त लेखक डा० गुलाबचंद पाटनी, प्रकाशक गुमानमल लुहाड्या अजमेर, भाषा हिन्दी पृष्ठ ३४, वर्ष १६२७ ।

ऋषभ देव में भयकर हत्याकंड—लेखक जवाहरलाल जैन, प्र० स्वयं बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २० ।

ऋषभ पचाशिका—लेखक धनपाल कवि, भाषा स०, पृष्ठ ८, व० १८८६ (काव्य माला सप्तम गुच्छक मे प्र०) ।

ऋषभ पुराण (पद्य)—ले० ब्र० मनसुख सागर, सपा० मा० बिहारी लाल चैतन्य, प्र० शान्ति चन्द्र जैन बुलन्दशहरी, भा०, हि०, पृ० ५६, व० १६२६; आ० प्रथम ।

ऋषि मडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि; टी० प० मनोहर लाल, प्र० जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ६०, व० ६१६, आ० द्वितीय ।

ऋषि मंडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि, टी० प० मनोहर लाल; प्र० नेमचंद देवचन्द शाह शोलापुर, भा० सं० हि०; पृ० ६४, व० १६२६, आ० तृतीय।

ऋषि मन्डल यन्त्र पूजा—ले० गुणनन्दि मुनीन्द्र; टी० प० मनोहरलाल; प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ४२; व० १६१५, आ० प्रथम।

✓एक रात—ले० जैनेन्द्र कुमार; भा० हि०, पृ० २०६, व० १६३५।

✓एकीभाव स्तोत्र – ले० आचार्य वादिराज, सं० टी० भट्टारक चंद्रकीर्ति, अनु० संपा० प० परमानंद शास्त्री, प्र० स्व० संपा०, भा० सं० हि०, पृ० ५२, व० १६४०; आ० प्रथम।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज, (काव्य माला सप्तम गुच्छक मे प्र०)।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज, (पंच स्तोत्र मे प्र०)।

✓ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह—संपा० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, भा० हि०, पृ० ६१३, व० १६३७।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० संपा० प्रेमलता देवी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८७, व० १६३६, आ० प्रथम।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०।

✓ऐलक पन्नालाल दिग० जैन सरस्वती भवन—वार्षिक रिपोर्ट, ग्रन्थ-सूची, प्रशस्ति संग्रह (प्रथम वर्ष)—प्र० ठाकुरसीदास जैन मंत्री बम्बई, भा० हि०, पृष्ठ १३६, व० १६२३।

वही	(द्वितीय वर्ष)	वही	पृ० ६८, व० १६२४।
वही	(तृतीय वर्ष)	वही	पृ० ११५, व० १६२५।
वही	(चतुर्थ वर्ष)	वही	पृ० १२०, व० १६२५।
वही	(पंचम वर्ष)	वही	पृ० १७७ व० १६३१।
वही	(षड वार्षिक)	वही	पृ० ४०३, व० १६३२।

ओसवाल समाज की वर्तमान स्थिति—ले० कालूराम, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४६, वर्ष १९२१।

औदार्य चिन्तामणि—लेखक श्रुतसागर, सपादक एस पी वी रगनाथ स्वामी, भाषा प्राकृत सस्कृत, पृष्ठ ४४; वर्ष १९१७।

कथा कहानी और संस्मरण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२८, वर्ष १९४१।

कथा मजरो (पहिला भाग)—लेखक पडित देवीदयाल चतुर्वेदी, प्रकाशक सरल जैन ग्रथमाला जवलपुर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३५, वर्ष १९४० आ प्रथम।

कथा मजरी (दूसरा भाग)—लेखक भुवेन्द्र 'विश्व' प्रकाशक जैन ग्रथमाला जवलपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३८; वर्ष १९४१; आ प्रथम।

कनक तारा—लेखक वाबू सूरजभान वकील; प्रकाशक स्वय; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, वर्ष १९२५, आ प्रथम।

कन्या विक्रम नाटक—प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी।

कमल श्री नाटक—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्रकाशक न्यामत जैन पुस्तकालय हिसार; भाषा हिन्दी, प्रष्ठ ३८६, वर्ष १९२७, आ० प्रथम।

कमला की सास—लेखक चन्द्रप्रभा देवी, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३, वर्ष १९२७।

करलक्खण—सम्पादक प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी एम ए प्राकृत सस्कृत भाषा, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ काशी, प्रष्ठ ५०, मूल्य १) व० १९४७।

क्या आर्य समाजी वेदानुयायी है—ले० प० राजेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्वाला छावनी, भा० हि० पृ० ४७, व० १९३५, आ० द्वितीय।

क्या ईश्वर जगत कर्त्ता है—ले० वा० दयाचन्द्र, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय वम्वई, भा० हि०, पृ० १२, व० १९१२, आ० प्रथम।

क्या जैन समाज जिन्दा है—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हिन्दी विद्या मंदिर न्यू देहली, भा० हि, पृ० ३२, व० १९३८, आ० प्रथम।

क्या वेद ईश्वर कृत है—ले० प० मगलसेन, प्र० स्वय अम्वाला छावनी; भा० हि०, पृ० २०; व० १९३१, आ० प्रथम।

करकुण्डु चरिउ—ले० मुनि कनकामर, सपा० प्रो० हीरालाल,प्र० गोपाल अम्बादास चवरे कारजा, भा० अप०; पृ० २८४, व० १९३४, आ० प्रथम।

करकुंड स्वामी की कथा—ले० अज्ञात, प्र०, जैन ग्रंथ प्रचार पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० २०, व० १९०९, आ० प्रथम।

कर्णाटक जैन कवि—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१४, आ० प्रथम।

✓कर्म ग्रंथ भाग चौथा-षड शीति—ले० देवेन्द्र सूरि; अनु० प० सुखलाल सघवी, प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मडल आगरा, भा० प्रा० हि०, पृ० २९२; व० १९२२, आ० प्रथम।

✓कर्त्तव्य कौमुदी—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हि०; पृ० ५५०, व० १९२४।

कर्म प्रगति—ले० शिवशर्म सूरि, भाषा, पृ० २८, व० १९२७,

कर्मप्रकृति टीका—ले० शिवशर्मसूरी, टी० मलयगिरि व यशोविजय, भा० प्रा० स०, पृ० ३९२, व० १९३४।

✓कर्मग्रंथ शतक—ले० देवेन्द्र सूरि, अनु० सपादन प० कैलाशचन्द्र शास्त्री; प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मडल आगरा, भा० प्रा० हि०, पृ० ३७०, व० १९४२, आ० प्रथम।

कर्मदहन विधान—ले० कविचन्द्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स०; पृ० १२।

कर्मदहन व्रत विधान आदि—ले० प आशाधर, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० स०; पृ० ६८; व० १९३८; आ० प्रथम।

✓ कर्मफल कैसे देते हैं—ले० स्वामी कर्मानन्द, प्र० जैन प्रगति ग्रंथमाला

सहारनपुर, भा० हि० पृ० ३८, आ० प्रथम ।

कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा मन्त्र स्तोत्र—प्र० मुन्शीलाल एड सस कागजी देहली; भा० स० हि०, पृ० १८; व० १६४२, आ० प्रथम ।

कल्पित कथा समीक्षा—ले० उग्रादित्याचार्य, अनु० सचा० वर्धमान पार्श्वना० शास्त्री, प्र० सेठ गोविन्द जी रावजी दोशी शोलापुर भा० स० हिन्दी, पृ० ८१२, व० १६४०, प्रथम ।

कल्याण कारक—ले० उग्रादित्याचार्य, अनु० सपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ गोविन्द जी राव जी दोशी शोलापुर, भा० स० हि, पृ० ८१२, व० १६४०, आ प्रथम ।

कल्याण भावना—ले० ताराचद पांडया, भा० हि०, पृ० १४, व० १६३४ ।

कल्याण मदिर स्तोत्र—ले० कुमुद चन्द्राचार्य, अनु पडित बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४६, वर्ष १६१५, आ प्र० ।

कल्याण मदिर स्तोत्र—ले० कुमुदचन्द्राचार्य, (काव्य माना मप्तम गुच्छक में प्र०) व० १८६६ ।

कल्याण मदिर स्तोत्र—लेखक कुमुदचन्द्राचार्य, व० १६०६, पच स्तोत्र में प्र० ।

कल्याण माला—ले० पडित आशाधर, भाषा स०, व १६२१, (सिद्धांत सारादि सग्रह में प्र०) ।

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजीत ब्रह्म, भाषा प्रा० स०; पृष्ठ १०, वर्ष १६२१, (सिद्धांत सारादि-सग्रह मे प्र०)

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजित ब्रह्म, अनु० लालाराम, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृष्ठ २१, (दश भक्तयादि सग्रह मे प्र०) ।

कलियुग की कुल देवी—ले० अज्ञात; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३६, वर्ष १६११।

कलियुग लीला भजनावली—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार; भा० हिन्दी, पृ० २०, व० १६१५, आ० तृतीय।

✔कविवर भूधरदास और जैनशतक—ले० शिखर चन्द जैन प्रा० र० प्र० सार्वजनिक वाचनालय इन्दौर, भा० हि०, व० १६३८।

क्वारों की दुर्दशा—लेखक प्र० बाबू सूरजभान वकील; भा० हिन्दी प्रष्ठ ३६; व० १६२७।

क्वारी वेवायें--लेखक अज्ञात, भा० हिन्दी।

कसाय पाहुड़ (जय धवल प्रथम खण्ड)—लेखक भगवत गुणधराचार्य, टी० स्वामी वीरसेन, जिनसेन, अनु० संपादक पंडित फूलचन्द; पंडित कैलासचंद्र, पंडित महेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ मथुरा, भाषा प्राकृत संस्कृत हिन्दी, प्रष्ठ ५६८, व० १६४४, आ० प्रथम।

कंस वहो [प्राकृत काव्य]—सम्पादन ए एन उपाध्याय, भा० प्रा०।

कातन्त्र पंच संधि (भाषाटीका)—लेखक पन्नालाल जैन; प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० सं०।

✔कातन्त्र व्याकरण—लेखक सर्व धर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, संपा० जीवाराम शास्त्री, प्र० हीराचंद नेमचंद, भा० सं०, प्र० २२२, व० १८६५, आ० प्रथम।

✔कातन्त्र रूपमाला व्याकरण—ले० सर्व धर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, प्र० पन्नालाल जैन, देशहितैषी आफिस बम्बई; भा० सं०।

काया पलट [रामकली]—लेखक ज्योति प्रसाद 'प्रेमी', प्र० प्रेम पुस्तकालय देवबंद, भा० हि०, प्र० २२३६, व० १६२२, आ० प्रथम।

कालु भक्तामर स्तोत्र—लेखक स्वामी कादमल, अनु० कस्तूरी रंग नाथपा भाषा सं० हिन्दी, प्रष्ठ ५०, वर्ष १६३०।

काव्य माला [२४ स स्कृत स्तोत्र पाठादि का स ग्रह] स पादक प डित काशीनाथ शर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भापा स स्कृत, प्र८ठ १६१; व० १८६६; आ द्वितीय, [इसके १३ या १४ गुच्छक प्रकाशित हुए हैं, जिनमें सातवा व तेरहवां महत्त्वपूर्ण है]।

काव्यानुशासनम्—ले० आचार्य हेमचद्र, सपा० प० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्वई, भा० स०, पृ० ३६१, व० १६०१, आ० प्रथम

काव्यानुशासनम्—ले० श्री मद्वाग्भट्ट, सपा० प० शिवदत्त व प० काशी नाथ शर्मा, प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० ६८, व० १८९४।

क्रिया कलाप—सपा० ० पन्नालाल सोनी, प्र० स्वय, भा० हि०, पृष्ठ ३४०, व० १६३६, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, प्र० जैन साहित्य प्रचारक कार्यालय बम्वई, भा० हिन्दी; पृ० १७८, व० १६१८, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० प० किशन सिंह जी, प्र० हीराचद नेम चद, शोलपुर, भा० हि०, पृ० १३६, व० १८९२।

क्रिया म जरी—सग्र० पडित लालाराम, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, व० १६१२, आ० प्रथम।

क्रिया रत्न समुच्चय—ले० गुणरत्न सूरि, भा० स०, पृ० ३३५, व० १६०७।

कीर्ति कोमुदी—ले० कवि सोमेश्वर, भा० सस्कृत पृ० ७२, व० १८९७; (प्राचीन लेखमाला द्वितीय भाग मे प्र०)।

कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रत्न—लेखक श्री गोपालदास जीवा भाई पटेल, अनुवादक शोभाचद्र भारिल्ल–भाषा हिन्दी प्रष्ठ १४२ प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४८ मूल्य २)।

कुण्डलपुर महावीर पूजन—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुण्डलपुर महावीर परिचय—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुन्ती नाटक—ले० प० न्यायत सिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हिन्दी, पृ०

२०, व, १९१३, आ० तृतीय,

कुन्थसागर गुण गायन—सग्र ब्र विद्याधर वर्णी, प्र० आचार्य कुथ-सागर ग्रन्थमाला शोलापुर भा० हिन्दी पृ० ७६, व० १९४२, आ० प्रथम।

✓कुन्दकुन्द भजनावली—ले० ब्र० नन्दलाल प्र० दिग० जैन ग्रथमाला भिड, भा० हि०, प्र० ३४, व० १९४२, आ० प्रथम।

✓कुन्दकुन्दाचार्य चरित्र—लेखक तात्या नेमिनाथ पागल, अनु० मूलचन्द किशन दास कापडिया, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ ५३, व० १९१३।

कुन्दकुन्द वचनामृत—लेखक ब्र० नन्दलाल, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११, व० १९४५।

कुनयगज केसरी—सपा० प्रकाशक दिगवर जैन आम्नाय सरक्षिणी सभा खुर्जा, भाषा हिन्दी पृष्ठ ४३, व० १९११।

कुम्भापुत्त चरियम्—सपा० ए टी उपाध्ये, भाषा प्राकृत, पृष्ठ १२६।

कुवलय माला कथा—लेखक रत्नप्रभ सूरि भाषा सस्कृत, पृष्ठ २५९, व० १९१५।

कुँवर दिग्विजय सिंह—प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १८, वर्ष १९१०।

कुमगं धिप वृत्त—लेखक पन्नालाल जैन, प्रकाशक देश हितैषी आफिस बम्बई, भाषा हिन्दी।

केशरिया जी का हत्याकांड—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्र० मूलचद किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १३६, व० १९२७।

कृपण पच्चीसी—ले० कवि विनोदीलाल प्र० जैन ग्रथ प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भा० हि०, पृष्ठ ८, व० १९१०।

✓कन्नड प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थ सूची—सम्पादक प० के भुजवली शास्त्री भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य १३)।

खंडगिरि उदय गिरि पूजन—ले० मुनीम मुन्नालाल लुन्दर लग्ल, प्र० चतुरावाई कटक, भा० हि०, पृ० ३२।

खंडेलवाल जैन इतिहास—ले० राजमल बड़जात्या, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

खयाल जैन धर्म प्रकाश—ले० मास्टर घासीराम, प्र० स्वय लखनऊ भा० हि०, पृ० २४, व० १८८८।

खुर्जा शास्त्रार्थ का पूर्ण रग—प्र० जन सभा खुर्जा, भा० हि० पृ० ५० व० १९०६, आ० प्रथम।

गउवाणो—ले० ऋषभ चरण जैन, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृष्ठ १२६, व० १९२४, आ० प्रथम।

गजपुर क्षेत्र पूजा—ले० प० मक्खन लाल प्रचारक, प्र० त्रिलोक चन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ८, व० १९३७।

गद्य चिन्तामणि—ले० वादीभसिंह सूरि, सपा० कुप्पुस्वामी शास्त्री एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री प्र० जी० ए० नेटसमन कपनी मद्रास, भा० स०, पृ० १६६, व० १९०२, आ० प्रथम।

ग्रंथत्रयी (तत्त्वानुशासन, वैराग्य मणिमाला, इष्टोपदेश)—ले० आचार्य रामसेन, श्रीचन्द्र, व पूज्यपाद, अनु० प० लालाराम शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १९४, व० १९२१ आ० प्रथम।

ग्रंथ नामावली—प्र० दीपचन्द अग्रवाल मन्त्री ऐ० पन्ना लाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन झालरा पाटन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६०, व० १९३३।

ग्रंथ परीक्षा (प्रथम भाग)—लेखक पडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११९, व० १९१७, आ० प्रथम।

ग्रंथ परीक्षा (दूसरा भाग)—लेखक पडित जुगल किशोर मुख्तार,

प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११९, व० १९१७, आ० प्रथम ।

✓ग्रंथ परीक्षा (तृतीय भाग)—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६८, व० १९२८, आ० प्रथम ।

✓ग्रन्थ परीक्षा (चतुर्थ भाग)—ले० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ १५९, व० १९३४, आ० प्रथम,

✓गागर मे सागर—ले० दरबारीलाल सत्यभक्त, भा० हि०, पृ० ७२ ।

✓ग्रंथों की अक्षरानुसार सूची—संपा० सुपार्श्वदास गुप्त, प्र० जैन सिद्धांत भवन आरा, भा० हि०, पृ० १२५, व० १९१९ ।

गरीब—लेखक भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐतमाद पुर, भा० हिन्दी पृ० ६८ ।

गायन गोष्ठी—ले० चन्द्र सेन जैन वैद्य, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ ५६, व० १९३६

गिरनार महात्म्य—ले० कवि हजारीमल, संपा० वंशीधर जैन, प्र० जैन ग्रंथ कार्यालय ललित पुर, भा० हि०, पृ० १०७, व० १९१६, आ० प्रथम ।

गिरनारादि जैन मूड बद्री यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० स्वयं फुलेरी, राजपूताना, भा० हि०, पृ० २६४, व० १९२३, आ० प्रथम ।

✓गुरु स्तुति—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ७, व० १९१० ।

✓गुर्वष्टक—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ४, व० १९१० ।

गृह देवी—ले० बा० सूरज भान वकील, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ६८, आ० द्वितीय ।

गृहस्थ धर्म—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० मा० चिम्मन लाल देहली, भा० हि०, पृष्ठ २२, व० १९२६, आ० प्रथम ।

गृहस्थ धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० मूलचद किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३०६, व० १६४३, आ० तृतीय ।

गृहस्थ शिक्षा—ले० ज्योति प्रसाद प्रेमी, प्र० प्रेम भवन देवबद, भा० हि० पृ० ३३, व० १६३५, आ० प्रथम ।

गृहस्थ शिक्षा सार—लेखक व प्रकाशक ला० छोटे लाल अजमेरा जयपुर, भा० हि० ।

गृहिणी कर्त्तव्य—लेखक पडिता लज्जावती जैन, प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०४, वर्ष १६४१, आ० प्रथम ।

गोमट्ट सार (कर्म काड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, टी० पडित मनोहरलाल शास्त्री, प्रकाशक परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भाषा प्रा० स० हिन्दी, पृष्ठ २८८, वर्ष १६१२, आ० प्रथम ।

गोमट्ट सार (कर्म काड)—लेखक आचार्य नेमि चद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, स० टीका नेमि चद्र मुनि, हिन्दी टीका पडित टोडरमल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत स० हिन्दी, पृष्ठ २१००, आ० प्रथम ।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती स० टीका अभय चद्र, हिन्दी टीका पंडित टोडरमल्ल जी, प्रकाशक, भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत स० हिन्दी, पृष्ठ १३२६, आ० प्रथम ।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचद्र सिद्धात चक्रवर्ती, टीका पडित खूबचद्र शास्त्री, प्रकाशक परम श्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ २७३, व० १६१६, आ० प्रथम ।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धात क्रवर्ती, टीका प मनोहर लाल, प्रकाशक श्रेष्ठि नाथारग जी गाधी आकलूज, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ १५१, वर्ष १६११ आ० प्रथम ।

गोमट्टसार पूजा—लेखक पंडित टोडरमल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १३ ।

✓गोमट्टसार पीठिका—ले० टी० प० टोडरमल जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ७१ ।

गोमट्टेश्वर पूजन भजन व आरती—ले० ला० पूरनमल, प्र० स्वयं [illegible] आगरा, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३९, आ० प्रथम ।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० प लालाराम, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १९२७, आ० प्रथम ।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० नन्दन लाल जैन, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० १०४, व० १९३९ आ० प्रथम ।

गौतम पृच्छा—ले० नन्द लाल, सपा० छोटे लाल, भा० हि० ।

गौरव गाथा—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली भा० हि०, पृ० २०, व० १९४०, आ० प्रथम ।

घरवाली—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर, भाषा हि० व० १९४२ ।

घूंघट—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर, भा० हि०, पृ० ३१, व० १९३८ ।

चतु. विंशति संधानम्—ले० कवि जगन्नाथ, अनु० टी० पं० लाला राम, प्र० रावजी सखाराम दोशी, सोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० १५२, व० १९२९, आ० प्रथम ।

चतु विंशति संधानम्- ले० कवि जगन्नाथ, अनु० टी० पं० लालाराम प्र० रावजी सखाराम जी शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० १५२, व० १९२८ आ० प्रथम ।

✓चतुर्दशी महात्म्य—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० नेमिचंद जैनवाल अजमेर भा० सं, पृ० ७२ व० १९३७, आ० प्रथम ।

चतुर्विंशति का स्तुति—लें० मुनि सुधर्म सागर, अनु० लालाराम शास्त्री प्र० आचार्य शान्ति सागर ग्रंथ माला सागवाडा, भा० स० हि०, पृ० १३६, व० १९३६।

चतुर्विंशति जिन पूजा—ले० कवि रामचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २१२, व० १९२४, आ० प्रथम।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)—ले० कविवर वृन्दावन जी, प्र० चन्दाबाई दिग० जैन ग्रन्थमाला देहली, भा० हि०; पृ० १३६, व० १९३८।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)—ले० बख्तावर रतन लाल, प्र० चदा बाई दिग० जैन ग्रथमाला देहली, भा० हि०, पृ० १४८।

चतुर्विंशति जिन पूजा विधान—ले० रामचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सि० प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि० पृ० २१२, व० १९२३, आ० प्रथम।

चतुर्विंशति जिन स्तुति—ले० शोभन मुनि, भा० स०, (काव्य माला सप्तम गुच्छक मे प्र०)।

चन्द्र प्रभु चरितम्—ले० वीरनन्द्याचार्य, सपा० प० काशीनाथ शर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० स०, पृ० १५०; व० १८९२, आ० प्रथम।

चन्द्र प्रभु चरित्र—ले० वीरनन्द्याचार्य, अनु० प० रूप नरायण पाडेय, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९१६, आ प्रथम।

चन्द्र प्रभु पूजा—ले० अज्ञात भा० हि०।

चन्द्र सागर का बहिष्कार क्यों—प्र० दिग० जैन मुनि धर्म रक्षक कमेटी इन्दौर; भा० हि०, पृ० ४१ व० १९४०।

✓चर्चा चन्द्रोदय (प्रथम भाग)—ले० प० जीयालाल, प्र० स्वय फरुखनगर भा० हि०,।

✓चर्चा चन्द्रोदय (द्वितीय भाग)—ले० प० जीयालाल, प्र० स्वय फरुख नगर भा० हि०; पृ० १०६, व० १८९२, आ प्रथम।

✓चर्चा चन्द्रोदय (तृतीय भाग)—ले० प० जीयालाल, प्र० स्वय फरुख नगर भा० हि०, पृ० ६४, व० १८६४।

चर्चा मजरी—ले० वैद्य शीतल प्रसाद, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १८६६, आ० प्रथम।

चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, प्र० नाना राम चन्द्र नाग फल्टण, भा० हि०, पृ० ७२, व० १६००, आ० प्रथम।

✓चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, टी० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १६१३, आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० प० भूधर दास, प्र० जैन ग्रथ प्रभाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० पृ० १६०, व० १६२०, आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० प० भूधर दास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १०४, व० १६२५, आ० प्रथम,—पृ० १२३, व० १६२६, आ० द्वितीय।

✓चर्चा सागर—ले० पाडे चम्पा लाल, प्र० हसराज महादुराम लुहाडया नादगांव, भा० हि०, पृ० ५३८, व० १६३०, आ० प्रथम।

✓चर्चा सागर उपनाम गंदा सागर—ले० अज्ञात, भा० हि०।

✓चर्चा सागर के विषय पर सक्षिप्त वक्तव्य—ले० प० झम्मन लाल तर्क-तीर्थ, भा० हि० पृ० १३४, व० १६३३।

✓चर्चा सागर के शास्त्रीय प्रमाणों पर विचार—ले० प० गजाधर लाल शास्त्री, प्रकाशक दिग० जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि० पृ० २८४, व० १६३२, आ० प्रथम।

चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण—ले० प मक्खन लाल न्या०ल० प्र० दिग० जैन हितकारणी सभा बम्बई, भा० हि०, पृ० १७२, व० १६३१, आ० प्रथम।

✓चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण का मुँह तोड़ उत्तर—ले० रतन

लाल झाझरी, प्र० दिग जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९३२।

चर्चा सागर समीक्षा—ले० प० परमेष्ठिदास प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली; भा० हि०, पृ० २६४; व० १९३२, आ० प्रथम।

चाँदनी (काव्य)—ले० भगवत स्वरूप, प्र० स्वय ऐतमादपुर; भा० हि०, पृ० ६५, व० १९४३।

चारदान कथा (छन्द बद्ध)—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद भा० हि० पृ० २६; व० १९०९, आ० प्रथम।

चारित्र प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द आचार्य, (षट् प्राभृतादि सग्रह मे प्र०)।

चारित्र पाहुड—ले० कुन्दकुन्द आचार्य, (अष्ठ पाहुड व षट् पाहुड मे प्र०)।

चारित्र सार—ले० चामुडराय, सपा० प० इन्द्र लाल व उदय लाल काशलीवाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० १०३, व० १९१७, आ० प्रथम।

चारित्र सार—ले० चामुडराय, अनु० टी० लालाराम शास्त्री, सपा० गजाधर लाल व श्री लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भा० हि०, पृ० २१८, आ० प्रथम।

चारुदत्त चरित्र (पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० १११, व० १९१२, आ० प्रथम।

चारित्र भक्ति—(दशभक्त्यादि सग्रह मे प्र०)।

चारुदत्त चरित्र—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत भा० हि०, पृ० १४८, व० १९३५, आ० प्रथम।

चारुदत्त चरित्र—ले० वैद्य पारसदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९३५, आ० प्रथम।

चारुदत्त—ले० अज्ञात, भा० स०।

चिकागो प्रश्नोत्तर—ले० स्वामी आत्माराम, भा० हि०, पृ० ११०, व० १६०४।

चित्रसेन पद्मावती चरित्र—ले० पूर्णमल, सपा० प० के० भुजवलि शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८२, व० १६३६, आ० प्रथम।

चित्रबन्ध स्तोत्र—ले० गुणभद्राचार्य, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

चिदानन्द शिव सुन्दरी नाटक—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ६१, व० १६०६, आ० प्रथम।

चेतन कर्म चरित्र (पद्य)—ले० कवि भगवती दास, प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि० पृ० ३६, आ० प्रथम।

चेलना चरित्र (पद्य)—ले० प० राजकुमार, प्र० दिग० जैन सघ अम्बाला छावनी, भा० हि०, पृ० ३८, व० १६३८, आ० प्रथम।

चैत्य भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० स० हि०, (दश भक्तयादि सग्रह मे प्र०)।

चौबीस ठाणा चर्चा—ले० अज्ञात, भा० प्रा० हि०।

चौबीस तीर्थंकरों की ज्ञातव्य बातों का नक्शा—ले०अज्ञात, भा० हि०।

चौबीस दडक-(प्रकरण भाषा में प्र०)।

चौबीसी अखाड़ा—ले० यति नयनानद, प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० १५, व० १६०८।

चौबीस पाठ—ले० कविवर वृन्दावन, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

चौबीसी पूजा (सग्रह) व संस्कृत चौबीसी पाठ—ले० कवि रामचन्द्र, वृन्दावन, वख्तावरसिंह, प्र० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि० स०, पृ० ५८४, व० १६१०।

चौबीसी पुराण—ले० प० पन्नालाल साहित्याचार्य, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६३, व० १६३६, आ० प्रथम।

चौसठ ऋद्धि पूजा—ले० अज्ञात, भा० हि०।

चौबीस स्थान चर्चा—ले० प्र० रामचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १५०; व० १६०५।

छन्द शतक—ले० वृन्दावन दास, सपा० जमनालाल जैन, प्र० सस्करण सेठी हैदराबाद, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६४७, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ५३, व० १८६६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० बा० सूरजभान वकील, स्वय देवबन्द, भा० हि०, पृ० ४५, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० ब्र० शीतल, प्रसाद प्र० माणिकचद हीराचन्द बम्बई, भा० हि०, पृ० ५८, व० १६१२, आ० तृतीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, सपा० प० धुद्धिलाल श्रावक, प्र० मूलचन्द किसनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६२७, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, सपा० प्र० श्रीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ७६, व० १६२६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० प० मुन्नालाल राधेलीय, प्र० स्वयं सागर, भा० हि०, पृ० २००, व० १६२६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, सपा० प० भुवनेन्द्र 'विश्व', प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८४, व० १६३८, आ० द्वितीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० प० मोहनलाल काव्यतीर्थ, प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य, भा० हि० पृ० १२८, व० १६४४, आ० पंचम।

छहढाला—ले० कविवर द्यानतराय जी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२, व १६०६ आ० प्रथम।

छहढाला (बावनाक्षरी)—ले० द्यानत राय जी, टी० मुशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वय टी० कटनी, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४ व० १८६८, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर वुधजन जी, टी० मुन्शी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वव टी० कटनी मुडावरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १८६८, आ० प्रथम।

छात्रों के लिए उपदेश—ले० मुन्शीलाल एम ए., प्र० स्वय भा० हि०।

छेदपिंड—ले० इन्द्रनन्दि, सपा० पन्नालाल सोनी, भा० स०; (प्रायश्चित्त सग्रह मे प्र०)।

छेदशास्त्र - ले० इन्द्रनन्दि, सपा० पन्नालाल सोनी, भा० स०, (प्रायश्चित सग्रह मे प्र०)।

जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला—ले० मुनि यशपति, भा० प्र०, पृ० १३५, व० १९३६।

जकडी सग्रह--(१५ जकडिया) प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

✓जगदीश विलास—ले० कवि जगदीश राय; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भाषा हिन्दी पृष्ठ ५२, व० १९२५, आ० द्वितीय।

✓जगत्कर्तृत्व मीमांसा—ले० वालचन्द्र यति, भा० स० हिन्दी पृष्ठ १०१, व० १९०८।

जगदुत्पत्ति विचार—ले० वा० सूरजभान वकील, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, व० १९१३ आ० प्रथम।

जननी और शिशु—ले० वा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११७, व० १९२३ आ० प्रथम।

जम्बू गुण रत्नमाला—ले० जेठमल, भा० हि० पृष्ठ ८४, व० १९१६।

जम्बू द्वीप का नक्शा—प्र० वा० सूरजभान वकील देववद, व० १८६८।

✓जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति (२ भाग)-सटीक—भा० प्रा० स० पृ० ५४५, व० १९१९।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० प० राजमल्ल, सपा० प० जगदीशचन्द्र एम ए, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला वम्बई, भापा स० पृष्ठ २६००, व

जम्बू द्वीप षटमास—ले० उमास्वामि, भा० स० पृ० २७, स० १६०२ १६३६, आ० प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० प० दीपचन्द वर्णी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ५८, व० १६२७, आ० तृतीय ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० पडि रायमल्ल, अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० २१६, व० १६३६ आ० प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० जिनदास, अनु० मुन्शी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वय अनु० कटनी मुन्डाबरा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६०२, आ० प्रथम, ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम मथुरा, भा० हि०, पृ० ३६ व० १६३६ ।

जय धवला टीका—प्र० अज्ञात, भा० प्रा० स०, व० १६३४ ।

जय विजय—ले० अज्ञात, सपा० राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मडल अजमेर, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३४, आ० प्रथम ।

जसहर चरिउ—ले० महाकवि पुष्पदन्त, सपा० पी० एल० वैद्य, प्र० जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा० अप०, पृ० २१७, व० १६३१ आ० प्रथम ।

जाति वर्ण और विवाह—ले० मोतीचन्द गौतमचन्द कोठारी, प्र० रावजी फूलचन्द कोठारी फलटण, भा० हि०, पृ० ८६, व० १६३५ आ० प्रथल ।

जातीय संगठन—ले० कुँवरलाल न्या० तो प्र० ताराचन्द रपरिया आगरा, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जिनचतुर्विंशतिका—ले० भूपाल कवि, भा, स, पृ, ५, व, १८६६, काव्यमाला सप्तम् गुच्छक मे प्र०, (तथा पच स्तोत्र में प्र०) ।

जिनचतुर्विंशति काव्य—ले० प० जियालाल, भा०, हि०, प्र० २६, व० १६१४ ।

हि०' पृ० ६०, व० १९२२, आ० प्रथम।

जिनेन्द्र भजन माला—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९२४, आ० द्वितीय।

✓जिनेन्द्र मत दर्पण (प्रथम भाग)—ले० बा० बनारसीदास, सपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि० पृ० ३२; व० १९२६, आ० पचम।

जिनेश्वर पद सग्रह—ले० जिनेश्वरदास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६४।

✓जीव और कर्म विचार—ले० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० दिगम्बर जैन महासभा; भा०, हि०, पृ० २६७, व० १९२१, आ० प्रथम।

जीव कर्म सवाद—ले० आत्माराम, प्र० मेलाराम, भा० हि०, पृ० ६७, व० १९४३।

जीवन चरित्र दा० वी० सेठ हुकमचन्द—प्र० मैनेजर जैन मित्र, भा० हि०, पृ० ७, व० १९१४।

✓जीवन निर्वाह—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बबई, भा० हि० पृ० २०३, व० १९२०, आ० प्रथम।

जीवधर चम्पू—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, सपा० टी० एस० कप्पु स्वामी शास्त्री, प्र० सपादक स्वय तजोर, भा० स०, पृ० १५२, व० १९०५, आ० प्रथम।

जीवधर चरित्र—ले० गुणभद्राचार्य, सपा० टी० एस० कप्पूस्वामी, प्र० सपा० स्वय तजोर, भा० स०, पृ० ६१, व० १९०७।

जीवधर चरित्र—ले० अज्ञात सपा० विद्या कुमार सेठी व राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मडल अजमेर, भा० स०, पृ० १६।

जीवधर चरित्र (पद्य)—ले० प० नथमल विलाला, प्र० जैन मदिर रोहतक, भा० हि० पृ० ३१०; व० १९४२ आ० प्रथम।

जीवंधर नाटक—ले० प० कुञ्ज विहारी लाल; प्र० स्वय, हजारी वाग; भा० हि०, पृ० १२१, व० १९१७, आ० प्रथम।

जीव रक्षा दर्पण—सग्र० पारसदास खजाची, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

✓जीव स्थानम् (प्रथम पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदत भूतवलि, टी० वीर सेन स्वामी, सपा० प० वशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर भा० प्रा० स०, पृ० ३८०, व० १९३९, आ० प्रथम।

✓जीव स्थानम् (द्वितीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदत भूतवलि, टी० वीर सेन स्वामी, सपा० प० वशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० स० पृ० ३४४, व० १९४०, आ० प्रथम।

✓जीव स्थानम् (तृतीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदत भूतवलि, टी० वीर-सेन स्वामी, सपा० प० वशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० स०, पृ० ३७६, व० १९४१, आ० प्रथम।

जीवाजीव विचार (प्रथम भाग)—ले० मास्टर पचूलाल काला, प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली, भा० हि०।

जीवाजीव विचार (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर पचूलाल काला, प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली, भा० हि० पृ० ३२, व० १९३२ आ० प्रथम।

✓जेल मे मेरा जैनाभ्यास—ले० सेठ अचल सिंह, प्रकाशक स्वय आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४४० ,वर्ष १९३४, आ० प्रथम।

जैनों शास्त्रार्थ—प्रकाशक अज्ञात, भाषा हिन्दी, वर्ष १९१७।

जैन आरती सग्रह—सग्रहकर्त्ता श्रीलाल जैन, प्रकाशक नन्नूमल जैन देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १९४४, आ० प्रथम।

जैन इतिहास—लेखक अज्ञात, भाषा हिन्दी।

✓जैन इतिहास की पूर्व पीठिका और हमारा अभ्युत्थान—लेखक प्रो० हीरालाल जैन, प्र० हिन्दीग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ १८३, व० १९३९, आ० प्रथम।

जैन इतिहास सोसाइटी—ले० बा० बनारसीदास, अनु० बाबू दया-सहाय, प्र० सेठ नाथारग जी गाधी आकलूज, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९०४, आ० प्रथम।

जैन और बौद्ध का भेद—ले० डा० हर्मन जैकोबी, अनु० संपा० राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द, भा० हि०, पृ० १०, व० १८९७, आ० द्वितीय।

जैन ऋषि (पद्य)—ले० श्री प्रेमी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २०, आ० प्रथम।

जैन कथा कोष—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०।

जैन कथा द्वाविंशति—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, भाषा सस्कृत, पृष्ठ ३६, व० १८९६।

जैन कथा सग्रह व स्त्री रक्षा—प्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भाषा हि०, पृ० २२०, व० १९०९, आ० प्रथम।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० पडित अजित कुमार शास्त्री, प्रकाशक दिग० जैन सभा अमरोहा, भाषा हिन्दी, पृ० ६०, व० १९३१, आ० प्रथम।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० ले० स्वय, भा० हि०, पृ० २३।

जैन कवियों का इतिहास—ले० मूलचन्द वत्सल, प्र० जैन साहित्य सम्मे-लन दमोह, भाषा हिन्दी पृष्ठ १८७, व० १९३६, आ० प्रथम।

जैन क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० २२४, आ० प्रथम।

जैन क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, सपा० बाबू लाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९२८; आ० प्रथम।

जैन कीर्तन—ले० चन्द्रसेन वैद्य, प्र० स्वय, भा० हि० पृ० ८, व० १९३५।

जैन कुतूहल—(पद्य)—ले० भारतेन्दु हरिश्चद, भा० हि०, पृ० ५।

जैन ग्रंथ प्रशस्ति संग्रह—सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार व० प० परमानद शास्त्री; प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० स० प्रा० अप० हि० ।

जैन ग्रन्थ सग्रह—सग्र० नन्द किशोर सिंघई, भा० स० हि०, पृ० ३०८, व० १९२६ ।

जैन गाथाजली—ले० महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० सत कार्यालय प्रयाग, भा० हि०, पृ० ७४ ।

जैन गायन सुधा—सग्र० सूरज भान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९३७; आ० प्रथम ।

जैन जगती—ले० कुंवर दौलतसिंह लोढा 'अरविन्द', प्र० शान्तिगृह धामनिया (मेवाड), भा० हि० पृ० २५२, व० १९४२ ।

जैन ज्योतिष—सपादक शकर पढरीनाथ रणदेव, भा० स० हि०, पृ० १५१, व० १९३१ ।

जैन जागरफी (प्रथम भाग) —ले प० गोपालदास वरैया, प्र० जैन-सिद्धात प्रचारिणी सभा मुरैना, भाषा हिन्दी, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जैन जाति का ह्रास और उन्नति के उपाय—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० सयुक्त प्रान्तीय दिग० जैन सभा, भाषा हि०, पृ० ५६, व० १९२४, आ० प्रथम ।

जैन जाति रक्षा—ले० मुरारीलाल जैन, प्र० दिग० जैन प्रान्तिक सभा जालन्धर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२६, आ० प्रथम ।

जैन जाति सुदशा प्रवर्तक—ले० सूरजभान वकील, प्र० दौलतराम जैन देहली, भाषा हिन्दी, पृ० ४०, आ० प्रथम ।

जैन जातियों मे पारस्परिक विवाह—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६ ।

जैन जीवन सगीत—प्र० जैन साहित्य मन्दिर, सागर भा० हि०, पृ० ३२ ।

जैन झडा गायन सग्रह—प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ ३६, व० १९४१ ।

जैन तीर्थमाला—ले० प्रभुदयाल ज्ञानचन्द्र, भा० हि० पृ० ३२१, व० १९०१ ।

जैन तीर्थ और उनकी यात्रा—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन परिषद, भा० हि०, पृ० १४२, व० १९४३, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा—ले० अज्ञात भा० हि०, आ० द्वितीय।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डा० मित्रसेन जैन, प्र० कुलभूषण कुमार सतौली, भा० हि०, पृ० ८२, व० १९३९, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र० स्वयं-कैरो, भा० हि०, पृ० ६४, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा विवरण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र०, स्वय भा० हि०।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेवीलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हि०, पृ० २१६, व० १९३०, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र, गेवीलाल सशो० गुलजारीलाल चौधरी, प्र० दि० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २१४, व० १९३१, आ० द्वितीय।

जैन तीर्थ यात्रा दीपक—ले० प० फतहचन्द, प्र० स्वय दिल्ली, भा० हि०, पृ० २००, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन दर्शन और जैन धर्म—ले० हर्बर्टवारेन, अनु० मि० लालन, भा० हि० पृ० १६ व० १९२०।

जैन द्वितीय पुस्तक—ले० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वय कटनी, भा० हि० पृ० १६० आ० प्रथम।

जैनधर्म—ले० हर्बर्ट वारेन प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८, आ० प्रथम (अंग्रेजी निबध का अनुवाद)

जैन धर्म और अहिंसा—ले० ए० पी० शुक्ल, प्र० साहित्य प्रकाशन मडल हावडा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९४४।

जैन धर्म और अहिंसा—ले० माणिकचन्द्र, प्र० जैन युवक सघ हाथरस, भा० हि०, पृ० १६।

जैनधर्म—ले० नाथूराम डोगरीय, प्र० जैन शिक्षा मन्दिर विजनौर, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६४१, आ० प्रथम।

जैन धर्म अव्यवहार्य नहीं है—ले० प० दीपचन्द वर्णी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ४४, व० १६३६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और डा० गौड़ का हिन्दू कोड—ले० चम्पतराय वैरिस्टर, भा० हि०, पृ० १२ व० १६२१।

जैन धर्म और मूर्ति पूजा—ले० विरधीलाल सेठी, प्र० ज्ञानचन्द जैन कोटा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और विधवा विवाह (प्रथम भाग)—ले० सव्यसाची, प्र० जैन वालविधवा सहायक सभा, देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और विधवा विवाह (द्वितीय भाग)—ले० सव्यसाची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली भा० हि०, पृ० २३४, व० १६३१, आ० प्रथम।

जैन धर्म का परिचय—ले० सेठ हीराचन्द नेमचद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बडनगर, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६१५, आ० प्रथम।

जैन धर्म का परिचय—ले० सेठ हीराचन्द नेमचन्द, प्र० सेठ नाथारग गाधी, आकलूज, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६०३, आ० प्रथम।

जैन धर्म का मर्म—ले० कुँवरसैन शर्मा, प्र० नन्नूमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १४, व १६१६, आ० प्रथम।

जैन धर्म का महत्त्व—ले० बा० ऋषभदास वकील, अनु० दयाचद गोयलीय, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२३, आ० द्वितीय।

जैन धर्म का महत्त्व—सपा० बा० सूरजमल, प्र० जैनमित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १६६, व० १६११ आ० प्रथम।

जैन धर्म का स्वरूप—ले० स्वामी आत्माराम, भा० हि०, पृ० ४६, व० १६०५।

✓जैन धर्म का हृदय—ले० जुगमन्दर लाल जैनी बैरिस्टर, अनु० मुन्शीलाल एम ए, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१६।

✓ जैन धर्म की उदारता—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १०६, व० १६३६, आ० द्वितीय।

✓ जैन धर्म की उदारता—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६३४, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म की प्राचीनता—सपा० दीनदयाल जैन, प्र० जैसवाल जैन कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ४३, व० १६२६, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म की प्राचीनता—प्र० जैन सुधारक सघ देहली, भा० हि० पृ०१६ व १६४२, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म की विशेषताएं—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व० १६३८, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मितियाँ—सग्र० मा० बिहारीलाल, प्र० जैन धर्म सरक्षिणी सभा अमरोहा, भा० हि० पृ० १८, व० १६१५, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म क्या है—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि० पृ० १८।

✓जैन धर्म क्या है—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २४, व० १६२०, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म पर अन्य धर्मों का प्रभाव—ले० नाथूराम प्रेमी, प्र० आत्म-जागृति कार्यालय जैन गुरुकुल व्यावर, भा० हि०, पृ० २६, व० १६३२।

✓जैन धर्म पर एक महाशय की कृपा—ले० प० हसराज शर्मा भा० हि०, पृ० ४१, व० १६१६।

जैन धर्म पर लोकमान्य तिलक का व्याख्यान—प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ६ ।

जैन धर्म पर सेठी जी के विचार और उनकी समालोचना—ले० प० मक्खनलाल न्या० ल०, प्र० स्याद्वाद प्रचारणी सभा कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १११, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रकाश—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि० पृ० २५०, व० १६२६ आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रकाश (निबन्ध सग्रह)—प्र० धर्मचन्द्र धम्मावत बनारस, भा० हि०, पृ० ५८, व० १६४५ ।

जैन धर्म प्रवेशिका—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन मित्रमण्डल देहली, भा० हि०, पृ० ८७ व १६६६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झांसी, भा० हि० पृ० ३६, व १६४४, आ० तृतीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झांसी, भा० हि० पृ० ४६, व १६४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (तृतीय भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य लुहरी जि० झामी, भा० हि०, पृ० ७२, व० १६४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (चतुर्थ भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झांसी, भा० हि०, पृ० ११६ ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम पुस्तक)—ले० प० लालन, अनु० दरयावसिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द पालीताणा, भा० हि०, पृ० ७१, व० १६१३, आ० प्रथम ।

✓जैन धर्म बालबोध (प्रथम भाग)—ले० प० लालन, अनु० दरयावसिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा, भा० हि०; पृ० ५६, व० १६१३, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म बाल बोध (द्वितीय भाग)—ले० प० लालन, अनु० दरयाव सिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६१२, आ० प्रथम।

जैनधर्म परिचय—ले० प० अजितकुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक-माला अम्बाला, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, व० १६३०, आ० प्रथम।

जैनधर्म भजनमाला—सग्र० ऐ० धर्मसागर, प्र० पन्नालाल मोदी झाबुआ, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६३, व १६४१, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म मीमांसा—प्रथम भाग—ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२८, व० १६३६, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म मीमांसा (द्वितीय भाग) —ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० सत्यसमाज ग्रन्थमाला बम्बई, भा० हि०; पृ० ४१२, व० १६४०, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म मीमांसा—(तृतीय भाग)—ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई, भा० हि०; पृ० ३६७; व० १६४२, आ० प्रथम।

जैन धर्म मे अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १४३, व० १६३६ आ० प्रथम।

✓जैन धर्म में दैव और पुरुषार्थ —ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १६७, व० १६४१, आ० प्रथम।

✓जैन धर्म श्रेष्ठ क्यों है—ले० मिलापचन्द कटारिया, प्र० अनेकान्त प्रभाकर मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३१, व० १६३१।

जैन धर्म सिद्धान्त—ले० शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० वीर कार्यालय बिज-नौर, भा० हि०, पृ० ८८, व० १६२८ आ० प्रथम।

जैन धर्म ही भूमंडल का सार्वजनिक सिद्धान्त हो सकता है—ले० माई-दयाल जैन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२७; आ० प्रथम।

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शाह, प्र० स्वय, पृष्ठ २३२, व० १६१० ।

जैन धर्मामृत—(प्रथम भाग)—सपा० सिद्धसेन गोयलीय; प्र० स्वय किरठल (मेरठ), भा० हि०, पृ० ७४, व० १६३४, आ० प्रथम।

जैन धर्मामृत सार—ले० नेमिचन्द्र सीताराम (मराठी), अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० जैन सभा वर्धा, भा० हि०, पृ०, १३१, व० १८६१, आ० प्रथम।

जैन धर्मोन्नति कारक—प्र० धन्ना लाल आमकरन दुर्गापुर, भा० हि०, पृ० ३४, व १८६१।

जैन नारी गीतावली—प्र० जैनी लाल, भा० हि०, पृ० ३०।

जैन नारी मगलाचार—सपा० प्र० पी० सी जैन आगरा, भा० हि०, पृ० १६।

जैन नित्य पाठ संग्रह (१६ पाठो का सग्रह)—प्र० निर्णय सागर प्रेस बबई, भा० स०, पृ० १८८, व० १६१२, आ० चतुर्थ,

जैन नित्य पाठ संग्रह—सग्र० व प्र० अज्ञात, भा० हि०, पृ० १८०,

जैन नियम पोथी—सग्र० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बबई, भा० हि०, पृ० ३२; व० १६३०, आ० चतुर्थ।

जैन पथ प्रदर्शक गीतांजली—ले० पन्नालाल जैन, प्र० स्वय सिवनी, भा० हि०, पृ० ५२, व० १६२१, आ० प्रथम।

जैनपद संग्रह—ले० सन्तलाल, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि० पृ० ३२, व० १६००।

जैनपद संग्रह—प्रथम भाग—ले० कविवर दौलतराम जी, प्र० जैन ग्रन्थ-

रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ११६, व० १६०६, आ० तृतीय, ।

जैनपद संग्रह द्वितीय भाग—ले० कवि भागचन्द्र जी, प्र० जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद सग्रह—तृतीय भाग—ले० कवि भूधरदास जी, प्र० जैन ग्रथ-रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ६८, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—चतुर्थ भाग—ले० कवि द्यानतरायजी, प्र० जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० १५५, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद सग्रह—पचम भाग—ले० कवि बुधजन जी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० १००, व० १६१०, आ० प्रथम।

जैन पद सागर—सपा० प० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६२, व० १६३० ।

✓जैनपाठमाला—प्रथमभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० झुन्नुलाल श्योसिह राय शहादरा, भा० हि०, पृ० १७, व० १६२७, आ० प्रथम ।

✓जैन पाठमाला—दूसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन लोअर मिडिल स्कूल देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १६२७, आ० प्रथम ।

✓जैन पाठमाला—तीसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन० लोयर मिडिल स्कूल देहली, भा० हि० ।

✓जैन पाठमाला—चौथाभाग—ले० गुणधरलाल जैन, सपा० प० लालाराम, प्र० लेखक स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ७७, व० १६२८, आ० प्रथम ।

जैन प्रतिमा यत्र लेख सग्रह—सपा० वा० छोटे लाल जैन, प्र० पुरातत्त्वान्वेषिणी जैन परिषद कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४०, व० १६२३ ।

जैन प्रथम पुस्तक—ले० नाथूराम लेमचू, भा० हि०, पृ० ७३, व० १६२५ ।

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली —प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि० पृ० १२०

जैन पुष्पमाला—प्रथम गुच्छक—ले० पन्ना लाल जैन, प्र० स्वय विसाना, भा० हि०, पृ० १७; व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन पुस्तक प्रशस्ति सग्रह (प्रथम भाग)—सपा० मुनि जिनविजय, बम्बई, भा० स० प्रा० हि०, पृ० २००, व० १९४३।

जैन फिलासफी—ले० वीर चन्द राघव चन्द गाधी, प्र० चन्द्र सेन जन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २१, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैनबद्री मूलबद्री क्षेत्र—ले० सुखदेव जी, भा० हि०, पृ० ३२, व० १८८५।

✓जैन बाल गुटका (प्रथम भाग)—सग्र० बा० ज्ञान चद जैनी, प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९०९, आ० चतुर्थ।

✓जैन बाल गुटका (दूसरा भाग)—सग्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी, प्र० स्वय लाहौर, भा० हि०, पृ० ३०६, व० १९०९।

✓जैन बाल बोधक (प्रथम भाग)—ले० प० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० नेमिचद वाकलीवाल, कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९२२, आ० आठवी।

✓जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—ले० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० स्वदेशी कार्यालय बम्बई, भा० हि० पृ० १२८, व० १९०६ आ० प्रथम।

✓जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—लेखक प० पन्ना लाल बाकलीवाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १२२ वर्ष १९१७।

✓जैन बालबोधक-(तृतीय भाग)-लेखक पडित पन्नालाल वाकलीवाल प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २५१, व० १९२२ आ० प्रथम।

✓जैन बौद्ध तत्त्वज्ञान—लेखक सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक स्वय सूरत, भा० हि०, पृ० २२२, व० १९३४, आ० प्रथम।

जैन बौद्ध तत्त्व ज्ञान (दूसरा भाग)–लेखक सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २६४, व० १९३७, आ० प्रथम;

जैन भजन तरंगनी–लें० प० न्यामत सिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९२६, आ० प्रथम।

जैन भजन पच्चीसी–ले० श्रीनिवास जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि० पृ० २४, व० १९३८, आ० प्रथम।

जैन भजन मुक्तावली–ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि० पृ० २८, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन भजन रत्नावली–ले० प० न्यामत सिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ५७, व० १९१८, आ० प्रथम।

जैन भजन शतक–ले० प० न्यामत सिंह, प्र० स्वय हिसार, पृ० ७१, व० १९२७, आ० सातवी।

जैन भजन संग्रह–ले० यति नयनसुखदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९३५, आ० द्वितीय।

जैन भजन सग्रह–ले० यति नयनसुखदास, प्र० वा० सूरजभान वकील देववद, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९०९।

जैन भजन सग्रह–सग्र० ज्ञानचन्द जन, प्र० धनपाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४२, आ० प्रथम।

जैन भजन सग्रह–प्रथम भाग–सग्र० प० मगतराय, प्र० जैनीलाल देववन्द, भा० हि०, पृ० ३४, व० १८९६।

जैन भजनावली–ले० गुणमाला देवी, प्र० मुमुक्षु महिलाश्रम महावीरजी, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम।

जैन भारती–ले० गुणभद्र जैन कविरत्न, प्र० जिनवाणी प्रचारक, कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९३५, आ० प्रथम।

✓जैन मत के उत्पत्ति काल का निर्णय—ले० बाबूराम शर्मा, भा० हि०, पृ० ६।

जैनमत नास्तिक मत नहीं है—ले० हर्बर्ट वारेन, अनु० मुंशीलाल एम. ए, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० २३, व० १९३३, आ० द्वितीय।

जैन मत प्रबोधनी—ले० अज्ञात, भा० हि०, पृ० ६८, व० १८७४।

जैनमत भ्रमांधकार मार्तण्ड—ले० प० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ५२, व० १८८७, आ० प्रथम।

✓जैनमत समीक्षा—ले० प्रभुदत्तशर्मा भा० हि०, पृ० १२५।

जैन मित्र मंडल का इतिहास और कार्य विवरण—प्र० मन्त्री जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ६० व० १९२७, आ० प्रथम।

जैन मुनि—ले० आत्माराम, भाषा हिन्दी, पृ० २४, व० १९३५।

जैन मेला अल्लम—ले० पंडित न्यामत सिंह, भाषा हिन्दी, पृ० ११।

जैन यात्रा दर्पण—ले० दुलीचन्द, प्र० स्वयं, भाषा हि० पृ० २२, व० १८८७, आ० प्रथम।

जैन रामायण (पद्य)—ले० चुन्नी लाल, प्र० उग्रसेन जैन, महलका (मेरठ) भाषा हिन्दी, पृ० ४०, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैन रामायण नाटक—लेखक मूल चन्द, जैन, प्र० स्वयं महलका (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६४, आ० प्रथम।

जैन लावनी बहार—संपा० प्रकाशक फूलचन्द जैनी, आगरा, भा० हिन्दी पृ० १६।

✓जैन ला—ले० चम्पतराय, बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद बिजनौर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९२८, आ० प्रथम।

✓जैन लेख संग्रह (२ खंड)—पूरण चंद नाहर, भा० हि० सं०।

जैनबद्री मूलबद्री यात्रा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० हि०, व० १८६८।

जैन स्तत्र रत्नमाला—ले० प० गिरधर शर्मा, प्र० सेठ लालचन्द सेठी झालरापाटन, भा० हि०, पृ० २६, व० १६२२, आ० प्रथम।

जैन स्त्री शिक्षा—(प्रथम भाग)—ले० प० पन्नालाल वाकलीवाल, भा० हि०।

जैन स्त्री शिक्षा—(द्वितीय भाग)—ले० प पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० श्रीलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६२।

जैन स्तोत्र सग्रह (५ स्तोत्र)—प्र० निर्णय सागर प्रेस वम्बई, भा० स०; पृ० ४०, व० १८६०, द्वि० आ०, व० १६००।

जैन सम्प्रदाय शिक्षा—ले० श्रीपाल चन्द्र, भा० हि०, (विविध विषय का बृहत् ग्रथ)।

जैन समाज का ह्रास क्यो—ले० अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० जैन सगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६३६, आ० प्रथम।

जैन समाज की वर्तमान दशा पर विचार—ले० से० ज्वालाप्रसाद, प्र० ज्योतिप्रसाद जैन देववद, भा० हि०, पृ० २२, व० १६३३।

✓जैन समाज दर्पण (पद्य)—लेखक प० कमलकुमार जैन वि० र०, प्र० सूरजमल मोतीलाल छावडा सडवा, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६३७, आ० प्रथम।

जैन समाज दिग्दर्शन—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार; भा० हि०, पृ० २८, व० १६२८, आ० प्रथम।

जैन संस्कार पद्धति—ले० गेंदालाल जैन, भा० हि०, पृ० १०२, व० १६१०।

✓जैन साहित्य और इतिहास—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० हि० ग्रथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई; भा० हि०, पृ० ६१५, व० १६४२, आ० प्रथम।

✓जैन सिद्धान्त दर्पण—ले० प० गोपालदास वरैया; प्र० मुनि अनतकीर्ति दि० जैन ग्रथमाला वम्बई, भा० हि०, पृ० २४०, व० १६२८, आ० प्रथम।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० प० गोपालदास बरैया, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०६, व० १६१६, आ० पचम ।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० प० गोपालदास बरैया, सपा० मनोहर लाल शास्त्री, प्र० गाधी रामचन्द्र नाथारग बम्बई, भा० हि०, पृ० २०४, व० १६१६, आ० तृतीय ।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० प० गोपालदास बरैया, प्र० गांधी रामचन्द्र नाथारग बम्बई, भा० हि०, पृ० १६६, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैन सिद्धान्त सग्रह—सग्र० मूलचन्द, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० स० हि० ; पृ० ४६०; व० १६२५, आ० तृतीय ।

जैन सुधा बिंदु—ले० प० जीयालाल चौधरी, प्र० चित्त विनोद पुस्तकालय फर्रुखनगर, भा० हि०; पृ० ३०, व० १८६४, आ. प्रथम ।

जैनागार प्रक्रिया—सग्र० बा० दुलीचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ४३८; आ० प्रथम ।

जैनाचार्यों का शासन भेद—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८०, व० १६२८, आ० प्रथम ।

जैनार्णव-सग्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य, प्र० स्वय इटावा, भा० हि०, पृ० ४७३ व० १६२४, आ पचम ।

जैनास्तिकत्व मीमांसा—ले० प० हसराज शर्मा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४८, वर्ष १६१२ ।

जैनियों का अत्याचार—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० कुलवन्तराय ओवरसियर हरदा, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम ।

जैनियों का तत्त्व ज्ञान और चारित्र—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२, आ० प्रथम ।

जैनियों में अशान्ति और उसे शान्त करने के उपाय—प्र० पन्नालाल काशलीवाल बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४, वर्ष १६११।

जैनी कौन हो सकता है—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३१, —व० १६१४, प्र० कुरीति निवारणी सभा घामपुर।

✓जैनेन्द्र के विचार—ले० प्रभाकर माचवे, भा० हि०, पृ० ३६३, व० १६३७।

✓जैनेन्द्र प्रक्रिया—ले० आचार्य गुणनन्दि, सपा० प० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भाषा सं०, पृष्ठ ३००, वर्ष १६१४, आ० प्रथम।

जैनेन्द्र पंचाध्यायी सूत्रपाठ—ले०पूज्यपाद स्वामी, सपा० वंशीधर शास्त्री, प्र० गांधी नाथारंग आकलूज, भा० सं०, पृ० ५६, व० १६१२, आ० प्रथम।

✓जैनेन्द्र व्याकरण—ले० पूज्यपाद स्वामी, टी. देव नन्दि (महावृत्ति), भा० सं०, पृ० ३७०।

✓जोग शिक्षा—ले० प० भूधरदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भाषा हिन्दी, व० १८६८।

✓ज्योति प्रसाद—ले० माई दयाल जैन, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६८, व० १६३८, आ० प्रथम।

ज्योति प्रसाद भजनमाला—ले० कवि ज्योति प्रसाद, प्र० ज्ञानानन्द जैन बडौत (मेरठ) भा० हि०, पृ० ४८, व० १६१६, आ० चतुर्थ।

ज्योतिषसार(प्राकृत)—टी०सपा० प० भगवनदास जैन, भा०प्रा. हि०, पृ० ८३, व० १६२३, आ० प्रथम।

झाम्हरी जी की नारदीय लीला का अन्त—ले० प० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० दिग० जैन हितकारी सभा बम्बई, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६३२।

डा० सतीशचन्द्र की स्पीच—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि० पृ० १०, व० १६१४, आ० प्रथम।

ढाढसी गाथा—ले० अज्ञात, भा० प्रा०, पृ० ६ ।

ढुंढक मत मीमांसा—ले० मूलचन्द्र ब्रह्मचारी, प्र० न्यामतसिंह टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६, आ० प्रथम ।

णमोकार मंत्र का अर्थ—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वय (लाहोर) भा० हि०, पृ ४८, व० १९०६ ।

णोय कुमार चरिउ—देखिये—नागकुमार चरित्र (कवि पुष्पदन्त कृत) ।

णाणसार (ज्ञान सार)—ले० पद्मसिंह मुनि, टी० पं० तिलोकचन्द्र, भा. प्रा० हिंदी, पृष्ठ ४६, व० १९४३ ।

तत्त्वानुशासन—ले० नागसेनाचार्य, भाषा सस्कृत, पृष्ठ २२, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह मे प्र०) ।

तत्त्व भावना (वृहत्सामायिक पाठ)—ले० अमितगति आचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० सं० हि०, पृ० ३४४; व० १९३० आ० प्रथम ।

तत्त्वमाला—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० भारत जैन महा मंडल, भा० हि०, पृ० १०४, व० १९११, आ० द्वितीय ।

तत्त्वसार—ले० देवसेन, भा० प्रा० (तत्त्वानुशासनादि संग्रह मे प्र० ।

तत्त्वसार टीका—ले० देवसेनाचार्य; टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १६२, व० १९३८, आ० प्रथम ।

तत्त्व ज्ञान तरंगिणी—ले० ज्ञान भूषण भट्टारक, अनु० पं० गजाधरलाल प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि सं, पृ० २१३, व०१९१६, आ० प्रथम ।

तत्त्वानुशासनादि संग्रह (१४ मून स० प्रा० ग्रन्थों का संग्रह)—ले० विविध आचार्य, सपा० प० मनोहरलाल शास्त्री, प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० स० प्र०, पृ० १७६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

तत्त्वार्थ दीपिका (प्रथम खण्ड)—ले० उमास्वामी आचार्य; टी० प०

अटेश्वरदयाल वकवेरिया; प्र० उदयराज जैन ग्रन्थमाला अटेर (ग्वालियर), भाषा संस्कृत हिन्दी, पृ० २५९; व० १९३७ आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ राजकौस्तुभ (प्रथम खण्ड-२ अध्याय)—ले० भट्टाकलक देव, टी० पंडित पन्नालाल दूनी वाले, संपा० पडित सतीशचन्द्र पडित कस्तूर चन्द, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल परवार देवरी, भा० स० हि०, पृ० १४१, व० १९२४, आ० प्रथम।

✓ तत्त्वार्थ राज वार्तिक—ले० भट्टाकलंक देव, अनु० सपा० पण्डित गजाधर लाल प० मक्खन लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था काशी, भा० स० हि०; पृ० ४१५; व० १९१५।

✓ तत्त्वार्थ राज वार्तिकालंकार (पूर्वार्ध)—ले० भट्टाकलक देव, अनुवादक टी० पण्डित गजाधर लाल पण्डित मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि० पृ० १२५१, आ प्रथम।

✓ तत्त्वार्थ राज वार्तिकालकार (उत्तरार्द्ध)—ले० भट्टाकलक देव, अनु० टी० पण्डित गजाधरलाल पण्डित मक्खन लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ १२२७, आ प्रथम।

✓ तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिकम्—ले० विद्यानन्दि स्वामी, सपा० पण्डित मनोहरलाल शास्त्री, प्र० रामचन्द्र नाथारग जी बम्बई; भाषा स०, पृ० ५१२, व० १९१८।

✓ तत्त्वार्थसार (सटीक)—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पण्डित वशीधर, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४२८, व० १९१९, आ० प्रथम।

✓ तत्त्वार्थ वृत्ति—भगवदुमास्वामि विरचित, टीका श्री श्रुतसागर सूरि, हिन्दीसार प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ, काशी मूल्य १६)।

✓ तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० भगवान सागर ब्रह्मचारी, प्र० स्वयं अनु०, भा० सं० हि०, पृ० १४८, व० १९३३, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० सपा० प० सुखलाल सघवी, भा० सं० हि०, पृ० ५८८, व० १६३६ ।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, टी० शान्तिराज शास्त्री, भा० स०, पृ० १०४, व० १६४४ ।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, अनु० सपा० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ५२, व० १६४४, आ० प्रथम ।

तत्त्वार्थ सूत्र का अर्थाशय—ले० मुशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वय कटनी, भा० हि०, पृ० ५१, व० १६०२, आ० प्रथम ।

तत्त्वार्थ सूत्र टीका—ले० प० सदासुख जी, प्र० नाना रामचन्द्र नाग फल्टण, भा० स० हि०, पृ० ६६, व० १८६६, आ० प्रथम ।

✓तरन तारन प्रार्थनाएँ—सपा० प्र० अमृतलाल चचल, भा० हि० ।

✓तारण तरण श्रावकाचार—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मथुरा प्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४३६, व० १६३२, आ० प्रथम ।

✓तारण पंथ समर्थन—ले० प्र० चम्पालाल जैन, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६४० ।

✓तारण शब्द कोष (२ खड)—ले० जयसेन क्षुल्लक, प्र० कुन्दनलाल हजारी लाल बासौदा, भा० हि०, पृ० १५५, व० १६३६ ।

✓तारण त्रिवेणी—ले० तारण स्वामी, अनु० अमृत लालचंचल, भा० सं० हि०, पृ० ११८, व० १६४० ।

✓तारण समाज के किये गये प्रश्नों के उत्तर—ले० जीवधर कुमार व दरबारी लाल, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६४० ।

✓तामिल वेद—ले० तिरुवल्लवर, अनु० सपा० व प्र० जीतमल लूणिया अजमेर, भा० हि० ।

तिलक मञ्जरी—ले० धनपाल, सपा० भवदत्त शास्त्री तथा काशीनाथ

पांडुरंग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० ३५०, व० १९०३।

✓तिलोय पण्णत्त (त्रिलोक प्रज्ञप्ति प्रथम खड)—ले० यतिवृषभाचार्य, सपा० डा० ए० एन० उपाध्याय तथा-प्रो० हीरालाल जैन, अनु० प० बाल चन्द्र शास्त्री, प्र० जैन सस्कृत सरक्षक सघ शोलापुर, भा० हि०, पृ० ५२६, व० १९४३, आ० प्रथम।

तीर्थङ्कर भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० स०, (दशभक्तयादि सग्रह मे प्र०।

तीर्थमाला अमोलकरत्न—ले० शीतल प्रसाद, भा० प्र० हि०, पृ० ३८, व० १८९३।

तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेवीलाल; प्र० दिग० जैन समाज कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २७६ व० १९२८, आ० प्रथम।

तीर्थ यात्रा दर्शक—प्र० चन्द्रराज शेट्टि व वर्धमान हेग्गडे पुत्तरु (कन्नड)।

तीस चौबीसी पूजा—ले० कविवर वृन्दावन जी, सपा मुन्नालाल काव्य-तीर्थ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३७१, व० १९१७, आ० प्रथम।

तीस चौबीसी विधान और समाधिमरण—ले० प० हजारीलाल वैद्य, भा० हि०, पृ० १४, व० १९३५।

✓तीन पुष्प—ले० कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्र० शारदा सहेली सघ देहली, भा० हि०, पृ० ३२०, व० १९४४।

तेरह द्वीप पूजन विधान—ले० कवि श्रीलाल जी, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

त्याग मीमॉसा—ले० प० दीपचन्द वर्णी, प्र० कोठारी मणिलाल चुन्नीलाल, भा० हि०, पृ० २८, व० १९२८, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, पृ० ३३ व० १९३१, आ० द्वितीय।

थ्येट्रीकल जैन भजन मंजरी—ले० प० न्यामतसिह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१२, आ० तीसरी।

दम्पति सुख साधन (प्रथम भाग)—लें० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१ ।

दम्पति सुख साधन (द्वितीय भाग)—लें० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१ ।

दयानन्द चरित्र दर्पण—ले० जीयालाल जैनी, प्र० चित्र विनोद पुस्तकालय फर्रु खनगर, भा० हि०, पृ० २६१; व० १८६४, प्रा० प्रथम ।

दयानन्द छल कपट दर्पण—ले० प० जीयालाल ज्योतिषी, प्र० स्वयं, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६१, वर्ष १८६०, आ० प्रथम ।

दयानन्द छल कपट दर्पण—लेखक पडित जीयालाल ज्योतिषी, प्रकाशक कामताप्रसाद दीक्षित अमरौधा (कानपुर), भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२४, व० १६३०, आ० द्वितीय ।

दया स्वीकार माँस तिरस्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, भा० हि०, पृष्ठ १०२, व० १६१४, आ० प्रथम ।

द्यानत पद संग्रह—ले० कवि द्यानतराय, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४८ ।

दश व्रत नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्लालय कलकत्ता, भा० हि० ।

दर्शन और आरती—प्र० मा० शिवरामसिंह जैन रोहतक, भा० हि०, पृ० २६, व० १६३५, आ० द्वितीय ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६ ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६७, व० १६१६, आ० चतुर्थ ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० बा० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ७४, व० १६१२ ।

दर्शन कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक

कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५७, व० १९३६, आ० प्रथम।

दर्शन कथा (खड़ी-पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० पूरनमल जैन धमसावाद, (आगरा); भा० हि०, पृ० ६४, व० १९४२, आ० द्वितीय।

दर्शन प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द, टी० श्रुतसागर, भा० प्रा० स०, (षटप्राभृतादि संग्रह मे प्र०)।

दर्शन पाठ—ले० दौलतराम व बुधजन जी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० १६, व० १९३०।

दर्शन पाहुड—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्र०, (अष्ट पाहुड व षट पाहुड संग्रह में प्र०)।

✓दर्शन सार—ले० देवसेनाचार्य; टी० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई।

दर्शन प्रतीक्षा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय, सहारनपुर, भा० हि०, पृ०२४; आ० प्रथम।

दर्श महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २४ आ० प्रथम।

द्रव्य दर्पण—ले० प० अजितकुमार शास्त्री, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भा० हि०, पृ० ३९; व० १९३०, आ० प्रथम।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द सि० च०, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० टी० स्वय देववद, भा० प्रा० हि०, पृ० ८१, व० १९०९।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, अनु० प० सतीशचन्द्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०, पृ० ३६, व० १९२६; आ० प्रथम।

✓द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालल बम्बई; भा० प्रा० हि०, पृ० १२४, व० १९२६; आ० प्रथम।

✓द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, पद्यानुवाद-द्यानतराय, टी० सपा०

प० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ५८, व० १९१४. आ० चतुर्थ।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० सपा० प० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०; पृ० ६०, व० १९३८, आ० द्वितीय।

✓द्रव्य संग्रह (हिन्दी दोहा बद्ध)—ले० मा० मुख्तारसिंह; अनु० मैना सुन्दरी; प्र० दि० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ६८; व० १९४३।

✓द्रव्यानुयोग तर्कणा—ले० भोजकवि, अनु० ठाकुरप्रसाद शर्मा, भा० सं० हि०, पृ० २६०, व० १९०५।

दश आरती भाषा—प्र० बा सूरजभान वकील देवबन्द; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

दश भक्ति—सग्रह मुनि श्रुतसागर, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० ४३, व० १९३२।

✓दश भक्त्यादि सग्रह—ले० आचार्य पूज्यपाद, टी० पण्डित लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० ० हि०, पृ० २००, व० १९३३, आ० प्रथम।

✓दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित सदासुख जी; भाषा हिन्दी।

✓दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित दीपचन्द वर्णी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १३५, व० १९४२, आ० चतुर्थ।

दश लक्षणधर्म पूजा—ले० पण्डित जिनेश्वरदास, प्र० मोजीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ४२; व० १९३५।

दश लक्षण धम संग्रह—ले० पण्डित रइधु कवि; प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय वर्धा, भाषा प्रा०, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम।

दश लक्षण धर्म संग्रह (धर्म कुसुमोद्यान)—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० आ०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलत्ता, भा० हि०, पृ० ४१।

दाम्पत्य सुखोपाय (भाग १ व २)—लेखक पण्डित पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी ग्राफिस बम्बई।

दास पुष्पांजलि—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९२७, आ० द्वितीय।

दीपावली महोत्सव—लेखक पण्डित कमल कुमार शास्त्री, प्रकाशक राजकुमार प्रभाचन्द ललितपुर, भा, हि०, पृ०, ५८, व० १९३६ आ० प्रथम।

दीपावली महोत्सव—प्र० प्रज्ञा पुस्तकमाला बरायठा (सागर) भा० हि०, पृ० १०४।

दुखित पुकार—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भाषा हिन्दी।

दुर्गति दु:खदीपिका (पद्य)—लेखक यति नयनसुखदास, सपादक प्र० प्रेमसागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६ व० १९४० आ० प्रथय।

देवगढ़ काव्य—लेखक कल्याण कुमार शशि, प्रकाशक नाथूराम सिंघई ललितपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १९३९; आ० प्रथम।

देवगढ़ के जैन मंदिर—ले० विशभरदास गार्गीय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २८ स० १९२१।

देवचन्द्र चौबीसी—लेखक देवचन्द्र, भाषा हिंदी, पृ० ६४, (पदसग्रह)।

देव दर्शन—सपादक दरयावसिंह सोघिया व शाह सन्तोषचद माणिकचद, प्रकाशक बुद्धूलाल श्रावक देवरी, भाषा सस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १९१६ आ० प्रथम।

देव परीक्षा—लेखक चादनराम जैनी, भा० हि० पृ० ४३, व १९१४।

देव रचना—लखक लाला हरजसराय, प्रकाशक प्यारेलाल, भा हि।

देव शास्त्र गुरू पूजा—सपादक अनुवादक बाबू सूरजभान वकील, प्र० स्वय देवबद, भाषा प्रा० सस्कृत हिन्दी, पृष्ठ २५, व० १९०९, आ० प्रथम।

देवेन्द्र चरित्र—लेखक प्र० बाबू अजित प्रसाद लखनऊ, भाषा हिन्दी, पृ. १०२, व. १९३२।

देवेन्द्र मिलाप—लेखक छेदालाल, भा. हि, पृ ३६, व १९२८।

✓दिगम्बर जैन ग्रथकर्त्ता और उनके ग्रथ—लेखक पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्रकाशक जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई भा० हि०, पृ० ५६; व० १९११, आ० प्रथम।

✓दिगम्बर जैन भाषा ग्रन्थ नामावली—सग्रह बाबू ज्ञानचद जैनी, प्रकाशक दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर भाषा हिन्दी, पृष्ठ २८, व० १९०१।

दिगम्बर जैन मुनि पूजा व भजनावली—सपादक पण्डित जिनेश्वरदास प्रकाशक चिरजीलाल जैन अलवर, भा० हि०, पृष्ठ १६, व० १९३२, आ० प्रथम।

✓दिगम्बर जैनों में जागृति के प्रश्न व शास्त्रार्थ की अपील—लेखक चृजागर मल जैन, प्रकाशक जैन शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १४।

✓दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि—लेखक बाबू कामताप्रसाद जैन, प्र० चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भा०हि०; पृ० ३२०, व० १९३२, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अश १, २)—लेखक पण्डित मक्खनलाल शास्त्री, प्रकाशक जुहारूमल मूलचन्द, भा० हि०, पृ० १४९, व० १९४४, (प्रो० हीरालाल के मन्तव्यों के उत्तर मे)।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अश ३)—सपादक प्र० पण्डित रामप्रसाद शास्त्री बम्बई, वर्ष १९४६।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अश ४)- " " " शास्त्री बम्बई, व० १९४७।

✓दिगम्बर जैन मूर्ति पूजा पर ५१ प्रश्न—लेखक प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३९।

देहली दिग्दर्शन—ले० बा० अजितप्रसाद एडवोकेट; प्र० स्वय अजिताश्रम लखनऊ भा० हि०, पृ० २०, व० १९२३।

देहली शास्त्रार्थ—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ६८,

व० १६१७, आ० प्रथम।

देहली की जैन संस्थाएँ—ले० ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, भा० हिं०, व० १६४६।

दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां—ले० डा० जगदीशचद्र, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भा० हि०, व० १६४७।

द्रोण नैना और मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र यात्रा विवरण—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० महावीर दिग० जैन मन्दिर हाथरस, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६१७, आ० प्रथम।

दौलत जैनपदसग्रह—ले० कवि दौलतराम जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालयक कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०।

दौलत विलास (दौलत कवितावली) ले० कवि दौलतराम जी, सपा० पं० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० ८०, व० १६०४, आ० प्रथम।

धनञ्जय नाम माला—ले० कविवर धनञ्जय, सपा० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी (झांसी) भा० स०, पृ० ६६, व० १६४०, आ० द्वितीय।

धन्य कुमार चरित्र (पद्य)—ले० प० खुशालचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता भा० हि०, पृ० १०२, व० १६३८, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० प० खुशालचन्द, प्र० श्री वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६३, व० १६१६, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० प० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैनभारतीभवन काशी, भाषा हिन्दी पृष्ठ १०३, वर्ष १६११, आ० प्रथम।

धम्मरसायणम्—लिखक पद्मनन्दि, भाषा अप० स०, पृष्ठ ३४, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

धर्म और शील—लेखक मुन्शीलाल एम ए प्रकाशक स्वय लाहौर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११२, वर्ष १६१२, आ० प्रथम।

धर्म का आदि प्रवर्तक—लेखक स्वामी कर्मानन्द, प्रकाशक जैन सघ अम्बाला, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६२, वर्ष १६४६।

धर्मचर्चा सग्रह—सग्र० शाह धर्मचन्द हरजीवन दास, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६१८, आ० प्रथम।

धर्म चला—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि०।

धर्म परीक्षा—ले० अमित गति आचार्य, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि० स०, पृ० २३०, व० १६०८, आ० प्रथम; पृ० २५२, व० १६२२, आ० द्वितीय।

धर्म परीक्षा—ले० अमितगति आचार्य, अनु० पन्नालालबाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा०, हि० स० पृ० २२०, व० १६०८, आ० प्रथम।

धर्म प्रचार—ले० बा० कुलवन्तराय, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२७।

धर्म प्रबोधिनी—प्र० ला० शकरलाल जैनी सहाना (सहारनपुर), भा० हि०, पृ० १८, व० १८६८, आ० प्रथम०, पृ० २०, आ० द्वितीय, पृ० ५२, व० १८७२।

धर्म प्रभावना—ले० कुलवन्तराय जैन, प्र०-स्वय होशगावाद, भा० हि०, पृ० १३, व० १६२७, आ० प्रथम।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० स्याद्वाद रत्नाकरकार्यालय काशी, भा० स० हि०, पृ० २६५, व० १६१२, आ० प्रथम।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० खुमानलाल जैन केवलारी, भा० स०, हि० पृ० ३००, व० १६३८, आ० दूसरी।

धर्मपाल नाटक—ले० प० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि०।

धर्मपाल नाटक के पद्य—ले० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि०, पृ० १४।

✓धर्ममीमांसा (प्रथम भाग)—ले० प० दरबारीलाल सत्य भक्त, प्र० सत्य-समाज ग्रथ माला कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ८७, व० १९३५।

धर्मरत्नोद्योत (पद्य)—ले० बा० जगमोहनदास, संपा० व० प्र० प० पन्नालाल बाकलीवाल वम्बई, भा० हि०, पृ० १८२, व० १९१२, आ० प्रथम।

✓धर्मरहस्य—ले० चम्पतराय जैन वैरिस्टर, प्र० स्वय वम्बई, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९४०, आ० प्रथम।

✓ धर्मविलास—ले० द्यानतराय जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकरकार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० २६३, व० १९१४, आ० प्रथम।

धर्मवीर सुदर्शन (काव्य)—लेखक अमरचन्द मुनि, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९३८।

धर्म शर्माभ्युदय—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, सपा० प० काशीनाथशर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस वम्बई, भा० स०, पृ० १९१, व० १८९९।

✓धर्मशिक्षावली (प्रथम भाग)—ले० प० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९४३, आ० छठी।

✓ धर्म शिक्षावली (दूसरा भाग)—ले० प० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४३, आ० छठी।

✓ धर्म शिक्षावली (तीसरा भाग)—ले० प० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ६५, व० १९४४; आ० छठी।

✓ धर्मशिक्षावली (चतुर्थ भाग)—ले० प० उग्रसेन एम० ए०, प्र० वीरकार्यालय मल्हीपुर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३४, आ० प्रथम।

✓धर्म सग्रह श्रावकाचार—ले० प० मेधावी, अनु० प० उदयलाल काशलीवाल, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० स० हि०, पृ० ३३५, व० १९१०, आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (प्रथम रत्न)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, पृ० ३३, व० १६२६, आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (दूसरा रत्न)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० २३, व० १६२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (तीसरा रत्न)—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, पृ० २०; व० १६२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (चौथा रत्न)—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, व० १६२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (पाचवा रत्न)—'धर्मचला' लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० ८, व० १६२७।

धर्मामृत रसायन—लेखक कुँवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्वप्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६१२, आ० द्वितीय।

धर्मों में भिन्नता—लेखक प० दरबारीलाल सा० र०, प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १८, व० १६३२।

धूर्ताख्यान—लेखक हरिभद्र सूरि, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६१२, आ० प्रथम।

नकली और असली धर्मात्मा—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० १६६, व० १६१६, आ० प्रथम।

नकशा गुण स्थान—सपा० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०, पृ० १, व० १६१६, आ० प्रथम।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० स० हि०, (दशभक्त्यादि सग्रह मे प्र०)।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक श्रुतधराचार्य, भा० स०, पृ० ४२, व० १६६४।

नन्दीश्वर व्रत उद्यापन—प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९३१, आ० प्रथम।

नयचक्रादि संग्रह (दो ग्रन्थ)—लेखक माइल्ल धवल व देवसेनाचार्य, सपा० प० वशीधर शास्त्री, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० १६४, व० १९२०, आ० प्रथम।

नयविवरणम्—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भा० स०, पृ० १०, व० १९०५।

न्याय कुमुदचन्द्र (प्रथम खड)—लेखक प्रभाचन्दाचार्य, सपा० प० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ४०२, व० १९३८, आ० प्रथम।

न्याय कुमुदचन्द्र (द्वितीय खड)—लेखक, प्रभाचन्द्राचार्य, सपा०, पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० मणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० १०४१, व० १९४१, आ० प्रथम।

न्याय विनिश्चय विवरणम् (प्रथम भाग)—श्री भट्टाकलक देव विरचित, टीका वादिराजसूरि, सम्पादक प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ काशी, व० १९४९, मूल्य १५, पृ० ६११।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० टी० प० खूबचन्द्र, सपा० प० वशीधर, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १३४, व० १९१३ आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० कलप्पाभरमप्पानिटवे कोल्हापुर, भा० स०, पृ० ८२, व० १८९९, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० सपादक प० दरबारीलाल कोठिया, न्यायाचार्य प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ३५०, व० १९४५, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० जैनेन्द्रमुद्रणालय बम्बई, भा० स०, पृ० ७६, व० १८९९।

न्याय प्रदीप—ले० प० दरवारी लाल स०भ०, प्र० साहित्यरत्न कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६, व० १६२६; आ० प्रथम ।

न्याय बोधक—ले० प० अजितकुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १६; आ० प्रथम ।

न्याय विनिश्चय—ले० अकलङ्क देव, भा० स०, (अकलङ्क ग्रन्थत्रयम्-में प्र०) ।

नरपशु शास्त्रार्थ—ले० पं० सिद्धसेन सा० र०, प्र० सेठ कोटडिया सोमचन्द उग्रचन्द लाकरोडा (गुजरात), भा० हि०, पृ० २६, व० १६३०, आ० प्रथम ।

नरमेध यज्ञ मीमाँसा (समालोचना)—ले० प० हसराज शर्मा जैन, भा० हि०, पृ० २०, व० १६१२ ।

नरेश धर्म दर्पण—ले० आचार्य कु थसागर, प्र० कु थसागर ग्रन्थमाला सोलापुर, भा० हि० , पृ० २८, व० १६४० आ० द्वितीय ।

नवगृह विधान—ले० मनसुख सागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३८, व० १६३८, आ० प्रथम ।

नव रत्न—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६३०, आ० प्रथम ।

नवीन जिनवाणी संग्रह—सपा० प० मगलसैन, प्र० श्री वीरपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि० स०, पृ० ५१६, व० १६४२, आ० द्वितीय ।

नवीन तीर्थ यात्रा—ले० सूरजभान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, वर्ष १६३६, आ० प्रथम ।

नागकुमार चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, सपा० प्रो० हीरालाल जैन, प्र० बलात्कारगण जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा० अप०, पृ० २०१, व० १६३३, आ० प्रथम ।

नाग कुमार चरित्र—ले० मल्लिषेण सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० १६१, व० १६१३, आ० प्रथम ।

नाटक समयसार—ले० कविवर वनारसीदास, टी० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १९२९, आ० प्रथम ।

नाटक समयसार कलशा—ले० अमृतचन्द सूरि, भा० स०, पृ० ३५, व० १९०५ ।

✓ नाम माला—ले० धनञ्जय, अनु० प० घनश्याम दास, प्र० वशीधर ललितपुर, भा० स० हि०, पृ० १००; व० १९१६, आ० प्रथम ।

नाम माला—ले० धनञ्जय, अनु० प० घनश्यामदास, प्र० प० गोरीलाल जैन देहली, भा० स०, पृ० ३२, व० १९१६ आ० प्रथम ।

नारी धर्म प्रकाश—ले० पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बबई, भा० हि० ।

नारी शिक्षादर्श—ले० प० उग्रसेन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० १८०, व० १९३४, आ० प्रथम ।

निजात्म शुद्धि भावना—ले० आचार्य कुन्थसागर, प्र० शिष्यमडल बोरसद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९४०, आ० प्रथम ।

✓ निजात्म शुद्धि भावना और मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० आ० कुथ सागर, प्र० साध्वी नानी ह्वेन मितवाडा, भा० हि०, पृ० १२४, व० १९३८ ।

निजात्माष्टकम्—ले० योगीन्द्र देव, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०) ।

नित्य नियम देव पूजा व शीतलारिष्ट निवारक पूजा—ले० प० फूलचन्द, प्र० स्वय फीरोजावाद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९३५, आ० प्रथम ।

नित्य नियम पूजा और भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ८६, व० १९३२, आ० नवम ।

नित्य नियम पूजा प्राकृत—टी० अनु० सदासुखजी व बा० सूरजभान वकील, प्र० सूरजभान वकील देवबद, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३८, व० १८९९, आ० प्रथम ।

नित्य नियम पूजा सार्थ—सपा० ला० लक्खीराम जैन, प्र० स्वयं, टीकरी, भाषा स० हिन्दी; पृ० ६४, व० १९४१; आ० प्रथम ।

नित्य नियम पूजा सार्थ—टी० अनु० पं० अजित कुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भापा स० हि०, पृ० १२८, व० १९२३, आ० प्रथम ।

नित्य नियम व हस्तिनापुर क्षेत्र पूजा भाषा —सम्र० मगलसैन जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९३६, आ० प्रथम ।

नित्य नियम संग्रह—प्र० केशरीमल मोतीलाल जावरा, भा० संस्कृत हि०, पृ०२६५ व० १९४०, आ० द्वितीय ।

नित्य नेम पूजा भाषा—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू कटनी, भा० हि०, पृ० २३, व० १९०६ ।

नित्य प्रार्थना—ले० ज्योति प्रसाद जैन; प्र० स्वय; भा० हि०, पृ० १६, व० १९३२ ।

नित्य पाठ पूजा गुटका—प्र० धर्मचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि० स० पृ० ४६४, व० १९४१, आ० द्वितीय ।

नित्य पाठावलि—ले० अमितगति, अनु० तिलक विजय, भा० स० हि०, पृ० ३०, व० १९२५ ।

नित्य पूजा विधान सस्कृत—प्र० जैन सिद्धान्त प्रचारक मण्डली देवबद, भा० स०, पृ० ४९, व० १९०९, आ० प्रथम ।

नित्य पूजा सस्कृत तथा भाषा—सपा० बद्रीप्रसाद जैन, प्र० स्वय काशी, भा० स० हि०, पृ० ३४, व० १९०६, आ० प्रथम ।

निबन्ध दर्पण—ले० ब्र० चन्दाबाई, प्र० देवेन्द्र किशोर जैन आरा, भा० हि०, पृ० १८०, व १९४२, आ० प्रथम ।

निबन्ध माला (जैन धर्म परिचय)—ले० सुमेरुचन्द जैन प्रभाकर, प्र० सरकार आदर्श दिल्ली, भा० हि०, पृ० १४४, व० [illegible] ।

निग्रन्थ रत्नमाला—ले० वा० चन्दा बाई प्र० कुमार देवेन्द्रप्रशाद आरा; भा० हि०, पृ० १२०, व० १६२०, आ० प्रथम ।

निमित्त शास्त्रम्—ले० महर्षि ऋषिपुत्र, अनु० प० लालाराम; सपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री प्र० सपा० स्वय शोलापुर, भा० स० हि०, पृ० ४४, व० १६४१ ।

नियम सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० पद्मप्रभ मलधारीदेव, हि० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० स. हि०, पृ० २२१, व० १६१६, आ० प्रथम ।

निर्ग्रन्थ मुनि शान्तिसागर जी का जीवन चरित्र—ले० ब्र भगवान-सागर, प्र० ब्र० आत्मानन्द गिरीडीह (हजारी बाग), भा० हि०, पृ० ६३, व० १६२७, आ० प्रथम ।

निर्वाण कांड—प्र० ज्ञान चन्द जैन लाहौर, भा० प्रा०, पृ० ८ ।

निर्वाण कांड (प्राकृत व भाषा)–प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबद, भा० प्रा० हि० व० १८६८ ।

निर्वाण भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० स० हि०; (दश भक्त्यादि सग्रह में प्र०) ।

निर्माल्य द्रव्य चर्चा—सपा० हीराचन्द नेमचन्द दोशी, प्र० स्वय शोलापुर भा० हि०, पृ० ६८, व० १६२२ ।

निशि भोजन कथा—ले० पंडित भारामल्ल जैन और कवि भूधरदास, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २८, व० १६११, आ० प्रथम ।

निशि भोजन कथा (पद्य)—ले० प० भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

निशि भोजन भुंजन कथा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द; भा० हि०, व० १८६८ ।

नीति वाक्य माला—अनु० प० नन्दनलाल, प्र० मूलचन्द किशनदास काप-डिया सूरत, भा० हि०, पृ० २०५, व० १६२४, आ० प्रथम ।

नीति वाक्यामृत—ले० सोमदेवसूरि, प्र० गोपाल नारायण कम्पनी बम्बई, भा० स०, पृ० १३०, व० १८६१, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम्—ले० सोमदेव सूरि, सपा० प० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रथमाला बम्बई, भाषा स०, पृ० ४६४, व० १६२२, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम् (परिशिष्ट)—ले० सोमदेव सूरि, प्र० माणिकचन्द्र जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ८०, व० १६२८, आ० प्रथम।

नीति सार—ले० इन्द्रनन्दि, भा० स०, (तत्त्वानुशासनादि सग्रह मे प्र०)।

नीतिसार समुच्चय—ले० इन्द्रनन्दि, सपा० प० गोरीलाल, प्र० सेठ बालचन्द देहली, भा० स०, पृ० ७६।

नूतन चरित्र—ले० बा० रतनचन्द जैन, प्र० हिन्दी ग्रथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

नूतन बोधमाला—ले० सपा० प० केन्द्रकुमार जैन, प्र० बापूदास नारायण साधारण गाँव, भाषा हिन्दी, पृ० ५०, व० १६३२।

नेमनाथ का बारह मासा—ले० कवि विनोदी लाल, प्र० बा० सूरजभान वकील, भाषा हिन्दी, वर्ष १८६८।

नेमनाथ पद्रौत गिरनार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हिन्दी।

नेमि चरित्र—ले० विक्रम कवि; अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ५६, व० १६१४, आ० प्रथम।

नेमि दूत काव्य—ले० विक्रम कवि, भा० स०।

नेमिनाथ स्तोत्र—भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह में प्र०)।

नेमि निर्वाण (काव्य)—ले० महाकवि वाग्भट्ट; सपा० प० शिवदत्त व काशीनाथ पांडुरग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० ८५, व० १८६६।

नेमि पुराण—ले० ब्र० नेमिदत्त; अनु० उदयलाल काशलीवाल; प्र० जैन

ाहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ३७६, आ० प्रथम।

नेमिश्वर विवाह (दो)—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, पृ० ..३, व० १६०१, आ० प्रथम।

✓ नौकारमन्त्र (वेलबूटेदार)—प्र० बा० सूरजभान वकील देववद, भा० प्रा०, व० १८६८।

पउमचरियम—ले० विमल सूरि; सपा० वी एम शाह अहमदाबाद, भा० प्रा० पृ० १४८, (प्रथम ४ अध्याय)।

✓ पखवाड़ा—ले प० द्यानतराय, टी० प० मगलसेन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर; भाषा हिन्दी, पृ० २०, व० १६३४ आ० प्रथम।

✓ पतन से उत्थान—ले० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ मोहरीलाल चादमल अहमदाबाद, भाषा हिन्दी, पृ० १२६, व० १६३६, आ० प्रथम।

पतित पावन महावीर—ले० प्र० कौशल प्रसाद, भा० हि०, व० १६४६।

✓ पतितोद्धारक जैन धर्म—ले० बा० कामता प्रशाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय, सूरत भाषा हि० पृ० २०४, व० १६३६, आ० प्रथम।

पत्र परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी, सपा० प० गजाधर लाल; भा० स०, पृ० १३, व० १६१३।

पद्म चरित् (प्रथम खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० प० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ५११, व० १६२८, आ० प्रथम।

पद्म चरित् (द्वितीय खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० प० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ४३६, व० १६२८ आ० प्रथम।

पद्म चरित् (तृतीय खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० प० दरबारी लाल, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ४४६, व० १६२८, आ० प्रथम।

✓ पद्म चन्द्र कोष—ले० प० गणेशदत्त, प्र० मेहरचन्द लक्ष्मणदास लाहौर, भा० स०, पृ० ४५२, व० १८६७, आ० प्रथम।

पद्मनन्दि पंच विंशतिका—ले० आचार्य पद्मनन्दि, अनु० प० गजाधरलाल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० स० हि०, पृ० ५१३, व० १९१४, आ० प्रथम।

पद्म नन्दि श्रावकाचार—ले० पद्मनन्दि आचार्य, भा० सं० हि०; पृ० ३०; व० १९३२।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० प० दौलतराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८६०, व० १९२९; आ० प्रथम।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ९९९, व० १९२८, आ० तीसरी, पृष्ठ ८६५, व० १९२५, आ० द्वितीय।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० दिग० जैन ग्रन्थ प्रचारक कार्यालय देवबद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०७६।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११८७।

पद्म पुराण समीक्षा—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैनी वैद्य इटावा, भाषा हि०, पृष्ठ १३२, व० १९१९, आ० प्रथम।

पद्म पुष्पांजलि—प्र० पद्मपुरी तीर्थ कमिटी, भा० हि०, व० १९४७।

पद्मावती पूजन—प्र० नन्नूमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६।

पद्मावती क्षेत्रपाल पूजा—प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली, भा० हि०, पृ० १८।

पद्य संग्रह—लेखक यति नैनसुखदास, भा० हि; पृ० ६८।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक प० बख्तावर लाल, सपा० प० बद्रीप्रसाद; प्र० जैन पुस्तकालय बनारस, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९०९।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक प० कमलनयन, प्र० जैन भारती भवन फतहगढ़, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९२६, आ० दूसरी।

पंच कल्याणक समुच्चय—सपा० क्षुल्लक धर्म सागर, प्र० केशरियाप्रसाद जैन शहाबाद, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३२।

पंच कल्याण मंगल भाषा—लेखक पांडे रूपचन्द्र, प्र० बा० सूरजभान वकील देववन्द भा० हि०, व० १८६८।

पंच गुरु भक्ति—लेखक पूज्यपाद, भा० स०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

पंच जैन स्तोत्र संग्रह—भा० स०, पृ० ४०।

पंच तन्त्र (भाषा टीका)—प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० स० हि०।

पंच परमेष्टि के गुण—प्र० मगन बाई बम्बई, भा० हि०, पृ० २१, व० १६०६, आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि पूजा—लेखक यशोनन्दि आचार्य, प्र० देवप्पा दुग्पा आष्टमुद्ग कोल्हापुर, भा० स०, पृ० ६५, व० १६१४।

पंच परमेष्टि पूजन विधान भाषा—लेखक प० टेकचन्द, सपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन काशी, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६२४, आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि वन्दना—लेखक प० मगतराय, प्र० जैनधर्म प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भा० हि०; पृ० ७, व० १६०६, आ० प्रथम।

पंचबाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्करों की पूजा—लेखक भोलानाथ दरखशां, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२६, प्रकाशक हीरालाल पन्नालाल जैन देहली।

पंच मेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान—लेखक प० टेकचन्द, सपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२४, आ० प्रथम।

पंचरत्न—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० मूलचद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६१, व० १६३३; आ० प्रथम।

पंचव्रत—लेखक भोलानाथ दरखशां, प्र० जैन मित्र मडल देहली; भा० हि०, पृ० २२, व० १६३०, आ० प्रथम।

पंचस्तोत्रम्—प्र० जैन सिद्धांत प्रचार मडली देवबन्द, भा० सं०, पृ० ३८, व० १९०६, आ० प्रथम।

पंचस्तोत्र सग्रह—अनु० प० पन्नालाल सा० आ०, प्र० मूलचद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० स० हि०, पृ० १४२, व० १९४०, आ० प्रथम।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य, सपा० प० दरबारीलाल न्या० ती०, प्र० माणिकचद दिग० जैन० ग्रंथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० २४८, व० १९२७, आ० प्रथम।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य, टी० सं० प० वशीधर शास्त्री, प्र० वालचद कस्तूरचद गाधी धाराशिव, भा० स० हि०, पृ० ६५६, व० १९३१, आ० प्रथम।

पंचसुत्त—सपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, भा० प्रा०।

पंचाध्यायी—लेखक पडित राजमल्ल, प्रा० गाधी नाथारग आकलूज, भा० स०, पृ० २००, व० १९०६।

पंचाध्यायी (सटीक)—लेखक पांडेरायमल्ल, टी प देवकीनन्दन, प्र० महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारजा, भा० स० हिन्दी, पृ० ४७६, व० १९३२, आ० प्रथम।

पंचाध्यायी—लेखक पांडेराय मल्ल, टी० प० मक्खनलाल, प्र० जैनग्रंथ-प्रकाश कार्यालय इंदौर, भा० स० हि०, पृ० ३२६, व० १९१८, आ० प्रथम।

पंचायती अत्याचार का नमूना—लेखक प्र० अज्ञात, भा० हिन्दी, पृ० १८।

पंचास्तिकाय—लेखक कुंदकुन्दाचार्य, स टी अमृतचन्द्र, और जयसेन, हिन्दी टी० पांडे हेमराज, हि० अनु० पन्नालाल, सपा० पं० मनोहरलाल वाकलीवाल प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० २५५, व० ९१४, आ० द्वितीय।

पंचास्तिकाय समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्र, हिन्दी, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० १७०, व० १९०४, आ० प्रथम।

✓पंचास्तिकाय टीका (प्रथम भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० ४२४, व० १९२७, आ० प्रथम।

✓पंचास्तिकाय टीका (दूसरा भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० २४५, व० १९२८, आ० प्रथम।

✓पंचास्तिकाय (हिन्दी पद्य)—लेखक पांडे हीरानन्द, प्र० जैन साहित्य-प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २००, व० १९१५, आ० प्रथम।

✓पंचेन्द्री संवाद—लेखक कविवर भगवतीदास, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर-कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९१२, आ० प्रथम।

पट्टावली समुच्चय—संपा० दर्शन विजय जी, भा० हिन्दी, पृ० २५६, व० १९३२।

✓परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्र देव, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० पं० दौलतराम, संपादक पं० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० सं० हि०, पृ० ३५५, व० १९१५, आ० द्वितीय।

परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्रदेव, हि० अनु० बा० सूरजभान वकील, प्र० अनु० स्वयं देववन्द, भा० अप० हि०, पृ० ५८, व० १९०९, आ० प्रथम।

✓परमात्म प्रकाश योगसारश्च—लेखक योगीन्द्रदेव, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० पं० दौलतराम, संपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० सं० हिन्दी, पृ० ३९४, व० १९३७, आ० द्वितीय।

✓परमाध्यात्म तरंगिणी—लेखक अमृतचन्द्राचार्य, सं० टी० भट्टारक शुभचंद्र, हि० टी० पं० जयचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हिन्दी, पृ० २३६, आ० प्रथम।

परमार्थ जकड़ी—प्र० बा० सूरजभान वकील देववन्द, भा० हिन्दी, व० १८९८।

परमार्थ जकड़ी संग्रह—प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६, व० १९११, आ० प्रथम।

परमार्थिक पदार्थ विज्ञान—लेखक प० दरयावसिंह सोधिया, प्र० परवार बन्धु कार्यालय जबलपुर, भा० हि०, पृ० ३३; आ० प्रथम ।

परमेश्वर की सत्ता—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

परमेष्ठी पद्यावली—लेखक प० परमेष्ठीदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९३४, आ० प्रथम ।

पर्यूषण पर्व—लेखक ज्योतिप्रसाद जैन, प्र० जैन सभा मेरठ, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४०, आ० प्रथम ।

पर्यूषणपर्व—लेखक सूरजमल जन, प्र० स्वय सपा० जैनप्रभात इन्दौर, भा० हि०, पृ० ४८ ।

परिशिष्ट पर्व (प्रथम भाग) —लेखक हेमचन्द्राचार्य, सपा० मुनि तिलक विजय, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९१५ ।

परिशिष्ट पर्व (द्वितीय भाग)—लेखक हेमचन्द्राचार्य, स० मुनितिलक विजय, भा० हि०, पृ० १९९, व १९१६ ।

परीक्षा मुखम्—लेखक माणिक्यनन्दि, प्र० गाधी नाथारग जी आकलूज, भा० स०, पृ० १२८ व० १९०४ ।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ८०, व० १९१६, आ० प्रथम ।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० प० घनश्यामदास, प्र० स्वय, भा० स० हि०, पृ० ९४, व० १९०५, आ० प्रथम ।

परीक्षा मुखम प्रमेय रत्नमाला सहित—लेखक माणिक्यचन्द्राचार्य, अनन्तवीर्याचार्य, सपा० प० फूलचन्द्र शास्त्री, प्र० बालचन्द्र शास्त्री, भा० स०, पृ० २१०, व०, १९२८ ।

परीक्षामुख लघुवृत्ति—लेखक अनन्तवीर्य, भा० स०, पृ० ८७, व० १९०९ ।

प्रतिक्रमण—भा० स० हि०, (दशभक्त्यादि सग्रह में प्र०) ।

प्रतिमाचालीसी–प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि, व० १८६८।

प्रतिमालेख संग्रह–स० का० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन सिद्धात भवन आरा, भा० स० हि०, पृ० ३६, व० १६३६, आ० प्रथम।

✓प्रतिष्ठातिलक–लेखक नेमचन्द्राचार्य, भा० सं०, पृ० ८११, व० १६१४।

✓प्रतिष्ठा पाठ—लेखक जयसेनाचार्य, प्र० सेठ नेमचन्द हीराचन्दबोशी शोलापुर; भा० स०; पृ० ३०८, व० १६२५, आ० प्रथम।

✓प्रतिष्ठासार सग्रह–स० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० स० हि०, पृ० २२३, व० १६२८, आ० प्रथम।

✓प्रतिष्ठासारोद्धार–लेखक प० आशाधर, अनु० प० मनोहरलाल शास्त्री; प्र० जैनग्रन्थउद्धारककार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १४४, व० १६१८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० सन्दोष रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हिन्दी, पृ० ६०, व० १६१४, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र–लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य; टी. अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स०|हि०, पृ० १६७, व० १६२२, आ० द्वितीय, पृ० ३४४, व० १६३६, आ० तृतीय।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० २६४।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, अनु० बुधमल पाटणी व नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० १६७, व० १६०८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरितम् काव्य—लेखक महासेनाचार्य, सपादक प० मनोहरलाल शास्त्री, प० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० मणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रथ माला बबई, भा० स०, पृ० २३६, व० १६१७, आ० प्रथम।

✓प्रबन्धावली—लेखक पूरणचन्द्र नाहर, भा० हि०, पृ० २०३, व० १६३७।

प्रबोध पच्चीसी—लेखक प्रबोधकुमार जैन, प्र० बा० देवेन्द्र किशोर आरा, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९३७, आ० प्रथम ।

प्रबोधसार—लेखक भट्टारक यश कीर्ति, अनु०,प० लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० स० हि०, पृ० २२८, व० १९२८, आ० प्रथम ।

प्रभजन चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० प० घनश्याम दास, प्र० जैन ग्रन्थ कार्यालय ललितपुर, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९१६, आ० प्रथम ।

प्रभावशाली जीवन—अनु० माई दयाल जैन, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३१ ।

प्रभु पूजा या बच्चों का खेल—ले० ताराचन्द शास्त्री, भा० हि०, पृ० २७ ।

प्रभु विलास—ले० अज्ञात, प्र० जैनग्रथ प्रचारकपुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९११, आ० द्वितीय ।

प्रमाण नयतत्त्वालोकालकार—ले० वादिदेव सूरि; टी० रत्नप्रभाचार्य, भा० सं०, पृ० २०२, व० १९१० ।

प्रमाण निर्णय—ले० वादिराज सूरि, सपा० प० इन्द्रलालशास्त्री व प० खूबचन्द शास्त्री, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ८०, व० १९१७, आ० प्रथम ।

प्रमाण परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी, भा० स०, पृ० ३०, व० १९१४।

प्रमाण संग्रह—ले० अकलकदेव, भा० स, (अकलक ग्रन्थत्रयम् मे प्र०) ।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, सपा० प० वशीधर शास्त्री, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० २११, व० १९१८, आ० प्रथम ।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (प्रथम भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचाय, प्र० अज्ञात, भा० स० ।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (द्वितीय भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० अज्ञात, भा० स० ।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, प्र० जैन साहित्य प्रसारक

कार्यालय वम्बई, भा० स०, पृ० ८८, व० १९२७, आ० प्रथम।

✓प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्तवीर्याचार्य, प्र० जैनसाहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० स०, पृ० १२८।

✓प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, टीं० प० जयचन्द्र छावडा, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रन्यमाला वम्बई, भा० स० हि०, पृ० २२३, आ० प्रथम।

✓प्रवचन सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य; हि० टी० पाडे हेमराज, संपा० डा० ए एन उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल वम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० ५८५, व० १९३५, आ० द्वितीय।

✓प्रवचनसार परमागम—ले० कविवर वृन्दावन जी, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन हितैषी कार्यालय, भा० हि०, पृ० २३२, व० १९०८, आ० प्रथम।

✓प्रवचनसार टीका—(प्रथम खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि०, पृ० ३७३, व० १९२४, आ० प्रथम।

✓प्रवचनसार टीका (द्वितीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ३९६, व० १९२५, आ० प्रथम।

✓प्रवचनसार टीका (तृतीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३९३, व० १९२६; आ० प्रथम।

प्रश्न मालिका—ले० प० शिवचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० १२, व० १८८६।

प्रश्नोत्तर दीपिका—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० २४, व० १८९१।

प्रश्नोत्तर माणिक्य माला—ले० पूज्यपाद, भा० स०, पृ० १०७, व० १९०८।

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका—ले० अमोघ वर्ष, अनु० जिनवरदास, प्र० जैन-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय ववई, भा० सं० हिं०, पृ० २४, व० १९०८, आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—ले० सकल कीर्ति भट्टारक, टी० अनु० पं० लालाराम, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३०६, व० १९२७ आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर सर्वार्थ सिद्धि—सपा० बा० नेमीदास एडवोकेट, प्र० ला० जैनीलाल सहारनपुर, भा० हि०, पृ० ३१४, आ० प्रथम।

प्रशस्ति सग्रह—सपा० के० भुजवलि शास्त्री; प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० स० हि०, पृ० २२०, व० १९४१, आ० प्रथम।

प्रस्तुत प्रश्न—ले० जैनेन्द्र कुमार, भा० हि०, पृ० २५८, व० १९३९।

प्राकृत दशलाक्षणिक धर्म—ले० प० रइधु, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० २७; व० १९०७, आ० प्रथम।

प्राकृत भाव संग्रह—ले० देवसेनाचार्य, भा० प्रा०, (भाव सग्रहादि मे प्र)

प्राकृत व्याकरण—लेखक त्रिविक्रम, भा०, प्रा०, पृ० १३६, व० १८९६।

प्राकृत षोडश कारण जयमाला—प्र० जैन साहित्य मदिर सागर, भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ११६, व० १९२६, आ० प्रथम।

प्राकृत सुभाषित सग्रह—अनु० सपा० प्रो० शाह सूरत, भाषा प्रा०।

प्राचीन कलिंग या खारवेल—ले० गगाधर सामन्त, भा० हि०, पृ० १०८; व० १९२६।

प्राचीन जिनवाणी सग्रह—प्र० वर्धमान पुस्तकालय देहली, भाषा स० हि०।

प्राचीन जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९१६, आ० प्रथम।

प्राचीन जैन इतिहास (द्वितीय भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९२१, आ० प्रथम।

प्राचीन जैन इतिहास (तृतीय भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १२६, व० १६३६, आ० प्रथम।

प्राचीन जैन पद शतक—ले० विभिन्न, प्र० दुलीचन्द्र परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४८।

प्राचीन जैन लेख सग्रह—ले० बा० कामता प्रसाद, भा० हि०, पृ० १०२, व० १६२६।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पागल, पृ० ३६, व० १६११।

प्रायश्चित चूलिका—लेखक गुरुदास, टी. नन्दिगुरु, भा० स०, (प्रायश्चित सग्रह मे प्र०)।

प्राणप्रिय काव्य—लेखक मुनि रत्नसिंह, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० २१, व० १६११, आ० प्रथम।

प्रात स्मरण मंगल पाठ (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८६८।

प्रायश्चित ग्रथ–लेखक अकलकदेव, भा० स०, (प्रायश्चित सग्रह मे प्र०)।

प्रायश्चित सग्रह (४ ग्रथ)—लेखक विभिन्न आचार्य, सपा० प० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैनग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० प्रा०, पृ० २००, व० १६२१, आ० प्रथम।

प्रायश्चित समुच्चय (चूलिका सहित)—लेखक प० गुरुदास, अनु० प० पन्नालाल सोनी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स०, पृ० २१६, व० १६२६, आ० प्रथम।

प्रार्थनास्तोत्र—लेखक कवि भूधरदास व प० अर्जुनलाल सेठी, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १६ ... ३२।

प्रेमकली—सपा० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन ... पृ० १६०।

प्रेमोपहार (कविता)—लेखक कन्हैयालाल जैन; भा० हि०, पृ० ३२ व० १६१८।

प्रेमोपहार के खिले खिलाये फूल—सपा० कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन, भा० हि०।

परीक्षापत्र—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं आरा, भा० हि०, पृ० १४, व० १८८६।

पवन दूत काव्य—लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० पं० उदयलाल, काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० स० हि०, पृ० ५२ व० १६१४, आ० प्रथम।

पशुवलि निषेध—लेखक धीरेन्द्र कुमार शास्त्री भा० हि,० पृ० १८, व० १६३६।

पाइअलच्छी नाम माला—लेखक धनपाल; भा० प्रा०, पृ० १६४ व० १६१६।

प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ—स० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल आदि, प्र० प्रेमी अभिनन्दन समिति, भा० हि०, पृ० ७५१, व० १६४६।

पाइय सद्दमहण्णवो—सपा० प० हरगोविंददास टी शाह कलकत्ता भा० प्रा०, म० १६२८, (४ भाग)।

पाठ्य पूजा संग्रह (प्रथम भाग)—प्र० विशम्वरदास जैन रोहतक, भा० हि० सं०, पृ० ४८; व० १६४०, आ० प्रथम।

पाठ्यय पूजा संग्रह (दूसरा भाग)—प्र० विशम्वरदास जैन रोहतक, भा० हि० स०, पृ० ७८; व० १६४०, आ० प्रथम।

पांडव पुराण—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक; अनु० प० घनश्यामदास, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ४००, व १६१६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण (सचित्र)—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० नन्दनलाल जैन, प्रा० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३७८; व० १६३६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण अथवा जैन महाभारत—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० पं० श्रीनिवास जैन, प्र० जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०; पृ० ४२२, व० १६३६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण भाषा (छन्द बद्ध)—लेखक प० बुलाकीदास; भा० हि०; पृ० ४०४, व० १६०८।

पात्र केशरी स्तोत्र—लेखक आचार्य पात्र केशरी; अनु० प० लालाराम; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ५५, आ० प्रथम।

पात्र केसरि स्तोत्र सटीक—लेखक विद्यानद स्वामी, भा० स०, (तत्त्वानुशासनादि सग्रह मे प्र०)।

पार्श्वनाथ चरितम् (काव्य)—ले० वादिराज सूरि, भा० स०, पृ० १६८, व० १६१५।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी, स० प० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० २१६, व० १६१६, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी; अनु० प० श्रीलाल का ती०, प्र० जयचन्द्र जैन कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४२५, व० १६२२, आ० प्रथम।

पार्श्व पुराण (पद्य)—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८५, व० १६०७, आ० प्रथम,—पृ० १७६, व० १६१८, आ० द्वितीय।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६१।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० ला० जैनी लाल देवबद, भा० हि०; पृ० १२०।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी, स पा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वय सपा० देहली, भा० हि०, पृ० २६४, व० १८६८, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ स्तुति (भाषा कल्याण मन्दिर)—लेखक आचार्य कुमुदचन्द्र, हिं०, पद्य० अनु० प० बनारसीदास जी, प्र० मुन्शी अमनसिंह देहली, भा० हि०, पृ० १५, व० १८६६, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ स्तोत्र (लक्ष्मी स्तोत्र)—ले० पद्मनन्दि मुनि, भा० स०, पृ० ६, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

पार्श्वयज्ञ—लेखक प० अर्जुनलाल सेठी, स पा० प्रकाशचन्द्र सेठी; प्र० ग्रन्थ भ डार बम्बई, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९२३, आ० प्रथम।

पार्श्वाभ्युदयम (काव्य)-लेखक जिनसेनाचार्य, स, टी योगिराट्, प्र० सेठ नाथारग जी गाँधी आकलूज, भा० स०, पृ० २७१, व० १९०६, आ० प्रथम।

पावन प्रवाह—लेखक प० चैनसुखदास, अनु० प० मिलापचन्द्र; प्र० प० श्रीप्रकाश जयपुर, भा० स० हि०, पृ० ९६, व० १९४२, आ० प्रथम।

पाहुड दोहा—लेखक मुनि रामसिंह; स पा० प्रो० हीरालाल जैन; प्र० गोपाल अम्बादास चवेर कारजा, भा० अप० हि०, पृ० १३६; व० १९३३; आ० प्रथम।

पिता के उपदेश—ले० दयाचन्द्र गोयलीय; भा० हि०, पृ० २२, व० १९३१।

पिंडशुद्धि अधिकार व मुनि आहार विधि-प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७, व० १९२९; आ० दूसरी।

पी. एल जागरफी (प्रथम भाग)- सग्रह० सपा० प० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वय अलीगढ, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९२०, आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (द्वितीय भाग)—स० सग्र० प० प्यारेलाल जैन, भा० हि०, पृ० ५६, व० १९२१, आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (तृतीय भाग)—स पा० प० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वय अलीगढ, भा० हि०, पृ० २३६, आ० प्रथम।

पुण्यप्र भाव—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

पुण्याश्रव कथा कोष—लेखक रामचन्द्र मुमुक्षु, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ३२६; व० १९१६, आ० द्वितीय।

पुण्याश्रव कथा कोष—ले० रामचन्द्र मुमुक्ष, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० श्रीमती प्रसन्न बाई बम्बई, भा० स० हि०, पृ० २३९, व० १९०७।

पुण्याश्रव कथा कोष (सचित्र)—ले० परमानद विशारद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३६६, वर्ष १९३७, आ० प्रथम।

पुनर्विवाह जैन शास्त्रोक्त नहीं है—ले० त्रिलोकचन्द दौलतराम, भा० हि०, पृ० ९।

✓पुरातन जैन वाक्य सूची–सक० सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० प्रा० हि०।

✓पुराण और जैन धर्म—ले० हंसराज शर्मा, भा० हि०, पृ० १०६, वर्ष १९२६।

✓पुराण परीक्षा—ले० लालता प्रसाद जैन, प्र० स्वय कायम गज, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९०७, आ० प्रथम।

पुरुदेव चम्पु—ले० महाकवि अर्हद्दास, स० टी० व सपा० जिनदास शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैनग्रन्थ माला बम्बई, भाषा स०, पृष्ठ२१२, व० १९२८, आ० प्रथम।

✓ पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० परम श्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० स० हि०, पृष्ठ ११५, व० १९०४, आ० प्रथम।

✓पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वय देवबद, भा० स० हि०, पृष्ठ ४२, व० १९०९, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० प० मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४७९, व० १९२६, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० प० उग्रसेन एम ए., प्र० जैन एसोसियेशन रोहतक, भा० स० हि०, पृ० १६६, व० १६३३, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, भा० स०, पृ० १६, (मूल)।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० प० टोडरमल्ल जी व प० सत्यधर जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १२४, व० १६३०, आ० प्रथम।

पुष्पमाला—ले० श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १२०, व० १६३७।

पुष्पोपवन—अनु० पंडित मेहरचन्द जैन, भा० हि०, पृ० ३३१, व० १८८८, आ० प्रथम।

पूजाचर्या—ले० पण्डित मक्खन लाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३२, व० १६३१, आ० प्रथम।

पूज्यपाद श्रावकाचार—ले० पूज्यपादाचार्य, सम्पादक प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० स०,पृ० ३६, व० १६३१, आ० प्रथम।

पूर्ण दर्शन—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन सहारनपुर, भा० हि०; पृ० ३२ आ० प्रथम।

पोपों की कहानियाँ—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०।

फीरोजाबाद शास्त्रार्थ—भा० हि०, पृ० ३४, व० १८८८ आ० प्रथम।

बड़ी बहू बड़े भाग—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी।

वज्रदन्त का बारह मासा—ले० प० भूधरदास, प्र० वा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी, व० १८६८।

बड़े बाबा या भगवान महावीर—प्र० जैन सेवा दल दमोह, भाषा हिन्दी पृ० ६, व १६४४।

✓बनारसी नाम माला—ले० पण्डित बनारसीदास जी, सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० हिन्दी; पृ० १०८; व० १६४१, आ० प्रथम।

✓बनारसी विलास—ले० कविवर बनारसीदास, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३६८, व० १६०५, आ० प्रथम।

बम्बई प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—सग्र० सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ माणिकचन्द पानाचन्द जौहरी बम्बई, भा० हि०, पृ० २३२, व० १६२५, आ० प्रथम।

बम्बई मे शुद्ध दिगम्बराम्नाय मन्दिर निर्माण पत्रिका—प्र० जैन पचान बम्बई; भा० हि०, पृ० १६, व० १८८८।

बयाना काण्ड—प्र० बा० छोटेलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६, व० १६२६, आ० प्रथम।

ब्याहलो नेमनाथ का (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देववन्द, भा० हि०, व० १८६८।

ब्याहला बहु—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० साहु जुगमन्दरदास नजीबाबाद, भा० हि०, पृ० ४५, व० १६१५।

✓बलदेव भजनमाला—सपा० मूलचन्द गुप्त, भा० हि०, पृ० ११२।

बलिदान या अनोखा बदला—ले० फकीरचन्द वियोगी, प्र० हरिवश एण्ड को० देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६४०।

✓ब्रह्म विलास—ले० भैया भगवतीदास, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३०५, व० १६२६, आ० द्वितीय;—प्रथम आ० १६०४।

बहिरग शुद्धि अथवा मोक्ष पात्रता—ले० प० मक्खनलाल, प्र० श्री निवास शास्त्री कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३५, व० १६३८।

बगाल बिहार उड़ीसा के प्राचीन जैन स्मारक—सपा० ब्र० शीतलप्रसाद

प्र० वैजनाथ सरावगी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४७, व० १९२३, आ० प्रथम।

ब्रह्म गुलाल चरित्र—भाषा हिन्दी।

ब्राह्मणों की उत्पत्ति—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृष्ठ ३४, व० १९१८।

✔ बाइस परिषह—ले० प० भूधरदास, प्र० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि० पृ० १६, व० १९१२।

बाइस परिषह—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, पृ० १६, व० १८९८, आ० प्रथम।

✔ बाइस परिषह—प्र० बा० ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९०५, आ० प्रथम।

बारस अणुवेक्खा—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० प० मनोहर लाल व पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

बारह भावना—ले० बा० रामप्रसाद 'मधुर', प्र० जैन युवक मडल एटा, भाषा हिन्दी, पृ० २७, व० १९३६।

बारह भावना भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

बारह खड़ी सूरत—प्र० जैन ग्रथ प्रचारक पुस्तकालय देवबद, भा० हि०, पृ० २०, व० १९१२, आ० द्वितीय।

बारह मासा—ले० गुलशनराय, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ७, व० १९३१, आ० प्रथम।

बारह मासा नेमिराजुल—ले० कवि नयनसुखदास, संपा० पुष्प जैनभिक्खु, प्र० नानकचन्द बनारसी दास देहली, भा० हि०; पृ० ५६, व० १९३७, आ० प्रथम।

बारह मासा मुनिराज—ले० जीयालाल, प्र० जैन पुस्तकालय इटावा, भा० हि०; पृ० ७, व० १९०८, आ० द्वितीय।

बारह मासा राजल—ले० नयनसुखदास; प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०; पृ० ६; व० १९२४, आ० पंचम।

बारह मासा संग्रह–प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७।

बारह मासा संग्रह—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भाषा हि०, व० १८९८।

बारह मासा संग्रह—ले० पण्डित नयनानन्द, प्र० नरायणदास जगलीमल देहली, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १९००।

बालक भजन संग्रह (प्रथम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहला, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (तृतीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (चतुर्थ भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६; व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (पंचम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल, प्र० ब्र० पार्श्व सागर, कुन्थलगिरि, भा० हि०, पृ० २४, व० १९२४ आ० प्रथम।

बाल गणित—ले० दयाचन्द जैन, प्र० भारतवर्षीय अनाथ रक्षक जैन सोसाइटी हिसार, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९११; आ० प्रथम।

बाल चरितावली—ले० अज्ञात, भा० हि०।

बाल पुष्पांजलि—संपा० मा० शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक; भा० हि० पृ० १८, व० १९३४, आ० प्रथम।

बालबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय, प्र० रूपचन्द गोयलीय गढीअबुल्लाखाँ०, भा० हिंदी, पृष्ठ ८, व० १९१९, आ० नवम।

बाल बोध जैन धर्म (दूसरा भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय, प्र० बालकृष्ण रामचन्द्र घाणेकर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१२, आ० तृतीय।

✓बालबोध जैन धर्म (तीसरा भाग)—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय व लाला राम शास्त्री, प्र० भारतवर्षीय शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९१२, आ० प्रथम।

✓बालबोध जैन धर्म (चतुर्थ भाग)—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९१५, आ० दूसरी।

बालमित्र (भाग १ व २)—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० हि०।

बालविवाह—ले० ला० हजारीलाल, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा, इटावा, भा० हि०, पृ० २६, व० १९१४, आ० प्रथम।

बालशिक्षा—ले० बुधमल पाटनी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१५, आ० प्रथम।

बालिका विनय—सपा० प० चन्दाबाई, भा० हि०; पृ० ६४, व० १९२१।

बाहुबलि स्वामी व पच बालयति तीर्थंकर पूजा—लेखक प० दीपचन्द, प्र० रघुनाथदास प्रेमचन्द जैन तिखावर, भा० हि०, पृ० ८, व १९३९, आ० प्रथम।

बिगड़े का सुधार नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०।

बीस प्रश्नों का उत्तर—लेखक कुवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्त्व-प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१२।

बीस विहरमान जिन पूजा—लेखक प० जौहरीलाल, भा० हि०, पृ० ९६ व० १९२७।

बुड्ढे का ब्याह—लेखक बा० ज्योतिप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० २५, व० १९३८; आ० प्रथम।

✓बुधजनसतसई—लेखक कविवर बुधजन जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ९५, व० १९१०, आ० प्रथम।

बृहद् विमलनाथ पुराण—लेखक ब्र० श्रीकृष्णदास, अनु० प० गजाधर-

लाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, प्र० ३६६, व० १६१४, आ० प्रथम।

✓ बोधामृतसार—लेखक मुनि कुंथसागर जी; प्र० सेठ शंकरलाल गांधी बम्बई, भा० हि०, पृ० २४०, व० १६३७, आ० प्रथम।

बून्दीराज मे कन्याओं की रक्षा का कानून—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० २४, व० १६२६।

बोधप्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी श्रुतसागर, भा० प्रा० स०, (षटप्राभृतादि संग्रह में प्र०)।

बोध पाहुड—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सपा० बा० सूरजभान वकील, (षट पाहुड मे प्र०)।

भक्तामर और भोजभूप—लेखक पीताम्बर दास गुप्त, भा० हि०, पृ० १८८।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हिं० अनु० उदयलाल, काशलीवाल प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १४७।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हि० अनु० उदयलाल काशीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६, व० १६३०, आ० चतुर्थ।

भक्तामर कथा (यंत्र मंत्र सहित)—ले० पं० विनोदीलाल, सपा० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हिं० स०, पृ० १७१, व० १६३५, आ० प्रथम।

भक्तामर काव्य—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० नाथूराम डोगरीय; प्र० अनु० स्वयं बिजनौर, भा० सं० हिं०, पृ० ४८; व० १६३६; आ० प्रथम।

भक्तामर यंत्रमंत्र पूजन—प्र० चन्दाबाई दिग० जैनग्रंथमाला देहली, भा० हि०, पृ० २१, व० १६३८।

✓ भक्तामर स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० टी० ज्ञानचन्द्र जैन, प्र० ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, भा० सं० हिं०, पृ० ५०, व०, १६१२।

भक्तामरस्तोत्र—लेखक मानतुंगाचार्य, हिं० पद्यानुवाद-कवि हेमराज, टी सुमेरचन्द चन्द जैन उन्नीषु, प्रं० मित्र सेन मामचन्द जैन देववन्द, भा० स० हि०, पृ० ४१।

भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—ले० मानतुंगाचार्य, प्र० मुशीनाथूराम लमेचू मुड़ावरा, भ० स० हि०, पृ० ३२, व० १९०६, आ० प्रथम।

भक्तावर स्तोत्र (सार्थ)—ले० पांडे हेमराज, टी प० महेरचन्द, भा० हि०, पृ० २५।

✓भक्तामर स्तोत्रम्—ले० मानतुङ्ग; स. टी सिद्धिचन्द्र, हि० हेमचन्द्र; भा स हि, पृ० १६६, व० १८६४।

भक्तिप्रवाह या अपूर्वदर्शन—लेखक मुन्नालाल समगोरिया; प्र० जैन० उपयोगी वस्तु भंडार देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४४।

✓भगवती आराधना—लेखक शिवार्य, टी अपराजित सूरि, आशाधर, अमितगति, हिन्दी अनुवादक जिनदास पार्श्वनाथ; भाषा प्रा. संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १८७८, वर्ष १९३५।

भगवती आराधना—लेखक शिवार्य, टी पंडित सदासुख जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भाषा प्रा० हिन्दी, वर्ष १९३२।

✓भगवती आराधना सार—लेखक शिवार्य टी० पं० सदासुख जी, प्र० शाहमाणिकचन्द मोतीचन्द, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ६३८, वर्ष १९०९, आ० प्रथम।

✓भगवान कुन्दकुन्दाचार्य—लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ८२, वर्ष १९४२, आ० प्रथम।

भगवान धर्मादर्श—लेखक भगवानदास जैन, भाषा हिन्दी सं०, पृ० २८, वर्ष १८९०।

भगवान्नाम सागर—लेखक भगवानदास जैन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १७५; वर्ष १९०६।

भगवान नेमनाथ—लेखक राजमल लोढा, प्र० जैन साहित्य कार्यालय मन्दसोर, भाषा हिन्दी, पृ० १६, वर्ष १९३५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक मूलचन्द वत्सल, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भाषा हिन्दी; पृ० १६, वर्ष १९३१, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक बाबू कामताप्रसाद जैन, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हिन्दी, पृ० २८०, वर्ष १९२४, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका उपदेश—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४९, वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका दिव्य उपदेश—सपा० सम्र० ताराचन्द रपरिया, प्र० जैन भ्रातृ संघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४।

भगवान महावीर और उनका समय—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६२, व० १९३४, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध—ले० बा० कामताप्रसाद; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २७१, व १९२७, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और स्याद्वाद—ले० बाबू जयभगवान वकील, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भंडार पानीपत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, वर्ष १९३८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का अचेलक धर्म—ले० पंडित कैलाशचन्द्र, प्र० दिग० जैन संघ मथुरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५, वर्ष १९४५; आ० प्रथम।

भगवान महावीर का जहूर—ले० पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व० १९२८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का समय—लेखक कामताप्रसाद जैन, भाषा हिंदी, पृष्ठ ३१; व १९३२, आ० प्रथम।

भगवान महावीर की अहिंसा और भारत के देशी राज्यों पर उसका

प्रभाव—लेखक कामताप्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६, वर्ष १६३३, आ० प्रथम ।

भगवान महावीर की शिक्षाएं—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन भ्रातृ सघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११, वर्ष १६२५, भा० प्रथम ।

भगवान महावीर का आदर्श जीवन—लेखक चौथमल जी, भाषा हिंदी, पृष्ठ ६५७, वर्ष १६३१ ।

भगवान पार्श्वनाथ—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४१४, व० १६२६, आ० प्रथम ।

भगवान पार्श्वनाथ (सचित्र)—लेखक हरिसत्य भट्टाचार्य, अनु० मास्टर छोटेलाल, प्र० जैन साहित्य मन्दिर सागर, भा० हि०, पृ० ४३, व० १६२६, आ० प्रथम ।

भजन मंडली—लेखक चन्द्रसेन जैन वैद्य, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २८, व० १६१२, आ० प्रथम ।

भजन व आरती सग्रह—प्र० सुमतिलाल, भा० हि०, पृ० १६ ।

भजन सग्रह—सग्रह० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वय कटनी, भा० हि०, पृ० २६, आ० प्रथम ।

भट्टारक चर्चा—लेखक हीराचन्द नेमचददोशी, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६१७ ।

भट्टारक मीमांसा—लेखक प० दीपचन्द वर्णी, प्र० वीर कालूराम राजेन्द्रकुमार रतलाम, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२८ ।

भद्रबाहु चरित्र—लेखक रत्ननन्दि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६११, आ० प्रथम ।

भदैया पूजा संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, स० पृ० २६६, व० १६३५, आ० तृतीय ।

भरत बाहुबलि संवाद—सपा० प्र० त्रिलोकचन्द्र पाटनी केकडी, भा० हि०, पृ० ८०, व० १६२० ।

भरतेशवैभव (प्रथम भाग)—लेखक महाकवि रत्न; अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० रावजी सखारामदोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० २०८, व० १९३६, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (द्वितीय भाग)—लेखक महाकवि रत्न, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० गोविन्दजी रावजी दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३५८; व० १९४१, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (तृतीय भाग)—ले० महाकवि रत्न, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० स्वय अनु० शोलापुर, भा० हि०, पृ० १२२, व० १९४३, आ० प्रथम।

भ्रमनिवारण—लेखक न्यामतसिंह जैन, प्र० स्वय टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० ५६, व० १९३६, आ० प्रथम।

भविसदत्त चरित्र—लेखक पं० वनवारीलाल, प्र० वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार, भा० हि० (पद्य), पृ० १९३, व० १९१९, आ० प्रथम।

भविसयत्त कहा—लेखक धनपाल, सपा० सी. डी दलाल, भा० अप० प०, पृ० ३८१, व० १९२३।

भाग्य और पुरुषार्थ—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि०, पृ० ३८।

भाद्रपद पूजा सग्रह—सग्रह० प० कस्तूरचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०।

भारत का आदि सम्राट—लेखक स्वामी कर्मानन्द, प्र० दिगम्बर जैन सघ मथुरा, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९३८।

भारत के सपूत—लेखक मुन्नालाल समगौरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४३, व० १९४१, आ० प्रथम।

भारत गौरव (सम्राट चन्द्रगुप्त)—लेखक जिनेश्वर प्रसाद मायल, भा० हि०।

भारत वर्षीय दिगम्बर जैन डायरेक्टरी—प्र० सेठ ठाकुरदास भगवानदास

जौहरी बम्बई, भा० हि०, पृ० १४२३, व० १९१४, आ० प्रथम।

भावना—लेखक शोभाचन्द्र भारिल्ल, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९३६।

भावना बोध—लेखक श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३७।

भावना लहरी—लेखक विविध, भा० हि०, पृ० ४८, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भडार पानीपत; व०, १९३६।

भावना विवेक—लेखक प० चैनसुखदास, अनु० प० भँवरलाल, प्र० सद्बोध ग्रंथ माला जयपुर, भा० स० हि०, पृ० २८०, व० १९४१, आ० प्रथम।

भावना संग्रह—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २८, आ० प्रथम।

भावत्रिभङ्गी—लेखक श्रुत मुनि, भा० स०, (भाव संग्रहादि मे प्र०)।

भाव पाहुड—लेखक कुन्दकुन्द, भा० प्रा०, (अष्ट पाहुड व षट् पाहुड मे प्र०) अपरनाम भाव प्राभृत।

भाव संग्रहादि (४ ग्रंथ)—लेखक विभिन्न, सपा० प० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० स० प्रा०, पृ० ३२८, व० १९२१, आ० प्रथम।

भाषा एकीभाव—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, व० १८९८, भा० हि०।

भाषा कल्याण मन्दिर—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८९८, भा० हि०।

भाषा जैन नित्य पाठ संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४४।

भाषा नित्य पूजा (सार्थ)—अनु० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रंथ माला जबलपुर, भा० हि०; पृ० ५६, व० १९३९, आ० प्रथम।

भाषा पंच स्तोत्र—प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० हि०, व० १८९८।

भाषा पूजन संग्रह—संप्र० प्र० मुन्शी नाथूराम लेमचू, भा० हि०, पृ० १०१, व० १९०३, आ० द्वितीय।

भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९८८, आ० छठी।

✓भाषा भक्तामर—लेखक पांडे हेमराज, प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० हि०, व० १८९८।

✓भाषा भक्तामर व महावीराष्टक—लेखक पांडे हेमराज व पं० गजाधरलाल, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३९।

भाषा भूपाल चौबीसी—प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० हि०, व० १८९८।

✓भाषा वाक्यावली—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० श्रीमती कुन्दनकुमारी आरा, भा० हि०, पृ० १०, व० १८८९।

✓भाषा सूक्ति मुक्तावली-(सिंदूर प्रकरण सहित)—ले० पं० बनारसीदास, टी० पा० मुंशी अमनसिंह, प्र० स्वयं संपा० देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १८९३।

✓भूगोल मीमांसा—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९१२, आ० प्रथम।

✓भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० मुंशी अमनसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ११२, व० १८९०, आ० प्रथम।

• भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० संपा० बा० ज्ञानचंद्र, प्र० स्वयं दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९०९, आ० प्रथम।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० मुंशी अमनसिंह, प्र० श्रीमती सोनादेवी देहली, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९४१, आ० प्रथम।

भूभ्रमण भ्रान्ति—संपा० प्र० पं० प्यारेलाल, भा० हि०, पृ० १६; व० १९२० ।

भूभ्रमण सिद्धान्त और जैन धर्म—लेखक डा० निहालकरण सेठी, भा० हि०, पृ० १५ ।

भैरव पद्मावती कल्प—लेखक मल्लिषेणसूरि, भा० सं०, पृ० १९९, व० १९३७ ।

मदनपराजय—मूलग्रंथ संस्कृत, कवि नागदेव, हिन्दी अनुवादक प्रो० राजकुमार जैन, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ८), पृ० २४२, प्रकाशन १९४८ ।

मक्खनलाल भजन माला—लेखक पं० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३०, आ० प्रथम ।

मकरध्वज पराजय नाटक—लेखक कवि जिनदास, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १०५; आ० प्रथम ।

मक्सी पार्श्वनाथ—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

मंगलादेवी—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० जौहरीमल सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९२५, आ० प्रथम ।

मणिभद्र—ले० सुशील, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३२, व० १९१६ ।

मद्रास मैसूर प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद; प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ३३४, व० १९२८, आ० प्रथम ।

मध्यप्रान्त मध्यभारत व राजपूताने के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया, सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १९२६, आ० प्रथम ।

मनमोहन पंचशती—लेखक कविवर छत्रपति, संपा० सोनपाल जैन, प्र० स्वयं संपा० वडवानी, भा० सं० हि०, पृ० २३९, व० १९१७, आ० प्रथम ।

मनमोहनी नाटक—ले० प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि० ।

मनोरमा—अनु० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० १०४, व० १६११ ।

मनोरमा उपन्यास—ले० जैनेन्द्र किशोर, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० ।

मनोरमा चरित्र—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० रायल स्टेशनरी मार्ट देहली, भा० हि०, पृ० १२६, व० १६२६, आ० प्रथम ।

मनोरमा सुन्दरी—लेखक श्रीयुत प्रेमी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड़ (प्रथम भाग)—लेखक तारण तरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४२०, व० १६३७, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड (द्वितीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४५०; व० १६३८, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड (तृतीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ३१८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

मरणभोज—लेखक प० परमेष्ठीदास, प्र० सिंघई मूलचन्द मुनीम व शाह साकेरचन्द मगनलाल सरैया सूरत, भा० हि०, पृ० १०४, व० १६३७, आ० प्रथम ।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकल कीर्ति आचार्य, अनु० प० गजाधरलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० १८४, व० १६२३, आ० प्रथम ।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकलकीर्ति आचार्य, अनु० टी० प० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १४५ ।

महर्षि स्तोत्र—भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह में प्र०)।

महात्मा रामचन्द्र–लेखक प० मूलचन्द वत्सल, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड्या, सूरत, भा० हि०, पृ० २६, व० १९२७, आ० प्रथम।

महापुराण (प्रथम खड)–लेखक महाकवि पुष्पदन्त, संपा० डा० पी० एल. वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ६७२, व० १९३७, आ० प्रथम।

महापुराण (द्वितीय खड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, सपा० डा पी. एल वैद्य, प्र० मणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० अप०, पृ० ५६७, व० १९४०, आ० प्रथम।

महापुराण (तृतीय खड)–लेखक महाकवि पुष्पदन्त, सपा० डा० पी० एल० वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३१३, व० १९४१, आ० प्रथम।

महाबन्ध (महाधवल)–ले० भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी, सपा० अनु० प० सुमेरचन्द्र दिवाकर, प्र० भारतीयज्ञान पीठ बनारस, भा० प्रा० स० हि०, व० १९४७।

महाराज श्रेणिक–लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० एम० एल० जैन, प्र० सस्ता जैन साहित्य मन्दिर कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३४६, व० १९३८, आ० प्रथम।

महारानी चेलनी—लेखक बा० कामताप्रशाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १७०, व० १९३३, आ० द्वितीय।

महावीर—ले० बा० कामताप्रशाद, भा० हि०, पृ० ६३।

महावीर चरित्र—लेखक अशर्ग कवि, अनु० प० खूबचन्द शास्त्री, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड्या सूरत, भा० स० हिन्दी, पृ० २७७, व० १९१८, आ० प्रथम।

महावीर चाँदन गाँव नाटक–लेखक राजकँवार जन, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० २८, व० १९३७, आ०प्रथम।

महावीर जिन पूजा संग्रह—प्र० महावीरप्रशाद जैन अनाथाश्रम देहली, भा० हिन्दी स०, पृ० ६०, व० १६२६, आ० प्रथम।

महावीर जीवन विस्तार—अनु० ताराचन्द दोशी, प्र० श्री ज्ञानप्रसारक मडल सिरोही, भा० हिन्दी, पृ० ६०, व० १६१८, आ० प्रथम।

महावीर पुराण (सचित्र)–सपा० नन्दनलाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १६५, व० १६३६, आ० प्रथम।

महावीर पुराण—लेखक सकलकीर्तिदेव, अनु० प० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रथ उद्धारक कार्यालय वम्बई; भा० स० हिन्दी, पृ० १५५, व० १६१६, आ० प्रथम।

महावीर पुष्पाञ्जली—सग्रह उमरावसिह जैन, प्र० रतनलाल जैन मादीपुरिया देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६४१, आ० प्रथम।

महावीर स्वामी का जीवन—लेखक प० न्यामतसिह जैन, भा० हिन्दी, पृ० ४३।

महावीर स्वामी चरित्र—लेखक प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ सवाभाई सरवमलदास आरोन, भा० हिन्दी, पृ० ६८, व० १६३७, आ० प्रथम।

महावीराष्टक—लेखक भागचन्द्र, भा० स०।

महिपाल चरित्र—लेखक कुन्दनलाल जैन, प्र० स्वय हासी हिसार, भा० हि०, पृ० ७०, व० १६३३, आ० प्रथम।

✓महिलाओं का चक्रवर्तित्व–सपा० सक० कुमार देवेन्द्रप्रशाद, प्र० स्वय प्रेम मन्दिर आरा, भा० हिन्दी, व० १६२०, आ० प्रथम।

महिला रत्नमगन वाई–लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० २००, व० १६३३, आ० प्रथम।

✓महीचन्द जैन भजनावली–सग्रह सेठ छोटेलाल, प्र० स्वय सीकर, भा० हिन्दी, पृ० ४०, व० १६२६, आ० प्रथम।

महेन्द्रकुमार नाटक–ले० अर्जुनलाल सेठी, भा० हिंदी, पृ० ७७।

✓मंगतराय भजन माला–लेखक कवि मगतराय, भा० हि०।

मंगलमय महावीर—लेखक साधु टी० एल० वास्वानी, अनु० हेमचन्द्र मोदी, भा० हिन्दी, पृ० १०, व० १९४० ।

मानव धर्म—लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हिन्दी, ग्र थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९३०, आ० प्रथम ।

मानव धर्म और मांसाहार—लेखक धन्यकुमार, प्र० सन्मति पुस्तकालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १६; व० १९३८ ।

✓**मानिक विलास**—लेखक कवि माणिकचन्द, भा० हि०, १२५ पद ।

मांसभक्षण पर विचार—लेखक अम्बालाल दाधीच, प्र० भारत जैन महामडल लखनऊ, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१५, आ० द्वितीय ।

मार्गानुसारी के ३५ गुण—लेखक मा० रखबचन्द्र, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हिन्दी, पृ० १५, व० १९३० ।

मिथ्यात निषेध—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैनमित्रमडल देहली; भा० हि०, पृ० २४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

मिथ्यात्व नाशक नाटक—ले० प० पन्नालाल जन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि० ।

मीन संवाद—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार; भा० हि०, पृ० १६, व० १९२९ ।

मुक्ति—ले० प० प्रभाचन्द्र, प्र० जैन मित्रमडल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १२, वर्ष १९३६, आ० द्वितीय ।

मुक्ति दूत—ले० वीरेन्द्र कुमार जैन एम० ए०, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भाषा हिन्दी, व० १९४७ ।

मुक्ति और उसका साधन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैनमित्रमडल देहली, भाषा हि०, पृ० २८, व० १९२९, आ० प्रथम ।

✓**मुकद्दमा जैन मत समीक्षा**—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि० ।

✓**मुनि धर्म प्रदीप**—ले० आचार्य कुथ सागर, प्र० आचार्य कुथसागर ग्रन्थमाला शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६८, व० १९४१ ।

मुनि यमन सेन चरित्र—ले० बा० ज्ञानचन्द जैनी, प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १६०२।

मुनिराज का बारहमासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबद, भा० हि० व० १८६८।

मुनिसुव्रत काव्य—ले० कवि अर्हद्दास, अनु० टी० प० के० भुजवलि शास्त्री व प० हरनाथ द्विवेदी, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० स० हि०, पृ० २२१, व० १६२६, आ० प्रथम।

मुनिवंश दीपिका—ले० नयन सुखदास, प्र० जैन ग्रथरत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०।

मुनि सघ भजनावली—ले० प्र० शिवराम जैन रोहतक; भा० हि०, पृ० ८, व० १६३०।

मुहूर्त दर्पण—सग्र० अनु० प० नेमिचन्द्र, सपा० के० भुजवलि शास्त्री, प्र० स्वय आरा, भा० स० हि०, पृ० ८०, व० १६४८, आ० प्रथम।

मूर्ति खंडन निर्णय—प्र० ला० कन्हैयालाल देहली; भा० हि०, व० १८६७।

मूर्ति पूजा मडन—ले० प० मिहरचन्द दास जैन, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सुनपत, भा० हि०, पृ० १३, व० १८८८, आ० प्रथम।

मूर्त्ति पूजा मडन नूतन मत खंडन—लेखक प० शिवचन्द्र, भा० हि०, पृ० २१, व० १८८७।

मूर्त्ति मंडन—लेखक मुसद्दीलाल जैनी, प्र० दिग० जैन सभा निरपुडा, भा० हि०, पृ० १४, व० १६१३, आ० प्रथम।

मूर्त्ति मंडन प्रकाश—ले० प० न्यामत सिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२३, आ० प्रथम।

मुहणोत नैणसी की ख्यात—ले० मुहणोत नैणसी, भाषा हिन्दी राजस्थानी; प्र० अज्ञात।

मूल प्रति क्रमण—लेखक अज्ञात, भा० प्रा०।

मूलाचार—लेखक वट्टकेर स्वामी; सपा० प० मनोहरलाल, प्र० मुनि अनत कीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ४३२, व० १९१९, आ० प्रथम।

मूलाचार (पूर्वार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी, स० टी० वसुनन्द्याचार्य, संपा० पन्नालाल सोनी, गजाधरलाल व श्री लाल, प० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थ-माला बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ५२०, व० १९२०, आ० प्रथम।

मूलाचार (उत्तरार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी, स० टी० वसुनन्द्याचार्य, सपा० पन्नालाल सोनी, गजाधरलाल व श्रीलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रथ-माला बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ३४०, व० १९२३, आ० प्रथम।

मूलाचार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले शास्त्री, प्र० सेठ सखाराम देवचन्द शाह शोलापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ७००, व० १९४७।

✓**मूलाराधना**—ले० शिवार्य, टी० अपराजित सूरि (विजयोदया टीका), प० आशाधर (मूलाराधना), आचार्य अमितगति (स० श्लोक), हि० टी० अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १६७८, व० १९३५, आ० प्रथम।

✓**मेरी द्रव्य पूजा**—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, भा०, हि०, पृ० ८, व० १९२८।

मेरी भावना—लेखक प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली; भा० हि०, व० १९३१, –(इस पुस्तक के वीसियो विभिन्न सस्करण, विविध सस्थाओ और व्यक्तियो की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं)।

मेरी विकास कथा—ले० स्वामी सत्यभक्त, प्र० सत्यसदेश ग्रथमाला सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९४३, आ० प्रथम।

मैं कौन हूँ—ले० ज्योतिप्रसाद जैन, प्र० जैनमित्रमण्डल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३६, आ० प्रथम।

मैथिली कल्याण नाटकम्—ले० कवि हस्तिमल्ल, सपा प० मनोहरलाल

शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रन्थ माला वम्बई, भा० स०, पृ० १०४, व० १९१६, आ० प्रथम ।

मोक्ष पाहुड (मोक्ष प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्रा स० हि०, (अष्ट पाहुड व षट पाहुड मे प्र०) ।

मोटर यात्रा दर्पण—ले० प० शिवजी राम जैन, प्र० सेठ रतनलाल सूरज मल पाँड्या राची, भा० हि०, पृ० १६४, व० १९३८, आ० प्रथम ।

मोहिनी—ले० भैयालाल जैन, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यालय आगरा, भा० हि०, पृ० ८३, व० १९२४ ।

मोक्ष की कुञ्जी—प्र० आत्म जागृति कार्यालय बगडी (मारवाड), भा० हि०, पृ० ६४, व० १९२८, आ० प्रथम ।

मोक्ष पचाशिका—भा० स०, (तत्त्वानुशासनादि सग्रह मे प्र०) ।

मोक्ष मार्ग की सच्ची कहानियां—प्र० बुद्धिलाल श्रावक, भा० हि०, पृ० ८२, व० १९१२, आ० प्रथम, पृ० ८१, व० १९१७, आ० द्वितीय ।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ४९६, व० १९११, आ० प्रथम ।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४९८, व० १९३९, आ० प्रथम ।

✓मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १८९७, आ० प्रथम ।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, भा० हि०, पृ० ५२४, व० १९२५, आ० प्रथम ।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—लेखक प० टोडरमलजी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रथ माला वम्बई, भा० हि०, पृ० ५११, व० १९३७ ।

✓मोक्ष मार्ग प्रकाशक (द्वितीय भाग)—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३४४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० कुन्थु सागर (आचार्य); भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ ९२; वर्ष १९३७ ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, अनु० सपा० बनवारीलाल स्याद्वादी, प्र० सस्तासाहित्य भडार देहली, भा० स० हि०, पृ० १११, व० १९४०, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, हि० टी० प० लालाराम, प्र० सेठ गणेशी लाल उदयपुर, भा० स० हि०, पृ० २२८, व० १९४१, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, अनु० पन्नालाल सा० आ० प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० स० हि०, पृ० २७२, व० १९४५, आ० तृतीय (सचित्र) ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, हि० पद्य अनु० पं० छोटेलाल, प्र० जैन भारतीय भवन बनारस, भा० स० हि०, पृ० ६५, व० १९१२, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० स०, पृ० २०, व० १९३३, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र (बाल बोधिनी टीका)—ले० उमास्वामी, टी० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृष्ठ १६२ ।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक, अनु० प० नन्दनलाल, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक, अनु० प० नन्दनलाल, प्र० छोटे लाल परमानन्द देवरी, भा० स० हि०, पृष्ठ ५०, आ० प्रथम ।

मौर्य साम्राज्य के जैन वीर—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैनमित्र मण्डल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १७३, व० १९३२, आ० प्रथम ।

मृत्यु महोत्सव—हि० टी० प० सदासुखजी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा स० हिन्दी, पृ० २३ व० १९०८ आ० प्रथम ।

यज्ञोपवीत संस्कार—सपा० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० गांधी मगनलाल

शंकरलाल रतलाम, भा० हिन्दी, पृ० १४४, आ० द्वितीय।

यज्ञोपवीत संस्कार—सपा० ज्ञानचन्द्र वर्णी, प्र० गाधी मगनलाल शकर लाल रतलाम, भा० हि० स०, पृष्ठ ३५, व० १९३०, आ० प्रथम।

यमन सेन चरित्र—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वय लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १९०२, आ० प्रथम।

यशस्तिलक चम्पु—ले० सोमदेव, सपा० जे० एन० क्षीरसागर, भाषा सं०, व० १९४६, बम्बई (प्रथम उच्छ्वास)।

यशस्तिलकम् (२ खड)—ले० सोमदेव सूरि; स० टी० श्रुतसागर, सपा० काशीनाथ शर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृष्ठ ४१९, व० १९०३, आ० प्रथम।

यशोधर—सपा० विद्याकुमार व राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मण्डल अजमेर, भा० हि०, पृ० १७, व० १९३३, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९१४, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र (जसहर चरिउ)—ले० महाकवि पुष्पदन्त, सपा० डा० पी० एल० वैद्य, प्र० कारजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा० अप० हि०, पृ० १८८, व० १९३१, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, प्र० गिरनारीलाल जैन सहारनपुर, भा० अप० स० हि०, पृ० ३०४।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, सपा० टीत ए०, गोपीनाथ राव एम० ए०, प्र० सपा० स्वय तजौर, भा० स०; पृ० ५६, व० १९१२।

युक्त्यानुशासनम्—लेखक समन्तभद्राचार्य, स० टी० विद्यानन्द स्वामी, सपा० पडित इन्द्रलाल व श्री लाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० १९६, व० १९२०, आ० प्रथम।

यूरोप मे सात मास—ले० प्र० धर्मचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि०।

योग प्रदीप—ले० हर्ष कीर्त्ति मुनि, भा० स०, पृ० ३४, व० १८९७।

योग सार—लेखक अमितगति आचार्य, अनु० प० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भाषा स० हि०, पृ० २००, व० १९१८, आ० प्रथम।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० प्रो० जगदीश चन्द्र, सपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, प्र० रामचन्द्र जैन शास्त्र माला बम्बई, भाषा अप० हिन्दी, पृ० ३०, व० १९३७, आ० प्रथम।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० अप० हि०, पृ० ३६४, व० १९४१, आ० प्रथम।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० प० नन्दराम गोयल, प्र० दिग० जैन भ्रातृ संघ आगरा, भा० हि०, पृ० १४८, व० १९३८, आ० प्रथम।

योगि भक्ति—लेखक पूज्यपाद, टी० लालाराम, भा० संस्कृत हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह मे प्र०)।

रक्षाबंधन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं मुंडावरा, भा० हि०, पृ० १६, व० १९०२, आ० प्रथम।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, अनु दामोदर दास, प्र० मूलचन्द किसनदास कापड्या सूरत, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९४२, आ० चतुर्थ।

रक्षाबन्धन कथा—लेखक ब्र० प्रेमसागर पंच रत्न, प्र० जैन सुधारक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४०।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, सं० टी० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० माणिकचन्द्र ग्रंथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० ३६८, व० १९२५, आ० प्रथम।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० प्रभाचन्द्राचार्य, सपा० व प्रस्तावना लेखक पडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ४५०, व० १९२५, श्रा० प्रथम।

रत्नकरड श्रावकाचार—लेखक सन्तभद्राचार्य, हि० टी० पंडित सदासुख जी, प्र० बाबू सूरजभान वकील देववन्द, भा० हिन्दी, पृ० ३७६, व० १८९७, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, सपा० ब्र० भगवानदास, प्र० जैन दिगम्बर ग्र थ माला अहमदाबाद, भा० स०, पृ० १५६, व १९३२, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, सपा० पडित गौरीलाल, प्र० स्वय कलकत्ता, भा० स०, पृ० २७४, व० १९३८, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० पडित पन्नालाल सा० श्रा०, प्र० सरल जैन ग्र थमाला जबलपुर, भा० सं० हिन्दी, पृ० १२०, व० १९३९, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य० अनु० मुख्तार सिंह जैन, टी० मैनासुन्दरी जैन, प्र० दि० जैनपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हिन्दी, पृ० ७५, व० १९४१, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० टी० उग्रसेन एम० ए०, प्र० जैन मित्रमडल देहली, भा० स० हिन्दी, पृ० २७२, व० १९४०, श्रा० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मोहनलाल का० तीo, प्र० हरप्रसाद जैन लहरी, भा० स० हिन्दी, पृ० ११२, व० १९४३, श्रा० द्वितीय।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य अनु० गिरधर शर्मा, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हिन्दी, पृ० ६२, व० १९२५।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० प० सदासुख जी

काशलीवाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० ४६२, आ० सातवी।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० २८१, व० १६०८, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रमारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० २७६, व० १६१७, आ० तृतीय।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभदाचार्य, टी० प० सदासुखजी काशलीवाल, प्र० ब्र० नन्दलाल भिण्ड, भा० सं० हि०, व० १६३६, आ० प्रथम।

रत्न करंड श्रावकाचार—लेखक समतभद्राचार्य, टी० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ६६, व० १६३६।

रत्न करंड श्रावकाचार की प्रस्तावना—लेखक प० जुगलकिशोर मुख्तार, भा० हिन्दी, पृ० ८४, व० १६२४।

रत्न परीक्षक—लेखक घासीराम जैन, भा० हि०, पृ० ४४।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, टी० अनु० प० गौरीलाल, प्र० अनु० स्वय, भा० स० हि०, पृ० ८४, व० १६३३, आ० प्रथम।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ शास्त्री भा० स० हि०।

रत्नत्रय कुञ्ज—लेखक बैरिस्टर चम्पतराय, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६३०, आ० प्रथम।

रत्नत्रय धर्म—लेखक पन्नालाल सा०, आ० प्र० जैन भ्रातृ संघ सागर, भा० हिन्दी, पृ० ३८, व० १६४४।

रत्न कवि प्रशस्ति—भा० कन्नड।

रमणी रत्नमाला—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

✓रयणसार (सटीक)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० क्षुल्लक ज्ञान सागर; भा० प्रा८ हि०; पृ० १३० ।

रयणसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, सपा० प० पन्नालाल सोनी, भा० प्रा० स० पृ० ३२, वर्ष १९२० ।

रविव्रत उद्यापन - ले० भानुकीर्ति व भाऊ कवि, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड्या सूरत, भा० स०, पृ० १६, व० १९४३, आ० द्वितीय ।

रविव्रत कथा—लेखक कवि भाऊ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

रविव्रत कथा—ले० कवि भाऊ, प्र० जैन ग्रन्थकार्यालय देवरी, भा० हि० पृष्ठ १८ ।

रविव्रत कथा (वडी)–लेखक ज्ञानचन्द जैनी, प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९४१, आ० प्रथम, —(इसे ही देहली की कुछ माताओ ने प्रकाशित कराया) ।

रस भरी—लेखक प्र० भगवत स्वरूप जैन, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९४० ।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी—ले० प० टोडरमल्ल जी, सपा० मास्टर छोटेलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १६, व० १९३९ आ० द्वितीय ।

राजपुताने के जैन वीर—लेखक अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० हि० विद्या-मदिर देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५२, वर्ष १९३३, आ० प्रथम ।

राजुल पच्चीसी—लेखक कवि विनोदी लाल, प्र० बद्रीप्रसाद जैन काशी, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३, वर्ष १९०९, आ० प्रथम ।

राजुल भजन एकादशी—लेखक पडित न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, आ० तीसरी ।

रात्रि भोजन कथा (सचित्र)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६, व १९३९ ।

रामदुलारी—लेखक प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि० ।

रामवनवास (काव्य)—लेखक प० गुणभद्र जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६५, व० १६३६, आ० प्रथम ।

रिष्ट समुच्चय—लेखक दुर्गदेव, सपा० ए एम गोपानी, प्र० सिंघी जैन ग्रंथ माला बबई, भा० प्रा० सं० अ०, पृ० १८६, व० १६४५, आ० प्रथम ।

रेशम के वस्त्र—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ८ ।

लखनऊ परिचय—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० अवध प्रान्तीय दिग० जैन परिषद लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६, व० १६४४ ।

लघुनयचक्र—लेखक देवसेन, (नय चक्रादि सग्रह मे प्र०) ।

लघुबोधामृतसार—लेखक कुथसागर आचार्य, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ मगनलाल खमीचद जावरा, भा० स० हि०, पृ० १३, व० १६३८ ।

लघुशान्ति सुधा सिंधु—लेखक कुथसागर आचार्य, प्र० विजयलाल जैन डूगरपुर, भा० स० हि०, पृ० ४४, व० १६४८ ।

लघुसर्वज्ञसिद्धि—लेखक अनन्तकीर्ति, भा० स०, पृ० २३, व० १६१५ ।

लघुसामायिक या पाप प्रायश्चित—ले० चम्पालाल जैन, प्र० सेठ गुलाब चंद्र, भा० हि०, पृ० २० ।

लड़कों के विक्रय का ड्रामा—लेखक कवि ज्योतिप्रशाद, प्र० रा सा नेमदास देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १६३६, आ० प्रथम ।

लघयिस्त्रयम्—(अकलक ग्रथ त्रयम् तथा लघयिस्त्रादि सग्रह में प्र०) ।

लघयिस्त्र्यादि संग्रह—लेखक भट्टाकलक व अनन्त कीर्ति, सपा० प० कलप्पा भरमप्पा निटवे, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैनग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० २२४, व० १६१६, आ० प्रथम ।

लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक नेमिचन्द्र सि० च०, स० टी० केशववर्णी (जीव तत्त्व प्रदीपिका), हि०, टी० प० टोडरमल्ल (सम्यग्ज्ञान

चन्द्रिका तथा अर्थ सहष्टि अधिकार), सपा० गजाधरलाल व श्रीलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० प्रा० स० हि०, पृ० ९७४, व० १९१६, आ० प्रथम ।

✓लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक टोडरमल्ल, हि० टी० प० मनोहरलाल, प्र० रायचन्द्रजैनशास्त्र मालाबम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १७५, व १८१६, आ० प्रथम ।

✓लाटी संहिता—लेखक पांडे राजमल्ल, हि० अनु० प० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ३७६, व० १९३८, आ० प्रथम ।

✓लाटी सहिता—लेखक पांडे राजमल्ल, संपा० प० दरबारीलाल न्या० ती०, प्र० माणिकचद दिग० जैन ग्रथमाला वम्बई, भा० स०, पृ० १५६, व० १९३७, आ० प्रथम ।

लाला जम्बू प्रसाद—लेखक ऋषभदास जैन, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ११५ ।

लावनी कर्त्ता खडन का फोटू—लेखक ज्योतिप्रशाद, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ८० व० १९०५ ।

लिंग पाहुड़ (लिङ्ग प्राभृत)—लेखक कुन्दकुन्द, (अष्टपाहुड व षटप्राभृतादि सग्रह मे प्र०) ।

✓ लिंगबोध व्याकरण—लेखक प० पन्नालाल बाकलीवाल, भा० हि०, पृ० २१ ।

वाणिकप्रिया (कविता सग्रह)—लेखक अज्ञात, भा० हि०, ।

✓वनवासिनी – लेखक उदयलाल काशलीवाल, प्र० हि० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४३, व० १९१४, आ० प्रथम ।

वर्ण और जाति भेद लेखक बा० सूरजभान वकील प्र० चद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २७, व० १९९९, आ० प्रथम ।

वर्तमान चतुर्विंशति जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन,

संपा० प्र० बी० एल० जैन बुलन्दशहरी, भा० हि०, पृ० ८०, आ० प्रथम ।

वर्तमान चौबीस जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन, प्र० जैन धर्म प्रचारणी सभा देवबन्द, भा० हि०, पृ० ६२, व० १८९६; आ० प्रथम ।

वर्तमान चौबीस तीर्थ कर पच कल्याणक पूजा—ले० कवि वृन्दावन, प्र० विद्यादानोपदेश प्रकाशनी जैन सभा वर्धा, भा० हि०, पृ० ६२ ।

वर्तमान जिन चतुर्विशति पूजा विधान—ले० वालाप्रशाद कानूनगो, प्र० स्वय रामपुर स्टेट, भा० हि०, पृ० १३६, व० १९३९, आ० प्रथम ।

वर्द्धमान पराण (पद्य)—लेखक कवि नवलशाह, सपा० पन्नालाल सा० शा०, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४२६, व० १९४२; आ० प्रथम ।

वरांगचरित्र—ले० जटासिंहनन्दि, सपा० डा. ए० एन उपाध्ये, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३६५, व० १९३८, आ० प्रथम ।

वरांगचरित्र (भाषा पद्य)—ले० कवि० कमलनयन, सपा० बा० कामता प्रशाद, प्र० जैन साहित्य समिति जसवन्त नगर, भा० हि० पृ० १३६, व० १९३९, आ० प्रथम ।

वसुनन्दि श्रावकाचार—ले० वसुनन्दि आचार्य, टी० अनु० बा० सूरज-भान वकील, प्र० अनु० स्वय देवबद, भा० स० हि०, पृ० ९५, व० १९१६ आ० प्रथम ।

वाग्भट्टालङ्कार (सटीक)—ले० वाग्भट्ट, प्र० पन्नालाल जैन देशहितैषी आफिस बम्बई, भा० सं० ।

वास्तुसार प्रकरण—ले० ठक्कर फेरु; टी० प० भगवानदास भा० स० हि०, पृ० २१६ ।

विक्रान्त कौरव नाटकम्—ले० हस्तिमल्ल, स० प० मनोहरलाल, प्रकाशक

माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० प्र०, पृ० १७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

विचार पुष्पोद्यान—अप्र० दौलतराम मित्र, प्र० साहित्य रत्नालय विजनौर भा० हि०, पृ० २४८, व० १९२९, आ० प्रथम।

विजातीय विवाह आगम और युक्ति दोनों से विरुद्ध है—ले० श्रीलाल पाटनी, प्र० संयुक्त प्रान्तीय खण्डेलवाल सभा, भा० हि० पृ० ११२ आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमांसा—ले० पं० परमेष्ठी दास, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३५, आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमांसा—ले० दरबारी लाल न्यायतीर्थ, प्र० जौहरीमल सर्राफ देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १९२५।

विज्ञप्ति त्रिवेणी—सपा० मुनि जिन विजय; भा० स० हि०, पृ० १६६, व० १९१५।

विद्यमान विंशति तीर्थङ्कर पूजा—ले० कवि थानसिंह, संपा० चन्द्र लाल शास्त्री, प्र० नेमिचंद बाकलीवाल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९२३ आ० प्रथम।

विद्यार्थी जैन धर्म शिक्षा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २९६, व० १९३५, आ० प्रथम।

विद्युतचोर—ले० पीतराम जैन, प्र० फूल चंद सोगानी कोटा, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९३६, आ० प्रथम।

विद्वद्जन बोधक (प्रथम भाग)—ले० पं० पन्नालाल सिंघी दूनी वाले, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५३६, व० १९२५ आ० प्रथम।

विद्वद्रत्न माला (प्रथम भाग)—ले० पं नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९१२, आ० प्रथम।

विदेशों में जैन धर्म—ले० बा० देवी सहाय, भा० हि०, पृ० २६ व० १९०७।

विदेह क्षेत्रीय विंशति तीर्थङ्कर संस्कृत पूजा—ले० प० रामप्रसाद भा० सं०, पृ० १२, व० १९२५।

विधवाओं और उनके संरक्षकों से अपील—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२८, आ० प्रथम।

विधवाओं की दुर्दशा का दिग्दर्शन—ले० मोती लाल पहाड्या भा० हिन्दी।

विधवा विवाह—ले० मोतीलाल पहाड्या, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२६।

विधवा विवाह की असिद्धता—ले० प० श्री लाल, भा० हि०, पृ० ४५ व० १९०७।

विधवा विवाह खडन—ले० प० झम्मनलाल तर्क तीर्थ, भा० हि० पृ० ६२।

विधवा कर्तव्य—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९१८, आ० प्रथम।

विधवा चरित्र—ले० बा० भोलानाथ जैन, भा० हि०, पृ० ४८।

विधवा विवाह प्रकाश—ले० रघुवीर शरण जैन, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३२, आ० प्रथम।

विधवा विवाह समाधान—ले० सव्यसाची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १८, व० १९२९ आ० प्रथम।

विधवा संबोधन—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२२, (कविता)।

विनती संग्रह—प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी पृ० ५६, व० १९२६, आ० प्रथम।

विमल नाथ पुराण—ले० सकल कीर्ति भट्टारक, अनु० प० गजाधर लाल प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १०४ व० १९२३, आ० प्रथम।

विमल नाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० गजाधर लाल, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० २०८, व० १९३६, आ० द्वितीय ।

विमल पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास अनु० श्रीलाल काव्य तीर्थ, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १४३, आ० प्रथम ।

विमल पुराण (भाषा)—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० श्री लाल का० ती०, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १२६, आ० द्वितीय

विमल पुष्पांजली (कविता)—ले० मैनाबाई, प्र० शम्भूलाल दयाचन्द्र भा० हि०, पृ० १६ ।

विमल श्रद्धांजली—ले० मैनाबाई, प्र० दयाचन्द बुखिया इलाहाबाद, भा० हि० पृ० १६, व० १९४७,

विरोध परिहार—ले० प० राजेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ४४८, व० १९३८, आ० प्रथम ।

विवाह और हमारी समाज—ले० पंडिता ललिता कुमारी, प्र० सुशीला देवी पाटणी जयपुर, भा० हि०, पृ० ४१, व० १९४०, आ० प्रथम ।

विवाह का उद्देश्य—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१९ ।

विवाह के समय पुत्री को शिक्षा और आशीर्वाद—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १५, व० १९३० ।

✓विवाह क्षेत्र प्रकाश—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १७५; व० १९२५, आ० प्रथम ।

विवाह समुद्देय—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० साहू मुकन्दी लाल नजीबाबाद; भा० हि०, पृ० ४० व० १९२२, आ० प्रथम ।

✓विवाह समुद्देश—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० हि० ।

विश्वप्रेम और सेवाधर्म—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० मामनचन्द प्रेमी देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९२८, आ० प्रथम ।

विश्व लोचन कोष—ले० श्रीधर सेनाचार्य, अनु० नन्दन लाल शर्मा, प्र० गाधी नाथारगजी वम्बई, भा० स० हि०, पृ० ४२१, व० १९१२, आ० प्रथम।

विशाल जैन सघ—ले० वा० कामता प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि० पृ ७५, व० १९२९, आ० प्रथम।

विष्णुकुमार—ले० प० जुगमन्दिरदास, प्र० स्वय हिम्मतनगर (आगरा), भा० हि०, पृ० ४७, व० १९२८, आ० प्रथम।

विषापहार भाषा—ले० अचलकीर्ति, प्र० जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय देवबद, भा० हि०, पृ० ४, व० १९०६, आ० प्रथम।

विषापहार स्तोत्र—ले० धनञ्जय कवि; भा० स०, (पच स्तोत्र तथा काव्यमाला सप्तम् गुच्छक मे प्र०)

वीतराग स्तोत्र—ले० हेमचन्द्र, भा० स०, पृ० ७७, व० १९१४।

वीर अकलंक नाटक—ले० प० सिद्धसैन व गुणभद्र, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७५, व० १९३७, आ० द्वितीय।

वीर आह्वान—ले० धन्यकुमार जैन, प्र० दिग० जैन छात्र हितकारिणी सभा सागर, भा० हि०, व० १९४०।

वीर गुटका—सग्र० सपा० आनन्ददास जैन, प्र० धर्मपत्नी नन्हेमल देहली, भा० हि०, पृ० ३५०, व० १९४१, आ० प्रथम।

वीरचन्दराघव जी गाँधी का जीवन चरित्र—भा० हि०, पृ० ३९ व० १९१८।

वीर चरित्र—(पद्य) ले० राजधरलाल जैन, सपा० प्र० सिंघई मिट्ठनलाल केवलारी, भा० हि०, व० १९२६, आ० प्रथम्।

वीर जीवन—ले० लज्जावती विशारद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ११७, व० १९४१, आ० प्रथम।

वीर निर्वाण पूजा—ले० दुलीचद जैन, प्र० जैन पाठशाला सतना, भा० हि०, पृ० १०, व० १९२७, आ० प्रथम।

वीर पाठावली—ले० वा० कामताप्रशाद, प्र० मूलचद किसनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ११४, व० १९४२, आ० द्वितीय।

वीर प्रभु के नाम खुली चिट्ठी—ले० लोकमणि जैन, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० २८, व० १९४० ।

वीर पुष्पांजली—ले प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० प्रेममदिरआरा, भा० हि० (पद्य), पृ० ५६, व० १९२१, आ० प्रथम ।

वीरमाला—सग्र० प० आनददास जैन, प्र० मुल्तानसिंह देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४० ।

वीर वन्दना—सग्र० सपा० लक्ष्मीचन्द जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ४४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

वीर स्तुति—ले० अज्ञात, भा० हि० ।

वीर सन्देश—ले० दयाराम जैन, प्र० वर्द्धमान साहित्य मन्दिर लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६ ।

वृद्धविवाह—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २६, व० १९१४ ।

✓वृन्दावन विलास—ले० कविवर वृन्दावन, सपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनहितैषीकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९०-, आ० प्रथम ।

वृहत् कथा कोष—ले० हरिषेणाचार्य, सपा० डा ए एन उपाध्ये, प्र० भारतीयविद्याभवन बबई, भा० स०, पृ० ४०२, व० १९४३, आ० प्रथम ।

वृहज्जिनवाणी सग्रह—सपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रथकार्यालयकलकत्ता, भा० हि० स०, पृ० ७६४, व० १९४१, आ० आठवी ।

वृहज्जैन नित्य पाठ सग्रह—सपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हि० स०, व० १९२९ ।

✓वृहज्जैन शब्दार्णव (प्रथम खड)—ले० सपा० मास्टर विहारीलाल

चैतन्य, प्र० मनेजर स्वल्पार्घ ज्ञान रत्नमाला बाराबकी, भा० हि०, पृ० २८६, व० १६२५, आ० प्रथम।

वृहज्जैन शब्दार्णव (द्वितीय खड)—सग्र० मा० विहारीलाल, सपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० ३६१, व० १६३४, आ० प्रथम।

वृहज्जैनेन्द्र यज्ञ—ले० मुनीन्द्रसागर, प्र० जिनमति बाई परनवाडा, भा० स० हि०, पृ० ६८, आ० प्रथम।

वृहत् द्रव्य सग्रह—ले० नेमिचद्राचार्य, स० टी० ब्रह्मदेव, हि० अनु० जवाहरलाल, सपा० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० २१८, व० १६१६, आ० द्वितीय।

वृहन्नय चक्रम—ले० माइल्लधवल, भा० प्रा० स०, पृ० ११२ (नय चक्रादि सग्रह मे प्र०)

वृहत् निर्वाण विधान और त्रैलोक्य जिनालय विधान—ले० कवि जगतराय, सपा० वुद्धिलाल श्रावक, प्र० मूलचद किसनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२२, आ० प्रथम।

वृहत् विमलनाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० पृ० ३६६, व० १६३४, आ० प्रथम।

वृहत्सम्मेदशिषर महात्म्य—ले० ब्र० मनसुखसागर, सपा० प० मूलचद, प्र० रघुनाथप्रशाद ऐत्मादपुर, (आगरा), भा० हि०, पृ० १८२, व० १६०६, आ० प्रथम।

वृहत्सर्वज्ञ सिद्धि—ले० अनन्तकीर्ति आचार्य, भा० स०, पृ० ७५, व० १६१५।

वृहत्स्वंयभू स्तोत्र (मूल) ले० समन्तभद्राचार्य, भा० स०, पृ० १४, व० १६०५।

वृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, अनु० प० मुन्नालाल, प्र० प्यारेलाल पचरत्नखुरई; भा० स० हिन्दी, पृ० ७६, व० १६१६, आ० प्रथम।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि० पृष्ठ ३१६, व० १९३२, आ० प्रथम।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, अनु० दीपचद पाडया, प्र० अर्हत्प्रवचन साहित्य मदिर केकडी (अजमेर) भा० स० हि०, पृ० ४०, व० १९४० आ० प्रथम।

बृहत्सामायिकपाठ—सपा० अनु० प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० स० प्रा० हि०, पृ० १९६, व० १९३९।

✓वेद क्या भगवद्वाणी हैं—ले० मोऽह शर्मा, प्र० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि० पृ० १८, व० १९३३, आ० दूसरो।

✓वेद पुराणादि ग्रंथों मे जैन धर्म का अस्तित्त्व—ले० प० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १९३० आ० प्रथम।

✓वेद मीमांसा—ले० प० पुत्तुलाल, प्र० ब्र० शीतल प्रसाद सूरत, भा० हि० पृ० ६६; व० १९१७, आ० प्रथम।

✓वेद समालोचना—ले० प० राजेन्द्र कुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्वाला, भा० हि०, पृ० ११६, व० १९२०; आ० प्रथम।

✓ वेदों मे विकार—ले० स्वा० कर्मानद, प्र० शास्त्रार्थ सघ अम्वाला, भा० हि० पृ० २३, व० १९३६, आ० प्रथम।

✓वैदिक ऋषिवाद—ले० स्वा० कर्मानद, प्र० शास्त्रार्थ सघ अम्वाला, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९३६, आ० प्रथम।

✓वैद्यसार—ले० पूज्यपाद स्वामी, अनु० सपा० सत्यधर का० ती०; प्र० जैन सिद्धान्तभवन आरा, भा० स० हि०, पृ० ११० व० १९४२ आ० प्रथम।

वैराग्य भावना—ले० भूधरदास जी, भा० हि०, पृ० ८, व० १९०३।

वैराग्य शतक—ले० गुणविजय आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० १५, व० १९३८, आ० प्रथम।

वेश्यानृत्यस्तोत्र—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि० स०, पृ० १६, व० १९२८।

वैराग्य मणिमाला—ले० श्री चन्द्राचार्य, भा० स०; (ग्रन्यत्रयी तथा तत्त्वानु शासनादि सग्रह में प्र०)

शकुन सिद्धान्त दर्पण—सपा० सुमेरचद उन्नीषु, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ५६, व० १६३८, आ० प्रथम।

शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य, स० टी० अभय चन्द्र सूरि (प्रक्रिया सग्रह), सपा० पं० ज्येष्ट राम मुकुन्द जी शर्मा, प्र० पन्नालाल जैन बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ४८८, व० १६०७।

✓शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य, स० टी० यक्षवर्म (चिंतामणि वृत्ति), सपा० पडित मुन्नालाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भा० स० हि०, पृ० ८०, व० १६२८।

✓शब्दार्णव चन्द्रिका—ले० सोमदेव सूरि, सपा० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था काशी भा० सस्कृत, पृ० २६६, व० १६१५, आ० प्रथम।

✓श्वेताम्बर मत समीक्षा—ले० प० अजित कुमार शास्त्री, प्र० प० वशीधर सोलापुर, भा० हि०, पृ० २७६, व० १६३०, आ० प्रथम।

श्रद्धा ज्ञान और चारित्र—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद, प्र० साहित्य मडल देहली, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६३२, आ० प्रथम।

श्रगार वैराग्य तरगिणी—ले० सोमप्रभाचार्य, प्र० जगजीवन सुन्दर श्रावक भा० स० पृ० १६, व० १८८५, आ० प्रथम।

श्रमण नारद—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३० व० १६१८।

श्रमण भगवान महावीर—लेखक मुनि कल्याण विजय, भा० हि०, पृ० ४३२, व० १६४१।

✓श्रावक धर्म प्रकाश—लेखक सूर्य सागर आचार्य प्र० श्रीमंत सेट ऋषभ कुमार खुरई, भा० हि०, पृ० ११०, व० १६३१, आ० द्वितीय।

श्रावक धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हि०, पृ० ४५० वर्ष १९२४।

श्रावक धर्म संग्रह—लेखक पंडित दरयावसिंह, प्र० स्वयं इन्दौर, भा० हि०, पृ० ३०४, व० १९१५, आ० प्रथम।

श्रावक नियमावली—लेखक नेमिसागर ऐलक, प्र० श्राविका संघ देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

श्रावक प्रतिक्रमण—अनु० नन्दनलाल वैद्य, प्र० मूल चन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भाषा हि०, पृ० ६४ व० १९२४, आ० प्रथम।

✓श्रावक प्रति क्रमणसार—ले० कुन्थसागर आचार्य, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रंथमाला शोलापुर, भा० सं० हि० पृ० १०६; व० १९४२, आ० प्रथम।

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक जयदयालमल्ल, प्र० स्वयं गन्नौर (देहली), भा० हि० पृ० १४८, व० १९०८, आ० दूसरी।

श्रावकवनिता बोधिनी—लेखक जय दयाल मल्ल, प्र० जीवाकोर बाई महिला ग्रन्थ भंडार बम्बई, भा० हि०, पृ० १०६, व० १९३१, आ० छटी,

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक प्र० भारतीय दिग० जैन महिला परिषद बम्बई, भा० हि०, पृ० १२०; व० १९२०, आ० चतुर्थ।

श्रावकाचार—लेखक अमित गति आचार्य, हि० टी० पंडित भागचन्द, प्र० मुनि अनन्त कीर्त्ति दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भाषा सं० हिन्दी, पृ० ४४२, वर्ष १९२२, आ० प्रथम।

श्रावकाचार (प्रथम भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक, अनु० पंडित नन्दनलाल वैद्य, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा सं० हिन्दी, पृष्ठ १५५ वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

श्रावकाचार (द्वितीय भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक, अनु० पंडित नन्दन लाल वैद्य, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३४, व० १९२५, आ० प्रथम।

श्रावकाचार का सच्ची कहानियां—अनु० सपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्रकाशक

जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० ६६; व० १९३६, आ० प्रथम।

श्राविका धर्म दर्पण—लेखक बाबू सूरज भान वकील, प्र० कुलवतराय जैन भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५७, व० १९३९, आ० प्रथम।

श्राविका धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालल व्यावर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १९२४।

श्री देवाधि देव रचना—लेखक कवि हरजसराय, अनु० सपा० श्रीलाल जैन, प्र० गुरुदत्तमल पन्नालाल कसूर, भा० स० हिन्दी पृ० ८०; व० १९१५, आ० प्रथम।

श्रीपाल—लेखक कन्हैलालाल जैन, भा० हि०, पृ० १३८, व० १९३०।

श्रीपाल चरित्र (पद्य)—लेखक कवि परमल्ल, अनु० मास्टर दीपचद, प्र० मूलचद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृष्ठ १७४, व० १९१७, आ० द्वितीय।

श्रीपाल चरित्र समालोचना—लेखक वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्रकाशन चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१८, आ० प्रथम।

श्रीपाल नाटक—प्र० दिग० जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९२३, आ० प्रथम।

श्री धवल—देखो 'षटखडागम्'।

श्री पाल पुराण (सचित्र)—ले० कवि परिमल्ल, सपा० परमानद सिंघई, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९३५ आ० प्रथम।

श्रीपुर पार्श्वनाथस्तोत्र—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भा० स०, पृ० ३१, व० १९२०।

श्रीमद्दयानन्द परिचय—लेखक स्वा० कर्मानद, प्र० दिग० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९३६ आ० प्रथम।

श्रुत भक्ति—लेखक पूज्यपाद; भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि सग्रह में प्र०)

श्रुतपञ्चमी क्रिया (श्रुतावतारादि)–भा० सं०, पृ० २८ व० १९०५।

✓श्रुत स्कंध—ले० ब्रह्म हेम चन्द्र, भा० प्रा०, (तत्वानुशासनादि संग्रह मे प्र०)

✓श्रुतस्कंध विधान—ले० पं० पन्नालाल दूनी वाले, प्र० मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२ व० १९२७ आ० प्रथम।

श्रुतावतार कथा और श्रुतस्कंध विधानादि–संग्रह लालाराम जैन, प्र० जैन हितैषी कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९०८, आ० प्रथम।

श्रेणिक चरित्र—लेखक शुभचंद्र भट्टारक, अनु० पंडित गजाधर लाल, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३१९, व० १९२८, आ० प्रथम।

श्रेणिक चारित्रसार–लेखक ब्रह्मनेमिदत्त, अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, आ० प्रथम।

श्रुतावतार–लेखक इन्द्रनन्दि, भा० स०, (तत्वानुशासनादि संग्रह मे प्र०)

श्रुतावतार—लेखक विबुध श्रीधर, भाषा स०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह मे प्र०)।

शास्त्रोच्चार भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि०; व० १८९८।

शान्ति कथा—ले० द्वारकाप्रशाद जैन, प्र० सागरमल चम्पालाल बंगलौर, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९४१, आ० द्वितीय।

शान्तिनाथ चरित्रम्—ले० भावचन्द्र, भा० स०, पृ० १६९, व० १९१९—अहमदाबाद।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक, अनु० पं० लालाराम; प्र० सिंघई दुलीचन्द पन्नालाल देवरी, भा० हि०, पृ० ४०७, व० १९२३, आ० प्रथम।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक; अनु० पं० लालाराम,

प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३९२; व० १९३६, आ० तृतीय।

शान्ति भक्ति—ले० पूज्यपाद, भा० स० हि०, (दशम कल्यादि संग्रह में प्र०)

शान्ति महिमा—ले० मोतीलाल, भा० हि०, पृ० ९२, व० १९१८।

शान्ति सागर चरित्र—ले० प० वंशीधर, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३२।

शान्ति सागराचार्य महाराज का जीवन चरित्र—सं० प्र० गुलशनराय देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९३२, आ० प्रथम।

शान्ति साधना (पद्य संग्रह)—प्र० चन्द्रकुमार शास्त्री मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३५, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग १)—ले० प० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग २)—ले० प० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६।

शान्तिसुधा सिन्धु—ले० कुंथसागर आचार्य, टी० प० लालाराम, प्र० चैनसुखदास गंभीरमल पांड्या कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४२२, व० १९४१।

शान्ति सोपान (परमानन्द स्तोत्र आदि पाठ संग्रह)—अनु० ब्र० ज्ञानानन्द, प्र० अहिंसा प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९२२, आ० प्रथम।

शान्तिमार्ग—ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९१८।

शान्ति वैभव—ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ६०, व० १९१९।

शारदाष्टक—ले० प० बनारसीदास, भा० हि०, व० १९०७।

शास्त्रसार समुच्चय—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, टी० शीतल प्रसाद वैद्य, प्र० टीकाकार स्वयं देहली, भा० स० हि०, पृ० ६०, व० १९२४, आ० प्रथम।

शास्त्रसार समुच्चय (मूल)—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)

शास्त्रार्थ अजमेर—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९१३, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ अजमेर का पूर्वरंग—प्र० चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०; पृ० १२१, व० १९१२; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ नजीबाबाद—प्र० जैन छात्रसमाज सवतनगर, भा० हि०, पृ० ४९, व० १९१७, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ पानीपत (प्रथम भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला; भा० हि०, पृ० १५२, व० १९३४, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थपानीपत (द्वितीय भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० १७६, व० १९३४; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ फीरोजाबाद—भा० हि०, पृ० ५१, व० १९१४, आ० चतुर्थ।

शिक्षा चन्द्रिका—ले० प० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १८७४, आ० प्रथम।

शिक्षा जकड़ी—ले० कवि भूधरदास, प्र० मुंशी अमरसिंह देहली, भा० हि०, पृ० ६, आ० प्रथम।

शिक्षा पत्री (पद्य)—ले० प० मेहरचन्द, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० १२, व० १८९४,—(शेख सादी के पन्पदनामे का हि० अनु०)

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण—ले० पं जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० २२, आ० प्रथम।

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण की समालोचना—ले० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० जैन पंचायत देहली, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९२० आ० प्रथम।

शिखर महात्म्य—ले० मुन्नालाल, प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय देवबंद; भा० हि०, पृ० ११, व० १९११, आ० द्वितीय।

शिखर महात्म्य—भा० हि०, पृ० १४।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक १)—ले० मास्टर शिवरामसिंह प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक २)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि० पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ३)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३४, आ० द्वितीय।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ४)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३३, आ० प्रथम।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ५)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० पृ० ३२ हि०, आ० प्रथम।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ६)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृष्ठ ३२, व० १९३६, आ० प्रथम।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ७)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हिंदी, पृष्ठ ३२, व० १९३७, आ० प्रथम।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ८)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हिंदी, पृष्ठ २०, व० १९४४, आ० प्रथम।

शिशुबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—प्र० दुलीचंद पन्नालाल परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८।

शिखरमहात्म—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० हिन्दी, व० १८९८।

शीतलनाथ स्तोत्र (पद्य)—ले० जीयालाल ज्योतिषरत्न, प्र० मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ २०, व० १९२७, आ० प्रथम।

शीतल सुमन—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

शील और भावना—ले० मुंशीलाल एम. ए., प्र० स्वयं, भा० हिन्दी; पृष्ठ २४, व० १९०९, आ० प्रथम।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ ७२, व० १६१५ ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६३, आ० प्रथम ।

शील कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, भा० हिन्दी, पृष्ठ ७४ ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० नाथूराम लमेचू मुंडावरा, भा० हिन्दी, पृ० ६१, व० १८६६, आ० प्रथम ।

शील कथा- ले० कवि भारामल्ल, प्र० ज्ञानचंद जैनी लाहोर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १६०८ ।

शील पाहुड़ (शील प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, (अष्ट पाहुड व षट प्राभृतादि संग्रह में प्र०)

शील महात्म्यादि संग्रह (पद्य)—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जानकी बाई आरा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६, व० १६००, आ० प्रथम ।

शील महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हिन्दी पृष्ठ २४, आ० प्रथम ।

✓शुद्ध द्रव्यों की आकृतियाँ—ले० प० माणिकचन्द्र कौन्देय, प्र० चतरसेन सहारनपुर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १६४० ।

शुद्धि—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भाषा हिन्दी पृष्ठ १६, व० १६२५ ।

शुद्धि आन्दोलन पर शास्त्रीय विचार—ले० प० मक्खनलाल, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हिन्दी, पृ० ३२ व० १६२६ ।

शूद्रमुक्ति—ले० अज्ञात, भा० हि० पृष्ठ ३१, व० १६२० ।

षटखंडागमः (प्रथमखंड, भाग १)—ले० पुष्पदन्त भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल); हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं०

फूलचद प० हीरालाल; प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचद शिताबराय जैन 'साहित्यो-द्धारक फड कार्यालय अमरावती, भाषा प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४३८; वर्ष १९३९; आ० प्रथम।

षटखडागम (खड १, भाग २)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी, हिन्दी अनु० सपा० प्रो० हीरालाल प० फूलचन्द पं० हीरालाल; प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फड अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४४५, व० १९४०, आ० प्रथम।

षटखंडागम (खड १, भाग ३)—ले० पुष्पदत भूतवलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० सपा० प्रो० हीरालाल प० फूलचद पं० हीरालाल प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचंद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४८८; व० १९४१, आ० प्रथम।

षटखंडागम (खड १, भाग ४)—ले० पुष्पदत भूतवलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० सपा० प्रो० हीरालाल व प० हीरालाल शास्त्री, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक कार्यालय अमरावती; भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४८८, व० १९४२, आ० प्रथम।

षटखडागम (खड १, भाग ५)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० सपा० प्रो० हीरालाल प० फूलचन्द प० हीरालाल, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फड कार्यालय अमरावती; भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ३५०, व० १९४२, आ० प्रथम।

षटखंडागम (खड १, भाग ६)—ले० पुष्पदत भूतवलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल प० बालचन्द्र, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ५९६, व० १९४३, आ० प्रथम।

षटखडागम (खड २)—ले० पुष्पदत भूतवलि आचार्य टी० वीरसेन

स्वामी (श्री घावख), सपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द व हीरालाल; प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराल जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी; पृ० ५६४, व० १६४५, आ० प्रथम।

पटद्रव्य दिग्दर्शन—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन धर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१३।

पटपाहुड (स० छाया व हि० अनु० सहित)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १४०, व० १६१०, आ० प्रथम।

पटप्राभृतादि संग्रह—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० श्रुतसागर सूरि, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई भा० प्रा० सं०, पृ० ४६२, व० १६२०, आ० प्रथम।

पोडश सस्कार—संपा० पं० लालाराम, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, भाषा हि०, पृ० १४७, व० १६२४, आ० प्रथम।

षोडस संस्कार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० ७२।

सच्चा जिनवाणी संग्रह—सपा० पंडित कस्तूर चद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी सस्कृत, पृ० ७६१, आ० पन्द्रहवी।

सच्चा सुख—लेखक चम्पराय बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० २३, व० १६२५।

सच्ची प्रभावना—लेखक कुँवर दिग्विजय सिंह, भा० हि०, पृ० ४४, व० १६१०।

सच्चे सुख का उपाय—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बडनगर, भा० हि०, पृष्ठ २६, व० १६१६, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, अनु० पंडित मेहरचद, प्र० मुन्शी अमनसिंह सोनीपत, भा० स० हिन्दी, पृष्ठ ६८, वर्ष १८६२, आ० प्रथम।

सज्जन चित्तवल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य; प्रकाशन जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६, व० १६१२, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, प्रकाशक नाथूराम लमेचू मुंडावरा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३०, व० १८६६ आ० प्रथम।

सती अंजना सुन्दरी नाटक—लेखक ज्योति प्रशाद, सपा० मगल सैन, प्रकाशक अतरसैन जैन मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृष्ठ १७८, व० १६३६, आ० द्वितीय।

सती चन्दन बाला नाटक—लेखक शेरसिंह नाज, प्रकाशक प्यारे लाल देवी सहाय देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०७, व० १६२७, आ० प्रथम।

सती पुष्पलता (सचित्र)—लेखक मुन्नालाल समगौरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०२, व० १६४१, आ० द्वितीय।

सती मनोरमा—लेखक डा० मित्र सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७१, व० १६३७, आ० प्रथम।

सती सीता—लेखक पूनम चन्द्र सेठी; सपा० विद्या कुमार व राजमल लोढा प्रकाशन जैन धर्म प्रचारक मडल अजमेर, भाषा हिन्दी, पृ० १४, व० १६३४, आ० प्रथम।

सत्तास्वरूप—लेखक पडित भागचद्र, प्रकाशक लल्लूमल सेठा गया, भा० हिन्दी, पृ० ८२, व० १६३६, आ० प्रथम।

सत्य घोष नाटक—लेखक बाबू ज्योतिप्रसाद, प्रकाशक दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृ० ८६, व० १६३८, आ० प्रथम।

सत्यमार्ग—लेखक बाबू कामता प्रशाद, प्रकाशक वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ४४०, व० १६२६, आ० प्रथम।

सत्य सं ति—लेखक पडित दरबारी लाल सत्य भक्त, भा० हिन्दी, पृष्ठ १२८, व० १६३५।

सत्यामृत (दृष्टि काड)—लेखक दरबारी लाल सत्य भक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० २१०, व० १६४०, आ० प्रथम।

सत्यामृत (आचार कांड)– लेखक दरबारी सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ २३०, आ० प्रथम ।

सत्यामृत (व्यवहार कांड)– लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५१, व० १९४५, आ० प्रथम ।

सत्यार्थ दर्पण–लेखक पंडित अजित कुमार; प्रकाशक अकलंक प्रेस मुल्तान, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५०, व० १९३७, आ० द्वितीय ।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पवाती पुस्तक माला अम्बाला, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३५, व० १९३१, आ० द्वितीय ।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक लाल देवीसहाय फीरोजपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १५३, आ० प्रथम ।

सत्यार्थ निर्णय—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक दिग० जैन संघ मथुरा, भा० हि०, पृ० ३५६, व० १९४३, आ० प्रथम ।

सत्यार्थ प्रकाश और जैन धर्म—लेखक स्वामी कर्मानन्द, भा० हिन्दी ।

सत्यार्थ यज्ञ—लेखक कविमनरंगलाल, प्रकाशक अजिताश्रम लखनऊ, भा० हि०, पृ० १४४, व० १९१३, आ० प्रथम पृ० १५५, व० १९२५, आ० द्वितीय ।

सत्साधु स्मरण मंगल पाठ–संक० संपा० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक वीर सेवा मंदिर सरसावा, भाषा सं० प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ७७, व० १९४४, आ० प्रथम ।

स्तुति प्रार्थना–लेखक संपा० नाथूराम प्रेमी, भाषा हिन्दी, पृ० १५, व० १९२९ ।

स्तुति प्रार्थना संग्रह–लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, बा० जोती-प्रसाद, मुंशी राम प्रसाद, प्रकाशक जौहरी मल सर्राफ़ देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १६ ।

स्तोत्र शतक–संपा० प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० सं० हि०, पृ० ५८, व० १९०४ ।

स्त्रीगान जैन भजन पच्चीसी—लेखक पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० १६; व० १६१३, आ० तीसरी।

स्त्री मुक्ति—भा० हि०, पृ० ६२, व० १६१६।

स्त्री शिक्षा—लेखक पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० गंगा विष्णु श्री कृष्णदास बम्बई, भा० हि० पृ० ४५; व० १६०१।

सत्यासत्य निर्णय—लेखक प्रकाशक लाल मुसद्दी लाल निरपुडा (मेरठ), भा० हि०।

सत्य का बोल बाला—प्र० दुली चन्द परवार, भा० हिन्दी, पृ० ६४, व० १६३५।

सदाचार शिष्टाचार और स्वास्थ्य—लेखक बा० माई दयाल जैन, भा० हि०; पृ० ७२, व० १६३५।

सदाचार रत्न कोष (रत्न करड श्रावकाचार)—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ३३, व० १६२६, आ० प्रथम।

सदाचारी बालक—प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

सद्गुण पुष्पोद्यान श्रावकाचार—लेखक प० फुलजारी लाल, प्र० स्वयं पानीपत, भा० हि०, पृ० १८४, व० १६२४; आ० प्रथम।

सद्विचार मुक्तावली (कविता संग्रह)—संपा० चेतनदास जैन; भा० हिन्दी, पृ० ६४।

सद्विचार रत्नावली—लेखक पं० मुन्नालाल समगोरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३०; व० १६४२, आ० प्रथम।

सन्मार्ग प्रदर्शक—लेखक प० उमराव सिंह, भा० हिन्दी, पृ० २२

सन्यासी—लेखक भगवत् जैन; प्रकाशक स्वयं, भा० हिन्दी, पृष्ट ६६, व० १६४२, नाटक।

सनातन जैन ग्रंथमाला—प्रथम गुच्छक (१४ ग्रंथों का संग्रह)—संपा० प० पन्नालाल च.मशीवर, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ३०६,

व० १९०५ ।

✓सनातन जैनधर्म—लेखक चम्पतराय बैरिस्टर, प्र० स्वय हरदोई; भा० हि०, पृ० ६२; व० १९२४; आ० प्रथम ।

सनातन जैनधर्म—लेखक प० श्रीलाल, प्र० जैनधर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०; पृ० १५, व० १९१३ ।

✓सनातन जैनमत—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० प्रेमचन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ७४, व० १९२७, आ० प्रथम ।

सनातन जैन भजनावली—ले० मगतराय जैन 'साधु' भा० हि० ।

सप्तऋर्षि पूजा—ले० प० स्वरूप चन्द, प्र० केसरी चन्द्र राम करण हैदराबाद, भा० हि०, पृ० ५६, व० १९१५, आ० प्रथम ।,

सप्त भगी तरंगिणी—लेखक पं० विमलदास; सपा० पी. वी. अनन्ताचार्यर; प्र० सपा० स्वय काची; भा० स०; पृ० ५२, व० १९०१, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—ले० प० विमलदास; अनु० ठाकुरप्रशाद शर्मा, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल वम्बई; भा० स० हि०; पृ० ६६; व० १९०५, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरगिणी—ले० पं० विमलदास; सपा० प० मनोहरलाल; प्र० परमश्रुत प्रभावकमडल बवई भा० सं० हि०, पृ० ६३; व० १९१६; आ० द्वितीय; ।

सप्तमुनि पूजन—लेखक प्यारेलाल पूरनमल, संपा० छेदालाल, प्र० पूरनमल शमशाबाद, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३०; आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रथरत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि० स०, पृ० २२४, व० १९१२, आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र (सचित्र)—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक; अनु० सपा० परमानद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, व० १९३७ आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन (पद्य)—लेखक प० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० ८।

सफलता के तीन साधन—प्र० कुवर मोतीलाल, भा० हि० पृ० १६०।

सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र०—लेखक उमास्वामी, हि० अनु० टी. प० खूबचन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल वम्बई, भा० स० हि०, पृ० ५००, व, १९३२, आ० प्रथम।

समगौरया भजनावली—लेखक मुन्नालाल समगोरया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९४१ आ० प्रथम।

समदृष्टि के चिन्ह (प्रथम भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर भा० हि०, पृ० १२, व० १९३२।

समदृष्टि के चिन्ह (द्वितीय भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० आत्मजागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १०, व० १९३२।

समन्तभद्र का समय और डा० के० बी० पाठक—लेखक प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० टी० प० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० जिनवर गंगा साचवरे कारंजा, भा० प्रा० हि०; पृ० ४१६, व० १९०८।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दा चार्य, टी० प० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६, व० १९०८ आ० प्रथम।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी० प० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० सेठ मदनचन्द नेमिचन्द पाड्या किशनगढ, भा० प्रा० हि०, पृ० ६३८।

समय प्राभृतं—लेखक कुन्दकुन्दा चार्य, सपा० प० गजाधरलाल, प्र० प० पन्नालाल जैन काशी; भा० प्रा०, पृ० २१६, व० १९१४, आ० प्रथम।

समयसार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य, हि० टी० प० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल वम्बई भा० प्रा० स० हि०, पृ० ५७६, व० १९१९, आ० प्रथम।

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० अनु० प० गोपाल सहाय सेठ०, संपा० प० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ६१, व० १६१६, आ० प्रथम।

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी० प० जयचन्द्र, अनु० प० मनोहर लाल, सपा० प्र० वा० नानकचन्द एडवोकेट रोहतक, भा० प्रा० हि०, पृ० २५४, व० १६४२, आ० प्रथम।

समयसार कलश—लेखक अमृतचन्द्राचार्य, हि० टी० पाडेरायमल्ल, अनु० स०० व्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३३६, व० १६३१, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, प्र० रामचन्द्र नाग, भा० हि०, पृ० १५२, व० १६१४, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, प्र० जैन औद्योगिक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३१, व० १६१५, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, प्र० वा० सूरजभान वकील देववन्द, भा० हि०; पृ० १२०, व० १८६८, आ० प्रथम।

✓समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, अनु० प० बुद्धिलाल श्रावक, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १६३० आ० प्रथम। (अमृचन्द्राचार्य कृत सस्कृत कलशा युक्त।

समवशरण दर्पण—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

समवशरण पाठ (पद्य-सचित्र)—लेखक लाला भगवानदास, प्र० राजमल जैन महमूदाबाद, भा० हि०, पृ० १६२, व० १६३०, आ० प्रथम।

समवशरण पूजन पाठ—लेखक लालजीमल, प्रा० मुन्नालाय जैन अजमेर, भा० हि०, पृ० ८८।

समवशरण स्तोत्र—लेखक विष्णुसेन, भा० स०, (सिद्धान्त साराविसग्रह में प्र०)।

समाज के अधःपतन के कारण और उन्नति के उपाय—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भा० हि०, पृ० ४४, व १६२० ।

समाज संगठन—लेखक प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३७, आ० प्रथम ।

समाधि तन्त्र—लेखक आचार्य देवनन्दि पूज्यपाद, स० टी० प्रभाचन्द्र, अनु० प० परमानन्द शास्त्री, सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० १०८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

समाधि भक्ति—भा० स० हि०, (दश भक्त्यादि संग्रह में प्र०) ।

समाधिमरण और मृत्यु महोत्सव—लेखक प० सूरचन्द, हि० टी० प० सदासुखदास; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३२ ।

समाधि मरण पाठ—ले० प० सूरचन्द, सपा० श्रीमती अध्यापिका, प्र० जैन कन्या शिक्षालय देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १३, व० १६०६, आ० प्रथम ।

समाधिमरण भाषा—लेखक प० सूरचन्द, सपा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वय सपा० देहली, भाषा हिंदी, पृ० २०, व० १६००, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० सपादक मणिलाल एन. द्विवेदी, प्र० गिरधरलाल हीराभाई अहमदाबाद, भाषा स० अं०, पृष्ठ १३२, व० १८६५ ।

समाधिशतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय विजनौर, भा० हि०, पृष्ठ २८, व० १६२६, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, प्र० नाथूराम बुकसेलर मुंडावरा, भा० हि०, पृ० २८, व० १६०५, आ० प्रथम ।

समाधि शतकम—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० प्रभाचन्द्राचार्य अनु० माणिक मुनि, प्र० बा० कीर्तिप्रशाद वकील, भा० हि०, पृ० ४८, व०, १६१५, आ० प्रथम ।

सम्मेद शिखर तीर्थ चित्रावली—सपा० प्र० नथमल चंडालिया, पृ० १३, व० १६२७ ।

समाधिशतक टीका—पूज्यपादाचार्य, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० पं० फतहचंद देहली, भाषा सं० हि०, पृ० १७५, व० १९२२, आ० प्रथम।

समालोचना—मूर्त्तियाप्रतिमा पूजा—भाषा हि०, पृ० १२, वर्ष १८८८।

सम्मेद शिषर का नकशा—प्र० बाबू सूरजभान वकील देववंद; वर्ष १८९८।

सम्मेद शिषर पूजा—ले० लक्ष्मीप्रसाद, प्र० प्रभुलाल रामपुर; भाषा हि०; पृ० १५, वर्ष १९२८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर महात्म—ले० धर्मदास क्षुल्जक, प्र० स्वय, भाषा हिन्दी, पृ० ६, व० १८८४।

सम्मेद शिषर महात्म्य (पूजन विधान सहित)—ले० प० जवाहरलाल, प्र० बद्रीप्रसाद जैन बनारस, भाषा हि०, पृ० ३३, वर्ष १९०८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर सबंधी चिट्ठी—प्र० रत्नचन्द्र मत्री धर्म सरक्षिणी दिग० जैन महासभा मथुरा, भाषा हि०, पृ० ७, वर्ष १८९६।

सम्मेद शिषरादि यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रशाद, प्र० दिग० जैन प्रभावनी सभा सांभरलेक, भाषा हि०, पृ० १११, वर्ष १९१८, आ० प्रथम।

सम्मेदाचल गायन—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हि०।

सम्यक् दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० स्वय, भाषा हि०; पृ० ९५, व० १८९१, आ० प्रथम।

सम्यकज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वय, भाषा हि०, पृ० ११६, वर्ष १८८९।

सम्यक् ज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० हीरालाल बापूजी बदनोरे अमरावती, भाषा हि० पृ० ९९, व० १९३४, आ० प्रथम।

सम्यक्त्व के आठ अंग—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर; भा० हि०; पृ० ५६, व० १६३२।

सम्यक्त्व कौमदी— अनु० टी० प० तुलसीराम का० तो०, प्र० हिन्दी जैन साहित्य पुस्तक कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० २५८, व० १६१५, आ० प्रथम।

सम्यक्त्व कौमदी—अनु० टी० पं० तुलसीराम का० ती०, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १४८, व० १६२८, आ० प्रथम।

सम्यक्त्वादर्श—लेखक क्षुल्लक सूरिसिंह, अनु० रवीन्द्रनाथ जैन, प्र० जिनेश्वरदास जैन रोहतक, भा० स० हि०, पृ० ६६, व० १६४२, आ० प्रथम।

सम्यग्दर्शन की नई खोज—ले० स्वामी कर्मानन्द; प्र० जैन प्रगति ग्रंथ माला सहारनपुर; भा० हि० पृ० ८०, व० १६४६।

स्याद्वाद परिचय—लेखक प० अजितकुमार, प्र० अकलंक प्रेस मुलतान, भा० हि०. पृ० २८, व० १६३६, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० मल्लिषेण सूरि, सपा० दामोदरलाल गोस्वामी, प्र० संस्कृत बुकडिपो बनारस, भा० स०, पृ० २२०, व० १६००, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—लेखक हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, हि० अनु० पं० जवाहरलाल व वंशीधर, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० स० हि०, पृ० २३८, व० १६१०, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, अनु० सपा० प्रा० जगदीशचन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत, प्रभावक मंडल बम्बई भ० स० हि०, पृ० ५२७, व० १६३५, आ० द्वितीय।

सरल जैन धर्म (पहला भाग)—सपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर; भा० हि०, पृ० १६।

सरल जैन धर्म (दुसरा भाग)—सपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन

ग्रंथमाला जबलपुर, भा० हि०, पृ० २८, व० १९३९, आ० प्रथम ।

✓सरल जैन धर्म (तीसरा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९३८, आ० प्रथम ।

✓सरल जैन धर्म (चौथा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ७६ व० १९३९, आ० प्रथम ।

सर्वधर्म समभाव—लेखक प० दरबारी न्या० ती०; भा० हि०, पृ० २२ व० १९४१ ।

सरल जैन विवाह विधि—लेखक मनोहरलाल जैन का० ती० प्र० सेठ गिरधारीलाल हरप्रशाद लुहरी, भा० हि० स०; पृ० ५६, व० १९३६, आ० द्वितीय ।

सरल नित्य पाठ संग्रह—संग्रह० कस्तूरचन्द शास्त्री, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० हि०, स०; पृ० १४३; व० १९२., आ० द्वितीय ।

सर्वज्ञस्तवन सटीक—लेखक जयानन्द सूरि, भा० स०, (दशभक्त्यादि संग्रह मे प्र०) ।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; संपा० जिनदास शास्त्री, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० स०; पृ० ३२२; व० १९३९, आ० तृतीय ।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर; भा० स० पृ० २७९, व० १९१७, आ० द्वितीय,—पृ० ४७६; व० १९०३, आ० प्रथम ।

✓सर्वार्थसिद्धि वचनिका—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; टी० प० जयचन्द छावडा; प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० हि० स०, पृ० ८०४; व० १९११ ।

✓सर्वार्थसिद्धि (तत्वार्थवृत्ति)—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, टी० प० जयचन्द छावडा, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० स०, पृ० ८०४, आ० प्रथम ।

✓सर्वार्थ सिद्धि वृत्ति—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, अनु० टी० बा० जगरूप-सहाय वकील, प्र० महेशचन्द्र एण्ड को० जैन ग्रन्थ डिपो एटा, भा० स० हि०; पृ० १५७४, व० १६२३-१६२६, आ० प्रथम।

सरस्वती पूजा (भाषा)—भा० हि०, व० १६०७।

सरस्वती स्तवन—लेखक नाथूराम प्रेमी, भा० हि०, व० १६०७।

सनूना पूजन (आदिनाथ स्तोत्र व कथा सहित)-ले० प० बाबू लाल, प्र० जैन सभा फीरोजपुर, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० ० १६१०।

सलूनोत्पत्ति कथा—प्रकाशक दिग० जैन एसीसियेशन मेरठ सदर, भा० हिन्दी, पृ० १०।

सवालात तेरापंथियों के बीस पंथियों से-भा० हिन्दी, पृ० ६।

स्वतन्त्रता का सोपान-लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ ४२५, व० १६४४, आ० प्रथम।

स्वर्गीय हेमचद्र-लेखक सपा० यशपाल जैन प्र० हिन्दी ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ १६०, व० १६४४, आ० प्रथम।

स्वरूपचद नाम माला व अनेकार्थ नाममाला—लेखक स्वरूपचद जैन त्यागी, प्र० भानुकुमार सर्व सुख हितैषी आयुर्वेदीय फार्मेसी भिंड, भा० हिंदी, पृष्ठ ६५, व० १६४२ आ० आ० प्रथम।

स्वरूप सबोधन—लेखक अकलन्क देव, भा० स०, व० १६१५।

✓स्वसमरानंद अथवा चेतन कर्मयुद्ध—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हिंदी, पृष्ठ ८१, व० १६२३, आ० प्रथम।

✓स्वात्मानुभव मनन-ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वय, भा० हिंदी, पृ० ६६ व० १८६१।

✓स्वानुभव दर्पण (सटीक)—लेखक योगीन्द्र देव अनु० प्र० मुंशी नाथूराम लमेचू, भा० हिंदी, पृष्ठ ५३; भा० प्रथम, व० १८६६।

स्वयंभूस्तोत्र—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० सपा० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हिंदी, पृष्ठ , व० , आ० प्रथम।

स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्त्तिकेय, स० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, हि० टी० प० जयचन्द्रजी; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० प्रा० स० हि०, पृ० २९०, व० १९२१, आ० प्रथम।

स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्त्तिकेय, स० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० गांधी नाथारंगजी आकलूज, भा० प्रा० स० हि०, पृ० २०४, व० १९०४, आ० प्रथम।

स्वामी समन्तभद्राचार्य—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६७, व० १९२५; आ० प्रथम।

सहज सुख साधन—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ३९२, व० १९३६, आ० प्रथम।

सहजानंद सोपान—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० २७४, व० १९३७, आ० प्रथम।

सहनशील चंदन—ले० प० राजमल लोढा, प्र० जैन साहित्य कार्यालय मदसौर, भा० हि०, पृ० १६।

संकट हरण व दुःख हरण विनती—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबद, भा० हि० पृ० ६, व० १९२६, आ० द्वितीय।

संक्षिप्त जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १३२, व० १९३५, आ० दूसरी।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २९९, व० १९३२, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खंड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १८१; व० १९३४, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १५४, व० १९३७, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६४, व० १९३८, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खड ३)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६६, व० १९४१, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ४)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०।

संक्षिप्त जैनरामायण (पद्य)—ले० कवि मनरगलाल, प्र० चद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० ९२, व० १९२४, आ० प्रथम—पृ० ८८, व० १९२६, आ० दूसरी।

संक्षिप्त नित्य पूजा—सपा० वी० एल० चैतन्य बुलन्दशहरी, प्र० मातेश्वरी सपा० विजनौर, भा० हि०, पृ० ३२; व० १९२६।

सगठन का बिगुल—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन सगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १९२५, आ० प्रथम।

संयम प्रकाश (प्रथम किरण—पूर्वार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, सपा० श्रीप्रकाश व भँवरलाल, प्र० आचार्य सूर्यसागर दिग० जैन ग्रन्थमाला समिति जयपुर; भा० हि० सं०, पृ० १६८, व० १९४४, आ० प्रथम।

संयम प्रकाश (द्वितीय किरण—उत्तरार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, सपा० श्रीप्रकाश व भवरलाल, प्र० आचार्य सूर्य सागर दिग० जैन ग्रंथमाला

समिति जयपुर, भा० हि० स०, पृ० ११४, व० १६४५, आ० प्रथम।

✓संयुक्त प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—सग्र० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हीरालाल जैन एम. ए प्रयाग, भा० हि०, पृ० १११, व० १६२३, आ० प्रथम।

✓ संशय तिमिर प्रदीप—ले० उदयलाल काशलीवाल, प्र० स्वयं वडनगर, भा० हि०, पृ० १७०, व० १६०६, आ० द्वितीय।

संशय वदन विदारण—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, अनु० प० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १४४, व० १६२३, आ० प्रथम ।

✓ससार और मोक्ष—ले० वा० ऋषभदास वी. ए., अनु० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१०, आ० प्रथम ।

ससार दुःख दर्पण—ले० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३८, आ० पाचवी ।

सँसार दु.खदर्पण और नरक दुःख दर्शन—ले० ज्योतिप्रसाद व प० भूधरदास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १५, व० १६३५, आ० चौथी।

✓ससार मे सुख कहा है—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १०८।

सस्कृत प च स्तोत्र—प्र० वा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८६८, भा० स०।

सस्कृत प्राकृत नित्य नियम पूजा—प्र० वा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८६८, भा० स० प्रा०।

सस्कृत प्रवेशिनी (प्रथम भाग)—ले० प० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० स०, पृ० २०८, व० १६१६, आ० प्रथम।

संस्कृत प्रवेशिनी (द्वितीय भाग)—ले० प० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० १७६, व० १६१६; आ० प्रथम।

संस्कृत भाव संग्रह—ले० प० वामदेव, भा० स०, (भाव संग्रहादि में प्र०)।

✔संस्कृत हिन्दी शब्द रत्नाकर—ले० बिहारीलाल चैतन्य; भा० स० हि०, पृ० ११२।

सागार धर्मामृत (भव्य कुमुद चन्द्रिका टीका सहित)—ले० प० आशाधर, सपा० प० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० २४६, व० १६१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (पूर्वार्द्ध)—ले० प० आशाधर, अनु० प० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्कालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३१२, व० १६१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (उत्तरार्द्ध)—ले० प० आशाधर, अनु० प० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० २२३, व० १६१६, आ० प्रथम।

✔सागार धर्मामृत सटीक—ले० प० आशाधर, टी० प० देवकीनन्दन शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३१६, व० १६४०, आ० प्रथम।

सादगी और बनावट—ले० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० प्यारेलाल चन्दूलाल जगाधरी, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२३, आ० प्रथम।

साध्वी (पद्य)—ले० गुणभद्र कविरत्न, प्र० दुलीचंद परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४०।

✔सामाजिक चित्र—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

✔सामायिक—सपा० मुनि हर्षकीर्ति, प्र० दिगम्बरी समस्त संघ भावनगर, भा० सं० प्रा०; पृ० ६६, व० १८६७।

सामायिक पाठ—ले० अमित गति आचार्य, टी० प० जयचन्द्र छावड़ा, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला समिति बम्बई, भा० हि०, पृ० ६५, व० १९२४, आ० प्रथम।

सामायिक पाठ—ले० अमितगति आचार्य, अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० स० हि०, पृ० २४, व० १९२६, आ० दूसरी।

सामायिक पाठ और मेरी भावना—ले० अमितगति आचार्य व प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० कस्तूरचन्द छाबड़ा, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ३१, व० १९३९, आ० पंचम।

सामायिक भाषा—ले० प० महाचन्द, प्र० बा० ज्ञानचन्द लाहौर, भा० हि०; पृ० १८, व० १८९७।

सामायिकानन्द पाठ—ले० रूपचन्द जैन, प्र० शानचद इटावा, भा० हि०, पृ० ८, व० १९३४, आ० प्रथम।

सार्वधर्म—ले० प० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ५५, आ० प्रथम।

सार समुच्चय (मूल)—ले० कुलभद्र, भा० सं०, (सिद्धात सग्रह में प्र०)।

सार समुच्चय टीका—ले० कुलभद्राचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स हि०, पृ० २३२, व० १९३७, आ० प्रथम।

सावय धम्म दोहा—ले० देवसेन आचार्य, अनु० सपा० प्रो० हीरालल जैन, प्र० कारजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा, भा० अप० हि०, पृ० १२५, व० १९३२, आ० प्रथम।

सिद्धि प्रिय स्तोत्र—ले० देवनन्दि, भा० स०, (काव्यमाला सप्तमगुच्छक में प्र०)

सिद्धान्त सूत्र समन्वय—ले० प० मक्खन लाल न्या० ल०, प्र० दिग० जैन पचायत वम्बई, भा० हि, पृ० १७०, व० १९४७।

सिद्ध चक्र पूजा व ३ी तथा अठाईरासा—ले० प० द्यानतराय व विनय कीर्त्ति, प्र० मा० शिवराम सिंह रोहतक, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४०, आ० प्रथम।

सिद्ध चक्र मडल विधान—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, प्र० सेठ राजकुमार सिंह म० व० इन्दौर, भा० स०, पृ० १७५, व० १९४४।

सिद्ध चक्र विधान—ले० कविवर सतलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० ३६८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

सिद्ध भक्ति—ले० पूज्यपाद भा० स०, (दशभक्त्यादि सग्रह में प्र०)

सिद्ध क्षेत्र पूजा संग्रह—सग्र० मास्टर कुन्दन लाल, प्र० मूलचद किशन दास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२८, व० १९४४, आ० चतुर्थ; पृ० १४४; व० १९२१, आ० द्वितीय।

सिद्धान्त समीक्षा (भाग १, २, ३,)—लेखक प्रो० हीरालाल, प० फूलचन्द्र, प० जीवधर, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० व० १९४५-४६।

सिद्धांत सारादि संग्रह (२५ विभिन्न स० प्रा० ग्रन्थो का संग्रह)—सपा० प० पन्ना लाल सोनी, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला समिति बम्बई, भा० स० प्रा०, पृ० ३६५; व० १९२३, आ० प्रथम।

सिद्धांतसार—ले० जिनचंद, टी० ज्ञान भूषण, भा० स० (सिद्धांत सरादि संग्रह मे प्र०)

सिद्धि सोपान—ले० पूज्यपादा चार्य, (सिद्ध भक्ति)—अनु० सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० स० हि०; पृ० ४८, व० १९३३, आ० प्रथम (अन्य स्थानो से और भी सस्करण प्रकाशत हुए हैं)

सीता का बारह मासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, व० १८६८ ।

सीता चरित्र—ले० दया चन्द्र गोयलीय, प्र० जैन साहित्य भंडार लखनऊ, भा० हि०, पृ० ६२, व १६१७, आ० प्रथम ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्ति आचार्य, हि० टी० पं नाथूलाल, प्र० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भा० स० हि०, पृ० १४२; व० १६११ ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हि० टी० प नाथूलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी सं०, पृ० १३८, आ० प्रथम ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हिन्दी टी० प० नाथूराम, प्र० भाषा हिन्दी, पृ० १३२ ।

सिर सिर वाल कहा—ले० रत्न शेखर सूरि, अनु० सपा० एन० जी० सुरु, भाषा प्रा०, व० १६३३—पूना ।

सुख और सफलता के मूल सिद्धान्त—लेखक दयाचन्द गोयलीय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, वर्ष १६१७ ।

सुगम जैन विवाह विधि—लेखक सपा० किशन चन्द्र जैन, प्र० चन्दन लाल, भा० स० हिन्दी, पृ० ८०, व० १६३२ ।

सुकमाल चरित्रसार—लेखक ब्रह्मनेमिदत्त, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २२, व० १६१५, आ० प्रथम ।

सुख सागर भजनावली—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृष्ट १५२; वर्ष १६१६, आ० प्रथम ।

सुखानंद मनोरमा नाटक—

सुगधदशमी कथा—लेखक ब्र० श्रुतसागर; प्रकाशक जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता भाषा हि०; पृ० १६ ।

सुगधदशमी कथा (पद्य)—लेखक ब्र० श्रुतसागर, प्रकाशक वीर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० २०, व० १६४२, आ० प्रथम ।

सुगध दशमी व्रत कथा—लेखक प० खुशाल चन्द्र, प्रकाशक हीरालाल नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १६३४, आ० प्रथम।

सुगुरु शतक भाषा—प्रकाशक वा० सूरज भान वकील देवबद, भा० हि०; ० १८६८।

सुदर्शन (अहिंसा मार्तण्ड)—लेखक पीताम्बर दास जैन, भा० हिन्दी, व० ९४०।

सुदर्शन चरित्र—लेखक सकल कीर्त्ति, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० न साहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० १०६, आ० प्रथम।

सुदर्शन चरित्र (सचित्र)—सपा प० परमानन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक ार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४६।

सुदर्शन नाटक—लेखक मूलचन्द वत्मल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, ा० हि०, पृ० ११२, व० १६२७, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक पं० टेकचन्द्र, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक ार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६५०, व० १६२६, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक प० टेक चन्द्र, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, ा० हि०, पृ० ६८३, व० १६२८।

सुधर्म श्रावकाचार—लेखक सुधर्म सागर; टी० प० लालराम, सपा० प० विखन लाल, प्र० सेठ जीवाराज उगर चद गाधी सोनगढ़, भाषा स० हि०, ० ५०२, व० १६४०।

सुन्दर जाल—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२१।

सुधर्म श्रावकाचार समीक्षा—लेखक प० परमेष्ठि दास, प्रकाशक मूलचंद किशनदास कापडया सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ११८, व० १६४३, आ० प्रथम।

सुधर्मोपदेशामृतसार—लेखक कुथ सागर आचार्य, अनु० प लालाराम, प्र० आचार्य कुथसागर ग्रथ माला शोलापुर, भा० हि० स०, पृ० १७४, व० १६४०, आ० प्रथम।

सुबोधरत्न शतकम्—लेखक माणिक्य मुनि, प्रकाशक शीतल प्रसाद वैद्य,

देहली, भा० स०, पृ० २७, व० १६१५।

सुबोधि दर्पण (रत्नत्रय धर्म प्रकाश)—लेखक पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० दिग० जैन पन्नालाल जैन करोडा, भाषा हि०, पृ० ७६, व० १६३६, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न सन्दोह—ले० अमितगति आचार्य, सपा० पं० काशीनाथ शास्त्री व भावदत्त शास्त्री, प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १०४, व० १६०३, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न संदोह—ले० अमितगति आचार्य, अनु० प० श्रीलाल का० ती०, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० २८२, व० १६१७, आ० प्रथम पृष्ठ २४३, व० १६३६, आ० द्वितीय।

सुभाषित शतकम्—सम्पा० अनु० प० माणिक चन्द्र, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० २८, व० १६४५, आ० प्रथम।

सुमन संचय—सग्र० ब्र० प्रेमसागर, प्र० बैनीप्रसाद गुलाब चद रंपुरा, भा० हि०, पृ० ८२, व० १६४१, आ० प्रथम।

सुलोचना चरित्र—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६२४, आ० प्रथम।

सुवर्ण सूत्रम—ले० कुथसागर, प्र० उत्तम चद के लचद दोषी ईडर, भा० स० पृ० २४, व० १६४१, आ० प्रथम।

सुशीला उपन्यास—ले० प० गोपालदास बैरया, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३१२, व० १६१४, आ० प्रथम।

सुसराल जाते समय पुत्री को माता का उपदेश—सपा० प० दीपचन्द वर्णी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४७, व० १६४३, आ० अष्टम।

सुहाग रक्षक विधान—ले० मोतीलाल पहाड्या; भा० हि० पृ० ११३ व० १६२४।

सूत्र पाहुड़ (सूत्र प्राभृत)—ले० कुन्द कुन्द; भा० प्रा० स०, (अष्ट पाहुड व षट्प्राभृतादि सग्रह मे प्र०)

सूक्त मुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य, टी० हर्षकीर्तिसूरि, संपा० व्रजवल्लभ शास्त्री, प्र० स्वयं संपादक अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० ७३, व० १८६७, आ० प्रथम।

सूक्तमुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य; हि० अनु० (पद्य) पं० बनारसीदास, संपा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वयं संपा० सोनीगत, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १८९३।

सूक्तमुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य, अनु० पं० बनारसीदास व कुँवरपाल, टी० पं० लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १००, व० १९१२, आ० द्वितीय।

सूक्ति संग्रह—ले० कवि राक्षस, भा० सं०, पृ० ६, व० १९३०।

सूर्य प्रकाश—ले० नेमिचन्द्र भट्टारक, टी० संपा० ब्र० ज्ञानचन्द्र, प्र० गांधी मिया चन्द देवचन्द प्येडे शिरसकर नातेपुते, भा० सं० हि०, पृ० ४१३, आ० प्रथम।

सूर्य प्रकाश परीक्षा—ले० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३४, आ० प्रथम।

सूवा बत्तीसी—ले० भैया भगवती दास, प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर; भा० हि०, पृ० ८, व० १९१४।

सेठी सुदर्शन की कथा—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद; भा० हि०, पृ० ८।

सेठी जी के मामले में लोकमत—प्र० भारत जैन महामंडल; भा० हि० पृ० ८०, व० १९१५।

सोनागिर यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० दिग० जैन धर्म प्रभावती सभा सांभालेक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१८, आ० प्रथम

सोमा सती नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६।

सोलह कारण धर्म—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० मूलचन्द किशन दास

कापड़िया सूरत, भा० हि० पृ० १३७, व० १६४३, आ० तृतीय।

सोलह कारण व्रत कथा पूजा—ले० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० हुकमी चन्द्र छोलिला, भा० हि०, पृ० २६, व० १६३८।

सौभाग्य भजन माला—ले० सौभाग्य मल दोशी; प्र० स्वय अजमेर, भा० हि०; पृ० २१, व० १६२६, आ० प्रथम।

सौभाग्य रत्न माला—ले० प० चन्दाबाई, भा० हि०; पृ० ११८, व० १६१६।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० प० गोपालदास वरैया; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३१ व० १६१२, आ० प्रथम।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० प० गोपालदास वैरया' प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हि०, पृ० ३१, व० १६२८, आ० प्रथम।

सृष्टि वाद परीक्षा—प्र० जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८।

हनुमान चरित्र नाविल भूमिका—ले० प्रकाशक मास्टर विहारी लाल बुलन्दशहर, भा० हि०, पृ० ३१, व० १८६६ आ० प्रथम।

हनुमान चरित्रनाविल भूमिका (भाग)—लेखक प्र० मास्टर विहारीलाल बुलन्दरशहर, भा० हि०; पृ० ३१, व० १८६६।

हम दुखी क्यों हैं—ले० प जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६२८, आ० प्रथम।

हमारा उत्थान और पतन—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हिन्दी विद्या मदिर देहली, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६३६।

हमारी कायरता के कारण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन सगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ३०, वर्ष १६३७; आ० प्रथम।

हमारी शिक्षा पद्धति—लेखक पडित कैलाश चन्द्र, प्रकाशक जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५३, व० १६३२, आ० प्रथम।

हमारे दुखों का प्रधान कारण—लेखक पडित जुगल किशोर मुख्तार

प्रकाशक जैन सगठन सभा देहली; भा०, हि०, पृ० ३२, व० १९२८, आ० प्रथम ।

हरिवंश पुराण—जिनसेनाचार्य, हि० टी० प० दौलतराम जी, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५३५, व० १९३३ ।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य; टी० पं० दौलतराम जी, प्रकाशक ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० स० हिन्दी; पृ० १०००, व० १९१० ।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य, अनु० पडित गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हिंदी, पृ० ६२७, व० आ० प्रथम ।

हरिवंश पुराणम् (प्रथम खड)—लेखक जिनसेनाचार्य, सपा० पडित दरबारी लाल न्या० ती०, प्रकाशक माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रंथ माला समिति बम्बई, भा० स०, पृ० ४४८, व० १९३०, आ० प्रथम ।

हरिवंश पुराणम (द्वितीय खड)—लेखक जिनसेनाचर्य, सपा० पडित दरबारी लाल न्या० ती० प्रकाशक माणिक चन्द दिग० जैन ग्रथमाला समिति बम्बई भा० हि०; पृ० ३७४; व० १९३० आ०, प्रथम ।

हरिवंश पुराण समीक्षा—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्रकाशक चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा; भा० हि०, पृ० ५८; वर्ष १९१८, आ० प्रथम ।

हम और हमारा कर्तव्य—लेखक प्रकाशक उत्तम चन्द्र जैन मेरठ, भाषा हि० पृ० ८; व० १९२२ ।

हस्तिनागपुर कीर्तन—सग्र० प्र० सुमतप्रशाद जैन प्रचारक मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ३२, व०, १९४२ ।

हस्तिनागपुर महात्म—लेखक मगलसेन जैन विसारद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९३८, आ० प्रथम ।

हित की बात– प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृष्ठ ३२,

हित शिक्षा—लेखक वाड़ीलाल मोतीलाल शाह, अनु० भैयालाल जैन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११६, व० १९१९ ।

हितैषी गायन—प्र० जैन ग्रंथ प्रभाकर कार्यालय सागर, भाषा हिंदी, व०
१३, आ० प्रथम।

हितैषी गायन रत्नाकर— प्र० भारतहितैषी पुस्तकालय सीकर; भाषा
ी, पृ० ६८; आ० प्रथम।

हितैषी भजन संग्रह—प्र० मनीराम नथूमल जैन, भा० हि०, पृ० १४।

हिन्दी छहढाला—लेखक कवि दौलतराम, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र०
साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ६‚, व० १९३७, आ०
वी।

हिन्दी जैन पद्यावली—प्र० जैन धर्म प्रसारक संस्था नागपुर; भा० हि०,
१७, व० १९२९, आ० प्रथम।

हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन
रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९१७, आ० प्रथम।

हिंदी जैन साहित्य का इतिहास-लेखक बा० कामता प्रसाद जैन, प्र०
तीय ज्ञान पीठ काशी, भा० हि०, व० १९४७।

हिंदी पद्यात्मक श्री ऋषभपुराण व संक्षिप्त गद्यात्मक आदि—संपा०
बिहारी लाल चैतन्य, प्र० शांति चन्द्र जैन बिजनौर, भा० हि०; पृ० १८८,
१९२६, आ० प्रथम।

हिंदी भक्तामर-लेखक अमृत लाल जैन चंचल, प्र० सिंघई प्रेमचन्द जबल
भा० हि०, पृ० ४८, व० १९३७, आ० द्वितीय।

हिंदी भक्तामर और प्राण प्रिय काव्य-संपा० प्र० पन्नालाल जैन, भा०
पृ० ३८, व० १९१४।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक—लेखक शान्ति चन्द्र जैन, प्र० स्वल्पार्घ
रत्न माला कार्यालय बाराबंकी, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२५ आ०
।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक (द्वितीय अवयव)—लेखक बिहारी लाल
, प्र० स्वल्पार्घ ज्ञान रत्न माला कार्यालय बाराबंकी, भा० हि०, पृ० ११२,

व० १६२५, आ० प्रथम।

हिंदी जैन विवाह पद्धति—संपादक कुलवत राय जैन, भा० हि०, पृ० ३८, व० १६३६।

हिन्दू कोड और जैन धर्म—प्र० वर्धमान ज्ञान प्रचारिणी समिति इन्दौर, भा० हि०; पृ० १८, व० १६२१ आ० प्रथम।

हीराबाई—लेखक बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, पृ० २४।

होली संग्रह और प्रभाती संग्रह—संग्र० तथा प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि०, पृ० २४, व० १६०२, आ० प्रथम।

हितोपदेश रत्नावली—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६२४।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, संपा प्र० टी० एस० कुप्पुस्वामी शास्त्री, तंजौर, भा० सं०, पृ० १४३, व० १६०३।

क्षत्र चूडामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, अनु० मुंशीलाल एम. ए, संपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिंदी पृ० १४८, व० १६१०, आ० प्रथम।

क्षत्र चूडामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य हि० टी० प० निद्धामल, प्र० स्वय टी०, भा० हिंदी, पृ० २६२, व०, आ० प्रथम।

क्षत्र चूडामणि (पूर्वार्ध)— लेखक वादीभसिंह आचार्य, हि० टी० मोहन लाल जैन का० ती०, प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मडावरा, भाषा हिन्दी, पृ० १६४, व० १६३२, आ० प्रथम।

क्षत्र चूडामणि (उत्तरार्ध)—लेखक वादीभसिंह आचार्य, टी० मोहन लाल जैन का० ती०, सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मडावरा; भा० हिन्दी, पृ०—व० १६४०, आ० प्रथम।

क्षपणासार—देखो—लब्धिसार।

त्रिभंगी सार—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ मन्नुलाल जैन आगासौद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३५, व० १६३६, आ० प्रथम।

त्रिलोक प्रज्ञप्ति—देखिये तिलोय पण्णुति।

त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द्र सि. च., स० टी० माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव, संपा० प० मनोहरलाल, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रथमाला समिति बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ४२५, व० १९२८, श्रा० प्रथम।

✓त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द सि. च., हि० टी० प० टोडरमल, सपा० पण्डित मनोहरलाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० प्रा०हि०, पृ० ३९५, व० १९१८, श्रा० प्रथम।

त्रिशला नदन—ले० प्र० भगवत् जैन, भा० हिन्दी, पृष्ठ १८।

त्रिषष्टि स्मृति शास्त्रम्—ले० प० आशाधर, सपा० मोतीलाल, प्र० माणिकचद्र दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० स०, पृष्ठ १७८, व० १९३७।

✓त्रेषठ शलाका पुरुषों के नाम—ले० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८।

✓त्रैवर्णिकाचार—ले० सोमसेन भट्टारक, अनु० पण्डित पन्नालाल सोनी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ३९८, व० १९२५, श्रा० प्रथम।

त्रैलोक्य तिलक व्रतोद्यापन—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० श्रा०, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० ३८, व० १९४३, श्रा० प्रथम।

✓त्रिवेणी—ले० व. प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०।

✓ज्ञान कोष—सग्र० बा. धनकुमार चद जैन, प्र० रोशनलाल जैन आरा, भाषा हिन्दी, पृ० १८५, व० १९३७, श्रा० प्रथम।

ज्ञान चन्द्रोदय नाटक—ले० पन्नालाल जैन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भाषा हि०, वर्ष १९०१।

✓ज्ञान दर्पण (पद्य)—ले० शाह दीपचद, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६९, व० १९११, श्रा० प्रथम।

✓ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्र—अनु० संपा० पण्डित रामव्यास पाण्डेय ज्योतिषाचार्य, प्र० जैन सिद्धात भवन आरा।

ज्ञान समुच्चय सार—लेखक तारणतरण स्वामी, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० सेठ मन्नूलाल, आगासौंद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०४, व० १९३५, आ० प्रथम।

ज्ञानसागर दिगम्बर जैन पूजा—लेखक घनीराम वैरया, प्र० सोभाराम परशुराम नरवर, भाषा हि०; पृ० ७, आ० प्रथम।

ज्ञान सार—लेखक पद्मसिंह मुनि, टी पण्डित त्रिलोकचन्द्र, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा सं. हिन्दी, पृष्ठ ४६, व० १९४४ आ० प्रथम, (सस्कृत छाया व भाषा छन्दानुवाद सहित)।

ज्ञान सूर्योदय—लेखक प्र० लालता प्रसाद जैन घुढेले कायमगज, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६६, आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय (प्रथम भाग)—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० नांदमल अजमेरा रा० व०, भाषा हि०, पृ० ८०, व० १९२९, आ० नवीन।

ज्ञान सूर्योदय (द्वितीय भाग)—लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भाषा हि०; पृ० ७९, वर्ष १९२९, आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय नाटक—लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा स० हि०, पृ० १०४, व० १९०९, आ० प्रथम।

ज्ञानानंद भजनाकर—प्र० पण्डित मक्खनलाल प्रचारक देहली, भाषा हि०, पृ० ३२, वर्ष १९३८, आ० सातवां।

ज्ञानानंद रत्नाकर—ले० व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, पृ० ९२, व० १९०२।

ज्ञानानद रत्नाकर (द्वितीय भाग)—लेखक व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास बम्बई, भाषा हि०, पृ० ९७, वर्ष १८९५।

ज्ञानानद श्रवकाचार—लेखक रायमल्ल, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हि०, पृ० २९२, व० १९१९, आ० प्रथम।

ज्ञानार्णव—लेखक शुभचन्द्राचार्य, अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र०

परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ४४७, व० १९२७, आ० प्रथम।

ज्ञानोक्त प्रमाण—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ५२, व० १८८२, आ० प्रथम।

ज्ञानोदय (प्रथम भाग)—ले० पण्डित पन्नालाल, प्र० स्वय सुजानगढ़, भा० हि०, पृ० २९, व १८६१, आ० द्वितीय।

ज्ञानोदय (द्वितीय भाग)—लेखक प० पन्नालाल, प्र० स्वय सुजानगढ़, भा० हि०, पृ० ३५, १८९१, आ० द्वितीय।

जैन धर्म पर प्रकाशित महत्वपूर्ण भाषण [हिंदी]

कुवर दिग्विजय सिंह (इटावा १४-३-१९१०)।

डा० हरमन जेकोबी (सन् १९१३ ई०)।

डा० लक्ष्मीचन्द्र जैन (भा० दि० जैन परिषद् के ८वें अधिवेशन मे)।

डा० वान ग्लेजनेय (सन १९१३)।

डा० सतीष चन्द्र विद्याभूषण (२७ दिसम्बर १९१३ ई० काशी स्या. विद्यालय मे)।

डा० टी० के लड्डू

डा० बी० एल० अत्रेय

प० जुगलकिशोर मुख्तार (हस्तिनापुर, १६-११-१९२६)।

प० अम्बादास शास्त्री (सस्कृत-सागर सतर्क सु० त० पाठशाला के ७वें अधिवेशन पर)।

प० गणेश प्रसाद वर्णी (पपौरा, सन् १९२७ ई०)।

प० गोपाल दास बरैया (मार्च सन् १९१२)

प० माणिकचन्द्र कौन्देय (इदौर सन् १९२०)।

पडिता चन्दाबाई (कानपुर, २-४-१९२१)।

प्रो० फणिभूषण अधिकारी (काशी, २६-४-१९२५)।

बा० अजितप्रसाद (दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बई के १२वें अधिवेशन मे)

बा० अम्मोलक चन्द्र (भिंड, १८-६-१९३३)।
बा० छत्रपाल (भिंड, १७-६-१९३३)।
बा० जयभगवान जैन (एटा १८-४-१९३०)।
बा० पद्मसिंह जैन (बुलन्दशहर, ३०-४-१९३२)।
बा० प्यारेलाल वकील (बडौत ३-४-१९२७)।
बा० बहादुरसिंह सिंघी (मार्च सन् १९३२)।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशा (इटावा ८-२-१९३१)।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशाँ (गोहाना, १५-१०-१९३४)।
बा० लालचन्द्र एडवोकेट (हस्तिनापुर १०-११-१९३७)।
बा० „ „ (परिषद अधिवेशन सतना)
बैरिष्टर चम्पतराय जी (लखनऊ, ६ २-१९२२)।
राजकुमार मोहन बल उपनाम बलदेव सिंह जी
रा० सा० द्वारका प्रसाद (मुजफ्फर नगर १-४-१९११)।
रा० सा० नेमदास (अम्बाला, २५ ५-१९३६)।
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (३० नवम्बर १९०४ बड़ौदा)
श्रीमती एनी बेसेन्ट (मद्रास, दिसम्बर १९०१)।
श्रीमती लेखवती जैन मुजफ्फर नगर, १०- -(१९३५)।
बा० साहु जुगमन्दर दास (सहारन पुर, ३०-१२-१९३२)
साहु शान्ति प्रसाद (लखनऊ परिषद अधिवेशन, अप्रेल १९४४)
साहु सलेक चन्द्र (कानपुर, १-४-१९२९)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ (देहली, १७-४-१९३२)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ (बडौत, २७-१२-१९३२)
सेठ पद्मराज (खामगाँव, अप्रेल सन् १९१२)
सेठ माणिक चन्द्र हीराचन्द्र (श्रवण'बेलगोला, २६-३ १९३०)
सेठ लाल चन्द्र सेठी (कलकत्ता, २६-११-१९२०)
सेठ हीराचन्द्र नेमचन्द्र (इन्दौर, ४-४-१९१४)

सेठ हुकम चन्द्र जी (१० फरवरी १६१० दि० जैन महासभा अधिवेशन सम्मेद शिखर)

सेठ हुकम चन्द्र जी (पालीतारण, सन् १६१३)

स्वामी राम मिश्र शास्त्री (काशी; सन् १६०५)

ला० बनारसीदास एम ए (१६०४ ई०)

रा० रा० वासुदेव गोविन्द आपटे—

जैन सामायिक पत्र पत्रिकाएँ

वर्तमान मे चालू जैन पत्र पत्रिकाएँ निम्न प्रकार हैं—

अनेकान्त—मासिक, हिन्दी, सपा० पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार प्र० वीर सेवा मदिर, सरसावा, जि० सहारनपुर (यू० पी०); जन्म सन् १६३० ई० वा० मूल्य ४)।

आत्म धर्म—मासिक; हिंदी, सपा० रामजी माणेक चन्द दोशी वकील, प्र० आत्म धर्म कार्यालय मोटा आकडिया, काठियावाड, जन्म १६४५ ई०, वा० मू० ३),—गुजराती सस्करण भी निकलता है।

उत्कर्ष—मासिक, हिंदी, प्र० लमेचू महासभा की ओर से वटेश्वर दयाल वकवेरियाँ, भिंड मडी, ग्वालियर, पुनः जन्म १६४७ ई०।

खडेल वाल जैन हितेच्छु—पाक्षिक, हिन्दी, सपा० प० नाथूलाल व प० भँवर लाल, प्र० श्री भारत दिग० जैन खडेलवाल महासभा के लिये, रगमहल इन्दौर, जन्म १६२० ई०, वा० मू० २)।

जिनवाणी—मासिक, हिंदी, सपा० फूल चद जैन सारग, प्र० जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ, जयपुर राज्य जम १६४२ ई०, वा० मू० ४)।

जैन गजट—साप्ताहिक, हिंदी; सपा० प० वशीधर शास्त्री (सोलापुर) प्र० भारत, दि० जैन महासभा के लिये प० बाबूलाल, नई सडक, देहली, जम १८६५ ई०, वा० मूल्य ३॥)।

जैन गजट—मासिक, अ गरेजी, सपा० बा० अजित प्रसाद एम ए एल

एल बी., प्र० आल इण्डिल जैन एसोसियेशन के लिये, अजिताश्रम लखनऊ, जन्म १६०४ ई०, वा० मू० ३)।

जैन जगत—मासिक, हिन्दी, सपा० हीरासव चवडे, जमनालाल विशारद आदि, प्र० भारत जैन महा मडल के लिये हीरासाव चवडे वर्धा, जन्म अप्रेल १६४७ ई०, प्रति अंक मू० ।)।

जैन प्रचारक—मासिक, हिंदी, प्र० भारत० जैन अनाथ रक्षक सोसाइटी जैन अनाथाश्रम, देहली, जन्न १६०६ ई०, वा० मू० ३)

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी, सपा० व प्र० ईश्वर चद्र जैन एम ए, न० ४० इमली बाजार, इदौर, जन्म १६४५ ई०, वा० मू० २)।

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी; सपा० प० मुन्नालाल मा० आ०, प्र० श्री गणेश दिग० जैन सस्कृत विद्यालय सागर, जन्म २५ मई १६४७ ई०, वा० मूल्य ३)।

जैन बोधक—पाक्षिक, हिंदी, सपा० प० मक्खन लाल व प० वर्धमान पार्श्वनाथ, प्र० स्व० रावजी सखराम दोशी स्मारक मघ, ५ पूर्व मगलवार सोलापुर; जन्म सितम्बर सन् १८८४ ई०, वा मू० ३।।),–इसका मराठी सस्करण भी निकलता है।

जैन महिलादर्श—मासिक, हिंदी, सपा० म० र० ब्र० पडिता चन्दाबाई व ब्रज बाला देवी, प्र० भारत दिग० जैन महिला परिषद के लिये मूलचद किशनदास कापडिया सूरत; जन्म १६२२ ई०, वा० मूल्य ३।)।

जैन मित्र—साप्ताहिक, हिन्दी, सपा० व प्र० मूलचद किसनदास कापडिया सूरत, जन्म १८६६ ई०, वा० मूल्य ५), यह श्री दिग० जैन प्रातिक सभा बम्बई, का मुख पुत्र है।

जैन संदेश—साप्ताहिक, हिंदी, सपा० व प्र० बलभद्र जैन, मोती कटरा आगरा, जन्म १६३६ ई०, वा० मू० ४), यह श्री भारत दिग० जैन सघ मथुरा का मुख पत्र है।

तरुण जैन सघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी; प्र० मत्री, तरुण जैन सघ कलकत्ता, जन्म १९४६, अमूल्य।

तेरा पथी युवक संघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी, प्र० मत्री तेरापथी युवक संघ लाडनूं, प्रति मू० ।)।

तारण बधु—मासिक, हिंदी, सपा० बाबूलाल डेरिया, प्र० राम लाल पाढे इटारसी, जन्म १९३८ ई०, वा० मू० २।।=), अखिल भारत तारणपथी नवयुवक मडल का मुख पत्र।

दिगम्बर जैन—मसिक, हिंदी गुजाराती मिश्रित, सपा व प्र० मूलचद किसनदास सूरत, जन्म १९०७ ई०, वा० मू० २।।)।

दी जैन एण्डीक्वेरीदी—षाण्मासिक, अ गरेजी, सपा० डा ए न उपाध्ये प्रो० हीरालाल आदि, प्र० दी सैन्ट्रल जैना ओरिएटल लायब्रेरी आरा, जन्म १९३४ ई०, वा० मू० ४); यह पत्र श्रीजैन सिद्धान्त भास्कर के साथ सयुक्त निकलता है।

दीजैन होस्टल मेगजीन—त्रैमासिक, हिन्दी अगरेजी, प्र० जैन होस्टल अलाहाबाद।

पडित सूर्योदय—मासिक, हिन्दी, सपा० प० खूब चन्द, चौपाई बम्बई, प्र० फूलचन्द हीराचद शाह सोलापुर, जन्म जनवरी १९४७, वा० मू० २),

प्रगति आणि जिन विजय—साप्ताहिक, मराठी व कन्नड, सपा० भूपाल अप्पा जी चौगुले, प्र० भूपाय देवेन्द्रपा चौगुले, ६१६ मठगली बेलगाव, जन्म १९०३; वा० मू० २।।)

महावीर सदेश—पाक्षिक, हिन्दी, सपा० केशरलाल जैन अजमेर, प्र० प्रबध कारिणी कमेटी श्री दिग० जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी (जयपुर राज्य), जन्म मई १९४७ ई०।

लोक जीवन—मासिक, हिन्दी, सपा० यशपाय जैन प्र० लोक जीवन कार्यालय ७/३६ दरियागज देहली, जन्म १९४५, वा० मू० ६)।

वीर—साप्ताहिक हिन्दी, सपा० बा० कामता प्रसाद व प० परमेष्ठीदास प्र० वीर कार्यालय, ऋषिभवन फैज बाजार देहली, जन्म १९२५ ई०; वा० मू०

४), भारत दि० जैन परिषद का मुख पत्र है।

वीर लोक शाह—मासिक, हिन्दी, सपा० विजय मोहन जैन, प्र० शिवनाथ मल माहटा जोधपुर, जन्म १९४४ ई०, वा० मू० ३)।

वीर वाणी—पाक्षिक, हिन्दी, सपा० प० चैनसुखदास न्या० ती०, प्र० प० भँवर लाल जैन, मनिहारो का रास्ता, जयपुर, जन्म अप्रैल १९४७ ई०; व० मू० ३)।

वैद्य—मासिक, हिन्दी; सपा० विष्णुकान्त जैन वैद्य, प्र० हरिशकर जैन वैद्य, मुरादाबाद, जन्म, १९२० ई०, वा० मू० ३)।

मानसी—मासिक, हिन्दी; प्र० वर्द्धमान साहित्य मदिर लखनऊ, जन्म मई १९४७, वा० मू० १५)।

श्री जैन सत्यप्रकाश—मासिक, गुजराती हिन्दी; सपा० चीमनलाल गोकलदास शाह, प्र० श्री जैन धर्म सत्य प्रकाश समिति, घी कांटा रोड, अहमदावाद, जन्म १९३६ ई०, वा० मू० २)।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर—षाण्मासिक, हिन्दी, सम्पादक बा० कामता प्रसाद प० के भुजबलि शास्त्री आदि, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा (विहार), जन्म १९३३ ई०, वा मू० ४) (जैन एण्टी क्लोरी सहित)।

श्वेताम्बर जैन—मासिक, हिन्दी, प्र० जवाहरलाल लोढा मोती कटरा आगरा; पुन प्रकाशित जून १९४७।

सनातन जैन—मासिक, हिन्दी, सपा० अक्षयकुमार जैन, प्र० मगतराय जन 'साधु' मुख्तार बुलन्दशहर, जन्म १९२७ ई०; वा० मू० २)।

सगम—मासिक, हिन्दी, सपा० स्वामी कृष्णानन्द व सूरज चन्द्र, प्र० सत्याश्रम वर्धा, जन्म १९४२ ई०, वा० मू० ३)।

सिद्धि—मासिक, हिन्दी, सपा० व प्र० रा० वै० सिद्ध सागर, ललितपुर, जन्म १९३२ ई०।

हितेच्छु—साप्ताहिक, हिंदी, सपा० वा० कैलाशचद्र जैन, प्र० हितेच्छु कार्यालय, वीरडी का रास्ता जयपुर सिटी, जन्म १९४४ ई०, व० मू० ५)।

हिन्दी मार्तण्ड—मासिक, हिन्दी, सपा० मैनावती 'मैना', प्र० विमल

अहिंसा कुन्ज, तोपखाना अलाहबाद, जन्म अप्रेल १९४७ ई०, वा० मू० ३)।

ज्ञान—मासिक, हिंदी सपा० सागर चद जैन, प्र० मामन सिंह वैद्य प्रेमी देहली, जन्म मई १९४७ ई०, वा० मू० १)।

उपर्युक्त ३९ पत्रों के अतिरिक्त निम्नलिखित ४३ पत्रों के अस्तित्व का और पता चलता है, किन्तु उनके विषय मे जानकारी नही है—

आत्मानद प्रकाश, ओसवाल सुधारक, ओसवाल नवयुवक, कच्छी दशा ओसवाल प्रकाश जैन, जैन जवाहिर, जैन ज्योति, जैन ध्वज, जैन धर्म प्रकाश, जैन पथ प्रदर्शक, जैन प्रवचन, जैन प्रकाश, जैन बन्धु (हिंदी और गुजराती), जैन युग, जैन विकाश, जैन शिक्षण सदेश, जैन ससार (उर्दू), जैन सिद्धात, जैन हेरल्ड, जैसवाल जैन, जीवन ज्योति, जीवन सुधा, झलक, तरणरवा, तारण पथ दि० खडेलवाल जैन हितेच्छु, धर्मरत्न, परिवतन, परिचय पत्रिका, बुद्धिसागर, प्रभात, महाराष्ट्रीय जैन (मराठी), रत्नाकर, विवेकाभ्युदय कन्नड, वीर शासन, वीर सदेश, शांति वैभव, शांति सिन्धु, शिक्षण पत्रिका, सिद्ध चक्र, समय धर्म, सत्य प्रकाश, अने स्वदेश, स्थानकवासी जैन।

इन उपर्युक्त ८२ पत्र पत्रिकाओ मे से सभव है कुछ एक बन्द भी हो गये हो और कई एक ऐसे है जो इसी वर्ष चालू हुए हैं या होने की सूचना है।

जो जैन पत्र पत्रिकायें भूतकाल मे अल्पाधिक समय तक चालू रहकर अब बंद हो चुकी है उनकी सूची निम्न प्रकार है —

अहिंसा (बनारस), आत्मानन्द, आत्मानन्द जैन पत्रिका, आदर्श, आदर्श जैन, आदर्श जैन चरित्र, आदर्श जैन चरित माला (अम्बाला), आनन्द, उत्कर्ष, ओसवाल, ओसवाल अभ्युदय, कच्छी जैन मित्र, काव्याम्बुधि, कुमार, खडेलवाल जैन, गोग्रास, गोला पूर्व जैन, चन्द्र प्रकाश, चन्द्र सागर, छात्र (मेरठ), जागृति, जाति प्रबोधक (झांसी), जाति प्रबोधक (आगरा), जिन वाणी (बगला, कलकत्ता), जिन वाणी (हि०), जिन विजय (कन्नड), जीमालाल प्रकाश, जैन, जैन आदर्श, जैन सघाससार, जैन एडवोकेट, जैन कुमार (मेरठ), जैन जगत, जैन जागृति, जैन जीवन, तत्त्व प्रकाशक, जैन तत्त्व प्रवेशक, जैन दर्शक, जैन दिवाकर, जैन धर्म प्रकाश, जैन धर्म ज्ञान दीपक, जैन धर्मोदय, जैन नारी हित

कारी, जैन पताका (कलकत्ता), जैन पताका (अहमदाबाद), जैन पत्रिका, जैन प्रकाश, जैन प्रकाशक, जैन प्रदीप (उर्दू-देव बन्द), जैन प्रभात, जैन प्रभाकर (बनारस), जैन प्रभाकर (लाहौर), जैन प्रभादर्श, जैन प्रबोध, जैन प्रभाव, जैन बन्धु (हिंदी), जैन बधु (मराठी), जैन बधु (कन्नड), जैन भाग्योदय, जैन भास्कर, जैन मार्तण्ड (मराठी) जैन मातण्ड (हिंदी), जैन मुनि, जैन युवक, जैन रत्नमाला, जैन रिव्यु जैन वर्तमान, जैन वारविलास (मराठी), जैन विजय, जैन विजय रतग, जैन विद्या, जैन विद्या दानोपदेश प्रकाश (मराठी), जैन विवेक प्रकाश, (श्वेताम्बर- भ्युदय), जैन शासन, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स हेरल्ड, जैन समाचार (दो), जैन समाज, जैन समाज सुधारक (मद्रास , जैन समालोचक, जैन साहित्य सशोधक जैन सिद्धान्त, जैन सुधारक, जैन सुधारस, जैन हितेच्छु (दो), जैन हितैपी, जैन हित उपदेशक (उर्दू), जैन ज्ञान प्रकाश, जैनी (देहली), जैनोदय, जैसवाल जैन, तारणपथ, तरुण जैन, दशा श्रीमाली हितेच्छु, देश हितैपी, देशभक्त, धर्मादिवा कर, धर्मध्वज, धर्माभ्युदय, नारी हितकारी, नुक्ता, पद्मावती पुरवाल, पद्मावती सदेश, प्यारी पत्रिका, परवार बन्धु, परवार हितैषी, प्रगति (मराठी), प्रजा बधु, प्रभात, प्रभावना, प्रवचन वचनामृत, पल्लीवाल जैन, पुण्य भूमि, पोल पत्रिका, बुद्धि प्रभा, भारत भानु (पूना), भारतभानु (सिरोही), भारत हितैषी, महिला भूपण, मधुकर, मारवाडी ओसवाल, मारवाडी जैन सुधारक, मुनि, रतलाम टाइम्स, रगीला, वन्दे, जिनवरम (मराठी), विजय धर्म प्रकाश, विनोद, विविध विचार माला, विश्व बन्धु, वीर वाणी, वीर सदेश, वीशा श्री माली हितेच्छु, श्रावक, श्राविका सुबोध, श्री वर्द्धमान, श्वेताम्बर जैन, श्वेताम्बर स्थानकवसी कान्फ्रेन्स प्रकाश, सत्यवादी सत्य सदेश, सत्योदय सद्धर्म, सद्धर्म भास्कर, सनातन जैन, समालोचना, स्याद्वाद्व केशरी, स्याद्वाद्व सुधा, स्याद्वादी सर्वार्थ सिद्धि (कनडी) सर्वोदय, स्त्री सुख दर्पण, सार्वधर्म, सैत वाल जैन, सैतवाल जागृति, हिन्दी जैन, ज्ञान प्रकाश, हिन्दी समाचार, हूमड बन्धु, सम्यक्त्ववर्धक कच्छी जैन, कच्छी दशा ओसवाल दर्पण, वरुण कच्छ, महावीर (पूना), महावीर (सिरोही), समालोचक ।

———

उर्दू पुस्तकें

अग्रवाल धर्मावली—ले० सुमेर चन्द जैन अग्रवाल, प्र० हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, पृ० ४०, व० १९२५।

अटकल पच्चू (ट्रैक्ट हिस्से ५)—ले० व प्र० वा० मामचन्द राय जैनी; देहरादून।

अद्भुत राम चरित्र—ले० पति नैनसुखदास, प्र० ला० होशियार सिंह सुनपत, पृ० ३६, व० १९१५, आ० अव्वल।

अनमोल मोती—ले० शभूनाथ जैन कायलवी, प्र० जोतीप्रसाद जैन देव यद, पृ० ५२, व० १९१२, आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजी (हिस्सा अव्वल)—ले० विशभरदास झझानवी सपा० अजुध्या प्रसाद जैनी, प्र० जौहरी मल देहली, पृ० ४०, व० १९१७; आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजी (हिस्सा दोयम)—ले० विशभरदास झझानवी, पृ० ६४, व० १९१८।

अनापूर्वी—प्र० सपादक "जैन" देहली, पृ० ३४।

अमोलक ऋषि महाराज की सवाने उमरी—ले० विशवरदास, प्र० ला० गुर परशाद जैन तोशाम (हिसार), पृ० १४४ व० १९२५, आ० अव्वल।

अहिंसा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मडल लखनऊ, व० १९१५।

अहिंसा धर्म याने गास्पल आफ वर्धमान—ले० महर्षि शिववरत लाल वर्मन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १४४, व० १९३२।

अहिंसा धर्म पर बुजदिली का इल्जाम—ले० बा० शिव लाल मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १९२८।

अहिंसा परचार—अर्थात् गोश्तखोरो के ऐतराजात का दन्दा शिकत जवाब ले० बाबू परमानद जैन अ० मा० नन्दलाल, पृ० ७२, आ० अव्वल।

अहिंसा याने तमाम जानवरो से बिरादराना मुहब्बत—प्र० जीव दया विभाग; जैन महा मडल लखनऊ, व० १६१५।

आदाबे रियाजत याने बाइस परीसह—ले० बा० भोलानाथ दरखशां, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० २४, व० १६२६, आ० अव्वल।

आदीश्वर भगवान श्री रिखवदेव जी महाराज का मुख्तसिर जीवन चरित्र --अनु० गोपी चन्द जैनी 'भानु'; प्र० आत्मानद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला पृ० ६६, व० १६१६।

आबदार मोती—ले० शिव वरतलाल, प्र० नन्दकिशोर 'अवधूत' लाहौर, पृ० १८६, व० १६२५, आ० अव्वल।

आईनए अफआल दयानन्द (अलमारुफ तर्जुमा दया नद छल कपट दर्पण)—ले० प० जीया लाल चौधरी, प्र० जोतिपरत्न पवित्र औषधालय फ़र्रुख नगर; पृ० २०८, व० १६२५, आ० अव्वल।

आईनए हमदर्दी—ले० ला० पारसदास, प्र० खुद देहली, पृ० ३३४, व० १६१६, आ० अव्वल।

आरज़ुए खैर बाद (मन्जूम)—(मेरी भावना का तर्जुमा)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १६२५।

इत्तहादुलमुखालफीन—ले० चम्पराय जैन बैरिस्टर, पृ० ३६४, व० १६२२ आ० अव्वल।

इन्सानी गिजा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मडल लखनऊ, व० १६१५।

ईश्वर विचार—ले० नत्थन लाल गुडगांवे वाले, प्र० खुद देहली, पृ० ४८, व० १६२६।

एडरेस—बा० लाल चन्द्र जैन एडवोकेट; रोहतक, सन् १६३१ ई०।

क्या ईश्वर खालिक़ है—(बतर्ज लावनी)—ले० बा० जोती परशाद;

जैन तत्व दरपन—ले० स्वामी रतनचन्द्र जी, प्र० लाला नन्नूलाल रामलाल जैनी पटियाला, पृ० ५०८, व० १९१७, आ० अव्वल।

जैन तत्व परकाश—ले० लाला नथूराम, प्र० जैन कुमार सभा जीरा, पृ० ५७, व० १९१९, आ० अव्वल।

जैन दूसरों की नजर में—सक० डी० सी० ओसवाल, प्र० पी० डी० जैन मत्री श्री महावीर जैन लायबरेरी स्यालकोट, पृ० १२, व० १९१९।

जैन धर्म—ले० महर्षि शिवव्रतलाल, प्र० जैन मित्रमडल देहली, पृ० १७६, व० १९२८, आ० अव्वल।

जैन धर्म (सी० एस० मेघकुमार के अंग्रेजी लेख का तरजुमा)—अनु० विद्यारतन वी० ए०, प्र० लाला गुरदासचन्द्र जैन, पृ० ३९, व० १९२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म अजलो—ले० लाला दीवानचद जैनी, प्र० जैन मित्रमडल देहली, पृ० ५६, व० १९२८।

जैन धर्म की कदामत—लेखक दीवानचद जैनी, प्र० श्री जैन सम्मति मित्रमडल रावल पिंडी, पृ० २८, व० १९२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म की कदामत—लेखक नत्थूराम, प्र० आत्मानद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० २८, व० १९१७, आ० अव्वल।

जैन धर्म की अजमत—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३२, व० १९२६।

जैन धर्म दीगर मजहब से क्यों आला है—ले० प्रभुराम खत्री, प्र० जैन सन्मति मित्रमडल रावल पिंडी, पृ० ३०, व० १९१४, आ० अव्वल।

जैन धर्म वाले किसकी परस्तिश करते हैं—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्रमडल देहली, व० १९२६, आ० अव्वल।

जैन धर्म वो परमातमा—ले० बा० रिखबदास जैन मेरटी प्र० जैन मित्रमडल देहली, पृ० ४८, व० १९२३, आ० दोयम।

जैन ममजहब के ६२ सूत्रों का खुलासा—लेखक ला० सुमेरचन्द जैन

एकाउन्टटेन्ट पटियाला, प्र० खुद, पृ० ९२, व०, १९२७ आ० अव्वल।

जैन मत नास्तिक मत नहीं है और जैन फिलासफा के छः जौहर— (मि० हर्बर्टवारन के अंग्रेजी लेख का तरजुमा)—अनु० चन्दूलाल जैन अख्तर; प्र० प्रेम वर्धिनी जैन सभा नजफगढ, पृ० ३२, व० १९२३, आ० अव्वल।

जैन मत सार या हिन्दु मत इख्तसार—ले० ला० सुमेरचन्द जैन, प्र० खुद० पटियाला, पृ० ३२२, व १९१६, आ० अव्वल।

जैन रतन माला के तीसरे और चौथे रतन—ले० ला० नेमचन्द जैन, प्र० खुद देहली, पृ० १६, व० १९२५।

जैन वृतान्त कल्पुद्रुम—ले० शिववरतलाल वर्मन एम० ए०, प्र० खुद लाहौर, पृ० ४८।

जैन वैराग्य शतक—अनु० मा० बिहारी लाल बी० ए०, प्र० खुद बुलन्दशहर, पृ० २४, व० १९०३।

जैन साधुओं की बरहनगी (बैरिस्टर चम्पतराय की अंग्रेजी किताब का तरजुमा)—अनु० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १८, व० १९३१, आ० अव्वल।

जैनियों को नास्तिक कहना भूल है—ले० हंसराज शास्त्री, अनु० हुकमचन्द जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक सोसाइटी अम्बाला शहर; पृ० ३५; व० १९२४।

जैनी आस्तिक है—ले० नत्थूराम, पृ० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १९१५।

जैनी नास्तिक नहीं—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १६, व० १९१९।

जैनी नास्तिक नहीं हैं इसपर विचार—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० खुद जीरा, पृ० ३४।

जैनला—ले० बैरिस्टर चम्पतराय, प्रकाशक हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, मूल्य १)

डूबती नैया—ले० दीवान अज समन्दरी, प्र० जैन सोसाइटी लाहौर,

पृ० ३२, व० १९१३, आ० अव्वल।

तड़पदार मोती—ले० शिवव्रतलाल वर्मन, प्र० जे० एस० सन्तसिंह एँड सन्स लाहौर, पृ० १७६।

तनदुरुस्ती और खुराक—प्र० जीवदया सभा जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

तरदीद गोश्त—प्र० भारत जैन महा मंडल, पृ० ४०, आ० अव्वल।

दयानन्द कुतर्क तिमिर तरनि अलमारूफ गौहर बेबहा—ले० मुनि लब्धि विजय, प्र० लब्भूराम जैनी जीरा (फिरोजपुर), पृ० ११२, व० १९१०, आ० अव्वल।

दयास्वीकार मॉस तिरस्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, पृ० १०२, व० १९१४।

दिल्लगी का वस्ता अलमारूफ नसीहतों का गुलदस्ता—ले० ला० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० २०, व० १९१६, आ० अव्वल।

दुखे हुए दिल की फरियाद—ले० खैरख्वाह कौम, बा० जिनेश्वरदास 'मायल', प्र० श्री जैन उपकारक पुस्तकालय, पृ० ८, व० १९०६, आ० अव्वल।

देव गुरु धर्म का स्वरूप—ले० नत्थूराम जैनी प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ७०, व० १९१८, आ० अव्वल।

धर्म की जड़ सदा हरी—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ३२, व० १९१७, आ० अव्वल।

धर्म वीर श्रीपाल नाटक—प्र० श्री दिगम्बर जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, पृ० ७०, व० १९२३, आ० अव्वल।

नशीली चीजें और उनके बेजा इस्तैमाल के बदनतायज—ले० ला० बिहारीलाल, प्र० एस० सी० जैन अमरोहा, पृ० ३२, व० १९१६।

नायाब गौहर—ले० महर्षि शिवव्रतलाल वर्मन, प्र० जैन मित्रमंडल

देहली, पृ० ३२, व०, १६२६, आ० अव्वल।

नेमनाथ जी का ब्याहला (बहर मसनवी)—ले० व प्र० बा० लखपत-राय जैनी, कैसरगज मेरठ, पृ० १६।

नौतत यानि जैन फिलासफी—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ६२, व० १६२१।

पहला महाव्रत (अहिंसा)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १६१६।

फरयाद बेजबान—ले० बा० भोलानाथ दरखशाँ बुलन्दशहरी।

फरायज इन्सानी—ले० बा० शिवलाल जैनी मुख्तार, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १६, व० १६३०।

फरायज इन्सानी या मनुष्य कर्त्तव्य—लेखक व० प्र० सुमेरचन्द जैन एडवोकेट अम्बाला, पृ० १११, व० १६२५, आ० अव्वल।

फैसलेजात व तवारीख मुत्तलिक श्री जैन दिगम्बर वाके हस्तिनापुर—स० प्र० बा० सुल्तानसिंह जैनी वकील मेरठ, पृ० १६, व० १६०६।

ब्रह्मगुलाल चरित्र—देखिये बैराग कौतुहल नाटक।

ब्रह्मचर्य—ले० बा० रिखबदास जैनी वकील मेरठ, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १०, व० १६२४, आ० अव्वल।

बारह मासा श्री नेमीश्वर भगवान व श्रीराजमती—प्र० श्री जैन धर्म भास्कर सभा रावलपिंडी, पृ० २८, व० १६८८, आ० अव्वल।

बाल बोध—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १२, व० १६१६।

वीर चारित्र (बतर्ज रामायन राधेश्याम)—ले० हेमराज; प्र० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा होशियारपुर, पृ० १२८, व० १६२४, आ० अव्वल।

वीर नामा (मनजूम)—ले० व० प्र० बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशा बुलन्दशहर, पृ० ५२, व० १६१२, आ० अव्वल।

बैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा अव्वल)—ले० ला० भगतराय; प्र० मा०

विहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ३०, व० १६०१।

वैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा दोयम)—लै० ला० रविचन्द्र, प्र० मा० बिहारी लाल, बुलन्दशहरी पृ० ४०, व० १६०६।

भगवान महावीर और उनका वाज़—ले० बा० शिवलाल मुख़्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३३. व० १६२७।

भगवान महावीर की तालीम और उसका असर—ले० चम्पतराय जैनी बैरिस्टर, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १६४१।

भगवान महावीर के जश्ने वलादत की रूएदाद—प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ४८, व० १६२८।

भगवान महावीर के जीवन की झलक—ले० राय बहादुर जुगमन्दरलाल जज, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३२, व० १६२५, आ० अव्वल।

भगवान श्री अरिष्ट नेमिनाथ—ले० मानिक चन्द जैन, प्र० श्री जैन समिति मित्र मडल रावलपिंडी, पृ० ३४, व० १६२८।

भजन पंकज पराग—ले० ला० मुन्शीराम, प्र० ला० रखाराम भावडे, पृ० ३२, आ० अव्वल।

भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक—ले० व प्र० बा० न्यामतसिंह जैनी हिसार; पृ० ८८, व० १६१६, आ० अव्वल।

भोज प्रबन्ध नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० व प्र० मा० विहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० २२, व० १६०३, आ० अव्वल।

मजमूए दिलपज़ीर—ले० बा० चन्दूलाल जैन अख़्तर, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ८, व० १६२५।

मरने से डर क्या—ले० जोतीप्रशाद देवबद, प्र० खुद, पृ० १६, वर्ष १६२०।

मुशायरा मय रिपोर्ट—प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३२, व० १६३०।

महारानी रिखब सेना—ले० ला० हुकमचन्द जैन, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ४८, व० १६१७, आ० अव्वल।

मांस अहार (हिस्सा अव्वल)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १२; व० १६१६।

मांस भक्षण निषेध [हिस्सा दोयम]—ले० बा० नानकचन्द वैरागी, प्र० जैन सभा मालेर कोटला, पृ० ४६, व० १६१३।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० प० रिखवदास, प्र० मा० विहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ५०, व० १८६६।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा दोयम]—ले० पं० रिखवदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ८४, व० १६००।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा सोयम]—ले० प० रिखवदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ११६, व० १६०१।

मुक्ति—ले० प्रिंस हाफ मून, प्र० डा० परशादी लाल देहली, पृ० ३२।

मुक़दमा जैन मत समीक्षा—स० प्र० बा० प्यारेलाल वकील देहली, पृ० ६१, व० १६०५।

मुरक्कअ इबरत—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ४८, व० १६३४।

मूर्त्ति पूजा मंडन—ले० प० मेहरचन्द, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सोनीपत पृ० ८, व० १६०६ आ० दोयम।

मेरी भावना (नज़्म)—ले० ला० मुन्नूलाल जौहरी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १६२५ आ० अव्वल।

मेरी भावना—ले० प० जुगलकिशोर, मुख्तार प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ११, व० १६३६, आ० शशतुम [छठी]।

मोक्ष का रास्ता—ले० मिट्ठनलाल जैन, प्र० खुद देहली, पृ० ४८, व० १६२६।

मोह जाल—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली; पृ० ८; व० १६२४, आ० अव्वल।

योगसार मारूफ़ व रम्ज़े मग्ज़ हकीकत—ले० योगीन्द्राचार्य, अनु० मा०

विहारीलाल, प्र० एस० सी० जैन बुलन्दशहरी, पृ० ३६, व० १६२३, आ० अव्वल ।

रहनुमा उर्फ जैन धर्म दरपन—ले० बा० रिखवदास बी० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १६२५ ।

राम चरित्र—ले० ला० भोलानाथ दरखशा, प्र० मा० विहारीलाल, अमरोहा, पृ० १०४, व० १६०५ ।

रिसाला सुखकारी–मौसूमा मुद्दआ शादी [न० १]–ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० १६ ।

रिसाला सुखकारी–मौसूमा मुद्दआ शादी [न० २]–ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४ ।

रिसाला सुखकारी–मौसूमा मुद्दआ शादी (न० ३)–ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४ ।

रिसाला सुखकारी–मौसूमा मुद्दआ शादी [न० ४]–ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० १६ ।

रूहानी तरक्की का राज—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १६३५ ।

रूहानी तरक्की का राज —ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जोहरी मल जैन सर्राफ देहली, पृ० १६, व० १६३६, आ० दूसरी ।

लावनी कर्ता खंडन का फोटू—ले० ला० जोतीप्रशाद, प्र० खुद, पृ० ८, व० १६०४ ।

लुत्फे रूहानी उर्फ आत्मिक आनन्द—संपा० मा० विशम्भरदास, प्र० ला० गुरप्रशाद जैन तोशाम [हिसार], पृ० ५६, व० १६२३ ।

वर्ण या जात क्या चीज है—ले० बा० रिखवदास वकील, प्र० जैन ट्रैक्ट प्रचारक मडल कीरतपुर, पृ० १६, व० १६१८, आ० प्रथम ।

वीर अकलक देव—ले० ला० शेरसिंह नाज, प्र० ला० प्यारे लाल देवी-सहाय देहली, पृ० ६४ ।

शास्त्रार्थ नजीबाबाद—प्र० मोहकम लाल जैन देहली, पृ० ६४ ।

शाहरा निजात (यानि जैन धर्म के मुतालिक सवालो जवाब)—अनु० चन्दू लाल जैन अख्तर, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३२, व० १९२४, आ० अव्वल ।

शुमाली हिन्द की जैन डायरेक्टरी—सपा० दीपचन्द जैन, प्र० जैन समार आफिस देहली, पृ० ३०४, व० १९४० ।

सच्चे मजहब की इब्तदाई बातें—ले० डब्लू० जी० ट्राउट, अनु० प० भगतराम शर्मा, पृ० २४, व० १९४१ ।

सच्चे मोतियों की लड़ी—ले० श्रीमती पार्वती देवी, सपा० ला० दीवानचन्द, प्र० जीवदया फड रावलपिंडी, पृ० २४, व० १९२१, आ० दोयम ।

सनातन जैन दर्शन प्रकाश (अलमारूफ नौतत्त्व पदार्थ)—ले० ला० सोहन लाल वकील, पृ० ५३४, व० १९०२ ।

सप्त व्यसन या हफ्त अयूब—ले० सुमेरचन्द जैन एकाउन्टेंट, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १९२५ ।

स्तुति व प्रार्थना—ले० व० प्र० मुन्शी रामप्रसाद 'राम', पृ० ८, व० १९२४ ।

स्त्री शिक्षा—ले० व प्र० दयाचन्द्र गोयलीय जयपुर, पृ० ५०, व० १९०९ ।

सकट हरन या मुसद्दसे वीर—ले० दिगम्बर प्रशाद मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली, पृ० १६, आ० दोयम ।

सरगुजशते कौम (मनजूम)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन सगठन सभा देहली, पृ० १६, व० १९२५ ।

स्वामी दयानन्द और वेद—ले० स्वामी कर्मानन्द, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला छावनी, पृ० ४८, व० १९३६, आ० अव्वल ।

सहरे काज़िब—ले० ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली पृ० ४०, व० १९२९ ।

सिल्के सद जवाहर[यानि जैन वैराग शतक मनजूम]—ले० प्र० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० ३२, १९२६ ।

सीता जी का बारह मासा—ले० यती नैन सुखदास, अनु० व० प्र० मा० विहारी लाल बुलन्द शहर, पृ० ३२, व० १८९०।

सुख कहां—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० मुसद्दीलाल बाबूराम शामली, पृ० ८, व० १९२३।

सुख कहाँ—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० ८, व० १९२४, आ० अव्वल।

सुबह सादिक अलमारूफ अनवारे हक़ीकत—ले० फकीर माइल, प्र० ला० महावीर प्रशाद डाक वाले देहली, पृ० ४०।

सूखा हुआ चमन कैसे हरा हो सकता है यानि हम और हमारा फर्ज—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १९२१।

हकीकते दुनिया (नज्म)—लेखक बा० भोलानाथ दरखशा, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० १६, व० १९२७, आ० अव्वल।

हकीकत माबूद (नज्म)—ले० बा० भोलानाथ दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १९२८।

हनुमान चरित्र (हिस्सा अव्वल)—ले० व प्र० मा० विहारी लाल वुलन्द-शहरी, पृ० १४८।

हनुमान चरित्र (हिस्सा दोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० १०२।

हनुमान चरित्र (हिस्सा सोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० ९२, व० १९०३, आ० अव्वल।

हमदर्दे मुल्क—ले० दिगम्बर दास जैन, प्र० खुद, पृ० ८०, व० १९२६।

हमारा रूहानी रहबर यानि जैन तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का मुख्तसिर जीवन चरित्र—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० जैन ट्रैक्ट सोसाइटी लाहौर, पृ० ३२, व० १९१७।

हयाते वीर (नज्म)—ले० दवीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार,

प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १९२८ ।

हयाते रिषभ (नज़्म)—ले० दवीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६, व० १९३१, आ० अव्वल ।

—)०(—

मराठी भाषा की पुस्तकें

अन्य धर्मापेक्षा जैन धर्मातील विशेषता—अनु० श्री आनन्द ऋषि जी, पृ० ३६, व० १९२८ ।

अमित गति श्रावकाचार– अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ४१५, व० १९१४ ।

आत्मोन्नतिचां सरल उपाय—ले० आनन्द ऋषि, पृ० ५१, व० १९२७ ।

उपसका चार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६४, व० १९०४ ।

उपासकाध्ययन (रत्न करड श्रावका चार)—अनु० नाना रामचन्द्र नाग, पृ० २४, व० १९२२ ।

कुन्दा कुन्दाचार्यांचे चरित्र—ले० तात्या नेमिनाथ पागल, पृ० २७, व० १९०६ ।

क्रिया मजरी—अनु० कलाप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० १२८, व० १९०८ ।

गोमट्टसार (कर्म काड)—अनु० नेमचन्द्र वाल चन्द्र गाधी, पृ० ५२३, व० १९२८ ।

जैन दर्शन व जैन धर्म–ले० हर्बर्ट वारेन, अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ३२, व० १९३८ ।

जैन धर्मामृत सार (२ भाग)—ले० नेमिचन्द्र सीताराम, पृ० ७६, व० १८२९ ।

जैन धर्मांचे अहिंसा तत्त्व—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० २२ व० १९२९ ।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग १)—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ६७, व० १९२८ ।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग २)—अनु० आनन्द ऋषि; पृ० ३५; व० १९२८ ।

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शहा सोलापुर, पृ० २३२, व० १९१० ।

जैन धर्म शिक्षावली (३ भाग)—ले० नाना राम चन्द्र नाग ।

त्रैवर्णिकाचार—अनु० कलप्पा भरमाप्पा निटवे, पृ० ७५६, व० १९१०

द्रव्य संग्रह—अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल, पृ० ८५, व० १९०० ।

दश भक्ति—अनु० प० जिनदास, पृ० ३७०, व० १९२१ ।

द्विजवदन चपेट—ले० अज्ञात, पृ० २४ ।

धर्मशर्माभ्युदय—अनु० रा० रा० कृष्णा जी नारायण, पृ० ७३ ।

नन्दीश्वर भक्ति—अनु० पासू गोपाल फडकुले, पृ० ४२, व० १८९४ ।

पद्म नन्दि पंच विंशतिका—अनु० गाधी वहाल चन्द कस्तूर चन्द, पृ० २५१, व० १८९८ ।

प्रतिष्ठा तिलक—अनु० अज्ञात, पृ० ८११, व० १९०४ ।

प्रश्नोत्तर माणिक्य माला—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६४, व० १९०४ ।

पात्र केसरी स्तोत्र—अनु० प जिनदास शास्त्री, पृ० ८८, व० १९२० ।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पागल ।

भाषण—श्रीमती राजुबाई गु जेटीकर, अध्यक्षा जैन महिला परिषद अधिवेशन सागली, सन् १९२२ ई० ।

महापुराण—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३२७०, व० १९१५ ।

मराठी जैन पद्यावली—सग्र० नथमल चान्द मल जी, पृ० १५, व० १९२९ ।

महावीर चरित्र—ले० अज्ञात, पृ० १३७, व० १९३१ ।

मामी भावना—अनु० रेखचन्द तुलजाराम शहा, पृ० १६, व० १९२८ ।

मूल प्रतिक्रमण—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ४८, व० १८९७ ।

योग प्रदीप—अनु० अज्ञात, पृ० ३४, व० १८९७ ।

रत्न करड श्रावकाचार—अनु० अज्ञात, पृ० ४६ ।

रक्षा बंधन कथा—ले० मुंशी नाथूराम लमेचू, पृ० २४, व० १९१२।
रयणसार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३६, व० १९०७।
लघु अभिषेक—अनु० पासू गोपाल फडकुले, पृ० ४३, व० १९०५।
व्यंतराचा आराधने पासून नुकसान—ले० हीराचन्द नेम चन्द दोशी,
० २४, व० १९१७।
वैराग्य शतक—अनु० आनन्द ऋषि जी, पृ० ३५, व० १९२७।
श्रावका चार—अनु० बाबगौंडा भुज गौंडा पारीख, पृ० ३२८, व०
९४३।
श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ८८, व० १९२०
सज्जन चित्त वल्लभ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूर चंद्र, पृ० १०;
० १८९७।
समाधि शतक—अनु० रावजी नेमचंद शाह, पृ० १२४, व० १९११।
सागर धर्मामृत—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६२८, व० १९१५।
सागार धर्मामृत—अनु० अज्ञात, पृ० ३१३।
सामायिक सार्थ—अनु० आर एन शाह, पृ० ४९, व० १८९,।
सुभाषितावलि सार्थ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूर चन्द, पृ० ९८,
व० १८९७।
स्वयभू स्तोत्र—अनु० प० जिनदास शास्त्री, पृ० ३१०, व० १९२०।

—०—

गुजराती भाषा की पुस्तकें

अध्यात्म महावीर—ले० गाधी गोकुलदास नानजी, अनु० हरिलाल जीव-
राज, पृ० ४८, व० १९३२।
अध्यात्मिक विकास क्रम—ले० प० सुखलाल संघवी; पृ० ८०, व०
१९२४।
अनित्य पञ्चाशत—अनु० हरिलाल जीवराज भाई, पृ० ९६, व० १९४७
अमृत वाणी—ले० कानजी स्वामी, पृ० ६८

अलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचद, पृ० २४, व० १६०६

आत्म ज्योति (भाग १)—ले० श्रीमद्राजचद्र, पृ० ५२, व० १६३६।

आत्म ज्योति (भाग २)—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २०८, व० १६३८।

आत्म प्रभा—ले० अज्ञात, पृ० ५२; व० १६३७।

आत्म सिद्धि—ले० श्रीमद्राज चद्र, पृ० २१३, व० १६१८।

आत्म सिद्धि शास्त्र—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २५६, व० १६३७।

आनन्दघन देवचन्द्र चौबीसी—ले० आनन्दघन जी, पृ० ६४।

आपणे आपणी स्थितिमा शुँ सतोष राखवो जोइए—सपा० मूलचद किशनदास, पृ० ४८, व० १६१४।

ईश्वर कर्त्ता खडन—ले० अज्ञात, पृ० ४८, व० १६१०।

उत्तर हिन्दुस्थान मां जैन धर्म—ले० चीमन लाल जयचन्द शाह; अनु० फूलचन्द हीराचन्द, पृ० ३८७, ५० १६३७।

कुन्द कुन्दाचार्य चरित्र—अनु० मूल चन्द किशन दास कापड़या; पृ० ५३, व० १६१३।

खोराक अने तन्दुरुस्ति—ले० छगन लाल परमा नन्द दास, पृ० ३२, व० १६१३।

ग्रथ परीक्षण—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० दोशी जीवराज गौतम पृ० १२३, व० १६१५।

जैन कोण थई सके—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० मूल चन्द किशनदास, पृ० १८, व० १६३२।

जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग)—ले० मोहन लाला दुलीचन्द देशाई, पृ० ६५६; व० १६२६।

जैन गुर्जर कविओ (द्वितीय भाग)—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देशाई, पृ० ७८८, व० १६३१।

जैन दर्शन—ले० मुनि न्यान विजय, पृ० ११७, व० १६१८,

जैन दृष्टिए ब्रह्मचर्य विचार—ले० प० सुखलाल व प० वेचर दास, पृ०

७१, व० १९३१ ।

जैन धर्मनी माहिती—ले० हीरा चन्द नेमचन्द; अनु० हर जीवन रामचन्द शाह, पृ० ८६, व० १९११ ।

जैन वस्तीनी वर्तमान दशा—ले० फूलचन्द्र हरिचन्द, पृ० ६८, व० १९२८ ।

जैन साहित्यनी संक्षिप्त इतिहास—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देशाई, पृ० १०८०, व० १९३३ ।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० प० गोपाल दास बैरया, अनु० हरि लाल जीवन राज, पृ० २२४, व० १९३८ ।

जैन ज्ञान महोदधि—सपा० त्रिभुवन दास, पृ० ५२, व० १९२० ।

जीव विचार—लेखक दोशी नाथा लाल सौभाग्य चन्द्र, पृ० ४८, व० १९१४ ।

तत्वार्थ सुत्र—टी० प० सुखलाल, पृ० १४४, व० १९३० ।

त्रेपन क्रिया विवरण—ले० मूल चन्द्र किशन दास कापड़िया, पृ० २०, व० १९१९ ।

देव कुल पाटक—ले० विजय धर्म सूरि, पृ० २४, व० १९१५ ।

धर्म प्रबोधिनी—अनु० भाई लाल कपूर चन्द, पृ० ४६, व० १९०९ ।

पंच कल्याणक पाठ—अनु० मूलचन्द किशन दास, ३१, व० १९११ ।

पंचमी महात्म्य—अनु० लाल चंद्र भगवान दास, पृ० ४२, व० १९२० ।

पचेन्द्रिय सवाद—ले० जीवन लाल किशन दास, पृ० ४८, व० १९११ ।

पर्युषण क्षमापण—ले० कानजी स्वामी; पृ० ४८, व० १९३२ ।

प्रकरण माला-(विविध सग्रह)—पृ० ४३२, व० १९०८ ।

प्रतिष्ठा कल्प—पृ० ९८ ।

प्राकृत व्याकरण—ले० प० वेचरदास, पृ० ४५३, व० १९२५ ।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पागल, पृ० ३६, व० १९११ ।

पवित्रताने पंथ—ले० मणिलाल नथुभाई दोशी, पृ० १२८, व० १९२७।

बाल बोध जैन धर्म (२ भाग)—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० २३, व० १९१५।

बुद्ध अने महावीर—अनु० नरसिंह भाई पटेल, पृ० ५८, व० १९२५।

भगवान महावीर—ले० अज्ञात, पृ० १२, व० १९३४।

भट्टारक मीमाँसा—ले० मूलचन्द किशन दास कापडिया, पृ० ४८, व० १९११।

भद्रबाहु संहिता—अनु० भीमसिंह माणेक, पृ० २२०, व० १९०३।

मनोरमा—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० १०४, व० १९११।

मुनि दिग्दर्शन—ले० अज्ञात, पृ० १६, व० १९१०।

मोक्ष शास्त्र (तत्त्वार्थ सूत्र)—टी० सेठ राम जी माणेकचन्द दोशी, प्र० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ, पृ० ९००, व० १९४७।

राज्य प्रश्न—ले० अज्ञात, पृ० ३८४, व० १९१७।

रूप सुन्दरी—अनु० मूल चन्द किशन दास कापडिया, पृ० ६६, व० १९१४।

वनस्पति पुरातन महत्त्व—ले० छगनलाल परमानन्द, पृ० ३३।

वैराग्य रत्न माला—ले० अज्ञात, पृ० २४।

श्रावकाचार (पद्म नन्दि कृत)—अनु० मगन बहेन, पृ० ४३, व० १९०७

श्राविका सुबोध—अनु मूलचन्द किशन दास, पृ० १२०, व० १९१४।

श्रीमद्राजचंद्र (२ भाग)—ले० सपा० मनसुख लाल किरत चन्द्र; पृ० ८०८, व० १९२५।

श्री महावीर जीवन—ले० सुशील, पृ० १२८, व० १९१४।

विस्तार शील रक्षा—अनु० कुँवर मोती लाल राका, पृ० ४०, व० १९१६।

शील सुन्दरी रास—ले० शादगडुसा सेवकदास, सपा० मूलचन्द किसनदास, पृ० ३६, व० १९११।

शुँ ईश्वर जगत्कर्त्ता छे—अनु० मूलचन्द किसन दास, पृ० १५, व० १९१२ ।

सम्यग्ज्ञान दीपिका—अनु० शाह सोमचन्द अमथालाल कलोल, प्र० स्वाध्याय मंदिर सोनगढ, पृ० १७६, व० १९४७ ।

समय सार—अनु० कानजी स्वामी, व० १९४६ ।

समय सार—अनु० हिम्मत लाल जेठा लाल शाह, पृ० ६४०, व० १९४० ।

संवेगद्रुम कंदली—ले० विमला चार्य, अनु० अज्ञात, पृ० २२, व० १९१८ ।

समाधि मरण पत्र—ले० पं० गणेश प्रसाद वर्णी, अनु० गोगियालाल छोटे लाल, पृ० ३३ ।

साध्वी सुदर्शना नाटक—ले० मोहन लाल मथुरा दास शाह, पृ० ६८, व० १९३१ ।

सुबोध पद्य रत्नावली—ले० अनु० अज्ञात पृ० ६४, व० १२१ ।

सूरीश्वरअनेसम्राट—लेखक विद्याविजय, पृष्ठ ४९७, व० १९१९ ।

हेम चन्द्राचार्य—ले० धूमकेतु, पृ० २३४, व० १९४० ।



बंगला भाषा का जैन साहित्य

अनेकान्त वाद—ले० प्रो० सात कौडी मुखर्जी, प्र० विश्वकोष ।

आचार्य जिन सेन—ले० शरत्चन्द्र घोषाल एम० ए० बी० एल०। प्र० जिन वाणी ।

जिनेन्द्र मत दर्पण—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त।

जीव—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य एम० ए० बी० एल०, प्र० जिनवाणी ।

जैन इतिहास समिति—अनु० ललित मोहन मुखोपाध्याय ।

जैन कथा—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य ।

जैन तत्त्वज्ञानओ चारित्र—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद् काशी ।

जैन तत्त्वसार सग्रह—अनु० सपा० ईश्वरचन्द्र शास्त्री ।

जैन मिरत्न—ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती काव्य तीर्थ, प्र० भारत वर्ष ।

जैन दर्शनेआत्मवृत्ति निचय—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य सवाद ।

जैन दर्शनने कार्मवाद-ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी ।

जैन दर्शने धर्मओ अधर्म-ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका ।

जैन दृष्टिए ईश्वर—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिन वानी ।

जैन दिगेर तीर्थंकर—ले० अमृतलाल शील, प्र० मानसी ओ मर्म वानी ।

जैन दिगेर दैनिक षटकर्म-ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका ।

जैन दिगेर षोडश सस्कार—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० विश्ववानी ।

जैन धर्म—ले० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका ।

जैन धर्म—ले० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० वगीय सर्व धर्म परिषद काशी ।

जैन धर्म—अनु० ०पेन्द्रनाथ दत्त (लो०मा० तिलक के लेख का अनुवाद), प्र० वगीय सर्व धर्म परिषद काशी ।

जैन धर्म—ले० प्रो० अमूल्यचरण, प्र० नव्यभारत ।

जैन धर्मनारीर स्थान-ले० प्रो० सात कौडी मुखर्जी, प्र० रूपनन्दा ।

जैन धर्मेर वैशिष्ट्य-ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० भा० दिग० जैन परिषद विजनौर ।

जैन न्याय-ले० स्व० हरिहर शास्त्री, प्र० वगीय साहित्य परिषद ।

जैन पद्म पुराण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० बगविहार धर्म परिषद ।

जैनपुराणे वारार्तिकृपाचरित्र—ले० स्व० हारिहर शास्त्री

जैन पुराणे श्रीकृष्ण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० जिनवानी ।

जैन पुरुष काहिनी—ले० स्व० नगेन्द्रनाथवसु, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन मत—ले० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका।

जैन सम्प्रदाय—ले० सपादक उद्बोधन, प्र० उद्बोधन।

जैन सामायिक पाठ स्तोत्र—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त, प्र० वंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

जैन साहित्यो नाम सख्या—ले० विभूति भूषणदत्त, प्र० बगीय साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

द्वादशनु प्रेक्षा—ले० शरच्चन्द्र घोशाल, प्र० जिनवानी।

दीपमालिका—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

दीपावली ओ भ्रातृ द्वितीया पर्व—ले० शिवचन्द्र शील, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

नीति वाक्यामृत—टी० ईश्वरचन्द्र शास्त्री।

परेशनाथ—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती; प० शिशुसाथी

प्रमाणाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य , प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

पार्श्वनाथ चरित्र—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० तत्त्वबोधिनी।

पुरुषार्थ सिद्धि उपाय—अनु० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० बग विहार अहिंसा धर्म परिषद।

बौद्ध ओजैन साहित्ये कृष्ण चरित्र—ले० रमेशचन्द्र मजुमदार, प्र० पञ्च पुष्प पत्रिका।

भगवान पार्श्वनाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

भारतीय दर्शन समूहे जैन दर्शनेर स्थान—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

महामेघवाहन खारवेल—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी।

महावीर – ले० मतिलालराय, प्र० युगगुरु।

रक्षावधन (उपाख्यान)—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

लिच्छवि जाति—

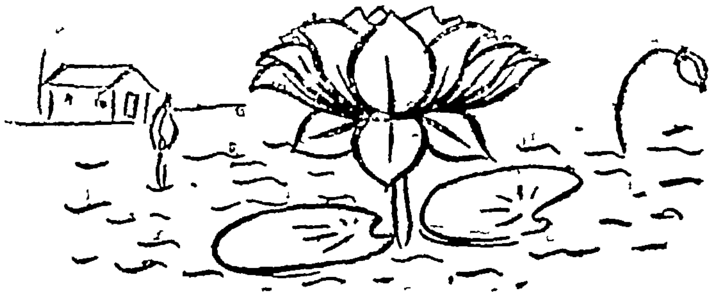
विजय धर्म सूरि—ले० अमूल्य चरण विद्याभूषण, प्र० 'वानी'।

श्रावक दिगेर आचार—अनु० हरिचरण मित्र, प्र० श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता।

स्याद्वाद—ले० प्रो० हरिमोहन भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

सार्व धर्म—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्वधर्म परिषद काशी।

हिन्दुओ जैन काल विभाग—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० 'कायस्थ समाज' पत्रिका।



Jaina Literature in English

Abhidhana Chintamani of Hem chandra—Ed. Ram Das Sen

Account of the Jains—C Mackenzie

Account of the Jains in India—Sultan Singh Jaini

Account of the Jain temples on MountAbu—A Burnes

A Comparative Study of the Indian sceience of Thought from the Jaina Stand point—Harisatya Bhattacharya

A complete Digest of Cases with Jain Law—Champat Rai Bar-at-law,

Address at the tenth anniversary of Syadvada Jain Mahavidyalaya—T K. Laddu,

Adhyatma-Tatwa-aloka—Trad & Ed Nyaya Vigaya and Moti Chand Mehta

A Descriptive Catalogue of Sanskrit Mss in the Library of the Calcutta Sanskrit College vol, X Jaina Manuscripts—Harishkesha Sastri and Nilamani Chakravarti.

A Dictionary of Jaina Biography—Umrao Singh Tank.

Against Animal Sacrifice—Krishnagiri B Rao

A message of Peace to a World full of unrest—Sri Tulse Ramji

Akbar and Jainism—Ramaswami Ayengar.

A Jaina Account of the End of the Vaghelas

of Gujrat—G Buhler

A Lecture on Jainism—1902 Benarsi Das M A

A Literary Bibliography of Jaina Omnasticon—Dr. John Klatt

An Alphabetical list of Jain Mss. in the Oriental Library of the A. S B—

Animal Protection—Hari Ram.

Amitgati's Subhasita Samdoha—R Sehmidt J Hertel

An Insight into Jainism—Champat Rai Bar-at-law,

An Insight into Jainism—Rikhar Das Jaini B A

An Introduction to Jainism—A. B. Lathe

An Epitome of Jainism—Puran Chandra Nahar & K. C Ghosha.

Andhra Karnata Jainism—B Sheshagiri Rao

Ancient India—(4 Vols)—T L Shah

Anekartha-Sangraha of Hem Chandra—Ed Tr Zachariae

A Pandit's Visit to Gaya (1820)—J Burgess

Apbhramsa Literature—Prof Hira Lal Jain

A Peep Behind the Veil of Karma—C R Jain

Ardha Magadhi Reader—Benarsi Das M A

A Review of the Heart of Jainism—J L. Jaini Bar-at-law.

Antagada dasao and Anuttara Vavaiya Dasao—Ed. L D Barnett

Appreciation and Reviews—Pub D J Parishad Publishing House, Delhi.

A Short History of the Terapanthi Sect of the Swet-order Jains—Chhogmal Choprah.

A Scientific Interpretation of Christianity—C. R. Jain.

Ashta Pahuda or Eight Presents—Trad. Jagat Prasad.

Atmanu-shasana—Trad. J L. Jaini

Atma Dharma— C R Jain

Atma Ramayana—C R. Jain.

Atma-sidhi—C R Jain.

A Treatise on Jain law and Usages—Padma Raj Jain.

AuPatika Sutra—Ed. E Leumann.

Bhadrabahu and Sravan-bel-gola—Lewis Rice.

Bhadrabahu, Chandra Gupta and Sravan-bel gola—J F Fleet

Bhavis-yatta-kaha—Ed Trad C D Dalal M A.

Bright Ones in Jainism—J L Jaini

Bhagwan Mahabir=Kamta Prasad Jain.

Catalago dei manaseritti Gianici di Firenze (Florentine Jain manuscripts)—F. L. Pulle.

Catalogue of English books in the Jain Sidhant Bhavan Arah—Suparswa Das.

Catalogue of Indian Collections in the Museum of Fine Arts Bostan, part IV—'Jaina Paintings and Manuscripts'—Dr A.K. Coomarswami.

Catalogue of Mss in the Jain Bhandars, Jaselmere—C D Dalal

Chandra-Prabha-charitra of Virnandin—Ed. M M Pt Durga Prasad

Contribution of Jainism to Philosophy, History and Progress—V. R Gandhi.

Cosmology Old and New—Prof. G R. Jain M. Sc.

Christianity Rediscovered—C R Jain

Das Mahanisitha sutta—Dr. Walthur Sehubring.

Das Kalakacharya Kathanakam (German)—Dr. H Jacobi

Der Jainismus (German)—Dr. H V. Glasenepp.

Desi-nama-mala of Hemchandra—Ed R. Pischel & G. Buhler.

Die indische secte der Jaina (German)—G Buhler.

Die sekte der Dschains (Jains)—(German)-O. Feistmantel

Diet and Health—Chhagan Lal Parmanand Das Nanavati,

Digambara Jain Iconography—James Burgess C. I E.

Digambara Jains—G. Buhler

Discourse Divine—C. R Jain

Divinity in Jainism -Harisatya Bhattacharya

Djainisme—Sylavan Levy

Doctrines of Jainism—Rikhab Das

Dr Hermann Jacobi on Jainism—H Jacobi.

Dravya Sangraha—Ed & Trad S C Ghsal M. A. B. L

Essai de Bibliographie Jaina (French)—A Guerinot.

Essays and Papers of Dr. A. N. Upahhye (9/—Dr. A N Upadhye.

Extracts from the Journal of Col Mackenzies Pandit—J Burgess

Faith, Knowledge and Conduct—C R. Jain.

First Principles of the Jaina philosophy—H L. Jhaveri

Four and Twenty Elders—C R Jain

Fragments from an Indian Student's Diary—J L Jaini.

Gems of Islam—C. R Jain.

Gadya-chintamani of Vadibhasimha—Ed Trd S. Kuppuswami Sastri

Geneological Tree illustrating the Chronology of Jain Religion—

Glimpses of a Hidden Science—C R. Jain

Gommat Sar (Jiva kand)—Ed & Trad. J L. Jaini

Gommat Sar (Karma Kand Pt I)—Ed. & Trad J. L. Jaini

Gommat Sar (Karma Kand Pt II)—Ed & Trad. Br Sital Prasad and Ajit Prasada

Hathi-gumpha Inscription of Kharvela—Ed. K P Jayaswala

Heritage of the last Arhat—Dr Charlotta Krauze

Historical Facts about Jainism—Magan Lal shah

Historical Jainism—Dr Bool Chand

History and Literature of Jainism—U. D. Barodia

History and Religion of the Jains—V R Gandhi.

History of Kanarese literaure—E P Rice.

How to make your life sublime—B D Jain.

Humanitarian Outlook—M K Devaraj, M A., B. L.

Immortality and Joy—C R Jain

Inscriptions at Sravan Belgola—Lewis Rice

Inscriptions of Sravan-Bel-gola—R Narsimhachariar

Inscriptions of Udayagiri khandgiri—Pt Bhagwan Lal Indra ji

Inscriptions of Udayagiri kaand Jine—Dr K. P. Jayaswal.

Interpretation of Jaina Ethics—Dr Charlotte Krauze

Introduction to True Religion—W G Trott

Indian Psychology of Perception—Dr J N. Sinha, Meerut College

Indian Realism—Dr J N Sinha, Meerut College.

Jain Bibliography No. 1—R. B Paras Dass

Jaina Bibliography—B Chhote Lal Jain

Jain Conceptions—C. R Jain.

Jain culture—Pub D. J Parisad Publishing House Delhi

Jaina Gem Dictionary—J. L Jaini

Jaina Historical Studies—U S Tank

Jain Confession—C. R. Jain.

Jaina Monuments of India—T. N. Ram Chandran, M. A.

Jaina **Literature in English**—Jyoti Prasad Jain, M. A., LL. B

Jaina Iconography—B C Bhattacharya

Jaina Iconography—H. D. Sankalia M. A., Ph. D

Jaina Inscriptions—P. C Nahar

Jaina Insariptions at Sravan-Bel-Gola—L Rice

Jaina Itihas Series no 1 (History of Gwaliar)—Benarsi Das M A

Jain Jatakas—Prof A. C Vidyabhushan

Jain Jatakas—L Benarsi Das M A

Jaina Law —J. L Jaini, Bar-at-law, Chief Justice Indore.

Jaina literature in Tamil—Prof A. C Chakravarti, M. A., I E S

Jaina Logic—C R Jain

Jain Penance—C, R. Jain

Jaina Psychology—C R. Jain.

Jain Puja—C R Jain

Jaina References in the Budhist literature—K. P. Jain.

Jain References in Dhamma-Pada K. P Jain.

Jain Sutras—Ed & Trad Dr. Hermann Jacobi

Jain Universe—

Jain Vairagya shataka—Bihari Lal Jain.

Jainism—C S Meghakumar

Jainism—Champat Rai Barrister

Jainism as Faith and Religion—Sree Chand Rampuria

Jainism the Oldest Living Religion—Jyoti Prasad Jain, M A., LL B

Jainism and Karnatak Culture—S R Sharma

Jainism—Herbert Warren

Jainisme—Dr A Guerinot.

Jainism, 28 Labdhees or Miraculous Powers—Gulal Chand

Jainism and Dr H S Gour's Hindu Code—J L Jaini, Bar-at-law.

Jainism and Dr H S Gour's Hindu Code —C. R Jain, Bar-at-law.

Jainism and World Problems—Dr Beni Prasad

Jainism in Indian History—Dr Bool Chand

Jainism in Kalingadesa—Dr. Bool Chand.

Jainism or the Early Faith of Asoka—Dr E. W. Thomas F. R S

Jainism Not Atheism—H Warren.

Jainism in North India—C J Shah

Jainism in Western Garb as a Solution to Life's Great Problems—H Warren

Jina-Ratna-kosa—Prof H D. Valenkar.

Jasahar-chariu—Ed. Prof. Hira Lal Jain, M. A., D. lit

Joindu and His Apbhramsa Works—Dr. A N. Upadhye.

Judgments in Tirtha cases—

Judgment in Paras Nath Hill Civil Suit—

Kathakosa (of Harisena) or the Treasury of Stories—Ed. & Trad C H Tawney

Kaleidoscope Indian of Wisdom—Charlote Krause.

Kalpa Sutra and Nava Tatwa—J Stevenson

Karnatak-kavi-charite—R Narsinghacharya

Key of Knowledge—Champat Rai Jain Bar-at-law

Kirtikaumudi of Someswaradeva—Trad. A. Haack

Kshatra-chudamani of Vadibhasimha—Ed. Trad. Kappuswami Sastri.

Kumar pala Charitra of Hem Chandra—Ed Shankar

Panduranga

Kural of Tiruvuluvar-Fragments—E Ariel

La doctrine des etres vivants dans la religion Jaina—A. Guerinat

Laghu-Bodhamrita-sar—Trad Moti Chand Banswara

Lecture on Jainism—Benarsi Dass M A.

Lecture on Jainism—J L Jaini

Life of Hanuman—Pt. Pirbhu Dayal

Life of Hem Chandracharya—

Life of Mahavira—M C Jain.

Life Story of the Jain Savior Parrwa Nath—Maurice Bloomfield.

Life in Ancient India from the Jain Agamas—Prof Jagdish Chandra Jain M A , PH. D

Lifting of the Veil (Pt I)—C R Jain

Lifting of the Veil Pt II—C R Jain

Linganuśasanā of Hem Chandra—Ed R O Franke.

List of Sanskrit, Jain and Hindi Mss —Pub Govt. Press, Allahabad

Logic for Boys and Girls—C R Jain.

Lord Arishta-Nemi—Harisatya Bhatatcharya

Lord Mahavira—H Bhattacharya

Lord Mahavira—Dr Bool chand

Lord Mahavira and some other Teachers of his time—K. P Jain

Lord Parswa—H Bhattacharya

Lord Rishabha Deva—Champat Rai Jain.

Mahavira, His Life and Teachings—Dr. Bimal Charan Law

Marriage in Jain Literature—
Mediaeval Jainism—Dr B A. Saletore.
Mithyatwa Khandan—Prem Chand
Modern Jainism—Mrs S Stevenson.

Mount Abu and the Jain Temples of Dailwara—J U Yagnik

My Thoughts—Ratan Lal Jain.
Mantrashastra and Jainism—Dr. A S Altekar.
Mind and Its Mys.ry—Sri Kaluram ji

Naya Kumar Chariu—Ed. Prof Hira Lal Jain
Neelkesi—Ed & Trad. Prof A. Chakravarti M A
Nijatma-sudhi-Bhavana—Trad B. C Manika Lal.
Niyama-sara—Ed. & Trad. Uggar sain Jain M. A. LL. B

Note and Jaina Mythology—J. Burgess.
Notes on the Sthanakavasis—Seeker.
Nyaya, the Science of Thought—C, R. Jain.

Omniscience—C R. Jain.

On the Authenticity of the Jaina Tradition—G. Buhler.

On the literature of the Swetambaras of Gujerat—J. Hertle

Outlines of Jainism—J L Jaini

Pacifism and Jainism—Pt. Sukhlal Sanghavi
Paiyalacchi-nama-mala of Dhanpala—Ed G Buhler
Pampa Ramayana—Ed, Lewis Rice
Panchastikaya-sara—Ed. & Trad Prof A. Charavarti M A

Paresnath Piggary Case Judgment of Bengal High Court, 1893

Pariksha mukham—Ed & Trad Dr S C. Vidya-bhushan (Bib Ind)

Parmatma-Prakasha of Jogindu—Trad L Rikhab Das B A.

Pilgrimage to Parasnath by C Mackenzies Pandit (1820)—J, Burgess

Practical Dharma—C R Jain.

Pramana-naya-tatwaloka-alamkara—

Prehistoric Jaina Paintings—Jyoti Prasad Jain M A., LL. B

Political Thought in Pre-Muslim India—Jyoti Prasad Jain

Presidential Address—(1924) of Dr Ganga Nath Jha M M

Presidential Address—(1927) of Dr B. L Atreya

Principles of Jainism—Br Sital Prasad.

Proceedings of the 2525th Mahabir Jayanti celebrations by Jain Mitra Mandal, Delhi

Pure Thoughts or Samayika Patha—Trad, B Ajit Prasad M A, LL B

Purushartha-sidhiupaya—Trad Ajita Prasada M A., LL B

Quelques Collections de livers Jainas—A. Guerinot

Ratnakaranda-sravakachar—Trad Champat Rai Jain.

Reminisciences of Vijaya Dharma Suri—Vijaya Indra Suri.

Repertoire at Ehigraphic Jaina—Guerinot

Rishabhadeva, the Founder of Jainism—C R Jain

Religion-Its Universal Necessity—Sri Tulsiram ji

Sabda-mani-darpan of kesiraj—Ed. F Kittel.

Sacred Philosophy—C R Jain

Samant Bhadra's Date and Dr Pathak—Pt. Jugal Kishore Mukhtar

Samayasara—Trad R. B. Jagmandar Lal Jaini Bar at-law

Samayika or the Way to Equanimity—B L Garr

Sanmati Tarka—Trad. A. B Athavle and A. S Gohani M. A.

Sapta-bhangi-Nyaya—L. Kanno Mal M. A.

Sapta-bhangi-tarangini of Vimal Das—Ed P B. Anantacharya.

Sanyas Dharma—C R Jain.

Satrunjaya Mahatmya—James Burgess.

Samadhi (of saint Charitra Sena)—Trad. Kamta Prasad Jain

Sayings of Lord Mahavira—K. P Jain

Sayings of Vijaya Dharma Suri—Charlotte Krause.

Selections from Atma Dharma of Br Sital Prasad C. R Jain.

Shraman Bhagwan Mahavir—

Six Dravyas of Jain Philosophy—F R Lalan.

Sketches of Distinguished Oswal Families—U. S. Tank.

Some Distinguished Jains—U S Tank.

Some Historical Jain Kings and Heroes—Kamta Prasad Jain.

Some Notes on Digambara Jain Iconography—J. L. Jain,

Sravan-bel-gola—R Narsimhachar, M A

Stravan-bel-gola—C. S Mallinath.

Stravan-bel-gola, its Importance—Seth Padma Raj

Studies in Jainism (Pt I)—Dr H Jacobi

Studies in South Indian Jainism—M. S, Ramaswami Ayengar and B Sheshagir Rao.

Syadvada-Manjari—Ed and trad. Prof Jagdish Chandra M A

South Indian Jainism—M S Ramaswami Ayengar M, A,

Sources of Karnatak History-Vol I—S Srikantha Sastri

Sitatnvasal Jaina Care Paintings—L Ganesh Sharma.

Sources of the History of Karnataka, Pt I—Sri Kantha Sastry

Tatwarthadhigama Sutra Ed & trad. J L Jaini.

Tatwarthadhigama Sutra Ed and trad J L Jaini

The Address of Dr Phani Bhushan Adhikari.

The Address of Dr T K. Laddu (1914)

The Address of Champat Rai Jain Bar-at-law

The Address of Dr R G, Bhandarkar

The Change of Heart—C R, Jain

The Chicago-Prashottara—Vijayanand Suri

The Digambara Saints of India—S C Ghosal M A B. L.

Teertha Pavapuri—P C Nahar.

The Confluence of Opposites C R Jain.

The Gospel of Immortality—C R. Jain

The Ganita sar-sangraha—Ed M. Rangacharya M A

The Heart of Jainism—Mrs S Stevenson

The House-holder's Dharma—C. R. Jain.

The Indian Sect of the Jainas—G. Buhler, trad. J Burgess

The Jain Law—C R Jain Bar-at-law.

The Jain law of Inheritence and Adoption—J L. Jaini Bar-at law.

The Jaina Pattavalis—Ed R. Hoernle

The Jain Philosophy—V. R. Gandhi

The Jaina Philosophy of Non Absolutism—Dr Satkori Mukerji

The Jains of India—J. L. Jaini.

The Jain Stupa and other Antiquities of Mathura—Dr V A Smith

The Jain Sutras (S B E)—Ed. F. Max Muller

The Jaina System of Education—Dr. D. C. Dass Gupta

The Jain Theory of Karma—C R. Jain.

The Karma Philosophy—B F Karbhari

The Mystery of Revelation—C R. Jain,

The Nyayavatar—Ed. S C Vidyabhushan

The Nyaya Karnika—Trad Mohan Lal Desai

The Nudity of Jain Saints—C. R. Jain.

The Origin of the Swetambara Sect—Pub D J. Parishad, Delhi

The Place and Importance of Jainism—G. Pertold, Ph. D

The Prabandha Chintamani—Ed and trad C H Tawney

The Practical Path—C. R Jain.

The Path—Sri Tulsiramji.

The Priority of Jainism over Budhism—Rustamj

Barorji Parukh.

The Real Nature of Parmatma—N S Agarkar
The Right Solution—C R Jain
The Self Realization—J L. Jaini.
The Six Dravyas of Jain Philosobpy—H Warren.
The Speech of H H the Maharaja of Mysore (1925)
The Srawacs or Jains—F. Buchanon Hamilton
The Srawacs or Jains—J Delmaine.
The Study of Jainism—L Kanno Mal M A.
The Way to Nirwan—J L Jaini
The Yoga Philosophy—B F Karbhari
Tracts of Mathew Mckay—Pub Mahavira Publications, Aliganj Etah.
True Way to Liberation—Dr. Talbot.
Uttaradhyayan Sutra —Ed. J Charpentier
Uttaradhyayan Sutra and Sutra kritanga (Jain sutras Pt II)—Ed. H. Jacobi
Vijaya-dharma Suri—Dr L P. Tessitori.
Vir Vibhuti—Trad A B Bhattacharya
What India Thinks of the Case of Pt. Arjun Lal Sethi
What is Jainism—Kanno Mal M. A.
What is Jainasm—C. R Jain
Where the Shole Pinches —C R. Jain
Whom the Jains Worship—L Rikhab Das B. A.
World Philosophy of the Jains—Dr H. Von Glasenapp
World Problems and Jaina Ethics—Dr Beni Prasad.
Booklets and tracts of—The Mahavir Publieation Aliganj, Etah

2 The Jaina Cultural Institute, Banaras.
3. The Terapanthi Swetambar Sthanakvasi Cong Calcutta etc. etc

Journals and Magazines—Several papers in the past

The Jaina Antiquary (Six monthly)—Pub. by the Central Jaina Oriental library, Arrah (Bihar).

The Jaina Gazette (monthly)—Ed. Ajit Prasad M. A. LL B, pub. from Ajitashram, Lucknow

The Jaina Hostel Magazine (monthly)—Pub. by the Jain Hostel, Allahabhad

Besides the above publications, numerous articles, papers and notes on various aspects of Jainism and Jainology have been published in the different research journals, magazines, Proceedings of oriental and historical conferences, Gazetteers, Archaeological survey Reports etc. both in India and abroad by a number of renowned scholars, Indian as well as European The references to these can be found in the—(1) Essai de Bibliographica Jaina, a very comprehensive work in French, Dr A. Guerinot Ph D It deals with references upto 1905 A D. The work is, however, out of print at present, and an English edition of the same is earnestly needed

(2) Jain Bibliography no 1., by R B Lala Paras Das of Delhi It deals with some 1214 works having Jain references and published upto 1930 A. D, but mentions only the page numbers of the references.

(3) Jaina Bibliography by B Chhote Lal Jain,

Calcutta It deals with references found in literature published between 1905 and 1925 A D

(4) Jinaratanakosa—Ed by Prof H D Valenkar, and published by the Bhandarkar O R, Institute, Poona. It is an alphabetical register of Jain works and authors, and gives an account of most of the available or known Jain Mss

Since 1925, much standard literature having useful Jaina references, has been published, but unfortunately no Jaina bibliography relating to it has yet been prepared which is an urgent necessity

Persons interested in the study or research of Jainism or any branch of Jainology, may refer for the respective information and literature to the following —

1. All India Digambar Jain Parishad Office, Dariba Kalan Delhi
2. Bhartiya Gyan Pitha Banaras
3. Jain Cultural Research Society, Banaras
4. The Central Jaina Oriental Library (Jain siddhanta Bhavan), Arrah (Bihar)
5 The Central Jaina Publishing House, Ajitashram, Lucknow.
6. The Jain Mitra Mandal, Dharampura, Delhi
7 Vir Sewa Mandir, 21 Daryaganj, Delhi,

This last being a best reputed Jaina Research Institute, equipped with an adequate library and run by its founder Director Acharya Pt Jugal Kishore Mukhtar.

परिशिष्ट

१. सार्वजनिक जैन पुस्तकालय, शास्त्रभंडार

वे ग्रन्थागार जिनमे जैन धर्म सम्बन्धी विविध विषयक साहित्य, मुद्रित तथा हस्त लिखित, पर्याप्त मात्रा में सगृहीत है, और जिसका उपयोग सदस्यों एवं स्थानीय व्यक्तियो के अतिरिक्त इतर स्थानो में रहने वाले विद्वान् भी डाक आदि द्वारा कर सकते हैं—

१. ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई।

२ ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, झालरापाटन।

३. जैन सिद्धान्त भवन, आरा (विहार)।

४ श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी, धर्मपुरा देहली।

५ श्री यशोविजय जैन पुस्तकालय, वेलन गज, आगरा।

६ समन्तभद्र—भारती-भवन, वीरसेवामन्दिर, सरसावा (हाल देहली)।

उपर्युक्त प्रख्यात पुस्तकालयो (जिनमे से प्रथम तीन की मुद्रित ग्रन्थ सूचियें—कैटेलाग-भी प्रकाशित हो चुके हैं) के अतिरिक्त प्राय प्रत्येक नगर व कस्वे में जहाँ जहाँ जैनियो की वस्ती है, एक न एक छोटा बडा जैन पुस्तकालय और पाठनभवन भी मोजूद हैं।

यद्यपि प्रत्येक जैन मन्दिर मे एक शास्त्र भडार अवश्य ही होता है। जिसमे अधिकांशत हस्तलिखित ग्रन्थ ही रहते हैं, किन्तु जैन हस्तलिखित ग्रन्थो के प्रसिद्ध एव महत्वपूर्ण भडार निम्नलिखित स्थानो मे हैं —जयपुर, देहली, ईडर, नागपुर मूडविद्री श्रवण बेल्गोल, कारजा, पाटन, जैसलमेर, सूरत, कोल्हापुर अजमेर इत्यादि।

जैन ग्रन्थो की ज्ञात हस्तलिखित प्रतियो का परिचय नीचे लिखे ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है —(१) जिन रत्न कोष—प्रो० हरिदामोदर वेलड्कर

एम० ए० द्वारा प्रणीत तथा भडारकर प्राच्य मदिर पूना द्वारा प्रकाशित (गवर्नमेंट ओरियटल सीरीज, क्लास सी० न०४)

(२) जैन ग्रन्थ सूची—वीर सेवा मन्दिर, सरसावा द्वारा प्रकाशित।

(३) ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई की रिपोर्टें

(४) कर्णाटक कविचरिते—आर० नरसिंहाचार्य कृत, तथा कर्णाटक जैन कवि के नाम से प० नाथूराम जी प्रेमी द्वारा अनुवादित।

(५) जैन गुर्जर कविओ (२ भाग—श्री एम० डी० देसाई, बम्बई द्वारा प्रणीत)

जैन साहित्य के इतिहास के लिए (१) हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास प० नाथूराम प्रेमी कृत तथा जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से प्रकाशित। (२) हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास—डा० कामता प्रसाद जैन द्वारा लिखित और भारतीय ज्ञान पीठ, काशी द्वारा प्रकाशित। (३) कर्णाटक जैन कवि। (४) तामिल भाषा का जैन साहित्य (अंग्रेजी) प्रो० ए० चक्रवर्ती कृत। (५) जैन साहित्यनोइतिहास (गुजराती)—श्री मोहनलाल देसाई कृत।

२. जैन साहित्यिक सस्थाएं

वे सस्थाएं जिनमे या जिनके द्वारा ग्रन्थ निर्माण, टीका, अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशन आदि कार्य होते हैं। इनमें से कई एक मे जैन साहित्य एंव इतिहास सम्बन्धी खोज शोध अनुसन्धानादि कार्य भी होते हैं। निम्नलिखित ऐसी सर्व ही सस्थाए प्राय सार्वजनिक, निस्स्वार्थ एव सेवाभावी हैं, उनके सचालन में व्यावसायिक दृष्टि नही है—

(१) अम्बादास चवरे दिगम्बर जैनग्रन्थमाला, कारजा।

(२) आगमोदय समिति सीरीज, सूरत।

(३) आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अम्बाला शहर।

(४) आचार्य श्री कुंथ सागर ग्रन्थमाला, सोलापुर।
(५) आचार्य सूर्यसागर ग्रन्थ माला, जयपुर।
(६) ऋषभ जैन प्रकाशन संस्था, फल्टन।
(७) ककुबाई पाठ्य पुस्तक माला।
(८) कारंजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी, कारंजा।
(९) चम्पावती जैन ग्रन्थ माला, अम्बाला छावनी।
(१०) जीवराज दोशी ग्रन्थ माला, सोलापुर।
(११) जैन आत्मानन्द सभा सीरीज, भावनगर।
(१२) जैन कल्चरल सोसाइटी, बनारस।
(१३) जैन धर्म प्रसारक सभा सीरीज, भावनगर।
(१४) जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा देहली।
(१५) जैन रिसर्च इंस्टीट्यूट, यवत माल।
(१६) जैन साहित्य सेवा मंडल, सोलापुर।
(१७) जैन साहित्योद्धारक फंड, अमरावती।
(१८) जैन स्वाध्याय मन्दिर, सोनगढ़ (काठियावाड)।
(१९) जैन सिद्धान्त भवन, आरा।
(२०) दिगम्बर जैन परिषद पब्लिकेशन हाउस, दरीबाकला, देहली।
(२१) देवचन्द लाल भाई पुस्तकोद्धार फंड सीरीज, बम्बई व सूरत।
(२२) परमश्रुत प्रभावक मंडल (श्रीरायचन्द्र जैन शास्त्र माला), बम्बई।
(२३) भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था, कलकत्ता (हाल महावीरजी)
(२४) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा।
(२५) भारतीय ज्ञान पीठ, दुर्गाकुंड, बनारस।
(२६) माणिकचन्द्र दिगम्बरजैनग्रंथमालासमिति, हीराबाग बम्बई ४।
(२७) मुनि श्री अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला, बम्बई।
(२८) यशोविजय जैन ग्रन्थ माला, बनारस व भावनगर।
(२९) वीरग्रंथमाला, सांगली।
(३०) वीरसेवामन्दिर, ग्रंथमाला और सन्मति-विद्या-प्रकाशमाला, सर-

सावा जि० सहारनपुर (हाल २१ दरियागंज देहली)।

(३१) श्री वर्णी जैन ग्रन्थमाला, बनारस।

(३२) सन्मति ज्ञान प्रचारक जैन समिति, बनारस।

(३३) सरल जैन पाठमाला, जबलपुर।

(३४) सिंघी जैन ग्रन्थ माला, अहमदाबाद व कलकत्ता।

(३५) सेठ फूलचन्द जवरचन्द गोधा चेरिटी फंड, इन्दौर।

(३६) सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, लखनऊ

३. जैन पुस्तक विक्रेता

जो व्यावसायिक दृष्टि से अपने स्वय के प्रकाशनों तथा अन्य प्रकाशकों और सस्थाओ के जैन प्रकाशनो को भी विक्रियार्थ अपने यहाँ रखते हैं—

(१) जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।

(२) जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगांव, बम्बई।

(३) जैन साहित्यप्रसारक कार्यालय, बम्बई।

(४) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी, सूरत।

(५) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, मुजफ्फर नगर।

(६) वर्धमान साहित्य मन्दिर, लखनऊ।

(७) वीर साहित्य मन्दिर लि०, देहली।

(८) सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथी खाना, रतनपोल, अहमदाबाद।

(९) ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, नं० ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।

४. वर्तमान के ग्रन्थप्रणेतादि साहित्यसेवी विशिष्ट जैनविद्वान

पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार सरसावा, पं० नाथूरामजी प्रेमी बम्बई, पं० सुखलालजी बनारस, मुनिजिनविजयजी बम्बई; पं० बेचरदासजी अहमदाबाद; डा० ए० एन० उपाध्ये कोल्हापुर, रा० ब०, ए० सी० चक्रवर्ती मद्रास; डा० बनारसीदास लाहौर; डा० हीरालाल जैन मुजफ्फरपुर, पं० गणेशप्रसाद जी वर्णी; महात्मा भगवान दीन जी, बा० कामता प्रसाद जी अलीगंज (एटा);

प० वंशीधर जी न्यायलंकार इन्दौर; प० माणिक चन्द्र जी न्यायाचार्य फीरोजाबाद; प० मक्खनलाल जी न्यायलकार मुरेना, प० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ जयपुर, पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री बनारस; प० महेन्द्रकुमार जी न्यायाचार्य बनारस, प० फूलचन्द जी सिद्धान्त शास्त्री बनारस, प० लालाराम जी शास्त्री; प० खूबचन्द्र जी बम्बई, श्री सी० जे० शाह बम्बई, श्री टी० एल० शाह जो अहमदाबाद, श्री एम० एल० देशाई अहमदाबाद, मुनि कल्याण विजयजी, मुनि पुण्यविजय जी, श्रीकानजीस्वामी, मुनि चौथमल जी, मुनि आत्माराम जी, मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, पं० वधमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर, प० परमेष्ठीदास जी ललितपुर, प० दरबारीलाल जी न्यायाचार्य, प० पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर, प० नाथूलाल जी साहित्यसूरि इन्दौर, प० राजेन्द्रकुमार फीरोजाबाद, प० अजितकुमार शास्त्री देहली, डा० कुमारी सुभद्रादेवी, पण्डिता चन्दाबाई आरा, प्रो० घासीराम जैन ग्वालियर, प्रो० जगदीश चन्द्र जैन बम्बई; ला० अयोध्याप्रसाद जी गोयलीय डालमियानगर, रामजी मानिक चन्द दोशी सोनगढ, श्री अगरचन्द जी नाहटा बीकानेर, प० के० भुजबलि शास्त्री मूडबिद्री; पं० उग्गरसेन एम० ए० रोहतक, बा० छोटेलाल जी कलकत्ता; डा० बूलचन्द्र जैन बनारस' प० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य आरा, प० परमानन्द शास्त्री देहली श्री हीरासाव चवरे वर्धा, श्री जमनालाल विशारद श्री दौलतराम मित्र इन्दौर, बा० जयभगवान जी वकील पानीपत, पं० सुमेरचन्द दिवाकर सिवनी; श्री यशपाल जैन देहली, प० दलसुख मालवणिया बनारस, प्रो० गो० खुशालचन्द जैन बनारस, मुनि चतुरविजय जी, श्रीमती जी० के० जैन सा० भू०, क्षुल्लक सिद्धसागर जी, मुनि कान्तिसागर जी; प० भवर लाल न्यायतीर्थ जयपुर; प० हीरालाल शास्त्री, प० परमानन्द सा० आ०, प० लालबहादुर, शास्त्री प० बलभद्र जैन, प० पन्नालाल सोनी प० सत्यधर आयुर्वेदाचार्य, एम० एम० महाजन वकील अकोला, बा० नानक चन्द एडवोकेट रोहतक, डा० ज्योतिप्रसाद जैन एम० ए० एल० बी० लखनऊ, प० जिनदास पार्श्वनाथ फड़कुले, शोलापुर; पं० मिलापचन्द कटारिया केकडी।

५. वर्तमानके जैन साहित्यसेवी प्रसिद्ध अजैन विद्वान

प्रो० हरिसत्य भट्टाचार्य, श्रीशरतचन्द्र घोषाल; डा० कालीपद मित्र, डा० सातकौडी मुखरजी; प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, डा० भास्कर आनन्द सालेतोर; प्रो० एच० डी० वेलन्कर, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल, डा० मोतीचन्द्र जी, डा० एच० डी० साकलिया, डा० कालीदास नाग; डा० डी० सी० दास गुप्ता, डा० जे० एन० सिन्हा, प्रो० रामा स्वामी आयगर, प्रो० वी० शेशा-गिरिराव; श्री पी० के० गोडे, एम० गोविन्द पै०, डा० शामा शास्त्री, श्री किशनदत्त वाजपेयी डा० वेनीमाधवदास, डा० वी० राघवन, श्रीयुत टी० रामचन्द्रन डा० एच० सी० सेठ प्रो० शिवेन्द्र नाथ घोषाल, प्रो० सुरमा मित्र, वा० अ० नारायण मोटेश्वर खरे, के माधवकृष्ण शर्मा, प्रो० विधुशेखर भट्टाचार्य; बी० जी० भट्टाचार्य, अमूल्य चरण सेन विद्याभूषण विभूति भूषणदत्त, प्रबोधचन्द्र बागची, अशोककुमार भट्टाचार्य, एम० एन० देशपाडे, श्री कमलाकान्त उपाध्याय, श्री हरनाथ द्विवेदी, श्रीयुत त्रिवेणीप्रसाद, श्री कठ जी शास्त्री, डा० एस० एन० दास गुप्ता, प्रो० नलिनी विलोचन शर्मा, प० जग नाथ तिवारी, प्रो० एन० वी० शर्मा, डा० सुकुमार रजनदास, श्रीयुत प्रमोदलाल पाल, डा० एस० सी चटर्जी, इत्यादि ।

नोट—उपर्युक्त जैन तथा अजैन जैन साहित्य-सेवी विद्वानोकी सूचीसे यह अभिप्राय नही है कि मात्र नामङ्कित विद्वज्जन ही जैन साहित्य सेवा कर रहे हैं और जैन धम मे अभिरुचि रखते है । उल्लिखित सज्जनो के अतिरिक्त भी अनेक जैन अजैन विद्वान यह कार्य कर रहे हैं। यहा तो केवल उन्ही विद्वानो का नामोल्लेख कर दिया गया हैं जो इस समय तक पर्याप्त प्रसिद्ध हैं और दृष्टि मे सर्वाधिक आये है अथवा आ रहे हैं। ऐसे और भी लेखक जो प्रमाद या अज्ञानवश छूट गए हो उनके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

———

आवश्यक निवेदन

समस्त जैन लेखकों, प्रकाशको एव साहित्यिक सस्थाओ से निवेदन है कि वे अपने द्वारा लिखित, अनूदित, सपादित, सकलित, मुद्रित, प्रकाशित ग्रन्थो-पुस्तको के सम्बध मे पूरा विवरण नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें। विवरण में निम्नलिखित तथ्य होने चाहियें —१ पुस्तक का नाम २. मूल लेखक, अनुवादक, टीकाकार, सपादक, सकलनकर्त्ता आदि के नाम-पूरे पते सहित, ३ प्रकाशक का पूरा नाम एव पता, ४. मुद्रक का नाम एव पता ५. भाषा, ६ विषय, ७ पृष्ठसख्या ८ आवृत्ति एव मुद्रित सख्या, ९. मूल्य १० विशेष विवरण, यदि कुछ हो । इस पुस्तक के द्वितीय सस्करण को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने के लिये यह जानकारी अपेक्षित है । जो महानुभाव अपनी पुस्तकों की एक एक प्रति ही भेज देने की कृपा करेंगे उनके हम अत्यन्त आभारी होंगे और तब उनके लिये अलग से उक्त विवरण भेजने की जरूरत नहीं रहेगी ।

निवदक

पन्नालाल जैन अग्रवाल

३८७२, मोहल्ला चर्खे वालान गली कन्हैया लाल अत्तार (दिल्ली)

शुद्धि-पत्र

विन्दु-विसर्गादि की साधारण तथा सहज-बोध-गम्य अशुद्धियों को छोडकर छापेकी शेष अशुद्धियों का शुद्धि-पत्र निम्न प्रकार हैः—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	वैशिष्टय	वैशिष्ट्य
३	२	जन साहित्य	जैन साहित्य
४	१	समयापयुक्त	समयोपयुक्त
,,	१७	सहस्त्र	सहस्र
५	१८	जैन ग्रन्थ नामावली	जैन ग्रन्थावली
६	७	सूचियें मे प्रकाशित	सूचियें प्रकाशित
,,	१३	किन्तु महावीर जी	महावीर जी
,,	१५	प्रशास्ति	प्रशस्ति
,,	१६	तप्यारी	तय्यारी
७	१५	रचियताओं	रचयिताओं
६	१५	अतिलेखको	प्रति लेखकों
,,	२१	अक्षण्ण	अक्षुण्ण
,,	२३	तत्तद सस्कृति	तत्तद् सस्कृति
१२	१	विज्ञान	विद्वान्
१३	अन्तिम	किन्तु	जैन
१५	७	स्वातन्त्रय	स्वातन्त्र्य
१७	१३	अपेक्षा-और	अपेक्षा
२०	१३	कर्त्री	कर्त्री,
२३	१७	आवश्यता	आवश्यकता
,	८	तत्तद समाज	तत्तद् समाज

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४	१७	सहस्त्राब्द	सहस्राब्द
२५	६	उपलल्ब	उपलव्ध
२६	२	चालर्स	चार्ल्स
"	१९	विल्फ डका	विल्फ डको
"	१८	१९ शताब्दी	१९वी शताब्दी
२७	२३	राजकाय	राजकीय
२८	१२	पूज्यनीय	पूजनीय
२८	१७	जाता जाता था	जाता था
"	अन्तिम	होने कारण	होने के कारण
२९	१	विनय	अविनय
"	५	अविष्कृत	आविष्कृत
"	१२	प्रमाणीकता	प्रामाणिकता
"	२०-२१	नियतानुसार	नियमानुसार
"	२५	महाक्षयो	महाशयो
३०	१६	१९५०	१९४७
३१	११	१८५७	१८७५
३२	२५	अ गविशेष	अ गविशेष की
३६	५	जैन समाज	दिगम्वर जन समाज
"	११	इटाया	इटावा
"	१२	चतन्य	चैतन्य
३८	७	लेखक के	इन पक्ति लेखक के
४६	५	रचनाए सख्या	रचनाए जितनी सख्या
४७	१८	वर्णीमय	वर्णीत्रय
"	अन्तिम	अधिष्ठातातृत्य	अधिष्ठातृत्व
४८	१६	व्यवसायिक दोनो	व्यवसायिक अव्यवसायिक दोनो

६	सफल	सफल याग
८	रामचन्द्र	रायचन्द्र
२२	प्रगति का बहुत कुछ	प्रगति का सम्बन्ध है उसका बहुत कुछ
२२-२१	इसी पुस्तक के अन्त में प्रकाशित स्वतंत्र लेख से	इसी भूमिका के अन्त में (पृष्ठ ६८-८२) दिए हुए तद्विषयक लेखसे,
७	तपा	तथा
१६	संख्याओ	संस्थाओ
२०-२१	सार्व स स्थाने	सार्वजनिक स स्थाने
११	स्वातन्त्र	स्वातन्त्र्य
२२	जन हितेच्छु	जैनहितेच्छु
२	जन	जैन
१४	सामायिक	सामयिक
११	१३०३	१३००
१४	स्नोत्र स्तुति	(८) स्तोत्र स्तुति
२३	शिक्षा	शिक्षा १०३
२५	विपय-विभाजन	विषय-विभाजन
२-६	पाठ मासिक	षाण्मासिक
४	६६	७६
१६	वीर वाणा	वीरवाणी
१५	जिन	इन
२३	निर्माण करने के	निर्माण के

६८	१६	दृष्टि में वह उपनिषद्	दृष्टि में उपनिषद्
६९	१२	प्रच्य तत्व	प्रत्न तत्त्व
,,	१७	जन धर्म	जैन धर्म
,,	२४	दान देना	योग दान देना
७१	४	सस्करणों प्रकाशन	सस्करणों के प्रकाशन
,,	५-८	प्रमाणिक-प्रमाणीक	प्रामाणिक
,,	६	कभी पूर्ति	कमी पूर्ति
,,	११	देहली	सरसावा (देहली)
,,	१४	जन महाराष्ट्री	जैन महाराष्ट्री
,,	१५	पूर्ववती	पूर्ववर्ती
,,	१६	'वलासवई कहा'	'विलासवई कहा'
,,	१८	ाथमिक	प्राथमिक
,,	फुटनोट	अपलाम	उपनाम
,,	,,	जेना सेटी क्वोरी	जैन ए टीक्वेरी
७२	८	भेद स भी	भेद से भी
,,	१३	नियुंक्तियों	नियुंक्तियाँ
७३	२	कर्तव्य	कर्तृत्व
,,	८	गत दर्शक	गत दशक
७४	फुटनोट	जो इन्दु के मांग सार	जोइन्दु के योगसार
७५	६	उद्रम	उद्गम
,	१६	काम चलान से लिए	काम चलाने के लिए
७६	८	चरणों	चारणों
,,	१७	भेद पक	भेदपरक
७७	२३	मतएवर्ष भारत व	अतएव भारतवर्ष

८	२३	प्राच्य विदो	प्राच्यविदो
९	१	के अत्यन्त विशद	के साथ अत्यन्त विशद
"	२	वि० भू० उक्त	वि० भू० ने उक्त
"	१२-२३	युक्तयानुशासन	युक्त्यनुशासन
[illegible]१	१०	जैनग्रथ नामावली	जैन ग्रथावली
[illegible]२	२०-२१	हीराचन्दा ओझा	हीराचन्द ओझा
[illegible]३	२०	ज्ञान तिथियो	ज्ञात तिथियो
[illegible]६	२३	जनस घ	जैन स घ
[illegible]९	१८	प्राप्ति	प्रगति
"	अन्तिम	७-२१ दरियागज	२१ दरयागंज
९१	१०	लघीस्त्रयम्	लघीयस्त्रयम्
९३	१७	अध्यात्माष्टयाम्	अध्यात्माष्टकम्
९४	१४	पदमानुवाद	पद्यानुवाद
"	१५	१९२४	१९१४
९५	७	१९४२	१९२२
	१८	पृ०	पृ० १७
"	१९	पृ०	प्रकाशित
९९	२०	छिन्द राडा	छिन्दवाडा
१०१	१३	१९२६ ।	१९२५,आ० प्रथम
"	१४	—आ० प्रथम	—
१०२	अन्तिम	९१८	१९१८
१०५	११	पृ० १४९	भा० हि०; पृ० १४९
१०६	२३	१८३२	१८३
१०८	२१	१८८९	१८९८
१०९	६	२९	३९
१०९	११	१८३६	१९३६

१४९	६	णोयकुमार चरिड	णायकुमारचरिउ
,,	८	सं० हिन्दी	प्रा० हिन्दी
,,	२१	पृ० २१३	पृ० २१६
१५२	४	जैन सस्कृत सरक्षक	जैन सस्कृति सरक्ष
,,	,,	भा० हि०	भा० प्रा० हि०
,,	८	भा० प्र० हि०	भा० हि०
३५६	१९	२०६	६
१५७	१८	सग्रह	सग्राहक
१६३	२	२१२ वर्ष १९४९	२०८, वर्ष १९४०
१६७	२४	१८४२	१९४२
६६८	१	वा०	ब्र०
१६९	७	१९२८	१९२२
१७०	१८,२१,२४	भा०स० हि०	भा० स०
१७३	२२,२३	पन्नालाल, सपा० मनोहरलाल वाकलीवाल	पन्नालाल वाकली वाल; सपा० मनोहरलाल
,,	२४	व० ९१४	व० १९१४
१७४	११	पट्टावली समुच्चय	पट्टावलीसमुच्चय
१७६	१७	१९२	१९१२
१८१	२०	पाठ्यय पूजा संग्रह	पाठ्य पूजा सग्रह
,,	२६	प्रा०	प्र०
१८५	१५	१९३१	१९३३
१८६	१६	व्याहला वहु	व्याहली वहू
१९०	७	वोघ प्राभृन्म	वोघप्राभतम्
१९३	अन्तिम	पृ० ८०	पृ० २०
१९४	१५	प०	प्र०
१९६	१६	पा०	सपा०

२४६	१६	सिद्धान्त सग्रह	सिद्धान्त सारादिसग्रह
२४७	२०	सिद्धान्त सरादि	सिद्धान्तसारादि
२४८	६	नाथूराम	नाथूलाल
,,	११	सिर सिर वाल कहा	सिरिसिरि वालकहा
२४६	१३,१५	सुदृष्टि वरगिणी	सुदृष्टितरगिणी
२५०	१०	सपा०	सक०
२५१	१, ७	सूक्त मुक्तावली	सूक्तमुक्तावली
,,	२२	सोनाहीर	सोनागिर
,,	२३	धर्म प्रभावती सभा	धर्मप्रभावनी सभा
,,	,,	साभी लेखक	साभर लेक
२५२	१०	सृष्टि कतृव्य मीमासा	सृष्टिकर्तृत्वमीमासा
,,	१६	(भाग)	(दो भाग)
२५३	८	व०	व० १६१६
२५४	५	वथूमल	नन्नूमल
,,	१५	आदि	आदिपुराण
२५५	१७	व०,	व० १६२१
,,	२२	सरल प्रज्ञा पुस्तक माला	प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला
२५६	१	तिलोयपण्णुति	तिलोपण्णत्ती
,,	२	त्रैविघ देव	त्रैविद्यदेव
,,	१२	त्रैवणिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
,,	१८	देक्षेन्द्र प्रसाद	देवेन्द्रप्रसाद
२५७	६	कुढेले	बुढेले
२५८	१४	ग्लेजनेय -	ग्लेजनेप
२५६	१७	१०—१६३५	१०-५-१६३५
,,	१६	लखनख परिशद	लखनऊ परिषद्

२७९	२०	१६३८	१९२८
,,	२२	१८२९	१८९९
२८०	४	भैवर्णिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
२८१	१५	व० १८६	व० १८६७
२८२	२५	न्यान विजय	न्यायविजय
२८३	६	जन साहित्यनी	जैन साहित्यनो
२८४	२२	श्री म्हावीर जीवन	श्री महावीर-जीवन विस्तार
,,	२३	विस्तार शीलरक्षा	शीलरक्षा
२८५	१३	व० १२१	व० १९२१
,,	१४	४९७	४१७
२८६	६	जैन दर्शनने कार्मवाद	जैन दर्शने कर्मवाद
,,	२६	वाराति कृपा चरित्र	वर्णित कृष्णचरित्र
२८७	११	द्वादशनुप्रेक्षा	द्वादसानुप्रेक्षा
,,	१७	प्रमाणाय	प्रमाण
289	15	Vigaya	Vijaya
290	11	Rikhar Dass	Rikhab Das
,,	Last	Swet order	Swetambar
294	9	Kaand jine	Khandgiri
301	16	Ed and trad. J L Jaini	(Bib. Ind Dr S. C (Vidya Bhushan)
302	2	Buhter	Buhler
303	23	Jainasm	Jainism
304	27	1214	1294

जैन मित्र मंडल के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१	श्री भूवलय ग्रन्थ राज गर्भ भाषा मयी ग्रन्थ (संसार का आठवां आश्चर्य)	५)
२	नर से नारायण	१)
३	उपदेशसार संग्रह (आचार्य श्री देशभूषण महाराज के उपदेश-) प्रथम भाग	२)
	द्वितीय ,,	२)
	तृतीय ,,	२)
	चतुर्थ ,,	२)
४	भूवलय के अन्तर्गत श्लोक	१)
५	नारी शिक्षादर्श	।।।=)
६	भगवान महावीर का हृदयग्राही तिरंगा चित्र	।)
७	चौदह गुणस्थान चर्चा कोष	१)
८	भगवान महावीर (आचार्य श्री देशभूषण जी)	।)
९	भगवान महावीर (प्रो० सुशील कुमार दिवाकर)	।)
१०	भजन शतक	।)
११	मोतियों की लड़ी–उर्दू में (महावीर जयन्ती पर पढ़ी गई नज्मों का संग्रह)	।।)
१२	श्री भगवान के प्रति श्रद्धांजलियां	=)
13	What Jainism Stands For (Dr Hira Lal Jain)	=)
14	Some Historical Jain Kings and Heroes	१)
15	Jain Institutions in Delhi (L Panna Lal Jain)	।)
16	Pure Thoughts (सामायिक पाठ)	।)
१७	श्री भूवलयान्तर्गत 'जय भगवद् गीता	।)
१८	जैनमतसार –उर्दू	।।)

प्राप्ति स्थान